राजनीति शास्त्र
का
हिंसा-मुक्त स्वरूप

परिचय

ग्लेज डी. पेज (1929) अमरीका में स्थित हवाई विश्वविद्यालय में राजनीतिशास्त्र के अवकाश प्राप्त प्राध्यापक तथा होनुलुलु स्थित लाभनिरपेक्ष वैश्विक अहिंसा केंद्र के संस्थापक अध्यक्ष हैं। आपकी शिक्षा फिलिप्स एक्ज़ीटर अकादमी, प्रिंसटन में हुई। श्री पेज ने, स्नातकोत्तर अध्ययन हावर्ड विश्वविद्यालय से किया तथा डाक्टर की उपाधि नार्थ वेस्टर्न युनिवर्सिटी से प्राप्त की।

आपने अध्यापन कार्य सियोल के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में (1959-61), प्रिंसटन में (1961-67) और हवाई विश्वविद्यालय में (1967-92) किया। आपके कार्यकाल में ही हवाई विश्वविद्यालय ने स्नातक पाठ्यक्रमों और गोष्ठियों में 'राजनैतिक नेतृत्व' और 'अहिंसक राजनैतिक विकल्प' जैसे विषयों को शामिल किया। कोरियाई युद्ध के अनुभवी श्री पेज ने 'द. कोरियन डिसीजन' जून 24-30, 1950 (1968), 'साइंटिफिक स्टडी ऑफ पोलिटिकल लीडरशिप' (1977) और 'टू नानवाइलन्ट पॉलिटिकल साइंस : फ्राम सीजंस आव वायलन्स' (1933) आदि पुस्तकों की रचना भी की।

जेम्स ए. रॉबिन्सन एक नीति वैज्ञानिक तथा मैकालेस्टर कॉलेज, सेन्ट पॉल, मिनेसोटा के तथा पश्चिमी फ्लोरिडा विश्वविद्यालय, फ्लोरिडा के भूतपूर्व अध्यक्ष हैं। आपकी उत्कृष्ट रचना है, 'कांग्रेस तथा विदेशी नीति' (1963)। आपके शोध विशेष रूप से अमरीका तथा विश्व राजनीति की निर्णय प्रक्रिया से संबंधित हैं। हाल के वर्षों में आपने एशिया में प्रजातांत्रिक अनुभवों की विविधता पर ध्यान दिया है।

राजनीति शास्त्र का हिंसामुक्त स्वरूप

ग्लेन डी. पेज

गांधी मीडिया सैन्टर
नई दिल्ली, मदुरई, तिरुवनन्तपुरम्

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय
राजघाट, नई दिल्ली

सर्वाधिकार 2002 ©ग्लेन डी पेज
कांग्रेस पुस्तकालय संख्या : 00193438
पुस्तकालय संस्करण 0-7388-5744-0
पाठक संस्करण—07388-5744-9

वैयक्तिक और शैक्षिक प्रयोग के लिए लेखक को पुस्तक की नकल लेने से कोई आपत्ति नहीं है।

मुखपृष्ठ
विश्व के आवर्त में रचनात्मक रूपान्तकारी प्रयास (नीला) हत्याविहीन मानवीय समर्थताओं के आस्थावान (सफेद) मनुष्य हत्या के विरोध में कार्यरत (लाल)

वैश्विक अहिंसा केन्द्र का प्रतीक
www.globalnonviolence.org
cgnv@hawaii.rr.com

यह पुस्तक भारत में छपी है
द्वारा
गांधी मीडिया सैन्टर
नई दिल्ली, मदुरई, तिरूवनन्तपुरम
ई मेल : grinstitute@hotmail.com
व
राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय
राजघाट, नई दिल्ली
ई मेल : gandhimk@nda.vsnl.net.in

प्रतियां प्राप्त की जा सकती हैं
राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, राजघाट, नई दिल्ली-110002
भारतीय प्रथम (अंग्रेजी प्रकाशन) : फरवरी 2002
हिन्दी प्रकाशन : अक्तूबर 2004

मुद्रक :
अशोक प्रिंटिंग प्रेस
माता वाली गली, नई सड़क, दिल्ली
फोन—23264968, 23258859
मूल्य : रुपये 150.00

समर्पण

रिचर्ड सी स्नाइडर
(1916-1997)
एच ह्युबर्ट विल्सन
(1909-1977)
राजनीति शास्त्रियों, अध्यापकों एवं दोस्तों को

वह विज्ञान जो अपने संस्थापकों को भूलने से हिचकिचाता है, पनप नहीं पाता।

– एल्फ्रेड नार्थ व्हाईटहैड

विषय सूची

भारतीय संस्करण का प्राक्कथन	...	...	xv
भूमिका	...	...	xvii
विषय प्रवेश	...	...	xxi
प्रथम अध्याय क्या एक अहिंसक समाज सम्भव है ?	...	...	1
द्वितीय अध्याय अहिंसक समाज के लिए क्षमताएं	...	...	23
तृतीय अध्याय राजनीतिक-विज्ञान के लिए निहितार्थ	...	...	64
चतुर्थ अध्याय समस्या-समाधान	...	...	90
पंचम अध्याय संस्थागत समस्या-समाधान	...	...	114
षष्ठ अध्याय अहिंसक वैश्विक राजनीति विज्ञान	...	...	131
परिशिष्ट अ	...	...	149
परिशिष्ट ब	...	...	151
परिशिष्ट स	...	...	155
परिशिष्ट द	...	...	161
टिप्पणियां	...	...	169
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	...	...	175

दो शब्द

प्रोफेसर ग्लेन डी. पेज की पुस्तक "राजनीति शास्त्र का हिंसा-मुक्त स्वरूप" (Nonkilling Global Political Science) उनके जीवनभर के अध्ययन के पश्चात् एक अहिंसक समाज व्यवस्था की स्थापना की खोज में लिखी गई एक ऐतिहासिक साहित्यक कृति है। महात्मा गांधी ने कहा था कि मनुष्य समाज का जीवित रहना व बढ़ते रहना ही इस तथ्य का प्रमाण है कि मनुष्य का मूल स्वभाव अहिंसक है। प्रोफेसर पेज ने इस पुस्तक में इसी तर्क का राजनीति शास्त्र के क्षेत्र में प्रयोग किया है क्योंकि हमारा वर्तमान राजनीति शास्त्र ही सर्वाधिक राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में संगठित हिंसा और आतंकवाद का मूल आधार है। इन 200 पन्नों में प्रो. पेज ने प्रमाणित कर दिया है कि अहिंसक समाज व अहिंसक राजनीति न केवल अपेक्षाकृत बहुत बेहतर विकल्प हैं किन्तु प्राप्य भी हैं। उन्होंने अपनी कृति में "अहिंसक" की बजाय जो "हत्यामुक्त" (Nonkilling) शब्द का प्रयोग किया है वह भी उपयुक्त और चेतनायुक्त है क्योंकि "हत्या" ही हिंसक सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था का सबसे अधिक अमानवीय और प्रबल स्वरूप है। बहादुरी हत्या करने में नहीं किन्तु हत्यामुक्त व्यवहार में है। इसे पढ़ने के बाद महसूस होता है कि हत्या करना कितना अमानवीय, अर्थहीन और अस्वाभाविक होना चाहिए और अहिंसक आचरण समाज और राजनीति में कितना सामान्य और स्वाभाविक होना चाहिये। हत्यामुक्त समाज ही अहिंसा और शान्ति की मूल कड़ी है।

यह पुस्तक एक विचारपूर्ण एवं विचार करने पर मजबूर कर देने वाली शोधकृति है। इसलिए सब सोच विचार करने वालों के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है।

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, राजघाट, नई दिल्ली अपने आपको इस पुस्तक के हिन्दी प्रकरण के प्रकाशित होने में भागीदार होने पर गर्वान्वित मानता है।

डॉ॰ वाई॰ पी॰ आनन्द
निदेशक

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय
राजघाट, नई दिल्ली
14 अक्टूबर 2004

धन्यवाद

गांधी मीडिया सेंटर और राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय अपनी समूची आस्था से डॉ. पतंजलि कुमार भाटिया, रीडर, संस्कृत विभाग, पी॰जी॰डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं डॉ॰ कुसुम चड्ढा, रीडर, राजनीति शास्त्र विभाग, पी॰जी॰डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस पुस्तक को अनुवादित और प्रकाशित करने में हमारे मदद की।

साथ ही श्री अशोक गुप्ता, अशोक प्रिंटिंग प्रेस के प्रति भी हम आभारी हैं जिन्होंने इस संस्करण को मुद्रित किया।

एन. वासुदेवन
निदेशक, गांधी मीडिया सेंटर

निवेदन

महात्मा गाँधी के विषय में उनके प्रथम जीवनी लेखक श्री डोक ने लिखा था कि उनसे मात्र बातचीत करना ही उदारवादी विचारधारा की शिक्षा प्राप्त करने समान है। ठीक उसी प्रकार प्रो॰ पेज की पुस्तक भी हमारे हिंसा संबंधी दृष्टिकोण को पूर्ण रूप में परिवर्तित करने में सक्षम है।

2001 में प्रो॰ पेज ने दिल्ली में 'गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति' के द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में श्रोताओं के सम्मुख अपने सर्वथा नवीन विचार रखे। तत्पश्चात् उन्होंने समिति के निदेशक श्री एन॰ राधाकृष्णन् से अपनी पुस्तक को अनूदित करवाने का आग्रह किया, जिससे कि उनके विचारों से हिंदी भाषी समाज भी लाभान्वित हो सके। डॉ॰ राधाकृष्णन् ने यह महनीय कार्य हमें सौंप कर हमें गौरवान्वित किया।

अनेक दृष्टियों से अनुवाद का कार्य चुनौतीपूर्ण था। सर्वप्रथम 'Nonkilling' के लिए उपयुक्त हिन्दी शब्द चुनने का प्रश्न था। इस शब्द में 'Non' एक उपसर्ग (Prefix) की तरह प्रयुक्त नहीं हुआ था। यह लगभग उसी प्रकार था जैसे भारतीय भाषाओं में सकारात्मक अर्थ वाले शब्दों का नकारात्मक लिखा जाना (जैसे 'अस्तेय', 'अहिंसा' इत्यादि)। अक्षरश: अनुवाद में 'अहिंसक' शब्द उचित प्रतीत होता था परंतु हिन्दी/संस्कृत में इस शब्द के बहुआयामी अर्थ से भारतीय परिचित हैं। प्रो॰ पेज ने 'Nonkilling' शब्द का मुख्यत: मानव हत्या पर रोक के अर्थ में प्रयोग किया है जो विस्तृत होकर अन्य जीवों की हत्या न करने तथा पर्यावरण संरक्षण तक के भाव को समेटता चलता है। अत: 'Nonkilling' का अनुवाद **'हिंसा मुक्त स्वरूप'** हमें उचित लगा।

दूसरी चुनौती थी प्रो॰ पेज की बोलचाल की शैली में लिखे गए गंभीर विचारों का अनुवाद जिन्हें अमरीकी अथवा यूरोपीय इतिहास के उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया है। अत: जहाँ आवश्यकता महसूस हुई वहाँ संदर्भ स्पष्ट किया गया है और शैली की सरलता को बनाए रखने की कोशिश की गई है परंतु कहीं कहीं भाव की जटिलता के कारण भाषा भी क्लिष्ट हो गई है।

प्रो॰ पेज ने एक स्थान पर कबीर के दोहे का अंग्रेज़ी अनुवाद दिया है। उनसे अनुमति लेकर हमने वहाँ मूल दोहा डाल दिया है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस अनुवाद के माध्यम से हम हिंदी भाषी पाठकों तक प्रो॰ पेज का मानवता के लिए अत्यंत उपयोगी अमर संदेश पहुँचाने में सफल होंगे।

–अनुवादक

भारतीय संस्करण का प्राक्कथन

किसी पूर्व निर्धारित विचार के विरोध में अकस्मात् खड़े होना विशेष प्रतिबद्धता की अपेक्षा रखता है और अनेकों ने धारा के विपरीत तैरने का भारी मूल्य चुकाया है पर फिर भी स्वप्नद्रष्टा और क्रांतिकारी अपनी विद्रोही गतिविधियों से पीछे नहीं हटे हैं।

प्राचीन भारत के सम्राट् अशोक का उदाहरण अनुपम है जो कि रक्तरंजित युद्ध के पश्चात् शांतिदूत के रूप में परिवर्तित ही नहीं हुआ वरन् विश्व की राज्य व्यवस्था में अहिंसा को सिद्धांत के रूप में स्थापित करने में सफल भी हुआ। कोरियाई युद्ध क्षेत्र ने भी इसी रूपांतरण को देखा जब श्री ग्लेन ने, जो कि एक विमान प्रतिरोधी संचार अधिकारी थे, हिंसा और टकरावों को सुलझाने की प्रवृत्ति अपने भीतर उभरती महसूस की। अहिंसा की ओर उनका जागरण उन्हें गाँधी के प्रयोगों की ओर से ले गया। अनुवर्ती दशकों में जब पेज ने भारत के साथ आध्यात्मिक रिश्ता स्थापित करते हुए एक केंद्रीय भूमिका अख्तियार की तो वैश्विक अहिंसक आंदोलन ने जागृत होकर बढ़ना प्रारंभ किया। अहिंसा के लिए उनकी प्रतिबद्धता और अनेक देशों की यात्राओं के दौरान अनेकों अध्येताओं से बनाए गए उनके संबंधों ने कई शोधार्थियों को एकत्रित किया। ग्लेन के प्रयासों से अहिंसा ने धर्म युद्ध की शक्ल अख्तियार की। आरंभ में हत्याविहीन समाज के निर्माण के लिए उनके प्रयासों का कई लोगों ने तिरस्कार किया तथा उसे संदेह की दृष्टि से देखा परंतु यह विचार वर्तमान सामाजिक आर्थिक वातावरण पर अपनी छाप छोड़ गया। बहुत से लोग प्रो॰ पेज के प्रयत्नों को सराहते हैं परंतु अभी भी परंपरागत राजनीतिशास्त्री इसे पूर्ण रूप से नहीं स्वीकार कर पाए हैं।

जोहान गाल्तुंग ने ग्लेन की पहली पुस्तक 'टु नॉन वाइलैंट' पोलिटिकल साईन्स' के विषय मे लिखते हुए 'हत्याविहीनता के विचार को वर्तमान युग में उसी प्रकार क्रांतिकारी कहा जिस प्रकार दासता के युग में दास प्रथा की स्वाभाविकता का विचार था।

'हत्याविहीन वैश्विक राजनीति शास्त्र' लेखक के तीन दशकों के अनुसंधान, संवादों और विचारों का परिणाम है और लेखक का यह मानना सही है कि अंग्रेज़ी भाषा की यह पहली पुस्तक है जिसके शीर्षक में ''Nonkilling'' लिखा गया है। यहाँ यह विचारणीय है कि इस समाज में जहाँ 'हत्या' का

विचार एक स्वीकृत विचार बन चुका है ग्लेन जैसे विचारवालों की नियति क्या होगी? क्या यह कटिबद्ध विनती आज के दोहरेपन और असहिष्णुता के वातावरण में खो जाएगी या फिर यह एक विचार मंथन का रूप लेगी?

प्रो॰ पेज यह मानते हैं कि हत्याविहीन वैश्विक समाज, राजनीति शास्त्र के ढांचे में परिवर्तन और अभिवर्द्धन तथा राजनीतिशास्त्र की सामाजिक भूमिका के निर्वाह द्वारा ही संभव है। हत्या मानव समाज की स्वाभाविक विशेषता है कि धारणा को लेखक ने सफलतापूर्वक चुनौती दी है।

गाँधी मीडिया केंद्र श्री पेज की इस पुस्तक को प्रकाशित करते हुए गौरवान्वित महसूस करता है और हमें विश्वास है कि यह पुस्तक विचार के नए आयाम खोलेगी। मैं यह मानता हूँ कि हत्या विहीन समाज संभव है और हम सब इसे मानें तो हम लेखक के महत्तर कार्य में अपना योगदान दे सकेंगे।

गाँधी मीडिया केंद्र इस पुस्तक को भारत की अन्य भाषाओं में भी प्रकाशित करने का विचार रखता है। तमिल में यह पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।

एन. राधाकृष्णन

नई दिल्ली
15 अक्टूबर, 2004

कार्यवाहक अध्यक्ष
भारतीय गाँधी अध्ययन परिषद्

भूमिका

यह पुस्तक समीक्षा और विचार के लिए संपूर्ण विश्व के राजनीति शास्त्र के अध्येताओं और मानद प्राध्यापकों के लिए प्रस्तुत की गई है। न तो समय और न ही विद्वता इस प्रचलित मान्यता में कोई विशेष अंतर ला पाए हैं कि 'हत्या मनुष्य जीवन का अनिवार्य अंग है और इस धारणा की राजनीति सिद्धांत तथा व्यवहार में स्वीकृति अनिवार्य है।' ऐसी अपेक्षा की जाती है कि पाठक हत्याविहीनता की इस पुस्तक द्वारा प्रचारित धारणा के प्रति प्रश्नाकुल होंगे और अपने विचारों से इस धारणा को और समृद्ध बनाते हुए एक अहिंसक भविष्य की ओर अग्रसर होंगे।

संभवत: यह अंग्रेज़ी भाषा में पहली पुस्तक है जिसने 'हत्याहीनता' जैसे शब्द को अपने शीर्षक में सम्मिलित किया है। यह शब्द 'शांति' और 'अहिंसा' के पार हमारा ध्यान नष्ट होते मनुष्य जीवन की ओर केंद्रित करता है। बहुत लोगों की आरंभिक प्रतिक्रिया होगी कि हत्याहीनता पर केंद्रित होना बेहद नकारात्मक, संकीर्ण और कुछ महत्त्वपूर्ण तत्त्वों की अपेक्षा करने जैसा है। हो सकता है कि इस परिप्रेक्ष्य में गाँधी की चेतावनी याद आए कि अहिंसा की परिभाषा हत्याहीनता के रूप में करना अहिंसा के विचार को संकीर्ण करना होगा। गाँधी के लिए अहिंसा, अपने उदात्ततम रूप में विचार, शब्द और कर्म तीनों की अहिंसा थी।

पर शायद गाँधी एक पाठक के रूप में इस बात से सहमत होते कि दूसरी प्रकार की हिंसाओं का स्रोत और उनका पोषण करने वाली हत्या से मुक्ति की धारणा, अहिंसा के राजनैतिक विमर्श में एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित होगी। यह 'जीवन हन्ता' राजनीति को 'जीवन की स्वीकृति' की राजनीति की ओर ले जाएगी।

इस पुस्तक की यह अभिधारणा (thesis) है कि हत्याविहीन वैश्विक समाज संभव है। राजनीति शास्त्र के अकादमिक विषय और इसकी सामाजिक भूमिका में परिवर्तन के द्वारा इस अवधारणा को फलीभूत किया जा सकता है। यह धारणा कि हत्या मानव स्वभाव तथा सामाजिक जीवन की अपरिहार्य विशेषता है तथा इस मान्यता को राजनीति के अध्ययन तथा व्यवहार में स्वीकार करना चाहिए। पर निम्नलिखित प्रश्न उठाए गए हैं। प्रथम, यह माना गया है कि मनुष्य जैविक रूप में और अनुकूलन द्वारा हत्या करने और हत्याविहीनता दोनों

में सक्षम है। दूसरा, यह पाया गया कि अपनी मारक क्षमता के बावजूद अधिकतर मनुष्य हत्यारे नहीं हुए हैं। तीसरा, हत्याविहीनता की संभावनाएं बहुविध सामाजिक संस्थानों में दृष्टिगोचर हुई हैं और अगर रचनात्मक रूप में इन्हें समाहित और रूपांतरित किया जाए तो ये संस्थान हत्याविहीन समाजों में अपना महत्तर योगदान दे सकते हैं।

चौथा, वर्तमान तथा संभावित वैज्ञानिक प्रगति के द्वारा हत्या के कारणों, हत्या न करने के कारणों तथा हत्या से हत्या न करने की ओर बढ़ने के कारणों को समझने से संबंधित मनोजैविक तथा सामाजिक कारक (जो घातकता को बढ़ावा देते हैं) में परिवर्तनकारी हस्तक्षेप करना संभव है।

पांचवां, मनुष्य की मारक क्षमता को उसकी प्रकृति मान लेना और हिंसा को उसकी विशेषता मान लेना अध्ययन के मूल अनुशासन में समस्या उत्पन्न करेगा।

छठा, संहारकता के स्थानीय तथा वैश्विक स्तर पर विनाश की व्यापक इच्छा की पूर्ति की दिशा में बढ़ने के लिए राजनीति शास्त्रियों को (जो अभी तक मानव की असंहारक सामाजिक परिवर्तनकारी क्षमता के विषय में आश्वस्त नहीं हैं) आमंत्रित किया जाता है कि वे असंहारकता को एक समस्या के रूप में स्वीकार करें। इसका एक शुद्ध सिद्धांत (pure theory) के रूप में, आगमिक (inductive) तथा निगमनात्मक (deductive) तत्त्वों के मेल से सापेक्ष (hypothetical) अनुसंधान करें। संदेहवादियों (skeptics) तथा आस्था रखने वालों के द्वारा किया गए आनुमानिक विश्लेषण व भूमिका निर्वाह (role playing) भी राजनीतिशास्त्र के विषय को इस दिशा में अग्रसर कर पायेंगे। जिस प्रकार परमाणु अस्त्र निवारण के समर्थक तथा आलोचक, सीमित तथा वैश्विक स्तर पर, संपूर्ण तथा सीमित आणविक युद्ध के प्रभावों के सैद्धांतिक तथा अनुरूपक (simulated) विश्लेषण में लगे हुए हैं, ठीक उसी प्रकार अहिंसक व हिंसा स्वीकारने वाले राजनीति शास्त्री वैश्विक जीवन में हत्यामुक्त परिस्थितियों की प्राप्ति की प्रतिबद्धता की शर्तों (preconditions), प्रक्रियाओं तथा परिणामों के रचनात्मक आलोचनात्मक अन्वेषण में शामिल हो सकते हैं।

हालाँकि यह पुस्तक मुख्य रूप से राजनीति शास्त्र के अध्येताओं तथा व्यवहारकर्ताओं से संबंधित है, यह स्पष्ट है कि अन्य विद्वत्तापूर्ण विषयों तथा व्यवसायों के अन्वेषणों तथा योगदान के बिना हत्यामुक्त समाज की प्राप्ति संभव नहीं।

हार्वर्ड के समाजशास्त्री पितिरिम ए. सोरोकिन की नवप्रर्वतक कृति 'द वेज़ एण्ड पावर आफ लव' (The Ways and Power of Love) में परोपकारी, स्वार्थहीन प्रेम के व्यवहारिक विज्ञान का निर्माण, इस कथन का एक ज्वलंत उदाहरण है। हमें हत्यामुक्त प्राकृतिक और जैव विज्ञानों, हत्यामुक्त व्यवसाओं तथा जीवन के हर क्षेत्र से आए हुए, हत्यामुक्त मनुष्यों की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, भूतकालीन व वर्तमान मानव क्षमताओं के विस्तार को समझने के लिए हमें स्थानीय संदर्भों तथा संस्कृतियों से आगे जाकर अपने ज्ञान व अनुभवों को बांटन होगा। आदर्श रूप में संवेदनशील (normatively sensitive) संज्ञानात्मक रूप से सही (cognitively accurate) तथा व्यावहारिक रूप से प्रासंगिक होने के लिए हत्यामुक्त राजनीति शास्त्र को अपनी परिकल्पना व सहभागिता में वैश्विक स्तर का होना पड़ेगा।

विषय-प्रवेश

एक चेतावनी : आपके हाथों में जो पुस्तक है उसका यदि व्यापक स्तर पर और गंभीरता से अध्ययन किया जाए तो यह विश्व में प्रचलित कई मूल्यों तथा उन मूल्यों को आकार देने वाली संस्थाओं के प्रति निष्ठा को ध्वस्त कर देगी। इन मूल्यों, लक्ष्यों, पसंदों, इच्छित परिणामों, घटनाओं तथा कार्यों व उनसे संबंधित संस्थाओं में, वे मूल्य भी शामिल हैं, जिनका संबंध शक्ति की प्राप्ति या उसके प्रयोग से है। 'शक्ति' उस प्रक्रिया का नाम है जिसके माध्यम से लोग अपने एवं दूसरों के लिए निर्णय करने में भाग लेते हैं तथा जो उन्हें इन निर्णयों को मानने के लिए, (यदि आवश्यकता पड़े तो बल प्रयोग के द्वारा भी) बाध्य करती है (लासवैल तथा कैपलेन 1950 : 75)। युद्ध करने तथा सार्वजनिक व्यवस्था का उल्लंघन करने वालों को दण्डित अथवा जान से मार देने वाली सरकार व नीति-निर्माताओं के अतिरिक्त भी शक्ति से संबंधित संस्थाएँ मौजूद हैं। उदाहरणस्वरूप हथियारों के निर्माण, उत्पादन, विक्रय तथा प्रयोग की धमकी से संबंधित ठेकेदारों के कुछ संगठनों से निर्मित अर्थव्यवस्थाएँ शक्ति से अंत:क्रिया करती हैं। 'बल प्रयोग की कूटनीति' पर अनुसंधान करने वाले तथा शक्ति की रणनीति तैयार करने वाले विश्वविद्यालयों के होनहार शिक्षक भी इनमें शामिल हैं। हिंसक खेलों तथा मनोरंजनों के विशेषज्ञ, खेलकूद तथा कला से संबंधित संगठन भी इसी श्रेणी में आते हैं। गर्भपात तथा इच्छित सुख मृत्यु में सहयोग देने वाले, अस्पतालों तथा स्वास्थ्य केंद्रों में कार्यरत सम्माननीय चिकित्सक व स्वास्थ्यकर्मी भी शक्ति से अंत:क्रिया का उदाहरण हैं। सरकारी तंत्र की जानकारी के बिना या उनके समर्थन से हथियारों का निर्माण या प्रयोग करने वाली 'निजी सेनाएँ' भी इसमें शामिल हैं। इसी प्रकार पारिवारिक दुर्व्यवहार के कर्त्ता अथवा उत्पीड़ित (जैसे कई संस्कृतियों में दोषी पति अथवा पत्नी के साथ दुर्व्यवहार के उदाहरण) या फिर ऐसे धार्मिक संगठन जिनके निष्ठावान अनुयायी स्वीकृत धर्म सिद्धांतों व नियमों की गलत व्याख्या कर हिंसा को प्रोत्साहन देते हैं - भी ऐसी संस्थाओं में शामिल हैं जो शक्ति के मूल्यों को प्रतिपादित करती हैं।

समाज का प्रत्येक महत्त्वपूर्ण खण्ड अपने समुदाय की शक्ति प्रक्रियाओं से प्रभावित होता है या उन्हें प्रभावित करता है। दोनों एक-दूसरे को निर्देशित तथा नियंत्रित करते हैं। दोनों एक-दूसरे से काम लेते है तथा एक-दूसरे को सुधारते हैं। ऐसा कभी तो सकारात्मक प्रलोभनों द्वारा किया जाता है और कभी

नकारात्मक शास्तियों द्वारा। सुरक्षा-कर्मियों के द्वारा निगमों, कॉलेज परिसरों, मनोरंजन-स्थलों, होटलों, चिकित्सालयों और कभी-कभी, परिवारों तथा धार्मिक स्थलों में किए जाने वाले अंतरंग कार्य इसी श्रेणी में आते हैं। योग्य प्रेक्षक तथा सजग प्रतिभागी यह मानते हैं कि हत्या अथवा हत्या की धमकी से युक्त शक्ति संस्थाओं तथा सामाजिक संस्थाओं के बीच अंत:क्रिया आधुनिक तथा पराआधुनिक समाज की समस्याएँ हैं। प्रस्तुत रचना में प्रो॰ ग्लेन डी पेज सुव्यवस्थित रूप से उन समस्याओं का सामना करते हैं जो कि व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक परिपेक्ष्य में हत्या और उसके भय से जुड़ी हैं। एक ओर व्यापक रूप से स्वीकृत मानवीय दावों, मांगों, मूल्यों तथा न्यूनतम सार्वजनिक तथा नागरिक सम्मान के अधिकार, तथा दूसरी ओर, प्रासंगिक विरोधाभास (episodic contradictions) और उन मूलभूत लक्ष्यों तथा उद्देश्यों के वचन - जो सामाजिक संगठन के प्रत्येक स्तर (छोटे समूह, स्थानीय, राष्ट्रीय तथा वैश्विक) एवं भिन्न-भिन्न संस्थाओं (सरकारी, आर्थिक, शैक्षिक, प्रशिक्षण संबंधी, चिकित्सा संबंधी, सामाजिक, पारिवारिक तथा धार्मिक) में दृष्टिगोचर हैं - के बीच व्यावहारिक तथा तार्किक विसंगति दर्शाते हुए पेज समस्या के मूल को परिभाषित करते हैं।

इस पुस्तक के इस समय प्रकाशन का अर्थ यह नहीं है कि हत्या का प्रादुर्भाव अभी हाल ही में हुआ है या उस पर ध्यान अभी गया है। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि यह पुस्तक लेखक की अध्ययनशीलता तथा वैज्ञानिक कुशलता से उत्पन्न कल्पनाशीलता के प्रमाण-स्वरूप सामने आई है। इसका अब प्रकाशन इस ओर संकेत करता है कि स्त्रियों और पुरुषों के पास, यह जानकारी होने के बावजूद कि हिंसा की मानव संगठनों तथा समुदायों में व्यापक भूमिका है, समस्या-समाधान की विचारधारा तथा उपकरणों के ऐसे प्रभावी भण्डार का अभाव था जो हत्या की समस्या का विश्लेषण व पूर्वानुमान कर पाता तथा वैकल्पिक नीतियों को अपनाकर हत्या की संभावनाएँ घटाता और मानव अंत:क्रियाओं में अहिंसक प्रतिमानों का विकास कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों को प्रभावित करता।

आज इस भण्डार में कई अकादमिक, वैज्ञानिक तथा विद्वानों के ज्ञान तथा कौशल मौजूद हैं जो उनके तथा उनकी संस्थाओं के इर्दगिर्द हत्या के बावजूद व उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए। समस्या समाधान के इस भण्डार में दार्शनिकों के द्वारा प्रतिपादित समस्याएँ है, लक्ष्यों तथा पसंदों की ऐसी पूर्वधारणाएँ और स्पष्टीकरण हैं, जो व्यवहार में गलत साबित होते रहे हैं। इतिहासकार, जनसंख्या विशेषज्ञ, अर्थशास्त्री तथा अन्य, हत्या तथा हत्याविहीनता

तथा सभी लक्ष्यों तथा मूल्यों में मानव परिपेक्ष्यों का इतिहास लिखते रहे हैं। मानवशास्त्री, जीववैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्री जीवन प्रदान करने के उद्देश्य से ऐसे घटिया, असामान्य झुकावों को बाधित करने वाली स्थितियों तथा अवसरों को प्रेरित करने वाली परिस्थितियों के अध्ययन का बीड़ा उठाते रहे हैं। इसी प्रकार अन्य लोग अवांछनीय झुकावों को रोकने तथा वांछित झुकावों (trends) को प्रेरित करने वाले हस्तक्षेपों के अभाव में अपनी भविष्यवाणी तथा बहिप्रेषण (projection) के कौशल का प्रयोग करते रहे हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में प्रबुद्ध तथा अनुभवी स्त्रियों तथा पुरुषों में वैकल्पिक तथा संभव, व्यवहारिक नीतियों संबंधित सक्षम निर्माणकर्ताओं की संख्या बढ़ती रही है। ये लोग अभी विशिष्ट वर्ग के बजाय उसके नीचे के स्तर पर (midelite) रहते हुए हत्या-विहीनता के पक्ष में नवप्रवर्तन करते हैं। फिर भी मानव प्रवृत्तियों, परिस्थितियों तथा संभावनाओं के प्रबुद्ध विशेषज्ञ होने के नाते ये लोग हिंसा के विशेषज्ञों को जिन्होंने बीसवीं शताब्दी को अब तक की सबसे हिंसक शताब्दी बनाया, को तगड़ी चुनौती देते हैं। ये लोग मानव सम्मान के प्रति झुकाव वाले वैकल्पिक परिपेक्ष्यों के विकास होने तक अपने प्रभाव के विकास का इंतजार कर रहे हैं। रक्त-रंजित बीसवीं शताब्दी में अहिंसक नीतियों के विज्ञान का विकास तथा उसका संस्थापन एक उत्तम व स्वागत योग्य विडंबना है।

हत्या के संयंत्र तथा उसकी क्षमताओ से ग्लेन पेज का परिचय कोरियाई युद्ध के लिए प्रशिक्षण तथा इस युद्ध में हत्याओं में भाग लेने के दौरान हुआ। अकादमिक पेशे में शिक्षक-विद्यार्थी के रूप में लौटने पर अध्ययन के विषय के रूप में इन्होंने राष्ट्रों के मध्य संबंधों में सरकार के महत्त्वपूर्ण सदस्यों के द्वारा विदेश नीति निर्माण संबंधी निर्णय प्रक्रिया के अध्ययन को चुना। (स्नाइडर, ब्रक तथा सैपिन 1962)। कई भाषाओं में पारंगत होने तथा समाज शास्त्रों के विस्तृत ज्ञान के कारण इन्होंने राजनीतिशास्त्र के कई उपविषयों में योगदान दिया। (उदाहरणस्वरूप पेज 1977) अपने पचास वर्षों के अध्ययनकाल के बीचों बीच जब ग्लेज पेज ने अपने जीवन के लक्ष्य का विवेचन किया तब इन्होंने पाया कि इनका चिंतन विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से हत्या की समस्या, लक्ष्य, परिस्थितियों तथा संभावनाओं तथा वैकल्पिक हत्या-विहीनता की शिक्षा व सार्वजनिक व्यवहार की ओर प्रेरित है। अत: यह पुस्तक जो पाठकों के सामने है, लेखक के अध्ययन काल के उत्तरार्द्ध का फल है जिनका चिंतन हत्या के पूर्वानुमानों को चुनौती देता हुआ वैकल्पिक हत्यामुक्त राजनीतिशास्त्र के वक्तव्य मे परिणत होता है।

मैं लेखक को चार दशकों से भी अधिक समय से जानता हूँ। इन चार दशकों में विकसित अहिंसा के प्रति जागृति की हम प्रशंसा करते हैं तथा हत्या व हत्या की धमकी के भार, विस्तार तथा क्षेत्र के विकास की भर्त्सना करते हैं। लेखक के साथ केवल मित्रता या उसके प्रति मेरा सम्मान ही (हालाँकि दोनों अत्यधिक हैं) मुझे इस पुस्तक के महत्त्व को उन लोगों के बीच प्रस्थापित करने के लिए प्रेरित नहीं करता है जो अहिंसक वैश्विक व्यवहार के साथ अपने को जोड़ते हैं और विश्व के किसी भी संप्रदाय अथवा क्षेत्र से होने के बावजूद मेरे सह-वैश्विक, लोकतांत्रिक नागरिक हैं। इसकी प्रेरणा हैं वे वैज्ञानिक व विद्वत्तापूर्ण विषय जो विस्तार व शांति के मूल्यों के निर्माण व भागीदारी में, न कि संकुचित व हिंसक सहभागिता में मानवता की रुचि दिखलाते हैं।

इस पुस्तक का एक राजनीति शास्त्री के द्वारा लिखा जाना इसकी ताकत भी है और कमज़ोरी भी। 'राजनीति शास्त्र' वह अंतिम समाजशास्त्र है जो विज्ञान को उसके आधुनिक अर्थ में समझता है। एक शास्त्र के रूप में यदि यह 'विज्ञान' कहलाने योग्य है तो इसकी सीमाओं का विस्तार इसकी संकुचित विज्ञान होने की कमज़ोरी को ढक देता है। इस श्रेष्ठता के कारण एक नई शाखा अथवा अनुकूलन का जन्म हुआ है जो 'नीति विज्ञान' (Policy Science) के नाम से जाना गया। 'नीति विज्ञान' एक ऐसा विज्ञान है जो अलग-अलग मूल्यों तथा तरीकों का प्रयोग कर सामाजिक घटनाओं को एक 'समस्या' के दृष्टिकोण से देखता है (लासवैल तथा मैकगल 1992) पेज की यह रचना मानव सम्मान संबंधित नीति अनुकूलित समाज शास्त्र की समकक्ष है तथा उसे परिष्कृत करने में रचनात्मक रूप से योगदान देती है।

मैं यह सब अपने पिछले पचास सालों की समझ और शक्ति संबंधित संस्थाओं के अनुभव के आधार पर लिख रहा हूँ। यह अनुभव मुझे अमरीका के विभिन्न कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में रहते, अध्ययन करते, पढ़ाते तथा प्रशासन में हिस्सा लेते हुए, हुआ। इन कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में मैंने यह अनुभव अमरीका के स्थानीय, राज्य-स्तरीय तथा राष्ट्रीय स्तरों पर सामुदायिक शक्ति-प्रक्रियाओं के अध्ययन के विशेषज्ञ के रूप में प्राप्त किया। मैंने अपने प्रशासनिक अनुभवों से एक शिक्षा यह ली कि कॉलेजों के सीमित प्रांगणों में हत्या तंत्र एवं उससे संबंधित व्यक्तियों/कर्मियों की उपस्थिति को हम में से अधिकतर लोग अनदेखा कर जाते हैं। जब इस ओर ध्यान आकर्षित करवाया भी जाता है तो हम इस तरह की उपस्थिति को 'व्यवसाय की आवश्यकता' की श्रेणी में डाल उनका औचित्य ठहराने की कोशिश करते हैं। जिस प्रकार से हमारे कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों के कार्यकलापों व प्रशासन को चलाया जाता

है, वह एक कारोबार से भिन्न नहीं है। प्रशासन, प्रबंधन, संगठन और तकनीकी ज्ञान बढ़ाने वाले विद्यालय एक प्रकार के कारोबार हैं जो वाणिज्य तथा वित्तीय क्षेत्र में देश की प्रगति का निर्धारक है।

अन्य सामाजिक क्षेत्रों की तुलना में राजनीतिक जीवन में बल प्रयोग की केंद्रीय भूमिका स्पष्ट नज़र आती है। राज्य की परिभाषा में तो यह है ही, इसका अस्तित्व सार्वजनिक व्यवस्था के लिए बनाए गए बजट, आंतरिक सुरक्षा, विदेश तथा प्रतिरक्षा नीतियों में भी है। राजनीतिक संगठनों में निर्वाचित कर्मचारियों की 'शेरिफ' (sheriff) पर सुरक्षा के लिए निर्भरता तथा चुनाव अभियानों के लिए धन हत्या-संबंधी उद्योगों से प्राप्त करना भी यही दर्शाता है। यहाँ तक कि हमारे घरों, स्कूलों, अस्पतालों तथा उपासना के स्थलों में जो सुविधा व सुरक्षा सामुदायिक पुलिस के द्वारा प्रदान की जाती है, उसमें भी बल का अस्तित्व है।

इस प्रकार, राजनीति शास्त्र के एक ऐसा विषय होने के नाते से जो शक्ति संस्थाओं तथा उनके भागीदारों के अध्ययन का विशेषज्ञ है, यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह शक्ति तथ्य की भूमिका तथा व्यवहार की विस्तृत समझ में योगदान देगा। राजनीतिशास्त्र ने इस दिशा में कदम बढ़ाया भी है। यदि हम अमरीकी राजनीति, तुलनात्मक राजनीति व अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की परिचयात्मक पुस्तकों पर नज़र दौड़ाए तो हम पाएंगे कि इनमें सरकारों के अंतर्संबंधों में हिंसा तथा बल प्रयोग को सांस्कृतिक अनियमितता के रूप में लिया गया है न कि केंद्रीय विषय के रूप में। आधुनिक राजनीति विज्ञान की यह सीमित स्थिति ग्लेन पेज के द्वारा हत्या विहीनता के विचार की केंद्रीय परिकल्पना को स्वागत योग्य बनाती है। पेज की इस पुस्तक में हमें हत्या की समस्या के निराकरण संबंधी महत्त्वपूर्ण बौद्धिक क्रियाकलाप मिलेंगे जो लक्ष्य स्पष्ट करने में सहायक होंगे। इस पुस्तक में हम ऐसे झुकावों के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा ऐसे आधारभूत तत्त्वों का अध्ययन करेंगे जो यदि अब रोके न गए तो हत्या की समस्या को दूर करने के बजाए, उसे जारी रखेंगे।

इस पुस्तक में उन वैश्विक नीतियों की दिशा परिवर्तन का प्रयास किया गया है जो हितैषी झुकावों के होते हुएभी हिंसा को अब तक बढ़ावा देती रही है। अब शायद यही नीतियां हिंसा का विरोध करेंगी। यह पुस्तक हत्यामुक्त विकल्पों के विकास के प्रोत्साहन की नींव रखेगी। इस प्रकार के प्रयास संयोग के साथ-साथ सकारात्मक व्यवहार को जोड़ेंगे। आजकल के नव विकसित सांस्कृतिक विकास क्रम में अनुवांशिक विकास के स्थान पर मानसिक प्रतीकात्मक विकास से उत्पन्न परिप्रेक्ष्यों के अनुरूप यह प्रयास होगा। आज किताबों तथा पत्रिकाओं में सांस्कृतिक अथवा 'सह विकास' की काफी चर्चा है।

हालाँकि ये सिद्धांत अभी भी पूर्ण रूप से स्थापित व्यवस्थाओं में नहीं अपनाए गए है फिर भी इनकी प्राचीन व्याख्याएं स्पष्ट तथा सुलभ हैं।

इन व्याख्याओं के आधार पर हम हत्यामुक्त विचारों, संस्थाओं तथा व्यवहारों के विकास की दिशा एवं संभावनाएं तय कर सकते हैं। (डॉकिन्स, 1976 एवं 1989)

अहिंसा का विचार (विषयवस्तु, प्रतीक, विचार, व्यवहार) अन्य विचारों की तरह ही जीवित रहता है अथवा समाप्त हो जाता है। ठीक उसी तरह जैसे विद्वान मानते हैं कि आनुवांशिकताएँ जीवित रहती हैं अथवा समाप्त हो जाती है। जीवन या मरण अपनी अनुकृति करने की अथवा प्रतिस्पर्धा की क्षमताओं पर निर्भर है। अहिंसा के विचार की लंबी आयु इसकी पुनरावृति तथा प्रतिकृति को बढ़ावा देती है। यह तथ्य अहिंसा के विचारीय विकास में फायदेमंद सिद्ध होता है। अहिंसा के विचार की यह श्रेष्ठता मानव स्मृतियों, उपासना के संग्रहों, विश्वासों, गीतों, कविताओं और शांतिपूर्ण परिप्रेक्ष्यों तथा कार्यकलापों में दर्ज है। सांस्कृतिक स्मृतियों में संरक्षित होने के अतिरिक्त अहिंसक व्यवहारों की पुनरावृत्ति सरल है। ऐसी ही पुनारावृत्ति राष्ट्रों के सेना न रखने तथा समुदायों के मृत्युदण्ड समाप्त करने के निर्णयों में यह पुनरावृत्ति हुई है। शांति पर अनुसंधान करने वाली संस्थाओं तथा मध्यस्थता द्वारा विवादों तथा संघर्षों को समाप्त करने वाली सेवाओं में भी इसकी पुनरावृत्ति देखी जा सकती है। अहिंसा के विचार की उत्पादकता का अंदाजा यहाँ से लगाया जा सकता है कि इसकी अनुकृति कितनी आसानी से की जा सकती है तथा की जाती रही है। हत्यामुक्त संस्थाओं को जीवित रखने के लिए यह भी आवश्यक नहीं है कि इस विचार की हू-ब-हू अनुकृति की जाए। विभिन्न संस्कृतियों, वर्गों, हितों, व्यक्तियों, परिस्थितियों में अहिंसा की विभिन्नताएँ वैकल्पिक हत्यामुक्त नीतियों की दिशा में नये प्रयोग प्रस्तुत करती हैं।

इस विचार के नवप्रवर्त्तन की प्रतिकृति की सफलता इस बात पर निर्भर है कि यह किस प्रकार के पोषक अथवा असमर्थक स्रोत से जा मिलती है। आज जब विश्व समाज के विभिन्न क्षेत्रों में मूल्य परिवर्तन दृष्टिगोचर है तो इससे बेहतर अवसर हत्यामुक्त विचारधारा के लिए नहीं उपलब्ध हो सकता। यह बात गौरतलब है कि बीसवीं शताब्दी में ही वास्तविक प्रजातांत्रिक राज्यों का जन्म, प्रस्थापन तथा प्रसार हुआ। (कैरेटनिकी Karatnycky 2000) पीछे हटने, प्रति गमन या गति धीमी होने के बावजूद लोकतंत्रीकरण की स्थिरता और विकास का भविष्य उज्ज्वल है। प्रजातांत्रिक शासक अप्रजातांत्रिक शासकों की तुलना में युद्ध के कम इच्छुक होते हैं ऐसे प्रमाण हमें लगातार मिलते रहे हैं (ओनीत

तथा रसेट 1999; गोवा 1999)। इसी प्रकार संहार के दूसरे कारण अकाल के विषय में भी अलोकतांत्रिक शासकों की तुलना में लोकतांत्रिक शासक उचित नीति अपनाते हैं। (सेन, 1999, 51-3, 155-7, 179-82)

लोकतांत्रिक युग के साथ साथ उत्तर आधुनिक विचार का भी आगमन हुआ है जिसके अनुसार विस्तृत सहभागिता की अपेक्षा अन्य मूल्यों से भी की जाती है केवल शक्ति व धन की प्राप्ति या आबंटन से ही नहीं।

समूचे विश्व में आत्म सम्मान व दूसरे के प्रति सम्मान रखने वाली आस्था हत्यामुक्त विचारधारा की पोषक है। इसी तरह के विचार हत्या से संबंधित संस्थाओं में भी जगह बना रहे हैं। पुलिस अब दंगों तथा विरोध-प्रदर्शनों को ज्यादा कुशलतापूर्वक व शांति से संभालती है। सैनिक विश्व में मान्य सिद्धांतों के आधार पर जीत प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। समाज के अन्य क्षेत्रों में भी दुर्व्यवहार तथा हत्या के विकल्प नज़र आ रहे हैं जैसे फेवर गृह (Favor House) अहिंसा संबंधी पाठ्यक्रम तथा अंतरात्मा के आधार पर विरोध करने वालों को नया विस्तृत दर्जा दिया जाना।

अत:, माननीय पाठक, आपके सामने विज्ञान तथा नीति की यह विशेष कृति प्रस्तुत है। आपको यह अधिकार है और वास्तव में आपसे यह अनुरोध भी है कि आप उस समय तक अपने निर्णय को सुरक्षित रखें जबतक आप इस पुस्तक के हत्यामुक्त वैश्विक राजनीतिशास्त्र के तर्कों से पूरी तरह अवगत नहीं हो जाते। यदि आप इन तर्कों से सहमत नहीं हों तो उस बहुल संस्कृति का सुकून उठाइए जो अभी भी प्रकट अथवा अप्रकट रूप से हत्या को संवैधानिक मानती है। यदि आप सहमत हो जाते हैं तो आपके लिए अवसरों के जटिल गढ़ में स्थान सुरक्षित है। जहाँ आप समान परिप्रेक्ष्य वाले हर समाज, वर्ग, हित तथा व्यक्तित्व वाले स्त्रियों व पुरुषों के जागरण की प्रेरणा बन सकेंगे। इस प्रकार के स्त्री व पुरुषों के किसी भी स्तर के संकट या तनाव में आप बल प्रयोग के स्थान पर अनुनय करने वाली रणनीति का प्रयोग करते हुए मानव सम्मान के संभावित वैश्विक राज्य के मूल्यों को प्रभावित कर सकेंगे।

अध्याय-1

क्या एक अहिंसक समाज संभव है?

किसी के द्वारा पूछे गए एक सामान्य प्रश्न से दर्शनशास्त्र की उत्पत्ति होती है, और विज्ञान की भी। – बर्ट्रेण्ड रसल

किसी राष्ट्र द्वारा उठाए गए प्रश्न ही उसके राजनीतिक विकास का मापदण्ड हैं और उसके असफल होने का कारण प्राय: यही होता है कि उसने अपने आप से सही प्रश्न नहीं किया। – जवाहरलाल नेहरू

क्या अहिंसक समाज संभव है? यदि नहीं, तो क्यों? और यदि हाँ, तो क्यों?

'अहिंसक समाज' का क्या अर्थ है? यह एक ऐसा मानव-समुदाय है, जिसमें छोटे से लेकर बड़े तक, स्थानीय से लेकर विश्व-स्तर तक, कोई भी किसी मनुष्य को तो मारता है न ही मारने की धमकी देता है। मनुष्यों को मारने के लिए न तो हथियार बनाए जाते हैं, न ही उनके प्रयोग का कोई औचित्य होता है। समाज का कोई भी स्वरूप भय पर नहीं टिका होता है। इसी प्रकार समाज में परिवर्तन लाने तथा इसका स्वरूप यथावत् रखने के लिए मारक शक्ति का सहारा नहीं लिया जाता।

अहिंसक समाज की परिभाषा देते हुए कहा जा सकता है कि अहिंसक समाज वही है जहाँ न तो मनुष्यों का संहार होता है और न ही उन्हें मारने की धमकी दी जाती है। मनुष्यों का संहार न करना इस समाज की बुनियादी विशेषता है हालाँकि इसमें पशुजगत् तथा अन्य जीवों की हत्या न करना भी

शामिल किया जा सकता है। इस समाज में मारने की धमकी का अस्तित्व ही नहीं और यह स्थिति आतंक के कारण नहीं उत्पन्न की जाती।

ऐसे समाज में हत्या के हथियार हैं ही नहीं (सिवाय अजायबघरों में जहाँ मानव-जाति के खून-खराबे का इतिहास दर्शाया गया हो)। ऐसे समाज में किसी के भी प्राणों का हरना किसी भी दृष्टि से वैध नहीं माना जाता। यह सही है कि किसी को मारने के लिए हथियारों की आवश्यकता नहीं पड़ती, उसके लिए तो लात और घूँसे ही काफी हैं-परंतु इस क्षमता का प्रयोग करने की भी इस समाज में न तो इच्छा मौजूद है और न ही तकनीकी तौर पर इसका प्रसार करने की प्रवृत्ति। यहाँ धर्म संहारकता को पवित्रता नहीं प्रदान करता और न ही हत्या के धर्मादेश मौजूद हैं। शासन भी इसे वैध नहीं मानता। देश-भक्ति को इसकी आवश्यकता नहीं। क्रांतिकारी भी इसकी अनुमति नहीं देते। जनमानस इसे अमरता प्रदान नहीं करता। सहज बुद्धि इसकी सिफारिश नहीं करती। आज के युग के कंप्यूटर की भाषा में यदि कहा जाए तो कह सकते हैं कि इस समाज में खून-खराबे का न तो 'हार्डवेयर' (संरचना) मौजूद है और न ही 'सॉफ्टवेयर' (कार्यक्रम)।

ऐसे समाज की संरचना खून-खराबे पर आधारित नहीं है। ऐसा कोई भी सामाजिक संबंध नहीं है जो स्थिति को बनाए रखने तथा उन्हें परिवर्तित करने के लिए हिंसा की अपेक्षा रखता हो। प्रभुत्व व बहिष्कार के किसी भी संबंध (सीमाओं, विभिन्न प्रकार की सरकारों, संपत्ति-संबंधी, लिंग, जाति, वर्ग तथा आध्यात्मिक या धर्म-निरपेक्ष समुदाय संबंधी, विषय) को समर्थन अथवा चुनौती देने के लिए खून-खराबे की आवश्यकता नहीं पड़ती। परंतु इससे यह अर्थ नहीं निकाला जा सकता कि ऐसा समाज बंधनहीन, भिन्नता रहित अथवा संघर्षमुक्त है। इतना निश्चित है कि समाज की संरचना एवं प्रक्रियाएँ हिंसा पर आधारित नहीं। कोई ऐसा व्यवसाय नहीं है, वैध अथवा अवैध, जिसका उद्देश्य हत्या हो।

इस प्रकार अहिंसक समाज में जीवन की यह विशेषता है कि यहाँ न तो मनुष्यों की हत्या होती हैं और न ही उन्हें हत्या की धमकी दी जाती है। यहाँ न तो हत्या की तकनीकें मौजूद हैं और न ही उनको उचित ठहराने की गुंजाइश। कोई भी सामाजिक स्थिति हत्या की धमकी अथवा उसके प्रयोग पर निर्भर नहीं।

क्या अहिंसक समाज संभव है?

पिछले खण्ड में उठाए गए इस प्रश्न का उत्तर व्यक्तिगत अनुभव, व्यावसायिक प्रशिक्षण, सांस्कृतिक परिवेशों की शर्तों से युक्त होगा-इन सभी

कारकों का प्रयोग राजनीति शास्त्र के विद्वान् दूसरों के व्यवहार की व्याख्या करने के लिए करते आए हैं, तथा इनके प्रभाव से वे स्वयं भी अछूते नहीं।

"यह हमारी सोच से परे है!" –

यह सर्वसम्मति से दिया गया उत्तर था जब एक ग्रीष्मकालीन सेमिनार के दौरान बीस अमरीकी राजनीति शास्त्रियों से लगभग ऐसा ही प्रश्न किया गया था। इस सेमिनार का आयोजन 'नेशनल एनडाउमेण्ट फॉर ह्यूमॅनिटीज़' ने 1979 में पाश्चात्य राजनीतिक दर्शन के कॉलेज प्रशिक्षण पर पुनर्विचार के लिए किया था। जो प्रश्न पूछा गया था वह था **'क्या अहिंसक राजनीति तथा अहिंसक राजनीति शास्त्र संभव है?"** इस सेमिनार में अमरीकी राजनैतिक विज्ञान के चार प्रमुख क्षेत्रों को समान रूप से प्रतिनिधित्व दिया गया था। ये थे राजनीतिक सिद्धांत, अमेरीकी सरकार, तुलनात्मक राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध। संगोष्ठी में एक को छोड़ कर सभी विद्वान् पुरुष थे। संगोष्ठी के तीन प्रत्युत्पन्न तर्कों ने प्रश्न को दृढ़तापूर्वक स्थापित कर विवाद का अंत कर दिया। प्रथम- मनुष्य स्वभाव से हिंसक है। वह ऐसा ख़तरनाक सामाजिक पशु है, जो हिंसा के लिए सदैव ज़िम्मेदार है। द्वितीय- अल्प संसाधन हमेशा ही प्रतियोगिता, संघर्ष और हिंसा के कारण बनेंगे। तृतीय- सदैव आशंकित बलात्कार की संभावना के कारण संबंधित महिलाओं की रक्षा के लिए पुरुषों की तत्परता हिंसा की अपेक्षा रखती है। (यहाँ अमेरीकी महिलाओं के इस तर्क पर चुप्पी साध ली गई कि यदि कोई मेरे बच्चे को मारने की धमकी देता है तो मैं उसे मार दूँगी)। इसके साथ ही अहिंसक राजनीति की संभावना का प्रतिप्रश्न भी अनुत्तरित ही रहा कि आप हिटलर और 'होलोकास्ट को अहिंसा से कैसे रोकेंगे? मानव स्वभाव, आर्थिक तंगी, यौन आक्रमण जैसे प्रश्नों ने हत्यामुक्त राजनीति के विज्ञान और व्यवहार को अविचारणीय बना दिया है।

उनके अनुसार तात्कालिक दृष्टि से पुनर्विचारित, पश्चिमी राजनीतिक विचारों से संबंधित, विशिष्ट ग्रंथों (classics) का उल्लेख भी इस विषय में अनावश्यक है। चीन में दण्ड देने की न्यायसम्मत परंपरा और भारत में कुटिल कौटिल्य भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचती हैं। अच्छे समाज की रचना व संरक्षण के लिए स्पष्ट व निहित रूप में हिंसा के लिए तत्परता को आवश्यक समझा गया है।

प्लेटो (427-347 ई॰पू॰) के आदर्श राज्य 'रिपब्लिक' में हम पाते हैं कि दार्शनिक शासक (गार्जियन्स), जो योद्धा वर्ग से लिए जाते हैं उत्पादन करने वाले समूहों तथा गुलामों पर बल के द्वारा शासन करते हैं। इस संबंध में लियोन हैराल्ड क्रैग की टिप्पणी उल्लेखनीय है कि एक निरपेक्ष प्रेक्षक इस तथ्य की

शायद ही उपेक्षा कर सके कि प्लेटो के 'रिपब्लिक' में युद्ध को राजनीतिक जीवन, वरन् संपूर्ण जीवन का आधारभूत तथ्य माना गया है। जिसका प्रत्येक महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते समय ध्यान होना चाहिए (क्रैग 1994; 17; सैगन 1979) अरस्तू के 'पॉलिटिक्स' में (384-322 B.C.E.) पसंदीदा राज्य जो चाहे एक व्यक्ति, कुछ व्यक्तियों अथवा बहुतों द्वारा शासित हो-संपत्तिधारक वर्ग शासन चलाने के लिए अपने पास हथियार रखते हैं तथा सेना को गुलामों को वश में रखने के लिए तथा शत्रु पक्ष द्वारा गुलामीकरण की प्रक्रिया के रोकने के लिए आवश्यक मानते है। न तो प्लेटो और न ही अरस्तू सैनिक घातकता की समस्या की स्थायी मौजूदगी पर कोई प्रश्न करते हैं।

अति-प्रशंसित मैक्यावली (1469-1527) अपनी पुस्तक 'द प्रिंस' में शासकों को अपनी शक्ति कायम रखने के लिए तथा राज्य की अस्मिता (virtu) के विस्तार, प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि के लिए खून-खराबे को वैध ठहराता है। 'लोमड़ी' का धूर्ततापूर्ण शासन बेहतर है, परंतु यदि आवश्यकता पड़े तो शासकों को 'सिंह' की घातकता से परहेज नहीं करना चाहिए। वह गणतंत्र की शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए नागरिक सेना (militia) के गठन का भी निर्देश देता है। टॉमस हॉब्स भी (1588-1679) 'लेवायथन' में युद्ध में विजय की प्राप्ति तथा सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सरकार द्वारा हिंसा को उचित बताता है। चूँकि मनुष्य स्वभाव से हिंसक है एक प्राकृतिक राज्य में असंगठित जीवन उपद्रव का कारण बनता है। परंतु मनुष्य में जिजीविषा है इसलिए वह केंद्रीय विधान को जो उसे प्रदान सुरक्षा करे, को स्वीकार करता है। इस विधान के पास सुरक्षा के लिए हत्या करने की शक्ति भी है, जिस प्रकार मनुष्य अपने पास आत्मरक्षा के लिए वध करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। बस, हॉब्स सशस्त्र विद्रोह को वैध ठहराने के अगले कदम को लेने से पहले रुक जाता है।

यह काम जॉन लाक द्वारा (1632-1704) 'सरकार पर टिप्पणी' (Two Treatises of Government) में पूरा किया है। लॉक, प्लेटो, अरस्तू, मैक्यावेली और हॉब्स के इस मत से सहमत हैं कि राजनीतिक शासन मनुष्य को हिंसा के लिए तत्पर करता है परंतु वह क्रांतिकारी प्रहारकता के औचित्य के विषय में हॉब्स से आगे निकल जाता है। जब एक प्रभुत्व संपन्न प्राधिकरण मनमाना व अत्याचारी हो जाए तथा मूलभूत अधिकारों का हनन करे एवं निर्दय तथा हिंसक हो जाए, तब दमित नागरिकों का यह अधिकार तथा कर्त्तव्य है कि वे ऐसे शासन तंत्र को ठीक उसी प्रकार उखाड़ फेंके जैसे एक प्राकृतिक राज्य में हत्यारे को मारा जा सकता है। सभ्य समाज के नागरिकों को, निरकुंश शासक को नष्ट कर देना चाहिए।

हॉब्स तथा लॉक के शासक-शासित परस्पर संहारकता के दोहरे औचित्य के सिद्धांत का विस्तार कार्ल मार्क्स और फेडरिक एंगल द्वारा आर्थिक वर्ग संघर्ष के रूप में 'कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो' में कर दिया गया है। संपत्ति संपन्न वर्ग यह आशा कर सकता है कि वह प्राण-घातक शक्ति के द्वारा अपने हितों को संरक्षित करे तथा उनका संवर्द्धन करे। किंतु जब भौतिक तथा सामाजिक संबंध एक नाजुक अवस्था में पहुँच जाते हैं तब शोषित वर्ग, समाज के आर्थिक तथा राजनीतिक ढाँचे को बदलने के लिए क्रांति कर सकता है। कुछ विशेष दशाओं में, आधुनिक चुनावी प्रक्रिया से युक्त प्रजातंत्र पद्धति में शांतिपूर्ण परिवर्तन संभव है। भविष्य में किसी समय जब आर्थिक शोषण का अंत हो जाएगा, तब वर्ग आधारित प्रहारक राज्य समाप्त भी हो जाएंगे किंतु संक्रमण काल में आर्थिक कारण हिंसा के प्रति झुकाव को बनाये रखेंगे।

लॉक और **मार्क्स** के मध्य काल में, **हॉब्स** के ही शब्दों की प्रतिध्वनि करने वाले, ज्यां याक रूसो ने (1712-1778 में) "The Social Contract" में, राज्य के राजनीतिक संगठन के आधार के रूप में, 'सामाजिक-संविदा' के सिद्धांत का प्रस्तुतीकरण किया है। सामूहिक रूप में, नागरिक, राज्य के सम्प्रभु तथा प्रजा, दोनों ही है। वे ही दोनों का निर्माणकर्त्ता भी हैं। रूसो एक ऐसे शासन करने वाले भावी प्राधिकरण के आदेशों के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करते हैं जो कि 'सामान्य इच्छा' से संचालित कानूनों को बनाता और उसका अनुशासन करता है। संविदा के अंतर्गत राज्य, युद्ध और विजय के अधिकार का दावा कर सकता है, राजद्रोही को फाँसी दे सकता है। अपराधियों को जान से मार सकता है। शासक नागरिकों से राज्य की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने का निर्देश दे सकता है।

जब कोई शासक-प्राधिकरण किसी नागरिक को यह आदेश देता है – **'तुम्हें राज्य के हित के लिए बलिदान हो जाना चाहिए'** तो इसका अर्थ यह है कि उसका जीवन, प्राकृतिक उपहार नहीं है, बल्कि राज्य द्वारा प्रदत्त एक सशर्त उपहार है - (The Social Contract Book II, अध्याय V) - अंततः **रूसो** की लोकतांत्रिक सामाजिक संविदा प्रहारकता से युक्त है।

बीसवीं शताब्दी में जर्मनी के प्रभावशाली राजनीतिक अर्थशास्त्री एवं समाजशास्त्री, **मैक्स वेबर** ने अपनी कृति 'Politics as a Vocation' में, जो कि मूल रूप में म्यूनिख विश्वविद्यालय में 1918 में दिया गया एक भाषण है, क्रमशः इस विचार का खण्डन कर दिया कि राजनीति एक अहिंसक उद्यम है। वेबर की दृष्टि में हिंसा राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। ऐतिहासिक रूप से सभी प्रभावशाली राजनीतिक संस्थाएँ, शक्ति के लिए हिंसक संघर्ष से पैदा

हुई हैं। तदुपरांत वेबर आधुनिक राज्य की परिभाषा देते हुए कहता है कि 'राज्य वह मानव समुदाय है जो निश्चित क्षेत्र में शारीरिक शक्ति के औचित्यपूर्ण प्रयोग के एकाधिकार का सफलतापूर्वक दावा करता है। अत: अपनी तथा दूसरों की आत्मा की खोज करने वाले को राजनीति के मार्ग से अलग जाना होगा क्योंकि राजनीति में इससे बिल्कुल भिन्न कार्य किए जाते हैं और वे भी केवल हिंसा से। (वेबर 1958, 121, 78, 126)

इस संदर्भ में यह समझ में आता है कि वेबर तथा उसके पूर्ववर्ती दार्शनिकों की परंपरा में निपुण आचार्य अहिंसक राजनीति एवं अहिंसक राजनीति शास्त्र को "अविचारणीय, अथवा सोच से परे" समझें। एक वरिष्ठ राजनीति शास्त्री के सामने जब उनके एक विद्यार्थी ने यह इच्छा व्यक्त की कि वे 'राजनीति', जिसका अध्ययन वे जीवनभर करते आए हैं, को परिभाषित करें तो उनके उत्तर में यही मूलभूत विश्वास/झुकाव नज़र आया। अपने पाईप का कश लेते हुए उन्होंने उत्तर दिया "मैं राज्य की संहारक शक्ति का अध्ययन करता हूँ।"

धर्मों द्वारा अनुमोदित, हिंसा को स्वीकार करने वाली दार्शनिक परंपरा की प्रतिध्वनि संपूर्ण संयुक्त राज्य अमरीका के राजनीतिक इतिहास तथा संस्कृति में भी सुनाई देती है। विद्वान नागरिकों का यह दृढ़ विश्वास है कि अहिंसक समाज संभव नहीं है। उन्होंने इसे लेक्सिंगटन में, बंदूकों की गूंज में, जिसने कि अमरीकी क्रांति को जन्म दिया, सुना। स्वतंत्रता की घोषणा में लॉक की क्रांति के संदेश को उचित ठहराती घोषणाओं में इसे सुना गया। 'स्वतंत्रतापूर्वक जियो अथवा भर जाओ' के न्यू हैम्पशायर के विद्रोही नारों में इसकी गूंज थी। परिसंघ पर संघ की विजय के प्रेरक 'गणतंत्र के युद्धगीत' (Battle Hymn of the Republic) में तथा 'डिक्सी' (फौजी रसोइयों के द्वारा गाए जाने वाले गीत) अनुवादक की चुनौती भरी टेक में इसे सुना गया। इसके स्वर सुने गए दूरस्थ स्थानों पर विजय के द्योतक नाविक गीतों (Marine Hymns) में। ये गूंजित हैं, राष्ट्रपति के उद्घाटन समारोह की इक्कीस तोपों की सलामी में जो राष्ट्र के हिंसक अतीत और वर्तमान सैन्य बल की याद दिलाते हैं। राष्ट्रपति के 'ईश्वर अमरीका को आशीर्वाद दे' से अभिमंत्रित, बलिदान तथा संहार की भावनाओं को प्रेरित करने वाले ध्वज, राष्ट्रगीत और सशस्त्र रक्षकों के संयुक्त अनुष्ठान में ये आजीवन दोहराए जाते हैं (ट्वेन 1970)

हिंसा ने संयुक्त राज्य अमरीका के उद्भव, क्षेत्रीय विकास, राष्ट्रीय एकता और विश्व शक्ति के रूप में विस्तार में योगदान दिया। मृत तथा घायल, क्षेत्रीय और विदेशी, सैनिक और नागरिकों की कभी गिनती नहीं हुई और संभवत: अगणनीय हैं, परंतु अमरीका की प्रहार शक्ति को नकारा नहीं जा सकता।

लेखक दूसरे देशों के राजनीति शास्त्रियों को आमंत्रित करता है कि वे अपनी-अपनी राजनीतिक व्यवस्थाओं में भी गणना करें कि अमरीका की तुलना में कितने अधिक अथवा कम लोग वहाँ मारे गए हैं।

अमरीका में नए राष्ट्र का आरंभ औपनिवेशिक राजतंत्रीय शासन के विरुद्ध सशस्त्र गणतांत्रिक विद्रोह से हुआ, जबकि देश में गुलामों को दासता की ज़ंजीरों से रखा हुआ था। स्वतंत्रता के परचम तले मूल-निवासियों पर रक्त-रंजित विजय प्राप्त कर, बल प्रयोग द्वारा उत्तर व दक्षिण के पड़ोसी देशों से तथा धन देकर ऐसे व्यापारियों द्वारा ज़मीनें खरीदी गईं जो युद्ध के बजाय वाणिज्य को बेहतर समझते थे- और इस प्रकार इस नए राष्ट्र ने अपनी महाद्वीपीय सत्ता का विस्तार किया। राष्ट्रीय एकता पर थोपे गए इस गृह युद्ध में 74,542 परिसंघीय (Confederate) सैनिक और 140, 414 संघ समर्थक (Unionist) मारे गए।

अमरीकी राज्य के बाहर समुद्र पार अपना विस्तार करते हुए अमरीका ने हवाई, पोर्तरिको, गुयाना, फिलीपींस, पूर्वी सोमाया तथा प्रशांत महाद्वीपीय राष्ट्रों को अपने नियंत्रण में ले लिया। फिलीपींस में इसने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जाने वालों को कुचल दिया (1898-1913)। नाविक धमकी के द्वारा इसने अलग-थलग रहने वाले जापान को व्यापार के लिए बाध्य किया (1853-54)।

युद्ध और हस्तक्षेप की नीति के अंतर्गत नवोदित राष्ट्र ने अपने हितों को उजागर किया और उनकी रक्षा की। इसने (1812-14) ब्रिटेन मैक्सिको (1846-48), जर्मनी, आस्ट्रेलिया, हंगरी, टर्की और बुल्गारिया (1916-18), जापान और इटली (1941-45), उत्तर कोरिया और चीन (1950-53), उत्तर वियतनाम (1961-75) और इराक (1991) के खिलाफ़ लड़ाइयां लड़ीं। जहाँ सैनिक हस्तक्षेप किया गया, उन स्थानों में पेकिंग, पनामा, रूस (1918-19), निकारागुआ (1912-23), हैती (1915-34), लेबनान (1958) डोमिनिकन रिपब्लिक (1965-66) तथा सोमालिया (1992), शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने ग्रेनेडा तथा पनामा पर सत्ता परिवर्तन करके तथा हैती पर आक्रमण की धमकी देकर, उन पर अपने शासन को थोप दिया। आक्रमण से इसने कंबोडिया (1970), लाओस (1971) को अपनी इच्छानुसार शासित करना चाहा।

लीबिया (1986), सूडान (1998) तथा अफगानिस्तान (1998) में प्रतिकार करने के लिए तथा इराक (1993) बोस्निया (1993) एवं युगोस्लाविया (1999) में अपने सामरिक हितों को आगे बढ़ाने तथा प्रदर्शित करने के लिए अमरीका ने अपने प्रभाव का प्रयोग किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के पचास सालों में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने, गैर-पूँजीवादी राष्ट्रों, क्रांतिकारियों और अन्य दूसरे प्रकार के शत्रुओं के विरुद्ध विश्वख्यात संघर्ष में, विश्व को अपने परिधि में लाने के लिए अपनी प्राणघातक शक्ति का विस्तार किया। यह संभव हो सका है क्योंकि क्रांति के काल में राष्ट्र की जो सैनिक संख्या 1000 से भी कम थी, 1980 में बढ़कर 15 लाख हो गई (जिसमें स्त्री तथा पुरुष दोनों सम्मिलित थे) पेन्टागन में योजनाकारों की संख्या भी 2300 हो गई। इसके अतिरिक्त नवप्रवर्तक वैज्ञानिक श्रेष्ठता और देश के सर्वोत्तम आधुनिक हथियार उद्योग की बदौलत तथा कांग्रेस तथा राष्ट्रपति द्वारा अनुमोदित कम-से-कम पौने तीन लाख डॉलर वार्षिक कर का भुगतान करने वाले करदाताओं के उत्तरदायित्व से इनका खर्चा निकल पाया। एक संकुचित अनुमान के आधार पर पता चला है कि देश को केवल 1940-90 के दौरान ही अपने परमाणु हथियार कार्यक्रमों पर 5.82। खरब डॉलर खर्च करना पड़ा। श्वार्ट्ज (Schwartz-1998)। संयुक्त राज्य अमरीका के पास अन्य देशों की तुलना में अधिक व्यापक समुद्र-पारीण अड्डे विदेशों में फैली सेनाएँ तथा अधिक सैनिक गठबंधन थे। अमरीका अधिक संख्या में दूसरे देशवासियों को प्रशिक्षित व हथियारयुक्त बना रहा था (जो इनके शत्रुओं, कभी-कभी मित्रों और यहाँ तक कि इनके अपने लोगों की हत्या करने वाले बन जाते थे)। इसके साथ ही दुनिया के प्रतियोगी, लाभदायक हथियारों के व्यवसाय में यह देश हथियारों का प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन गया। अमरीका तकनीकी रूप से अत्यधिक विनाशकारी हथियारों (मानव की प्राणघातक कल्पनाशक्ति की अंतिम कल्पना तक) कर पाई है, के द्वारा भूमि, समुद्र तथा अंतरिक्ष में अपनी संहारक शक्ति को लागू करने में सक्षम हो गया।

1990 के दशक तक युद्ध जनित अमरीका 1776 की स्वतंत्रता की घोषणा से अग्रसर हो 'विश्व की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति तथा सर्वाधिक विकसित अर्थव्यवस्था' के रूप में अपना परिचय देने लगा। (यह बात राष्ट्रपति डब्ल्यू. जे. क्लिंटन ने 19 फरवरी को अपने वार्षिक भाषण में कही थी) तीनों सेनाओं के संयुक्त अध्यक्ष जनरल जॉन शालिकाशिवली के शब्दों में संयुक्त राज्य अमरीका 'विश्व हितों' का ध्यान रखने वाला 'विश्व राष्ट्र' बन गया है। 1995 में आणविक बम द्वारा जापान पर विजय की पचासवीं वर्षगांठ मनाते हुए हवाई (द्वीप) में, राष्ट्रपति ने सभी सेवाओं से संबंधित सैनिकों का इस प्रकार उद्बोधन किया - 'आप हमेशा सर्वोत्तम प्रशिक्षण प्राप्त तथा विश्व के सर्वोत्तम युद्ध शक्ति से सुसज्जित रहेंगे।' उन्होंने घोषणा की कि "हमें धरती पर सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में रहना है जिससे कि हम अपने युग की तामसिक

शक्तियों को परास्त कर सकें।" इस निश्चय की घोषणा चीफ ऑफ स्टाफ जनरल रोनाल्ड फॉजलमैन द्वारा, 1996 में आयोजित हवाई रणनीति की व्याख्या करते समय की गई जब उन्होंने कहा कि अमरीका का उद्देश्य पृथ्वी के सामने घूमने वाली प्रत्येक वस्तु को ढूँढ़ना, ठीक करना, पीछा करना तथा उसे लक्ष्य में निर्धारित करना है।" उन्होंने आगे खुलासा करते हुए कहा, "हम इसे अभी कर सकते हैं, हाँ, कम्प्यूटर की गति से नहीं। (13 दिसंबर, 1999 में हेरिटेज शिलान्यास के समय, वाशिंगटन डी॰सी॰ में दिया गया भाषण)।

जब बीसवीं शताब्दी का अंत करीब था अमरीकी नेता इसे 'अमरीकी शताब्दी' के रूप में मनाना चाहते थे तथा तीसरी सहस्राब्दी की प्रथम शताब्दी को 'द्वितीय अमरीकी शताब्दी' बनाने का निश्चय व्यक्त करना चाहते थे। हिंसक गुणों वाली इस प्रकार की विजय संस्कृति के बीच एक अहिंसक संयुक्त राज्य अमरीका की सहजता से कल्पना नहीं की जा सकती। हिंसा और हिंसा की धमकी ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता का सर्जन किया, दासता को खत्म किया। नाजीवाद तथा फासीवाद को परास्त किया, होलोकास्ट का अंत किया, परमाणु विस्फोट से ग्रस्त जापान में जीवन की रक्षा की, वैश्विक साम्यवादी विस्तार को रोका, सोवियत साम्राज्य के पतन का कारण बना, और अब, 21वीं शताब्दी के संपूर्ण काल में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था तथा लोकतांत्रिक स्वतंत्रता के प्रसार के लिए नेतृत्वकर्ता शक्ति बनने संबंधी दावा प्रस्तुत करता है।

'अहिंसक समाज संभव नहीं' का विश्वास दिलाने के लिए राजनीतिशास्त्र पढ़ने वाले प्रोफेसरों से लेकर आरंभिक विद्यार्थियों को न तो दर्शन की और न ही राष्ट्रीय राजनीतिक परंपरा की आवश्यकता है। प्रतिदिन होने वाली हत्याएँ ही इस बात की पुष्टि करती हैं।

प्रतिवर्ष पंद्रह हजार से अधिक अमरीकी अपने देशवासियों द्वारा मार दिये जाते हैं (1999 में इनकी संख्या थी 15,533, अर्थात् प्रति 100,000 पर 5.7 लोग, जो 1900 में मात्र 1.2 थे)। इस संख्या में पुलिस एवं नागरिकों द्वारा की गई न्यायोचित मानव हत्याएँ सम्मिलित नहीं हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के 750,000 की तुलना में युद्धोपरांत युद्धों में 6,50,053 लोग मारे गए। इन मानव हत्याओं के पीछे 'आक्रामक आक्रमण' कारण रहे (1999 में 916,383; प्रति 100,000 पर 336.1) मारक शक्ति वाले अथवा गंभीर रूप से घायल (चोट) करने वाले हथियारों से प्रहार के शिकार (FBI रिपोर्ट 2000) 13,23,32 हैं। अमरीका के सभ्य समाज में आत्महत्याएँ मानव हत्याओं की तुलना में अधिक हैं (1995 में 31,284, प्रति 100,000,1011,9)। आत्महत्या के लिए प्रयास इससे पच्चीस

(25) गुना अधिक हैं। अनुमानित वार्षिक गर्भपात की घटनाएँ 10,000 से अधिक हैं।

अमरीका में हत्याओं का कारण नागरिक पिटाई, सरकलम, बम-विस्फोट, जलाना, डूबाना, फाँसी, धकेलना, ज़हर देना, छुरा घोंपना, दम घोटना, गला दबाना है। अधिकतम हत्याएँ गोलियों के द्वारा मार दिये जाने से होती हैं (1999 में 64.5)। हत्याएँ पहले से सोची-समझी, अचानक की गई, व्यावसायिक हत्यारों द्वारा तथा दुर्घटना द्वारा होती हैं। इनके साथ ही पति- पत्नी दुर्व्यवहार, बच्चों के साथ कुव्यवहार तथा बड़ों बुजुर्गों के साथ दुव्यर्वहार, बहस, पीकर झगड़ना, गाली देना, झगड़ा (लड़ाई) करना, मद्यपान, नशीले पदार्थों के व्यापार, गुंडों के मुठभेड़, जुआ, जलन, अपहरण, वेश्यागमन, बलात्कार तथा डकैती, अपराध पर पर्दा डालने की कोशिश अथवा 'देवी' या 'शैतानी' शक्तियों के आदेशानुसार कृत्य भी चलते हैं। वस्तुतः कोई भी स्थान- घर, स्कूल, गली, राजमार्ग, कार्यालय तथा पूजा का स्थान, जेल, पार्क, शहर, जंगल और देश की राजधानी - सुरक्षित नहीं है। शिकार को व्यक्तिगत, क्रमवार और सामूहिक अथवा निरुद्देश्य कारणों या रूप में मार दिया जाता है। इनमें अधिकांशतः पुरुष (1999 में 76%) हैं। किंतु 1976-85 के दौरन मारे गए पति-पत्नियों में पत्नियों की संख्या (9,480) पतियों की संख्या (7.115) से अधिक थी मर्सी और साल्ज़ 1989)। हत्यारे अकेले, जोड़े, समूह, धर्म या सांप्रदायिक गुट अथवा राज्य द्वारा विधिनियम व्यवस्था के परिपालन में शासन द्वारा लगाए गए व्यक्ति थे। परिचित हत्यारों में पुरुष प्रमुख थे (1999 में 1,046 महिलाओं की तुलना में 9,140 पुरुष) उत्तरोत्तर ऐसे अपराधों में लिप्त पुरुषों की आयु कम होती जा रही है अर्थात् अब कम आयु के पुरुष ऐसे अपराध करने लगे हैं। 1980 में अनुमान लगाया गया था कि एक अमरीकी के, उसके संपूर्ण जीवन काल में, हत्या का शिकार हो जाने की संभावना श्वेतों के लिए प्रति 240 में एक तथा अश्वेतों एवं अन्य दूसरे अल्पसंख्यकों के मध्य 47 में से एक है। यह जानकारी सीनेट के प्रमुख नेता तथा रिपब्लिकन पार्टी के ट्रेंन्ट लॉट ने राष्ट्रपति क्लिंटन के अभिभाषण पर विचार करते हुए दी। 21 जनवरी, 1998 को राष्ट्रपति ने कहा था -'हिंसापूर्ण अपराध हमारे देश को स्वतंत्रता की भूमि से भय की भूमि में बदलते जा रहे हैं।'

समाचार माध्यम प्रतिदिन अमरीकी संहारकता का प्रमाण प्रस्तुत करता रहता है। एक बेटी ने अपनी माँ का सिर काट कर पुलिस स्टेशन के पास फुटपाथ पर फेंक दिया। एक माँ ने अपने दो बेटों को पानी में डुबोकर मार डाला। दो बेटों ने मिलकर अपने माँ-बाप की हत्या कर दी। संचार माध्यम

बताते हैं कि हत्यारे वेश्याओं का शिकार करते हैं। कोई समलैंगिक कामुक व्यक्ति जवान लड़कों को बहका कर अपनी वासनाओं की पूर्ति करता है तथा उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर फ्रिज में रखकर खाता है। इसी प्रकार कहीं एक बन्दूकधारी व्यक्ति विश्वविद्यालय में 15 लोगों की हत्या कर देता है। दो लड़के एक ग्रामीण माध्यमिक स्कूल में, बंदूक से अपनी चार सहपाठी लड़कियों तथा एक अध्यापक की हत्या कर देते हैं एवं एक अध्यापक तथा नौ से अधिक सहपाठियों को जख्मी कर देते हैं। कोलरोडो के लिटिलटन नामक स्थान पर स्थित 'कोलम्बाइन हाई स्कूल' में हथियारबन्द दो लड़के अपने 13 सहपाठियों को मार देते हैं, 28 को घायल कर देते हैं और फिर आत्महत्या कर लेते हैं। 1996 से 1999 के दौरान स्कूली छात्रों ने, जिनकी आयु 11 से 18 के बीच थी, 27 सहपाठियों, दो अध्यापकों, तीन माता-पिता तथा 65 अन्य दूसरे लोगों को घायल किया। स्वचालित हथियारों से सज्जित एक व्यक्ति, शहरी स्कूल के बच्चों की, उनके खेल के मैदान में हत्या कर देता है। वियतनाम युद्ध से लौटा एक सैनिक अपनी मशीनगन से एक भोजनालय में 20 लोगों को मार देता है तथा 13 अन्य को जख्मी कर देता है। इसी प्रकार सेना का एक वर्दीधारी सिपाही चर्च में उपासकों की हत्या करते हुए चिल्लाता है, "मैं पहले ही हज़ार हत्याएँ कर चुका हूँ और अभी और हज़ार हत्याएँ करूँगा।"

हॉब्स के शिकारी प्रवृत्ति वाले नागरिकों तथा लॉक द्वारा व्यक्त वेबर के राज्य के प्रति आशंकाओं के मुकाबले में आज एक ऐसा राज्य खड़ा है जहाँ कम से कम 70 करोड़ बंदूकें, 65 करोड़ हैण्डगन, 4.90 लाख कम दूरी की बंदूकों तथा 80 लाख अन्य दूसरे प्रकार की लंबी दूरी की बंदूकें (कुक और लुडविंग 1977) हैं। बंदूकों का व्यापार, उत्पादन, विक्रय तथा आयात-निर्यात - एक बड़ा व्यवसाय है जिसमें कि दसों हज़ार वैध एवं अवैध व्यवसायी डीलर लगे हुए हैं। 4.4 करोड़ युवकों के पास पिस्तौल हैं जो अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान में कुल अमरीकी परिवारों का कम-से-कम एक-तिहाई हिस्सा हैं। अधिकांश बच्चों को यह मालूम हैं कि इन बन्दूकों को कैसे हासिल किया जा सकता है भले ही उनके माँ-बाप यह सोचते हैं कि वे ऐसा नहीं जानते। देश की प्रथम महिला, हिलेरी क्लिंटन ने एक रिपोर्ट प्रस्तुत की जो कि बच्चों के सुरक्षा कोष के द्वारा किये गए अनुमान पर आधारित थी। इसके अनुसार प्रतिदिन 13.5 लाख बच्चे स्कूल में बंदूक तथा अन्य दूसरे हथियार अपने साथ लाते हैं। नागरिकों को अपने पास बंदूके रखने का कारण आत्मसुरक्षा, शिकार, मनोरंजन तथा सरकार द्वारा किए गए अत्याचारों को रोकने के लिए एक मौलिक अधिकार के रूप में प्राप्त है। इसकी गारंटी 1791 में अमरीकी संविधान में

किए गए संशोधन द्वारा प्राप्त है जो कहता है कि एक भली प्रकार नियमित सेना जो कि स्वतंत्र राज्य की सुरक्षा हेतु आवश्यक है, के द्वारा लोगों के अपने पास हथियार रखने संबंधी अधिकार का हनन नहीं होना चाहिए।

घरेलू प्रहारों के खतरों का मुकाबला करने के लिए शस्त्रों से सुसज्जित अमरीकी पुलिस है। इसके अंतर्गत कानूनी शक्ति से युक्त संघीय एजेन्ट जमा प्रांतीय तथा स्थानीय पुलिस अधिकारी (1999, 641, 208 अधिकारी, प्रत्येक 10,000 लोगों पर 250) हैं। 1999 में इनमें से 42 शहीद हो गए (F.B.I. 2000 : 91)। राष्ट्रीय गार्ड की प्रांतीय इकाई द्वारा तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की सशस्त्र संघीय सेना द्वारा, जरूरत पड़ने पर इनकी आपूर्ति की जाती है। विभिन्न जेलों में 18 लाख से अधिक कैदी विभिन्न अपराधों के कारण सजा भुगत रहे हैं, जिसमें 1999 में फाँसी की प्रतीक्षा कर रहे 3227 कैदी भी शामिल हैं। पचास में से 38 राज्यों में (Bureau of Justice 2000 b, 2000 a) 1979-99 के दौरान कुल 598 लोगों को मृत्युदण्ड दिया गया। बीसवीं शताब्दी के अंत में हिंसा तथा बढ़ते हुए अपराधों के भय के बीच, मृत्युदण्ड को पुनः लागू करने तथा उसका विस्तार करने के लिए तीव्र स्वर उठने लगे तथा पहले से अधिक पुलिस कर्मियों को सड़कों में नियुक्त करने, सजा लंबे समय की दिए जाने तथा और अधिक संख्या में जेल बनाए जाने की मांगें उठी हैं।

अमरीका में समाज हिंसा सिखाता है तथा संस्कृति उसे पोषित करती है। औपचारिक और अनौपचारिक, वैध और अवैध रूप में लोगों को यह शिक्षा दी जाती है कि हत्या को कैसे अंजाम दिया जाए। अमरीका में 24 लाख से अधिक सैनिक स्नातक हैं और जिन्हें प्रहारकता का व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त है (1999 में 24,8000,000)। प्रत्येक चार युवक में से एक अनुभवी हत्यारा है। बहुत से जूनियर हाई स्कूल, हाई स्कूल महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय प्रारम्भिक सैन्य प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करते हैं। व्यवसाय भी आत्मरक्षा हेतु मारने का प्रशिक्षण देता है। वैयक्तिक सेनाएं भी लड़ाई का प्रशिक्षण देती हैं। गली के गुण्डे हत्या करने के लिए अपना गुट बनाते हैं। जेलें लूटमार का प्रशिक्षण देने के लिए विद्यालय के रूप में कार्य करती हैं। पत्र-पत्रिकाएँ अपने लाभ के लिए लड़ाई की तकनीकी शिक्षा प्रदान करते हैं, हथियार बेचते हैं और हत्यारों को भाड़े पर देने के लिए विज्ञापन देते हैं। वीडियो तथा कम्प्यूटर के खेल युवा 'खिलाड़ियों' को कृत्रिम रूप से गली की लड़ाई, खुले मैदान की लड़ाई, वायु-समुद्र तथा अंतरिक्ष की लड़ाई के तरीके सिखा रहे हैं। उन्हें संहारक तकनीकों में माहिर कर रहे हैं। कृत्रिम व काल्पनिक खेलों का बाज़ार, एड्रेनिल बढ़ाने वाले उत्तेजक मनोरंजन उपलब्ध करा रहे हैं जैसे 'मारो अथवा

मारे जाओगे' का खेल। किसी समय कॉलेज प्रांगणों में 'सहपाठियों की हत्या' का खेल का खेलने की सनक प्रचलित थी। वास्तविक तथा कृत्रिम हत्याएँ बचपन में हथियार के खिलौने से खेलने का ही एक रूप हैं।

प्रायोजित हिंसा की शिक्षा तथा संचार और संप्रेषण द्वारा मानव जीवन को संवेदन-शून्य बनाया जा रहा है। इस दिशा में कार्टून, फिल्म, टेलीविजन तथा रेडियो कार्यक्रमों, गीतों, पुस्तकों, पत्रिकाओं और व्यापारिक विज्ञापनों के निर्माता व रचयिता भी शिक्षा प्रदान करते हैं। मानव मस्तिष्क पर बचपन से लेकर वयस्क होने तक हजारों हिंसक दृश्य अंकित होते हैं जिनमें नायक अथवा खलनायक, नाटकीय ढंग से लोगों, संपत्ति, पशुओं अथवा प्रकृति का विनाश करते हुए दिखाए जाते हैं। विशेष रूप से, सिनेमा के अग्रिम विज्ञापनों में खूबखराबे और क्रूरता के दृश्यों के साथ तेज रफ्तार से बारी-बारी से 'सेक्स' के दृश्य दिखाए जाते हैं। ये संहारकता के प्रति मनुष्य का सम्मोहन बढ़ाते हैं।

आज की तुलना में प्राचीनकाल में कोई ऐसा न होगा जिसके मस्तिष्क पर संहार के इतने दृश्य अंकित होंगे। प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे कमाण्डो में हत्या के प्रति अरुचि को समाप्त करने वाली सिद्ध-सैनिक तकनीक है अतिक्रूर भयानक मारपीट वाले फिल्मों को देखने के लिए विवश किया जाना- जैसे फटी आँखों वाला मृत मुख को (वॉटसन 1978 : 248.5)। ऐसा लग रहा है जैसे कि संपूर्ण देश, भावनाशून्य हिंसा को स्वीकार करने के साथ ही जीवन के प्रति सहानुभूतिपूर्ण सम्मान से वंचित किया जा रहा हो। न्यायाधीशों की रिपोर्ट कहती है कि किशोर हत्यारे इस बात के प्रामाणिक साक्षी है कि उनमें मानव जीवन के प्रति कोई सम्मान नहीं हैं। चाहे यह सभ्य समाज के लिए कितना ही हानिकारक हो, संचार माध्यमों के द्वारा हिंसक समाजीकरण ऐसे राज्य के लिए उपयोगी है जिसे देशभक्त व्यावसायिक हत्यारों की आवश्यकता है। 10 लाख डालर कीमत का सेना में भर्ती का विज्ञापन अमरीकी सुपर बॉल के खेल के बीच दिखाया जाता है। इसमें मध्ययुगीन योद्धाओं को आधुनिक नौसैनिकों में परिवर्तित होते दिखाया गया है।

भाषा संहारकता को प्रतिबिंबित करती है और उसे सुदृढ़ करती है। भाषा संहारकता को स्वाभाविकता व अपरिहार्यता के गुण भी प्रदान करती है। अमरीकी अर्थव्यवस्था स्वतंत्र पूँजीवादी उद्यम पर आधारित है। अमरीकी 'स्टॉक बाज़ार में मारकाट' की बात करते हैं। 'वालस्ट्रीट' का कथन है, "जब गलियों में खून होता है तब आप क्रय करते हैं", और 'कीमत की लड़ाई में व्यापार होता है। अमरीकी राजनीति स्वतंत्र चुनावी प्रजातंत्र पर आधारित है। प्रचार कार्यकर्त्ताओं को 'सैनिक-दल' अथवा 'पैदल सिपाही' कहा जाता है, कानूनी-

प्रस्तावों को विधान सभाओं में 'मार' दिया जाता है, और देश-गरीबी, अपराध, नशीले पदार्थों तथा अन्य दूसरी कठिनाइयों के खिलाफ़ जंग छेड़ता है। राष्ट्रीय खेल बेस-बाल है। जब अप्रसन्न दर्शक उत्तेजित होते हैं तो चिल्लाते हैं, 'रेफरी को मार डालो।' खेलों का हाल सुनाने वाले मजबूत फुटबॉल टीम को 'हत्यारे' संबोधित करते हैं खिलाड़ियों को 'हथियार', 'पासों' को विशाल 'बम' और हारने वाली टीम को 'न्यून हत्याकांक्षी' कहते हैं शांति की देवी की उपासना करते समय, अपनी धार्मिक स्वतंत्रता पर गर्व व्यक्त करते हुए अमरीकी यह गीत गाते हैं, 'अग्रगामी-निश्चय सिपाही' तथा क्रिश्चियन धर्म युद्ध की आत्मा को प्रतिबिंबित करते हुए और सामूहिक गान वाले चढ़ाई का पुनर्गठन करते हुए, जैकब के बेटे के 'क्रास का सिपाही' के गीत गाते हैं। जैसे-जैसे जीवन 'गुजरता' है, परंतु खाली क्षणों में 'समय की हत्या' होती है।

जातिवादी और लिंगवादी भाषा के ग़लत प्रभावों के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण अमरीकियों ने अनजाने में संहारकता की भाषा बोलनी शुरू कर दी है। अमरीकी अंग्रेज़ी, भाषा को ऐसे शब्द प्रदान करती है जो इतिहास में ज्ञात सभी प्रकार के हथियारों, उनके प्रयोग के नियम, उनके प्रभाव को नाम दे सकती है।

'विश्वासघात- 'पीछे से छुरा भोंकना है' बजट पर 'कुल्हाड़ी चलाई' जाती है। 'प्रयत्न' किसी पर 'वार करना' है विचार 'मार गिराया' जाता है, विरोध को जमीनी बन्दूकों से वायुयान गिराने की संज्ञा दी जाती है और परिणाम को 'झगड़ना' कहा जाता है। वकील 'किराए की बंदूक' है। एक सुंदर फिल्म स्टार को 'सुनहरे बालों वाला बम' कहा जाता है।

दूसरी ओर, कठोर बातों को सुंदर शब्दों में कहने वाला पारंपरिक प्रयोक्ति वास्तविक हिंसा है। 'छोटा लड़का' जिसके द्वारा हिरोशिमा पर विश्व का प्रथम आणविक बम B-29 बमवर्षक द्वारा गिराया गया - का नामकरण विमान चालक की माँ इनोला गे के नाम पर किया गया था। 'फैट-मैन' को 'बाक्स' कार ने नागासाकी पर गिराया। अंतर्महाद्वीपीय नाभिकीय मिसाइल, जो कि बड़ी मात्रा में शहरी जनसंख्या का संहार करने में समर्थ हैं का नाम 'पीस-मेकर' है। जिस प्रकार खेलों में युद्ध संबंधी शब्दों का प्रयोग होता है युद्ध में खेलों से संबंधित शब्दों का। हत्या की तैयारी कराने वाले सैनिक अभ्यास को 'गेम' कहा जाता है। अपने नागरिकों अथवा युद्ध में अपने सैनिक टुकड़ी के मरने की क्रिया को 'समानांतर हानि' कहा जाता है। जैसा कि पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन द्वारा, कहा गया - 'अमरीका कम-से-कम युद्ध पसंद करता है तथा महाआधुनिक विश्व का सबसे शांतिप्रिय देश है।" (पी॰एस॰बी॰ 1993)।

समय-समय पर 'संहारकता' के तत्त्व सामूहिक हिंसा से मिलकर नागरिकों में परस्पर या नागरिकों तथा राज्य के प्रतिनिधियों के बीच हिंसा को जन्म देते हैं। 1992 में एक अश्वेत के प्रति पुलिस द्वारा किए गए अत्याचार की न्यायिक माफी के संदर्भ में दक्षिण-मध्य लासएंजिल्स में एक घर जलाये जाने को लेकर हुई गोलाबारी तथा युद्ध की घटनाओं में 52 लोग मारे गए, 2000 लोग घायल हो गए और 8000 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। दो महीने के भीतर ही, दंगाग्रस्त स्थान से घिरे हुए क्षेत्रों में, भयभीत लोगों द्वारा लगभग 70,000 बंदूकें खरीदी गईं। यह खून-खराबा, वाट्स (1965 से 34), न्यूयार्क(1967 से 26), और डेट्रियाट (1967 में 46) तथा अठारहवीं एवं बीसवीं शताब्दी में गुलामों के विद्रोहों में हुई हत्याओं को याद दिलाता था। 1967 में डेट्रियाट में व्यवस्था को पुन: बहाल करने के लिए 4700 छतरीधारी सैनिकों की ज़रूरत पड़ी जिसमें 1600 राष्ट्रीय-गार्ड तथा 360 मिशिगन की राजकीय सैनिक टुकड़ी से थे (लॉक 1969)।

हॉब्स के सर्वशक्तिमान तथा वेबर के सर्वव्यापक राज्य की कल्पना लॉक के 'दूसरे संशोधन' (विरोध प्रदर्शन) के साथ मिलान का परिणाम था वैको (Waco), टैक्सास का नरसंहार (1993) तथा बाद में ओकलहामा सिटी ओकलाहामा का 1995 का कत्लेआम। वैकों में, एक सशस्त्र धार्मिक संप्रदाय के विरुद्ध राज्य के सशस्त्र एजेंट, कानून को लागू करने के लिए गए और इस घटना में चार संघीय अधिकारी मारे गए, एक दर्जन लोग ज़ख्मी हुए और संप्रदाय के 89 सदस्य (जिसमें औरत और बच्चे भी शामिल थे) एक प्रचण्ड आग में जल कर मर गए। इस घटना की द्वितीय वर्षगाँठ पर, प्रतीकार के रूप में, राज्य का एक प्रतिपक्षी ने ओखलहामा शहर के एक संघीय दफ्तर को ध्वस्त करने के इच्छा से, एक बम से भरे हुए ट्रक में विस्फोट किया - जिसमें महिला तथा बच्चों समेत कुल 168 लोग मारे गए।

अपनी सीमाओं के बाहर, अमरीकियों को इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं कि एक अहिंसक समाज असंभव है। बीसवीं शताब्दी जो मानवता की सबसे हिंसक सदी रही मानव की बड़े पैमाने पर हत्या करने की भयावही क्षमता का प्रदर्शन करती है। रुडोल्फ जे. रमल द्वारा किया गया शोध कार्य, हत्या को ऐतिहासिक तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में रखने का प्रयास है। 'राज-हत्यारों' (नरसंहार, मृत्युदण्ड, सामूहिक हत्या और मनुष्यकृत आपदाओं के रूप में राज्य द्वारा अपने नागरिकों की हत्याएँ) तथा 'युद्धों' में की गई 'युद्ध-हत्याओं' (विश्व, स्थानीय, नागरिक क्रांतिकारी और गुरिल्ला) में भेद

करते हुए रमेल, अनुमानित रूप से इतिहास में दर्ज हत्या की संख्या की गणना निम्न तालिका-1 के अनुसार करते हैं।

तालिका-1

1987 में युद्ध तथा राज-हत्याओं में हुई मृतकों की संख्या

	1990 से पूर्व	1990–1987	कुल
गृह-हत्याएँ	133,147,000	169,198,000	302,345,000
युद्ध	40,457,000	34,021,000	74,478,000
कुल	173,604,000	203,219,000	376,823,000

इस प्रकार, लगभग चार अरब लोगों की गणना राजनैतिक तथा ऐतिहासिक हत्या के शिकार लोगों के रूप में की जा सकती है- इसमें राज-हत्याएँ सम्मिलित नहीं है। रमले के अनुसार अधिकांश राज-हत्याएँ साम्यवादी शासन में हुईं, इसके बाद दूसरी सबसे अधिक सत्तावादी और एक दलीय शासन में तथा सबसे कम प्रजातंत्र में हुईं। अमरीकियों के दिमाग में जो बात आज भी ताजा है, वह है-हिटलर का होलोकॉस्ट, स्टालिन के शुद्धीकरण अभियान', जापानियों की आक्रामकता तथा माओवादियों की हत्याएँ।

विलियम जे. एक्हार्ट तथा उनके उत्तराधिकारी गणना करते हैं कि 1900 से 1995 के मध्य-बीसवीं शताब्दी की युद्ध संबंधित हत्याओं की कुल संख्या कम-से-कम 106,114,000 व्यक्ति है, जिसमें 62,194,000 नागरिक तथा 43,920,000 सैनिक अपराधी हैं (सिवार्ड- 1996 : 19)। 1992 से 1995 के बीच में अनुमान है कि 149 युद्धों में कम-से-कम 22,057,000 लोग मारे गए। जिनमें 14,505,000 नागरिक तथा 7,552,000 लड़ाके थे। (सिवार्ड 1993 : 20.1)। 1999 में कम-से-कम तीस युद्ध चल रहे थे।

हमारे दृश्य प्रसारण माध्यम समय-समय पर विश्व भर में होने वाले खून-खराबे के दृश्यों का दिखाते रहते हैं जिनमें से कुछ की जड़ प्राचीन (पुरानी) शत्रुता तथा कुछ की तात्कालिक अत्याचारी तथा अपनी जरूरतों को पूरा न करने की असमर्थता से होते हैं। एक भयंकर त्रासदी के बाद दूसरी दिखाई जाती है और समाचार-माध्यम एक दृश्य को क्षणभर के लिए दिखाकर अगले दृश्य की तरफ बढ़ जाता है। खून-खराबे अनेक रूपों को धारण किए रहते हैं परंतु सभी के मूल में हिंसा की इच्छा विद्यमान है। इसमें शामिल हैं

अंतर्राष्ट्रीय युद्ध, गृह-युद्ध, क्रांतियाँ, पृथकतावादी युद्ध, आतंकवादी अत्याचार, क्षेत्रीय विवाद, सैनिक-सत्ता परिवर्तन, नरसंहार, जनजातीय धार्मिक हत्याएँ, वध, विदेशी हस्तक्षेप तथा हत्या के उद्देश्य से अंग-भंग तथा मानसिक यातनाएँ देना। कभी-कभी विदेशी शत्रुता देश में अमरीकियों की हत्या की प्रेरणा बनती है। 1993 में इज़राइल राज्य को समर्थन देने के कारण अमरीका के विरोधियों ने न्यूयार्क 'वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर' पर बमबारी की जिसमें 6 लोग मारे गए तथा 100 लोग ज़ख्मी हुए। इसी प्रकार नैरोबी तथा दार-ए-सलाम में 1998 में अमरीकी दूतावासों पर ट्रक बमबारी हुई जिसमें 12 अमरीकी तथा 300 अफ्रीकी लोग मारे गए तथा लगभग 5000 के करीब ज़ख्मी हुए।

समाप्तप्राय बीसवीं शताब्दी की दुनिया पर नज़र दौड़ाते हुए अमरीकी राजनैतिक नेता हॉब्स के शब्दों की प्रतिध्वनि करते हुए कहते हैं **'यहाँ तो जंगल है'** तथा समाप्त हुए रोमान साम्राज्य की यह सूक्ति दोहराते हैं **"यदि शांति चाहते हो तो युद्ध के लिए तैयार रहो।"**

*****

आदिम विश्वासों, दार्शनिक विरासत, देशभक्तिपूर्ण समाजीकरण, संचार माध्यमों द्वारा दृढ़ीकरण, सांस्कृतिक अनुकूलन तथा वैश्विक हत्याओं के संदर्भ में यह आश्चर्य नहीं कि अधिकांश राजनैतिक वैज्ञानिकों तथा उनके विद्यार्थियों ने दृढ़ता के साथ अहिंसक समाज की संभावना को खारिज किया।

जब विश्वविद्यालय की स्नातक कक्षाओं में पहली बार यह प्रश्न किया गया कि क्या *अहिंसक समाज* संभव है तो मानव *प्रकृति*, *आर्थिक* कमी तथा यौन-आक्रमणों के विरुद्ध स्वयं की रक्षा करने जैसे तर्कों की दुहाई दी गई। हालाँकि इस प्रश्न के उत्तर सांस्कृतिक विश्वासों पर आधारित होते हैं परंतु उन उत्तरों में अंतर व विविधता की संभावनाएँ असीमित है। जब भी यह प्रश्न किया जाता है तो कुछ नया उभर कर आता है। 'मनुष्य शक्ति-लोलुप, स्वार्थी, *ईर्ष्यालु, निर्दयी और पागल है।*' मनुष्य *आर्थिक* दृष्टि से *लालची* तथा *प्रतिस्पर्धी* है।' 'सामाजिक असमानताएँ तथा हितों का टकराव हिंसा को अपरिहार्य बना देते हैं।' 'अन्य दूसरी चीज़ें हत्या से भी बुरी हैं-जैसे मानसिक उत्पीड़न तथा आर्थिक कमी।' 'एक अहिंसक समाज सर्वसत्तावादी हो जाएगा। स्वतंत्रता समाप्त हो जाएगी तथा समाज विदेशी आक्रमणों तथा गुलामी का शिकार हो जाएगा।' '*राजनीतिक सिद्धांत* के रूप में *अहिंसा अनैतिक है।*' '*अपराधियों* को दण्ड देने के उद्देश्य से हत्या समाज को लाभ पहुँचाती है।' 'हथियार का आविष्कार

वापस नहीं लिया जा सकता।' 'प्राणघातक तकनीक सदैव विद्यमान रहेगी।' 'इतिहास में अहिंसक समाज का एक भी उदाहरण ज्ञात नहीं अत: यह विचार बिल्कुल सोच से परे है, अविचारणीय है।'

यह कक्षा के मतैक्य को इंगित नहीं करता। कुछ अमरीकी विद्यार्थियों का मानना है कि क्योंकि मनुष्य की सृजनशीलता शक्ति संपन्नता तथा करुणा से युक्त है, तो शिक्षा के द्वारा अहिंसक समाज की स्थापना की जा सकती है। परंतु अन्य वर्ग का मानना है कि सीमित समाज में अहिंसा की परिस्थितियों को उत्पन्न किया जा सकता है, किंतु विशालकाय समाज में सार्वत्रिक रूप से नहीं। इससे यह बात सिद्ध नहीं होती कि विश्व के अन्य भागों में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसरों व छात्रों की अपेक्षा अमरीकी लोगों के विचार स्पष्ट रूप से हिंसक प्रवृत्ति से अधिक युक्त हैं। ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए क्रमबद्ध तुलनात्मक शोध की आवश्यकता है। किंतु इस समय संभवत: विश्व के सभी राजनीतिक विज्ञान के सभी पक्षों में निराशावाद सर्वाधिक व्याप्त दिखाई देता है।

"क्या अहिंसक समाज संभव है'? जबकि यह विचारणीय प्रश्न है, किंतु दूसरी राजनैतिक संस्कृतियों से इस विषय में पूछा जाता है तो आश्चर्यजनक रूप से इसकी कुछ दूसरी प्रकार की प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं।

"मैंने इस प्रश्न के विषय में पहले कभी नहीं सोचा ..."

इस प्रकार का उत्तर एक स्वीडिश कार्यकर्त्ता ने 1980 में 'अहिंसक राजनीति विज्ञान का विचार' इस विषय पर परिचर्या के लिए आयोजित, स्वीडिश भविष्यवादियों के एक सम्मेलन में दिया। **उसने कहा - 'मैंने इस विषय पर पहले कभी नहीं सोचा। मैं इस पर विचार करने के लिए कुछ समय चाहता हूँ।'** हैरानी की बात है कि इस प्रश्न को न तो तत्काल स्वीकार किया गया और न ही तत्काल अस्वीकार किया गया। इस प्रश्न पर और अधिक विचार करके प्रत्युत्तर देने की आवश्यकता अभिव्यक्त की गई। इसी प्रकार का उत्तर 1997 में सियोल में आयोजित वैज्ञानिकों के एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिक द्वारा दिया गया-**'मैं नहीं जानता।'** पर्याप्त वैज्ञानिक आधार की गैर-मौजूदगी में दिया गया यह उसका उत्तर स्वाभाविक था। इसके बाद उस वैज्ञानिक ने सम्मेलन के सदस्यों को इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करने के लिए कहा क्योंकि विज्ञान तथा सभ्यता का विकास, दिखने में असंभव की चुनौती देकर ही, किया जा सकता है।

"यह विचारणीय है, किंतु ...."

1979 में मॉस्को में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय राजनीति वैज्ञानिकों के 11वें सम्मेलन में 'अहिंसक राजनीति शास्त्र' के एक लेख की प्रतिक्रिया में दो रूसी विद्वानों ने इच्छा व्यक्त की कि इस प्रश्न पर कुछ बातों को ध्यान में रखते हुए गंभीरता से विचार किया जाए। आश्चर्य की बात थी कि दोनों की इस बात पर सहमति थी कि राजनीति तथा राजनीति विज्ञान दोनों का लक्ष्य अहिंसक समाज का निर्माण करना है। एक ने पूछा कि अहिंसक राजनीति तथा राजनीति विज्ञान का आर्थिक आधार क्या है, तो दूसरे ने प्रश्न किया कि हम कैसे उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करें, जैसी कि चिली (एक लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई समाजवादी सरकार का सैनिक शासन द्वारा उखाड़ फेंकना है), कम्पूचिया (दमन और क्रांति) और निकारागुआ में (क्रांतिकारी शहरी वर्ग-संघर्ष में 10 लाख से ज्यादा की हत्या) लोग में प्रस्तुत हुईं?

ऐसी कौन-सी अर्थव्यवस्था है जो न तो हिंसा पर निर्भर होती है और ही उसका समर्थन करती है जैसा कि समकालीन पूँजीवादी और साम्यवादी अर्थव्यवस्थाएं करती हैं। घातक यातनाओं के जहरीले प्रभावों से अहिंसक राजनीति मानवता का कैसे बचाव कर सकती है या उसके प्रभावों को हटाने या समाप्त करने में मदद पहुँचा सकती है? अहिंसा की संभावना की मान्यता के अंतर्गत इस प्रश्न पर गंभीर वैज्ञानिक चिंतन की आवश्यकता है।

"हम जानते हैं मनुष्य स्वभाव से हिंसक नहीं है किंतु ..."

1981 में, अम्मान के जार्डन विश्वविद्यालय में अरब राजनीति वैज्ञानिकों तथा राजकीय प्रशासकीय विद्वानों ने जब अहिंसक राजनीति विज्ञान पर प्रश्न उठाया तो एक प्रोफेसर ने महाविद्यालीय सहमति अभिव्यक्त करते हुए कहा "हम जानते हैं कि मनुष्य स्वभाव से हिंसक नहीं है।" किंतु अपनी बात स्पष्ट करते हुए वह उन्होंने आगे कहा, "हमें आत्मरक्षा के लिए लड़ना पड़ता है।"

यदि इस आदिम तर्क पर कि मनुष्य स्वभाव से ही स्वच्छंद रूप से हिंसक है प्रश्नचिह्न लगता है तो ऐसी परिस्थितियों को ढूँढ़ने की संभावना जगती है जिनमें कोई हत्या नहीं करता।

"यह संभव नहीं है किंतु ..."

हिरोशिमा विश्वविद्यालय के शांति विज्ञान संस्थान की दसवीं वर्षगांठ पर उपस्थित सदस्य अहिंसक समाज की स्थापना की संभावना के प्रश्न पर समान रूप से विभाजित थे। ये सदस्य मुख्यत: जापानी थे। शिक्षाशास्त्र के एक

प्रोफेसर ने उत्तर दिया कि "यह संभव नहीं है किंतु इसे संभव बनाना होगा। यह स्पष्ट है कि अहिंसक समाज का तत्काल निर्माण नहीं किया जा सकता, परंतु भविष्य में इसकी संभावना को नकारा नहीं जा सकता।' पुनः उन्होंने प्रश्न किया, 'एक अहिंसक समाज की रचना करने के लिए किस प्रकार की शिक्षा की ज़रूरत पड़ेगी?' यह प्रश्न इस गंभीर समस्या के सर्जनात्मक हल को ढूँढ़ने का अवसर प्रदान करता है।

"यह पूरी तरह से संभव है ..."

दिसंबर 1987 में, दर्शनशास्त्र के एक कोरियाई प्रोफेसर ने, जो कि कोरियाई समाज वैज्ञानिकों के सीमिति के अध्यक्ष तथा प्योंगयांग में एक राजनीतिक नेता थे, आश्चर्यजनक रूप से बिना संकोच के उत्तर दिया के यह बिल्कुल संभव है "क्यों? पहला, मानव स्वभाव से हिंसा करने के लिए विवश नहीं है। वह ज्ञान, तर्क और सर्जनशीलता से युक्त है, जो उसे 'संहारकता' को रोकने में समर्थ बनाते हैं। द्वितीय, गरीबी को हिंसाचरण के लिए उचित आधार नहीं माना जा सकता। मनुष्य भौतिकता का गुलाम नहीं है। आर्थिक न्यूनता पर तो 'सृजनशीलता' उत्पादकता तथा सबसे महत्त्वपूर्ण, 'समान-वितरण' के द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है। तृतीय, बलात्कार को रोकने के लिए हत्या, अहिंसक समाज के निर्माण में आड़े नहीं जा सकता। बलात्कार की समस्या को, शिक्षा तथा 'उचित सामाजिक वातावरण' के द्वारा समाप्त किया जा सकता है।

फरवरी 2000 में, कोलम्बिया के मैनजेल्स में आयोजित एक सम्मेलन में (जिसमें लगभग 20,000 सामुदायिक नेताओं ने भाग लिया था।) जब भाग लेने वालों से पूछा गया कि 'क्या अहिंसक समाज संभव है' तो आश्चर्यजनक रूप से 'नहीं' का सूचक एक का भी हाथ नहीं उठा और जबकि उसी समय 'हाँ' के सूचक लगभग सभी के हाथ उठ गए।

कोरिया तथा कोलम्बिया में यह सकारात्मक उत्तर उनके हिंसक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में उल्लेखनीय है। कोरिया गणतंत्र के लोगों की हिंसक राजनीतिक परंपराएँ संयुक्त राज्य अमरीका के कुछ भागों में प्रचलित परंपरा के समानांतर हैं - यथा-सशस्त्र उपनिवेश विरोधी क्रांति, एकीकरण के लिए गृह-युद्ध, युद्ध और घरेलू तथा विदेशी शत्रुओं के विरुद्ध बचाव तथा आक्रमण के अधिकार का समुचित प्रयोग। कोलम्बिया का समाज, एक दशक से, सेना, पुलिस, अर्धसैनिक बल, गुरिल्ला, अपराधी हत्याओं की संहारकता से आक्रान्त रहा है।

अलग-अलग सामाजिक प्रतिक्रियाएँ

जब बिना पूर्व बहस के विभिन्न समूहों, देशों और संस्कृतियों से यह प्रश्न किया गया कि क्या एक अहिंसक समाज संभव है तब इसके समर्थन व विरोध में भिन्न-भिन्न रुझान नज़र आए। इन रुझानों का विश्वस्तर पर क्रमबद्ध निरीक्षण करने की आवश्यकता है।

मई 1998 में लिथुआनिया के विल्निलयस शहर में नए राजनीति विज्ञान पर समान पदधारक विचारकों के सेमिनार में, जिसमें पूर्व सोवियत संघ के सदस्य देशों से राजनीति शास्त्री आए थे, तथा जिनका संचालन 'ओपेन सोसायटी' संस्थान द्वारा किया गया - आठ सकारात्मक तथा एक नकारात्मक उत्तर मिले। मार्च 1999 में सिओल राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में स्नातक के विद्यार्थियों के लिए परिचयात्मक राजनीतिक विज्ञान के एक सेमिनार में बारह नकारात्मक तथा पाँच सकारात्मक तथा दो उत्तर 'हाँ' और 'नहीं' में दिए गए। फरवरी 1998 में हवाई द्वीप पर होनोलुलु में प्रशांत महासागरीय सांसदों के एक मंच पर, जिसका आयोजन जापान स्थित Foundation for Support of United Nation ने किया था, भाग लेने वालों में 6 का जवाब 'हाँ' तथा 5 का 'ना' तथा 2 का 'हाँ और ना'। जापानी महिला प्रेक्षक दल में 12 का जवाब 'ना' था, 11 का 'हाँ' तथा 1 का 'हाँ और ना'। नवंबर 1998 में कोलम्बिया के मेडलीन शहर में भावी शिक्षा विषय पर आयोजित शिक्षा शास्त्रियों के एक राष्ट्रीय सम्मेलन में 275 सकारात्मक तथा 25 नकारात्मक उत्तर प्राप्त हुए। मेडलीन के एक परिवार समाज कार्यकर्त्ताओं के समूह से 30 सकारात्मक तथा आवश्यकता नकारात्मक उत्तर मिलें। युवक अपराधियों के एक समूह 'Sicariou' जिसमें भाड़े के हत्यारे भी सम्मिलित हैं, से 16 नकारात्मक व 6 सकारात्मक उत्तर मिले। जब उनसे उनके निष्कर्ष का आधार पूछा गया तो एक हत्यारे ने कहा कि मैं अपनी दो बेटियों की देखभाल के लिए हिंसा करता हूँ, क्योंकि कोई रोज़गार नहीं है। एक, जिसने कि सकारात्मक उत्तर दिया था, बताया कि यदि धनिकों और निर्धनों के बीच की खाई पाट दी जाए तो हमें किसी की हत्या नहीं करनी पड़ेगी।

1997 में कनाडा के एडमॉण्टन में 'इक्कीसवीं शताब्दी में मूल्य' विषय पर आयोजित एक संगोष्ठी जिसका आयोजन 'विश्व शांति के लिए कनाडा के महात्मा गाँधी फाउन्डेशन' ने किया था, में एकत्रित हाई स्कूल के विद्यार्थियों के एक समूह में से 48 ने 'न' तथा 25 ने 'हाँ' में उत्तर दिया। 1999 में जार्जिया के एटलान्टा में अहिंसा पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में, जिसका आयोजन 'मर्टिन लूथर किंग जूनियर अहिंसक सामाजिक परिवर्तन के केंद्र' ने किया था,

इसमें 40 सकारात्मक तथा तीन नकारात्मक उत्तर मिलें। फरवरी 2000 में रूस के ओमस्क शहर में 17 से 26 साल के आयु वाले विद्यार्थियों में से 121 ने नकारात्मक, 24 ने सकारात्मक तथा तीन ऐसे भी थे, जिन्होंने 'हाँ एवं न' इन दोनों में उत्तर दिए।

'क्या अहिंसक समाज संभव है'? विश्व भर में वास्तविक हिंसा तथा उसकी धमकी के बीच हिंसक बीसवीं शताब्दी के हिंसक अंत पर राजनैतिक वैज्ञानिकों तथा उनके शिष्यों को इस निष्कर्ष पर पहुँचने का पर्याप्त आधार हैं कि यह पूर्णतया अविचारणीय है। किंतु प्रश्न पर गंभीरता से विचार किया जाए, इस इच्छा के भी संकेत मिलते हैं। अतः यह विचारणीय है और संभवतः संभव है। मानव अस्तित्व के संकट में घिरे होने के बावजूद विपरीत दिशा से विश्व के आत्मिक, वैज्ञानिक, संस्थागत, अनुभव पर आधारित संसाधन इस आत्मविश्वास को बल देते हैं कि आखिरकार एक हत्यामुक्त समाज पूर्णतः संभव है।

अध्याय-2

अहिंसक समाज के लिए क्षमताएँ

"मानव प्रकृति के बारे में हमारा जितना ज्ञान है उसके आधार हम कह सकते हैं कि हिंसा का युग समाप्त हो सकता है यदि हम दूसरे विकल्पों को अपनाने का निश्चय कर लें।

(डेविड एन. डेनियल्स तथा मार्शल एफ. जिलुला, मनोचिकित्सा विभाग, स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय, 1970)

अहिंसक समाज को संभव बनाने संबंधी सोच का आधार क्या है?

क्यों यह सोच विश्वसनीय लगती है कि मनुष्य जीवन का व्यापक आदर करने की क्षमता रखता है?

अहिंसक मानव स्वभाव

यद्यपि हम अपने कथन को आध्यात्मिक आधार के साथ शुरू कर सकते थे, किंतु पहले हम एक पूर्ण निरपेक्ष तथ्य को लेते हैं। अधिकतर मनुष्य हत्या नहीं करते। वे सभी मनुष्य जो इस समय जीवित हैं, और वे सभी जो कभी जीवित थे- में केवल कुछ लोग ही हत्यारे हैं। आप चाहे किसी भी समाज के मानव-हत्या के आंकड़ों पर विचार करें, यही सच है।

युद्ध में हत्याओं पर भी विचार करें। विश्व के सैनिक तथा मानव जाति संग्रहालयों में इस बात के बहुत कम साक्ष्य मिलते हैं कि औरतें (जो कि मानव समाज की आधी संख्या हैं) युद्ध में अधिक हत्याएँ करती रही हैं। इसमें कोई शक नहीं कि महिलाएँ भी हत्या करती हैं-कुछ ने युद्ध और क्रांतियों में हिस्सा लिया है, कुछ समाजों में औरतें, यहाँ तक कि बच्चे भी, पराजित शत्रुओं की

हत्या करने एवं विधि-सम्मत यातनाएँ देने में सम्मिलित थे। औरतें बहुत-सी आधुनिक सेनाओं में हत्या के नए सिपाही के रूप में भर्ती की जा रही हैं। परंतु अधिकांश महिला सैनिक हत्यारिनें नहीं है। इस संख्या में यदि हम हत्या न करने वाले अल्पसंख्यक पुरुषों को शामिल करें तो हम पायेंगे कि पुरुषों में भी हत्यारों की संख्या कम है। हत्यारों में भी अधिकांश ऐसे हैं जो अनिच्छा से भाग लेते हैं और बाद में पश्चाताप करते हैं। संभवत: केवल दो प्रतिशत पुरुष ही बार-बार एवं बिना किसी पश्चाताप के हत्या कर सकते हैं। जैसा कि लेफ्टिनेंट कर्नल डेव ग्रासमैन ने युद्ध में पुरुषों की हत्या के प्रति उदासीनता के कारणों के बारे में अध्ययन कर व्याख्या की है, "युद्ध एक वातावरण है जो इसमें (युद्ध में) भाग लेने वाले 98 प्रतिशत लोगों को मनोवैज्ञानिक रूप से दुर्बल बनाता है। ऐसे दो प्रतिशत लोग जो कि युद्ध में विक्षिप्त नहीं होते पहले से ही विक्षिप्त अर्थात् आक्रामक मनोरोगी होते हैं। (ग्रासमैन 1995 : 50)। इस प्रकार पारंपरिक राजनीतिक विज्ञान की मान्यता कि मनुष्य स्वभाव से ही हत्यारा है, के विपरीत, सैनिक प्रशिक्षण का प्रधान कार्य 'हिंसा के प्रति दृढ़ प्रतिरोध क्षमता वाले आम व्यक्तियों पर विजय प्राप्त करना' है।

मानव परिवार अहिंसक क्षमता का अगला प्रमाण है। यदि मानव स्वभाव से ही हत्यारा होता और यदि आधी भी मानवता अनिवार्य रूप से हत्यारी होती, तो परिवार नामक संस्था अपने विविध रूपों में स्थापित नहीं हो पाती। ऐसी स्थिति में तो पिता माताओं की, माताएं पिताओं की, माता-पिता बच्चों की तथा बच्चे माता-पिता की हत्या कर देते। ऐसी हत्याएँ होती हैं किंतु वे संहारकता के उस स्वभाविक नियम का निर्माण नहीं करतीं जो मानव जाति के भाग्य को नियमित करती हैं। यदि ऐसा होता तो विश्व की जनसंख्या बहुत पहले उत्तरोत्तर घटकर समाप्त हो गई होती। इसके विपरीत, भौतिक विनाश एवं दुर्व्यवहार की भयानक दशाओं के बावजूद, मानव-परिवार एक अभूतपूर्व स्तर पर जीवन का सृजन करने एवं करने में निरंतर लगा हुआ है।

बीते हुए समय में कुल विषयों में हत्यों की संख्या की' गणना करके मानव विवेक हत्यामुक्त समाज़ के निर्माण की गुत्थी सुलझा सकता है। एक अनुमान के अनुसार 10 लाख वर्ष ईसा पूर्व से लेकर सन् 2000 तक करीब 91,100,000,000 मनुष्य पैदा हुए (यह अनुमान कीफिट्ज़ (Keyfitz) तथा वीक्स के अध्ययनों पर आधारित है जिन्हें रैमज़े ने एकत्रित किया था)। यदि हम रमेल (Rummel) के द्वारा युद्ध तथा शासन व्यवस्था में मारे गए लोगों की संख्या को बढ़ाकर 50 लाख कर दें, और ग़लत ही सही यह मान्यता लेकर चलें कि प्रत्येक को एक ही व्यक्ति ने मारा है तथा इस संख्या में हम यदि

मानववध (homicide) की संख्या पता लगाने के लिए इसे 6 से गुणा कर दें तो हम पायेंगे कि 1000 ई॰ पूर्व से अब तक कोई 3,000,000,0000 हत्यारे मनुष्य हुए हैं। इस कच्चे और बढ़ा-चढ़ा कर दिए गए अनुमान के अनुसार भी मनुष्य जाति के 95 प्रतिशत सदस्य हत्यारे नहीं रहे हैं। यदि संयुक्त राज्य अमरीका में मानव हत्या की दर प्रति 100,000 पर 10 हो तो भी जनसंख्या का केवल .01 प्रतिशत लोग ही प्रतिवर्ष मारे गए होते। यदि आक्रमक हत्याएँ प्रति 100,000 पर 500 होती तो वास्तविक अथवा केवल प्रयास करने वाले हत्यारों के कुल .5। में, .5 प्रतिशत और जोड़ा जा सकता है। संभवत: संपूर्ण मानव जाति के केवल एक अथवा दो प्रतिशत लोग ही अपने साथी मनुष्यों की हत्या करते हैं। हत्यारों का प्रतिशत वस्तुत: युग एवं संस्कृति के अनुसार बड़े पैमाने पर बदलता रहता है। तथापि मनुष्यों का जीवित रहना और अपनी संख्या बढ़ाना इस बात का प्रमाण है कि मानव स्वभाव में जिजीविषा संहारकता पर हावी है।

आध्यात्मिक जड़ें

हत्या मुक्त समाज के अनुभव और विश्वास का आधार मानव जाति की आध्यात्मिक परंपरा में विद्यमान है। यह सही है कि धर्म के नाम पर भयंकर खून-खराबे, मानव-बलि से लेकर नरसंहार तक और आणविक हत्याएँ (Thompson 1988) हुईं। यह ईश्वर, सर्जक तथा परमात्मा का संदेश नहीं है - 'हे मनुष्यो, सुनो! जाओ और एक दूसरे मनुष्य को ढूँढ़कर मार डालो!" इसके विपरीत संदेश यहहै 'जीवन का सम्मान करो! मत मारो!"

हत्या मुक्त रहने का सिद्धांत विश्व के सभी आध्यात्मिक विश्वासों में पाया जाता है। इसी कारण मैक्स वेबर आध्यात्मिक प्रतिबद्धता को हत्या के राजनीतिक आदेश के लिए असंगत मानते हैं। जैन और हिंदू धर्म में '**अहिंसा परमो धर्म:** का संदेश है (अहिंसा जीवन का सर्वोच्च नियम है)। बौद्ध धर्म की प्रथम शपथ है, 'हिंसा से बचो!' जूडाई, ईसाई एवं इस्लाम में 'तुम्हें हिंसा नहीं करनी चाहिए' का दैवी आदेश है (एक्सोड 20:13)। एक बहुत पुरानी यहूदी शिक्षा है; व्यक्ति के द्वारा किसी एक व्यक्ति की जीवन रक्षा मानो कईयों को जीवन दान है। एक व्यक्ति का जीवन नष्ट किया जाना मानो विश्व का विनाश है।' (आइज़नड्रैथ : 144) इस शिक्षा (संदेश) का केंद्र बिंदु यद्यपि कुछ शर्तों के साथ इस्लाम धर्म में भी है (जैसे) - दण्ड स्वरूप हत्या के रूप में अथवा भ्रष्टाचार को फैलने से रोकने के लिए, की स्थितियों को छोड़कर यदि कोई किसी की हत्या करता है तो यह संपूर्ण मानव जाति के हत्या के समान है, और जो कभी किसी की जान बचाता है, वह मानवजाति को बचाता

है (अल- कुरान-5 : 32)। बहाई विश्वास, यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम की शिक्षाओं को संयुक्त करते हुए इस बात की सलाह देता है कि -हे मनुष्यो! ईश्वर से डरो एवं किसी का खून बहाने से बचो (बहाउल्लाह, 1983 : 277)।

मानव परंपराएँ भी अहिंसक समाज की संभावना एवं इच्छा में विश्वास से युक्त है। कन्फ्यूशियस की विचारधारा के अनुसार 'जब शासकों में नैतिकता विद्यमान होगी मृत्युदण्ड की आवश्यकता नहीं पड़ेगी' (फना-1952 : 60)। ताओ विचारधारा के अनुसार जब मनुष्य अपनी इच्छानुसार सहज रूप से प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाकर रहे 'यद्यपि युद्ध के हथियार उनका अभ्यास रहेंगे किंतु कोई नहीं करेगा।' (फना-1952 : 190)। आधुनिक समाजवादी विचारधारा के अनुसार जब मज़दूर एक-दूसरे की हत्या करने से इंकार कर देंगे तो युद्ध समाप्त हो जाएगा। प्रथम विश्वयुद्ध के खिलाफ़ एक घोषणापत्र में कहा गया है –

> वर्गचेतना से युक्त विश्व के औद्योगिक मज़दूर अपने शुद्ध अंतःकरण से मनुष्य के खून बहाये जाने का विरोध करते हैं। ऐसा धार्मिक कारणों से नहीं, जैसा कि 'क्वेकर' एवं 'फैंडली सोसायटी' में होता है, बल्कि इसलिए कि हमारा विश्वास है कि समग्र रूप से कार्यकारी वर्ग के हित एवं कल्याण समान हैं। जहाँ हम जर्मनी की साम्राज्यवादी एवं पूँजीवादी सरकार का घोर विरोध करते हैं वहीं हम किसी भी देश के कामकारों की हत्या एवं अंगभंगता के खिलाफ़ हैं। (टू-1995 : 49; इसके साहसिक उदाहरण के लिए देखिए बॉक्सटर-2000)।

किसी भी समाज में हत्या का अनुमोदन नहीं किया गया है। मानववादियों का जीवन के प्रति सम्मान धर्म के जीवन के प्रति सम्मान के समानांतर है।

हत्यामुक्त समाज की प्राप्ति के लिए, अध्यात्म तथा मानववादी परंपरा की दुनिया में, अहिंसक नीति की उपस्थिति का क्या महत्त्व है? एक तरफ यह मानव के चित्त में जीवन के प्रति अतिसम्मान को आरोपित करने की अभिलाषा को व्यक्त करती है तो दूसरी तरफ यह इस प्रकार के सिद्धांत को ग्रहण करने, उसपर प्रतिक्रिया करने, सर्जन करने संबंधी मनुष्य की क्षमता को भी दिखाती है। यदि मनुष्य स्वभाव से दुर्निवार्य रूप से हत्यारा होता तो इस प्रकार के सिद्धांतों को ग्रहण करना, संचारित करना और सर्जन करना संभव नहीं हो पाता। यदि हत्यामुक्त आध्यात्मिक नीति का आविष्कार विशिष्ट वर्ग के द्वारा शोषितों की शोषकों के विरुद्ध क्रांति को बाधित करने के लिए या हत्यारों को सजा से

बचाने के लिए भी किया गया हो तो भी यह दर्शाता है कि जिनके खिलाफ़ इसे प्रयोग में लाया गया है वे भी इसके प्रति सकारात्मक रवैया रखते हैं।

अहिंसा की भावना का जन्म इतिहास के अति भयावह खून-खराबे से पहले, उसके दौरान तथा उसके बाद हुआ। इसकी अभिव्यक्ति हत्यारों द्वारा प्रदत्त, मात्र एक विलासितापूर्ण उदाहरण नहीं है। समकालीन युग में दुर्निवार्य रूप से जीवित रहते हुए यह ईसाई धर्म-युद्ध उपरांत, इस्लामी विजय उपरांत, यहूदियों के 'होलोकॉस्ट' उपरांत, सैनिकवाद उत्तर बौद्ध धर्म, उपनिवेशवाद उपरांत जनजातीय परंपराओं युक्त विश्व को घातकता से मुक्ति के लिए प्रेरित करता रहा है। हत्यापूर्ण बीसवीं शताब्दी में, अहिंसक वैश्विक परिवर्तन ईसाई टालस्टॉय एवं मार्टिन लूथर किंग, हिन्दू गाँधी, बौद्ध दलाई लामा, मुसलमान खान अब्दुल गफ्फार खान, यहूदी जोसेफ अबीलयाह, पर्यावरण प्रेमी पेट्रा केली और असंख्य जाने-माने व अनजान लोगों के साहसपूर्ण योगदान में देखा जा सकता है।

हर धर्म में अहिंसा की मौजूदगी और उसके सैद्धांतिक पालन के उदाहरण करोड़ों समान-विश्वास रखने वालों को जागृति तथा सम्पुष्टि की राह दिखाते हैं। अहिंसा के आदेश व हत्या तथा उसके परिणामों के प्रति जिम्मेदारी की भावना में जो तनाव उत्पन्न होता है वह व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर हत्या न करने की प्रेरणा बनता है।

जबकि अहिंसा की जड़ों को प्रत्येक परंपरा में देखा जा सकता है, समग्ररूप से मानवमात्र की आध्यात्मिक विरासत, बहुसंख्क जड़ प्रणाली वाले वट वृक्ष के समान जीवन को स्थायित्व प्रदान करती है। प्रेरणा और अवलंबन आंतरिक जड़-प्रणाली से तथा साथ ही साथ इसके किसी भी हिस्से से पाये जा सकते हैं। हर हिस्सा जीवन की शक्ति की तह तक पहुँच रहा होता है। धार्मिक तथा मानवतावादी विचारधाराओं में जीवन के सम्मान की सच्चाई इस आत्मविश्वास को आधार प्रदान करती हैं कि अहिंसक विश्व समाज संभव है।

वैज्ञानिक जड़ें

"हम अहिंसा को केवल धर्म के द्वारा नहीं पा सकते" ऐसा भारत के एक अग्रणी धार्मिक नेता, प्राचीन जैन परंपरा में अहिंसा के सृजनशील उत्तराधिकारी, **आचार्य महाप्रज्ञ** की सलाह है। जैन मत में "अहिंसा जीवन की सभी अवस्थाओं का हृदय है, सभी पवित्र ग्रंथों का केंद्र बिंदु है एवं संपूर्ण संकल्पों एवं मूल्यों का समग्र एवं परमाणु है।" (जैन एवं वर्नी 1993 : 39)। आचार्य महाप्रज्ञ के अनुसार अहिंसक समाज को प्राप्त करने के उपाय

हैं-व्यक्तियों को स्वयं अपने अंदर अहिंसा की खोज करने के लिए समर्थ बनाना और आधुनिक तंत्रिका विज्ञान (neuroscience) को साथ लेते हुए आध्यात्मिक सत्य के साथ सामाजिक रूप में इसे व्यक्त करना। उनके विश्लेषण के अनुसार हिंसा अंत:स्रावि ग्रंथि (endocieme glands) द्वारा उत्पन्न भावनाओं से उपजती है जो संवेदी और असंवेदी तंत्रिकाओं को प्रभावित करते हैं जिनका संबंध हमारे भोजन से है। वैज्ञानिक ज्ञान और तंत्रिका प्रणाली को समझकर हम साधारण ध्यान की अवस्था में अपने दिमाग की ऊर्जा को उद्देश्यपूर्ण ढंग से अपने अंदर की हिंसा की खोज करने के लिए तथा अपने आप को अहिंसक सामाजिक जीवन से प्रति समर्पित करने के लिए, उपयोग में ला सकते हैं। (महाप्रज्ञ 1987 और 1994; जावेरी और कुमार- 1992)।

अहिंसक मानवीय क्षमताओं में विश्वास के वैज्ञानिक आधार क्या हैं? विज्ञान का विस्तृत अर्थ है हर प्रकार का ज्ञान जो प्रश्न पूछने तथा प्रयोग करने से प्राप्त होता है - जैसे तथ्य, सिद्धांत और विश्वसनीयता तथा प्रामाणिकता प्राप्त करने के तरीके। जब कुछ दार्शनिक पहले से स्वीकृत विचार पर प्रश्न करना शुरू करते हैं अथवा उसे चुनौती देते हैं तो यह वैज्ञानिक क्रांति का प्रथम संदेश है।

अहिंसा के लिए ऐसा कार्य रिचर्ड ए॰ कॉनरेड द्वारा 1974 में किया गया जब उन्होंने इस प्रचलित मान्यता पर सवाल उठाया कि नरसंहार एवं बलात्कार का सामना करने के लिए, हिंसा एकमात्र प्रभावशाली उपाय है। कॉनरेड का तर्क है कि मात्र हिंसा से समस्या को हल करने वाले विकल्पों का सिद्धांत तीन मान्यताओं पर टिका है। प्रथम, अहिंसक विकल्प पहचाने जा चुके हैं। द्वितीय, सबका परीक्षण हो चुका है और तृतीय सभी असफल हो चुके हैं। ये मान्यताएँ अरक्षणीय है। अहिंसा की समस्या को हल करने वाले विकल्प काल्पनिक रूप से अनंत हैं। समय की व्यावहारिक परवशता, संसाधन तथा अन्य कारण, पहचाने गए विकल्पों का भी परीक्षण करने से रोकते हैं। इसलिए हम निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते है कि एक ही हिंसक विकल्प से इन्हें रोका जा सकता है। इस प्रकार कॉनरेड तर्क देते हैं कि उस दार्शनिक अनुकूलन से जो व्यक्ति को हिंसा स्वीकार करने को कहता है, के विपरीत जाकर हमें ऐसे दार्शनिक रुझानों की खोज करनी चाहिए जो अहिंसक विकल्पों का सृजन और परीक्षण करते हैं। इस प्रकार का प्रयास हमें उन वैज्ञानिक खोजों की ओर ले जाएगा जो मानव की 'हिंसक प्रकृति से कोई बचाव नहीं' जैसी विचारधारा का चुनौती देते हैं।

यह मान्यता कि 'मनुष्य अपने पशु स्वभाव के कारण अनिवार्य रूप से हत्यारा है' पर प्रश्न उठाया जा रहा है। तुलेन विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक लोह-संग-साई (1963) ने दिखाया है कि एक 'चूहे को खाने वाली बिल्ली' तथा एक नाले में रहने वाले चूहे को एक ही प्लेट में शांतिपूर्वक खाने की शिक्षा दी जा सकती है। इस प्रयोग को एक वैज्ञानिक अनुकूलन तथा सामाजिक शिक्षा का सम्मिश्रण से किया गया। सबसे पहले शीशे की दीवार से अलग किये गए दोनों जानवरों को सिखाया गया कि उन्हें समान भोजन के पात्र में भोजन की गोलियों को छोड़ने के लिए ढेकली को एक साथ ही दबाना है। सात सौ प्रशिक्षण सत्र के पश्चात् विभाजन को बिना किसी रक्तपात के हटाया जा सका। साई का निष्कर्ष है -

> हमने विज्ञान के इतिहास में पहली बार प्रमाणित प्रयोगों के द्वारा यह दिखाया है कि चूहा और बिल्ली जो कि तथाकथित प्राकृतिक शत्रु हैं- सहयोग करते हैं, तथा ऐसा कर सकते हैं। इस प्रकार की खोज मनोविज्ञान के इस परंपरागत सिद्धांत को ग़लत साबित करती है कि पशु स्वभाव में निर्मूलन न किये जाने योग्य कलह-प्रेम का सहज ज्ञान है जो कि लड़ाई अथवा युद्ध को अनिवार्य बना देता है। (1963 : 4)।

इस पूर्वाग्रह के बजाय, जो केवल अनुमान पर आधारित है, कि हम आपसी हिंसा से बच नहीं सकते, साई आवाहन करते हैं कि हमें विज्ञान पर आधारित दर्शन कि 'आपसी सहयोग से जीवित रहना है' स्वीकार करना चाहिए। एक बिल्कुल भिन्न क्षेत्र में भौतिक शास्त्री एवं विज्ञान के इतिहासज्ञ, एन्टोनियो ड्रैगो संघर्ष समाधान के लिए न्यूटन के यंत्रविज्ञान तथा कॉर्नोटू के प्रभाव की असमानताएं दर्शाते हैं। वे भी वैज्ञानिक आधार पर सर्वोपरि सहयोग (transcendental cooperation) की ही सिफारिश करते हैं (ड्रैगो)। मनोचिकित्सक जेरोम डी॰ फ्रैंक भी परस्पर लाभकारी लक्ष्यों के लिए और खतरनाक विरोध से निबटने के लिए, सहयोग की सिफारिश करते हैं। (फ्रैंक 1960; 26'1-2; 1993 : 204-5)

इस मान्यता को कि मनुष्य को सहांरकर्ता अपने पूर्वज 'हत्यारे लंगूरों' से विरासत में मिली है, मध्य अफ्रीका में पाए जाने वाले बोनोबो जाति के लंगूरों की अहिंसक प्रवृत्ति ने चुनौती दी है। यह प्रजाति, लंगूर जाति के बंदरों से अनुवांशिक रूप से भिन्न नहीं है (कानो 1990)। कांगों के मन्दान्दु (Mangandu) लोग, जो कि बोनोबो के साथ उष्णकटिबन्धीय (Tropical) जंगल में साथ-साथ रहते हैं, दृढ़तापूर्वक उनकी हत्या का विरोध करते है।

इसका आधार यह विश्वास है कि कभी उनके पूर्वज तथा बोनोबो एक साथ नातेदार के रूप में रहते थे। (कानो 1990 : 62)। गोरिल्ला, चिंपाजी और दूसरे लंगूरों के विपरीत बोनोबो को कभी भी एक-दूसरे की हत्या करते हुए नहीं देखा गया (रंधम तथा पेटरसन, 1990; वाल 1997)। पुनः हिंसक प्राइमेट प्रजातियों में भी 'शांति-निर्माण' तथा 'प्रत्युपकार' संबंधी हाल के अध्ययन इस दावे को गलत साबित करते हैं कि मानव स्वभाव केवल संहारकता (lethality) पर आधारित है, यह गलत धारणा विकास के क्रम में मनुष्य की अहिंसक क्षमता को नज़र-अंदाज करती है। (वाल 1989 : 1996)। जानवरों के स्वभाव का एक शांतिप्रिय पक्ष है, जैसा कि क्रोपॉटकिन (1914); सोरोकिन (1954) और एलफी कोहन (Alfie Kohn) (1990) ने उल्लेख किया है ठीक उसी प्रकार मानव स्वभाव का एक सहयोगी एवं कृतज्ञ तथा प्रगतिशील, सकारात्मक (brighter side) पक्ष भी है।

पशुओं और मनुष्यों की आक्रामकता के एक तुलनात्मक अध्ययन में नीतिशास्त्री एवं मानवशाली अरनेस-इबल-इब्सफेल्ट (Irenaus Eibl-Ebesfeldt 1979; 240-1) पाते हैं कि हिंसा न करने के आध्यात्मिक आदेश के पीछे एक जीव वैज्ञानिक आधार है। यह देखते हुए कि 'बहुत सी पशु प्रजातियो में आत्मकेंद्रित आक्रामकता इतनी स्वाभाविक हो चुकी है कि इसका परिणाम शारीरिक क्षति नहीं होता' इब्सफेल्ट मानवों में भी हत्या को रोकने के लिए समान, किंतु विस्तृत, तकनीकें पाते हैं। उनका यह निष्कर्ष है कि जीव-वैज्ञानिक मानक से छनकर यह आदेश आता है 'तुम किसी को नहीं मारोगे'। विकास के क्रम में मनुष्य ने एक सांस्कृतिक विचारधारा बना ली है जिसके अनुसार कुछ मनुष्य पूर्ण रूप से मानव नहीं होते। इस विचारधारा ने मनुष्य के जीव-वैज्ञानिक मानक के ऊपर यह मानव-निर्मित सांस्कृतिक मानक चढ़ा लिया है जो आदेश देता है ऐसे लोगों की हत्या करो। युद्ध में इन दो मानकों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है और व्यक्ति को उसकी अंतरात्मा कचोटती है जब वह दुश्मन का एक 'मानव' के रूप में सामना करता है। इसका प्रमाण हमें तब मिलता है जब योद्धा को युद्ध उपरांत 'शुद्धिकरण' तथा सामाजिक स्वीकृति की आवश्यकता महसूस होती है।

इब्ल इब्सफेल्ट शोध की पुष्टि करते हुए ग्रॉसमैन की खोज है कि संपूर्ण इतिहास इस बात का साक्षी है कि युद्ध क्षेत्र में ऐसे पुरुषों की प्रधानता रही है जो युद्ध में शत्रु को मारने का प्रयास नहीं करते, अपनी तथा अपने साथियों की जान बचाने के लिए भी नहीं (ग्रॉसमैन 1995 : 4)। ग्रॉसमैन लिखता है कि आमने-सामने हत्या करने वाले सैनिकों में मनोरोगियों की संख्या अधिक होती

है, उन सैनिकों की तुलना में जो हत्या नहीं करते हैं। सैनिक-मनोवैज्ञानिक और मानव-इतिहासकार-मानव शास्त्री, में परस्पर अपनी खोजों की नीति के उद्देश्य पर भेद है। पहले वाले का कार्य यह है कि हिंसा की प्रतिरोध क्षमता पर विजय प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराना। जबकि दूसरे की समस्या है - "अहिंसक मानव जीव-विज्ञान के साथ संस्कृति में संगति बिठाना अथवा समरूपता लाना।"

इब्ल-इब्सफेल्ट का निष्कर्ष है :

> शांति के लिए विश्वव्याप्त इच्छा का मूल संस्कृति एवं जीव-विज्ञान सिद्धांतों के बीच इस टकराव में स्थित है जिसके कारण अपने जीव-वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सिद्धांतों में समन्वय लाने की इच्छा मनुष्य करते है। हमारा अंत:करण ही हमारी उम्मीद है और इस पर आधारित विवेक-निर्देशत क्रमविकास ही शांति की ओर ले जा सकता है। इस उम्मीद के पीछे इस सच की स्वीकृति है कि जो कार्य युद्ध के द्वारा पूरे किए जाते हैं उन्हें बिना खून खराबे के दूसरे तरीकों से किया जाना चाहिए (1979 : 241)।

मानव की हत्यामुक्त क्षमता को मस्तिष्क विज्ञान भी समर्थन प्रदान करता है। अपनी इस खोज को Neurorealism का नाम देते हुए तंत्रिका वैज्ञानिक ब्रूस ई मॉर्टन 'व्यावहारिक आक्रामकता के दोहरे-चतुष्कोणीय मस्तिष्क का मॉडल (Dual Quadbrin Model of Behavioral Lethality) प्रस्तुत करते हैं, जो हिंसा एवं अहिंसा दोनों के तंत्रिका-तंत्रीय आधारों को दिखाता हैं। मॉडल के चारों हिस्से- "एक ऐच्छिक चतुर्दिक् प्रणाली में दो प्रकार से काम करते हैं" (Function in two modes of a single tetradic System) ये हैं : दिमाग की केंद्रीय प्रणाली, (संवेदना), दाहिनी तथा बायीं अर्द्धगोलार्ध प्रणालियां (कल्पना एवं बुद्धि) तथा न्यूरोसेरेब्रल प्रणाली (intuition)। मार्टन ऊँचे दर्जे की आध्यात्मिक तथा सामाजिक संचेतनाओं के स्रोत को 'न्यूरोसेरेबल' अन्तर्मन की प्रणाली में रखते हैं। यह 'उच्चतर स्रोत' सत्यपूर्ण, सृजनात्मक, आत्मनियंत्रित, परोपकारी, सहयोगी, सहानुभूतिपूर्ण एवं अहिंसक है। यह समूह को दीर्घकालीन अतिजीवन की सुविधा प्रदान करता है तथा यह पूर्णरूप से मस्तिष्क पर आधारित क्रिया है जो सभी को उपलब्ध है। चेतना के इस स्रोत की उत्पत्ति को तीन प्रकार से 'पुकारा' जा सकता है। मौत के करीबी अनुभव से, नशीली दवाइयों के चित्त पर मिथ्या प्रभाव के द्वारा और सबसे महत्त्वपूर्ण, 'ध्यान' के द्वारा। प्रतिदिन के सामाजिक जीवन में यह स्रोत स्वत: ऐसी सहक्रियाएँ (synergy) उत्पन्न करता है जो हत्यामुक्त समुदाय के निर्माण में सहायक होती

है। यह स्रोत घातक धमकियों के अभाव से लाभान्वित होता है और साथ ही इस प्रकार की धमिकयां को नहीं होने देने में योगदान देता है।

इस प्रकार तंत्रिकावादी मस्तिष्क विज्ञान, स्वतः क्रियाशील अहिंसक प्रतिबद्धता और सामाजिक परिवर्तन का आधार प्रदान करता है। यह विचार अहिंसक आध्यात्मिकता तथा जीव-विज्ञान की हत्या के प्रति अनिच्छा के विचार से पूरी तरह सामंजस्य रखता है। यह विचारधारा हिंदू दार्शनिक विवेकानंद की अंतर्दृष्टि से भी मेल खाती है जिन्होंने कहा था कि महान् धार्मिक उपदेशकों को बाहर से भगवान् लाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंदर ईश्वरीय गुण अपनाने चाहिए। यही बात ईसाई टालस्टॉय के इस कथन में भी प्रतिध्वनित होती है। **'ईश्वर का साम्राज्य आपके भीतर है।'** (टालस्टॉय 1974)। यह विचार पंद्रहवीं शताब्दी के भारतीय रहस्यवादी कबीर के अंतर्ज्ञान से तुलनीय है -

ज्यूं नैनूं मैं पूतली, त्यूँ खालिक घट मांहि।
मूरिख लोग न जागही बाहरि ढूँढ़न जाहिं।।
(कबीर ग्रंथावली, श्यामसुंदर दास नवम संस्करण)

परंतु मान लीजिए कि जीव-विज्ञान आधारित मस्तिष्क खराब हो जाएं और लोगों का हत्यारा बना दें तो? यदि इस प्रकार की संहारकता का कारण जीव-विज्ञान हो और अनुकूलन या संस्कृति का परिणाम नहीं तो भी वैज्ञानिक सूझ-बूझ में ऐसी शक्ति है जो ऐसे मनोरोगी हत्यारों को हत्या करने की विवशता से मुक्त कर सकती है। ऐसा बिना मानवीय गुणों को हानि पहुँचाए संभव है। आधुनिक तंत्रीय-विज्ञान, अनुवांशिकी तथा अन्य जीव-विज्ञानों के विकास के साथ यह संभव हो पाया है कि हम मान लें कि यदि संहारकता अपरिहार्य है तथा किसी दिमागी खराबी से जुड़ी है तो भी उसका समाधान संभव है। इस क्षेत्र में विकासवादी तंत्रिका मनोवैज्ञानिक (developmental neuropsychologist) जेम्स डब्ल्यू प्रेसकॉट ने और तंत्रिकामनो-चिकित्सक (neuropsychiatrist) राबर्ट जी हीथ ने एक आधारभूत एवं व्यवहारिक शोध के माध्यम से पथप्रदर्शक उदाहरण दिया है (रेस्टॉक 1979, 118-133) उनका सिद्धांत है कि हिंसा की विवशता उस विद्युत पारिपथ में क्षति के कारण है जो कि दिमाग के उन भागों से जुड़ा हुआ है, जो हमारी संवेदना एवं आंगिक

---

1 मूल पुस्तक में इस दोहे का भावार्थ ही उल्लिखित था, परंतु यहाँ मूल रूप से उसे उद्धृत किया गया है - (अनुवादक)।

प्रणाली की गति को (सेरेब्रल) नियमित करते हैं, उनका अनुमान है कि इन परिपथों में वृद्धि अथवा ह्रास का कारण बचपन के शुरूआती विकास में शरीर के चक्राकार गति की मात्रा (डिग्री) से संबंधित है। इस बात का परीक्षण एक चिंपाजी को बांधकर एक घूमने वाली कुर्सी में उसको चक्राकार घूमाकर किया गया। उन्होंने पाया कि अवरोधित चिंपाजी अधिक आक्रामक थे तथा स्वतंत्र घूमने वाला अधिक सामाजिक था। संस्थात्मक हत्यारे पर, इस मानव-प्रयोग को आगे बढ़ाते हुए, उन्होंने दिमाग के एक निर्दिष्ट स्थान पर एक छोटा-सा इलेक्ट्रोड, जिसे एक पॉकेट उत्प्रेरक के द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है, को एक हत्यारे के कंधे में आरोपित किया। जब 'डाइस्फोरिया' का संवेदन (भावना) अर्थात् हिंसा की इच्छा पैदा होती तो व्यक्ति 'आनन्दायक पथों (Pleasure pathways) को सक्रिय करके इसे समाप्त कर सकता। कुछ 'पागल अपराधियों' को जिन्हें वर्षों से बंधन तथा एकांतवास में रखा गया था, को इस चिकित्सा से तत्काल लाभ पहुँचा। दूसरे लोगों ने भी मानव हत्या अथवा आत्महत्या के लिए आग्रह को लुप्त होते अनुभव किया। असफलताएं भी हैं। एक व्यक्ति ने जिसके मस्तिष्क का सेरेब्रल तार टूट गया था,तत्काल कैंची से एक नर्स की हत्या कर दी। फिर भी इस अद्‌भुत प्रक्रिया की सफलता मानवमात्र को प्राणघातक जीव वैज्ञानिक निराशावाद से छुटकारा दिलाती है।

स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के 23 मनेचिकित्सकों ने जिन्होंने मार्टिन लूथर किंग और सेनेटर राबर्ट एफ केनेडी के वध के पश्चात् संयुक्त राज्य में 'हिंसा के संकट' पर एक समिति का गठन किया था, के निष्कर्ष में राजनीतिविज्ञान से सर्वथा विपरीत, अहिंसक आशावाद की नई दिशाएं मिलीं। (डेनियल, जिलुला और ओचबर्ग, 1970)। जीव-विज्ञान संबंधित हिंसा और आक्रामकता का पुनर्निरीक्षण करने के पश्चात्, मानसिक गति-विज्ञान, वातावरण, क्रोध, अंत: समूहीय टकराव, संचार-माध्यम, आग्नेयास्त्र, मानसिक बीमारी, नशीले पदार्थों का सेवन तथा अन्य दूसरे कारणों के विषय में डेनियल और जिलुंला अपने निष्कर्ष देते हैं - "हमारा मानव स्वभाव के बारे में जितना ज्ञान है उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि हिंसा का युग समाप्त हो सकता है यदि हम दूसरे विकल्पों को अपनाने का निश्चय करें।" (441)

मनोचिकित्सक जार्ज एफ. सोलोमन (1970) द्वारा प्रस्तुत मानव हत्या का एक केस अध्ययन 'मानव-स्वभाव' के असहाय संदर्भ के विपरीत, हिंसा को समझने योग्य एवं युक्तियुक्त रूप से रोकने योग्य बनाता है। एक मामले में स्त्रियों की अकारण हत्या करने वाले एक ऊपरी तौर से भाव-विहीन हत्यारे का समाजीकरण इस प्रकार था - माता-पिता की उपेक्षा, जुआरी पिता तथा माँ के

यौन-शोषण का शिकार, बन्दूकों से प्रेम और नशीली दवाओं का सेवन (ताकि कौटुम्बिक व्यभिचार के अपराध बोध से बचा जा सके)। दूसरे मामले में, पूर्व पत्नी के नये पति के हत्यारे की कहानी यह थी - गरीबी, माँ के प्रति की गई हिंसा के कारण पिता से नफ़रत, पिता द्वारा सिर पर किये गये वार से शरीर में ऐंठन, माता का उपहास, बहनों द्वारा की गई पिटाई, जलसेना का प्रथम सार्जेन्ट बनना, वेश्यालय की एक वेश्या से विवाह, उसके दो बच्चों का पिता बनना जब वह समुद्र पार अपनी ड्यूटी पर था तब पत्नी की बेवफाई का पता चलने पर उस पर वार करके अपनी कलाई की नसें काटकर आत्महत्या की कोशिश व .38 कैलिबर क्षमता वाले बन्दूक से धमकाये जाने पर अपनी सर्विस-पिस्तोल से उसके नए पति की हत्या करदी। हत्या का कारण पत्नी से अपने बच्चों की देखभाल एवं उनसे मिलने के अधिकार के लिए झगड़ा था।

सोलोमन का निष्कर्ष है :

> एक मनोचिकित्सक की हैसियत से मुझे इस बात पर विश्वास है कि मानव के व्यवहार को सुधारा जा सकता है। इसे रोकने तथा सुधारने में हमारी असफलता की वजह अज्ञान है जिसे और अधिक शोध के द्वारा दूर किया जा सकता है। असफलता का कारण है स्वीकृत सिद्धांतों को लागू करने में कमी के आधार पर नवप्रवर्तन के प्रति उदासीनता, और सामाजिक विकृति के प्रति बदले की भावना एवं हिंसाग्रस्त व्यक्ति के 'लाइलाज होने की धारणा।' मनुष्य की उन्नति करने एवं रोग हरने की क्षमता महान् है, उम्मीद है कि उसकी हिंसात्मक प्रवृत्ति को रोका जा सकता है (387)।

हिंसा और आक्रामकता की परंपरा के विपरीत, मानवविज्ञान में अहिंसा और शांति संबंधी मनुष्य की समझ बताती है एक अहिंसक समाज संभव है (स्पान्सल और ग्रेगॉर 1992, स्पान्सल-1996)। जैसा कि लेजेली ई॰ स्पान्सल स्पष्ट करते हैं, 'अहिंसक तथा शांतिपूर्ण समाज बहुत कम मिलते हैं, वस्तुतः इसका कारण यह नहीं है कि वे दुर्लभ हैं, बल्कि इसलिए कि अनुसंधान में, संचार साधनों द्वारा तथा अन्य स्थानों पर अहिंसा और शांति पर विचार नहीं होता। वे आगे कहते हैं - "अहिंसा और शांति की विशेषताओं, शर्तों, कारणों, कार्यों, प्रक्रियाओं और परिणामों को समझना उतना ही आवश्यक है जितना हिंसा तथा युद्ध को समझना जरूरी है। (स्पान्सल 1994a: 18-9)।

मनुष्यों में विश्व-व्यापी संहारकता संबंधी हॉब्स की मान्यता पर किये जाने वाले वैज्ञानिक बहस को पिअरो जोर्जी (1999) तथा जे. एम॰ जी॰ वान डर

डेनेन (Van der Dennen) (1990, 1995) ने आगे बढ़ाया है। नवशताब्दी के मानव-विज्ञान साहित्य में दर्ज युद्ध तथा 50,000 आदिवासी लोगों के संघातिक विवेक के साक्ष्य के पुनर्निरीक्षण में, वानडर डेनकेवल 2000 समुदायों में हिंसा की स्पष्ट स्वीकृति पाते हैं। वे मानते हैं कि शेष समुदायों के योद्धाओं के विषय में जानकारी का अभाव इस बात को सिद्ध नहीं करता कि निश्चित रूप से वे *शांतिप्रिय* थे, वानडर *डेनविश्वव्यापी मनुष्य* की *युद्धप्रियता* संबंधी *मान्यता* के कट्टर समर्थन से होशियार करते हैं (1990 : 257, 259, 264-9) वे मूल आदिम जातियों से जूनी जाति तक 'अति-युद्धउदासीन' 395 समुदायों की मानव जाति विज्ञान में दर्ज आंकड़े प्रमाण के तौर पर उद्धृत करते हैं।

मानव-वैज्ञानिक साहित्य का पुनर्निरीक्षण करते हुए ब्रूस डी॰ बोन्ता (1993) ऐसे 47 समाजों की पहचान की है जो मनुष्य की 'शांतिपूर्ण' क्षमताएं दर्शाते हैं। उनके अनुसार -

> शांति .... उस अवस्था को परिभाषित करती है जिसमें लोग तुलनामक दृष्टि से अत्यधिक पारस्परिक सामंजस्य के साथ निवास करते हैं। यह वह अनुभव है जिसमें वयस्कों का आपस में, वयस्कों और बच्चों में तथा स्त्री एवं पुरुषों में बहुत कम शारीरिक आघात होता है। शांति वहाँ है जहाँ अंतःकलह को शांत करने एवं हिंसा को रोकने के लिए, उचित तरीकों का विकास हो चुका है तथा लोग *आपसी सहयोग* से हिंसा को रोकने के प्रति कृतसंकल्प है, अपने बच्चों को शांतिपूर्ण उपायों को अपनाने की शिक्षा देते हैं और जिनमें शांतिप्रियता की (दृढ़) मज़बूत संचेतना है।

अमीष अनाबापटिस्ट, बालीनिवासी, बेतक, बिरहोर, ब्रदरन बूईड (Buid) चिवांग, दोखोबोर, फीपा, फोर, जीवी, हुतू, आईफालुक, इनूत, जैन, कादर, कुंग, लद्दाखी, लेप्चा, मालपण्डरम्, मबूती, मैनोनाइट, मोन्टागनीज-नासकापी, मोरावियन्न, नयका, नुबियन्न, ओंग, ओरंग, असली, पलियन, पिआरोआ, क्वेकर, ग्रामीण उत्तरी आइरिश, ग्रामीण थाई, सैन सैनपोल, साल्टी, सेमाई, ताहीती, तन्का, तेमियर, तोरजा, त्रिस्तान द्वीपवासी, वावुरा, येन्नाडी ज़पोटक और जूनी लोगों में बोन्ता शांतिप्रियता के साक्ष्य पाते हैं।

इन 24 जनजातियों में अंतःकलह को हल करने संबंधी आगे के अध्ययन (1996) के बाद बोन्ता का निष्कर्ष है :

> पश्चिमी विद्वानों द्वारा स्वीकृत अंतःकलह तथा अंतकलह को शांत करने के संबंध में, बहुत-से विचारों – मुख्यतः यह कि हिंसक

> अंत:कलह सभी समाजों में दुनिवार्य है, कि दण्ड और सशक्त सेना आंतरिक और बाह्य हिंसा को रोकती है और यह कि हिंसा को सकारात्मक और आवश्यक समझा जाना चाहिए-पर समाजों में अंत:कलहों को समाधान संबंधी सफलताओं के प्रकाश में प्रश्न किया जा सकता है। इसके विपरीत साक्ष्य यह है कि आधे से अधिक शांतिप्रिय समाजों में हिंसा का कोई रिकार्ड नहीं है, वे कभी-कभार ही वयस्कों को दण्डित करते हैं (जाति बहिष्कार की धमकी को छोड़कर) वे बाहरी समाजों के साथ उसी प्रकार अंत:कलहों का समाधान करते हैं जिस प्रकार आपसी अंत:कलहों का, वे आंतरिक विवादों को हल करने के लिए बाहरी सरकारी सहायता नहीं लेते और उनमें अंत:कलह के विषय में बहुत अधिक नकारात्मक सोच है। (493)

एक बार-बार प्रकाश में आने वाली मानव वैज्ञानिक खोज यह है समाजों में अधिक या कम हिंसा होने का मुख्य कारण बच्चों का समाजीकरण तथा सामुदायिक आत्म परिचय स्वत: पहचान (self- identify) हैं। फ्रैब्रो 1978) इसके महत्त्व को, डगलस पी॰ फ्राई (1994) ने दो मैक्सिन जपोटक गाँवों की, जिनकी समान सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ हैं, किंतु जिनमें हिंसा की घटनाएँ उल्लेखनीय रूप से भिन्न हैं, के तुलनात्मक अध्ययन में दिखाया है। शांतिपूर्ण ला पाज़, जनजाति में, जहाँ मानवहत्या नहीं के बराबर है नागरिक स्वयं को "आदरणीय, शांतिपूर्ण, ईर्ष्यारहित तथा सहयोगी के रूप में देखते हैं।" (140)। इसी के पड़ोसी हिंसक सैन-आन्द्रेस में, व्यापक रूप से प्रचलित विश्वास अथवा मूल्य प्रणाली यह है कि हिंसा के लिए सजा नहीं होनी चाहिए। (141)। इसके साथ ही महिलाओं के प्रति सम्मान की कमी, पत्नियों की पिटाई, बच्चों को शारीरिक दण्ड देना, अवज्ञाकारी बच्चे, गाली-गलौज, शराबी उपद्रव और लिंगीय दुश्मनी में की गई हत्याएँ, चिरस्थाई कलह तथा बदले की भावना है। भौतिक तथा संरचनात्मक समानताओं के बावजूद मानव हत्या का प्रतिशत, लॉ पाज के प्रति 100,000 में 3.4 प्रतिशत की तुलना में सैन आन्द्रे में 18.1 प्रतिशत है। यह तुलना हमें इस बात को समझने में मदद करती है कि स्थिति सापेक्ष हिंसा संबंधी सामुदायिक नियम और मनुष्य के स्वभाव के विषय में, निराशावाद, हिंसा से अंत:संबंधित है, जबकि अहिंसक विश्वास तथा मूल्य अहिंसक समाज की पूर्वमान्यता है।

मनुष्य की अहिंसक क्षमताओं में विश्वास करने के प्रमुख वैज्ञानिक आधार, सेविल शहर के ऐतिहासिक 'हिंसा पर व्याख्यान' (Statement) 16

मई, 1986)में मिलते हैं जिसकी घोषणा पशु व्यवहार के अनुशासन में *विशेषज्ञों, अनुवांशिक व्यवहार विशेषज्ञ,* जीव-वैज्ञानिक मानव-विज्ञान, नीति-शास्त्र, तंत्रिका-विज्ञान, शारीरिक मानव-विज्ञान, राजनीतिक मनोविज्ञान, मानसिक रोगों की चिकित्सा मनोजीवन विज्ञान, मनो-विज्ञान, सामाजिक मनो-विज्ञान और समाजाास्त्र के एक अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा की गई जो इस प्रकार है :

> **वैज्ञानिक दृष्टि से यह कहना ग़लत** (असत्य) होगा कि हमारे अंदर हिंसा की प्रवृत्ति हमारे पशु पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में मिली है। **वैज्ञानिक दृष्टि से यह कहना असत्य होगा** कि मानव-स्वभाव में, युद्ध अथवा कोई भी हिंसक व्यवहार की रचना अनुवांशिक रूप से हुई है ..... **वैज्ञानिक दृष्टि से यह कहना असत्य है** कि मानव के क्रमिक विकास में अन्य प्रकार के व्यवहारों की तुलना में आक्रामक व्यवहारों का अधिक चुनाव हुआ है ... **वैज्ञानिक दृष्टि से यह कहना असत्य है** कि मनुष्य का 'दिमाग हिंसक' है ... **वैज्ञानिक दृष्टि से यह कहना भी असत्य** है कि युद्ध का कारण 'अंत:प्रेरणा अथवा कोई एक प्रेरणा है।

स्टेनफोर्ड की मनोरोगी-चिकित्सकों की आशावादी अहिंसा के समानांतर सेविल के वैज्ञानिकों की घोषणा है -

> हमारा निष्कर्ष है कि मनुष्यता युद्ध के लिए जीव-विज्ञान द्वारा अभिशप्त नहीं है और मनुष्यता जीव-वैज्ञानिक निराशावाद के बंधन से मुक्त हो सकती है तथा इस 'अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष' एवं आने वाले वर्षों में आवश्यकतानुसार परिवर्तनकारी कार्यों को संपन्न करने के विश्वास से युक्त हो सकती है। यद्यपि यह काम संस्थात्मक तथा सामुदायिक हैं परंतु व्यक्तिगत भागीदारों की संचेतना पर टिके हुए हैं जो आशावाद तथा निराशावाद का महत्त्वपूर्ण कारण हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे मनुष्य के मस्तिष्कों में युद्धों की शुरूआत होती है, और शांति की भी। जिस प्रजाति ने (अर्थात् मानव जाति) युद्ध का आविष्कार किया वही शांति का आविष्कार करने में भी समर्थ है। इसकी जिम्मेदारी हममें से हरेक की है।
>
> (एडमज 1989 : 120-1; 1997)

2 अगस्त, 1939 को अल्बर्ट आइंसटाइन ने राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी॰ रूजवेल्ट को सूचित करते हुए एक पत्र लिखा कि परमाण्विक भौतिक विज्ञान

का विकास इस अवस्था तक पहुँच चुका है कि "नये प्रकार के अति शक्तिशाली बमों' का निर्माण विचारणीय हो गया है (नथन और नार्डन 1968; 295)। इसका परिणाम संयुक्त राज्य के एक छः हज़ार डालर वाले प्रारंभिक निवेश, अरबों डालर वाले मैनहट्टन प्रोजेक्ट, और छः वर्ष पश्चात् विश्व के प्रथम यूरेनियम तथा प्लुटोनियम बम के निर्माण तथा प्रयोग पर एक सलाहकारी समिति के निर्माण, में देखने को मिला। साठ वर्ष पश्चात् यह स्वीकार करना संभव है कि अहिंसक मानव क्षमताओं के पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण हैं जिन्हें प्रणालीगत रूप से संगठित एवं विकसित किया जाए तो यह अहिंसक मानवता के स्वतः रूपांतरण की क्षमता रखते हैं। इसके सूचक है सौ से भी अधिक 'अहिंसा' पर शोध जो कि केवल अमरीका में ही 1963 से मानवविज्ञान, शिक्षा, इतिहास, भाषा और साहित्य दर्शन मनोविज्ञान, राजनीतिविज्ञान, धर्म, समाजशास्त्र, भाषा और नीतिशास्त्र के क्षेत्र में हुए हैं। (Dissertation Abstracts International 1963)। इनके साथ यदि उन शोधों को जोड़ा जाए तो अन्य देशों में पूरे हुए जैसे भारत में, अंग्रेज़ी से भिन्न भाषाओं में, शैक्षिक सम्मेलनों में प्रस्तुत शोधपत्रों में, किताबों और अंतर्विषयक सिमपोसिया में, (कूल 1990-1993) नए अंतःसंबंधित विश्लेषण में, (ग्रेज 1996) नई पत्रिकाओं में (अहिंसा का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (पत्रिका) 1993), अहिंसक क्रियाओं की ग्रंथ सूची में (मैकार्थी और शार्प 1997) और दूसरे स्रोतों में-तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि 'शांति' और 'संघर्ष समाधान' पर साहित्यिक योगदान में अहिंसक ज्ञान का साहित्य वृद्धि कर रहा है। वर्तमान अहिंसक ज्ञान क्षमता 1939 के परमाणु भौतिक विज्ञान संबंधित ज्ञान भण्डार से तुलनीय है।

अहिंसक क्षमता के प्रमुख दृश्यांश

आधुनिक समाजशास्त्र के संस्थापक इमाइल दुर्खीम, सैद्धांतिक रुचियों (पसंदों) के प्रश्नों से संबंधित सामाजिक जीवन के 'प्रमुख दृश्यांशों' की तरफ ध्यान आकर्षित करने का आग्रह करते हैं। इस विचार को अमरीका के समाज मनोवैज्ञानिक डोनाल्ड टी॰ कैम्पबेल ने आगे बढ़ाया जिन्होंने नाथ वेस्टर्न यूनिवर्सिटी के राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से घटित सामाजिक प्रयोगों के प्रति, जो कि प्रायोगिक प्रयोगशालाओं में आविष्कृत प्रयोगों के समान ही होते हैं - सावधान रहने की शिक्षा दी (पेज (Paige) -1971)। राजनीति विज्ञान का झुकाव व्यवहार के अध्ययन के आधार पर सिद्धांत का विकास करने की तरफ है - जैसे मैक्यावली का क्रूर, निष्ठुर शासक सीज़र बोर्जा की तकनीकों का 'द प्रिंस' नामक पुस्तक में सैद्धांतिक विस्तृत वर्णन में मिलता है। उसी प्रकार अहिंसक व्यवहार के लिये जो उदाहरण 'स्वाभाविक'

रूप से ऐतिहासिक और समकालीन अनुभव में मिलते हैं, अहिंसक सामाजिक परिवर्तन की संभावना के महत्त्वपूर्ण सूचक हैं।

सार्वजनिक नीतियाँ

ऐसे राजनीतिक निर्णय जिनका कि रुझान अहिंसक समाजों की प्राप्ति की तरफ है, के उल्लेखनीय उदाहरण उन देशों में मिलते हैं जिन्होंने मृत्युदण्ड को समाप्त कर दिया है, वे देश जहाँ सेनाएं नहीं हैं, और वे देश जहाँ सैनिक सेवा में अंतरात्मा के आधार पर हिंसा का विरोध करने का अधिकार है।

अप्रैल 2000 तक, विश्व के 195 देशों और प्रदेशों में से 73 ने सभी प्रकार के अपराधों के लिए मृत्युदण्ड को खत्म कर दिया था।

सूर्या-2

मृत्युदण्ड से मुक्त देश और प्रदेश (73)

अंगोरा	ग्रीस	नॉर्वे
अंगोला	गिनी-बिसाऊ	पलाऊ
ऑस्ट्रेलिया	हैती	पनामा
ऑस्ट्रिया	होण्डरस	पराग्वे
अजरबैजान	हंगरी	पोलैण्ड
बेल्जियम	आइसलैण्ड	पुर्तगाल
बुल्गारिया	आयरलैण्ड	रोमानिया
कम्बोडिया	इटली	सैन मारिनो
कनाडा	किरिबती	साओ टोम और प्रिंसिप
कैपविर्द	लाइकेनस्टाइन्	सैशेल्स
कोलम्बिया	लिथुआनिया	स्लोवॉक गणराज्य
कोस्टा-रिका	लक्ज़मवर्ग	स्लोवीनिया
क्रोशिया	मेसिडोनिया	सोलोमन द्वीप
चेक-गणराज्य	मार्शल	द. अफ्रीका

डेनमार्क	मारिशॉस	स्पेन
जाबूती	माइक्रोनेशिया	स्वीडन
डोमिनिकन गणराज्य	मोल्डोवा	स्विट्ज़रलैण्ड
पूर्वी तिमोर	मोनाको	तुर्कमेनिस्तान
इक्वाडोर	मोज़ाम्बीक	तुवालू
इस्तोनिया	नामीबिया	यूक्रेन
फिनलैण्ड	नेपाल	युनाइटेड किंगडम
फ्रांस	नीदरलैण्ड्स	उरुग्वे
जॉर्जिया	न्यूज़ीलैण्ड	बानुआतू
जर्मनी	निकारागुआ	वेनेजुएला

स्रोत-एमनेस्टी इन्टरनेशल-2000

वैज्ञानिक तथा सार्वजनिक नीति की रुचि ऐसे प्रत्येक उद्धृत देश जहाँ मृत्यु दण्ड को पूर्णतया समाप्त कर दिया गया है में है। क्यों कैसे और कब किसी सरकार ने हिंसा न करने का फैसला किया? क्यों कुछ देशों, संस्कृतियों तथा क्षेत्रों में यह विद्यमान है जबकि अन्य स्थलों में यह बिल्कुल अनुपस्थित है? वर्तमान वैश्विक आदर्श/पैटर्न के लिए नव-प्रवर्तन तथा विस्तार की कौन-सी ऐतिहासिक प्रक्रिया मौजूद है? अहिंसापूर्ण परिवर्तन के इन उदाहरणों का भविष्य के विश्वव्यापी हिंसारहित समाजों की प्राप्ति में क्या योगदान है?

जिन राज्यों ने मृत्युदण्ड पूर्णतया समाप्त कर दिया है उनके अलावा 14 ऐसे राज्य हैं जिनमें साधारण अपराधों के लिए मौत की सज़ा नहीं है। इसे सैनिक शासन की असाधारण परिस्थितियों तथा युद्ध की स्थिति में ही प्रयोग में लाया जाता है। (उदाहरण के लिए अर्जेंटीना, बोस्निया हर्जेगोवीना, ब्राजील, इजराइल, मैक्सिको, दक्षिण अफ्रीका और ब्रिटेन)। 23 राज्य कानूनी तौर पर मृत्युदण्ड को स्वीकार करते हैं, किंतु वहाँ दस एवं उससे भी अधिक वर्ष से किसी को फाँसी की सजा नहीं दी गई (उदाहरण के लिए, अल्बानिया, ब्रूनेई, दार-ए-सलाम, काँगों, पापुआ न्यू गिनी, सेनेगल, श्रीलंका, टर्की और पश्चिमी समोया)। 91 देशों के कानून में मृत्युदण्ड का प्रावधान है और हत्या किया जाना जारी है (चीन, मिस्र, भारत, इण्डोनेशिया, जापान, नाइजीरिया, पाकिस्तान, रूस और संयुक्त राज्य अमरीका को सम्मिलित करते हुए)। जहाँ संयुक्त राज्य

अमरीका में संघीय अपराधों के लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान है वहाँ इसके पचास राज्यों में से बारह राज्यों-अलास्का, हवाई, आईओवा, मेन, मैसाचुएट्स, मिशीगन, मिनेसोटा, उत्तरी डकोटा, रोड आइलैण्ड, वर्मन्ट, पश्चिम-वर्जीनिया और विसकोन्सिन में तथा कोलम्बिया में, इस दण्ड को समाप्त कर दिया गया है।

निषेध और पुनः लागू करने के बीच खींचातानी के बावजूद, हिंसा की परंपरा से उत्पन्न विश्व का झुकाव इस तरफ हो रहा है कि सरकार 'मृत्युदण्ड को समाप्त करे'। यह इस विश्वास को दृढ़ करता है कि हत्या मुक्त समाज बनाना संभव है। नागरिकों की हत्या को रूसो के 'सामाजिक संविदा' का आवश्यक हिस्सा बनाने की आवश्यकता नहीं जैसा कि मैक्स बेबर निर्दिष्ट और न ही करते रहे हैं राजनीति की अहस्तांतरणीय विशेषता बना चाहिए।

यदि सेना रहित देशों का भी विचार करें तो 2001 में से ऐसे देश कुल 27 थे। ये सभी संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य देश हैं, केवल कुक द्वीप नियूई और वेटिकन को छोड़कर।

तालिका-3

सेना रहित देश (27)

सेना रहित (19)	**सेना रहित (सुरक्षा संधि) (8)**
कोस्टारिका	अंगोरा (स्पेन, फ्रांस)
डोमिनिका	कुक द्वीप (न्यूजीलैण्ड)
ग्रेनेडा	आइस लैण्ड (नाटो, यू॰ एस॰ ए॰)
हैती	मार्शल द्वीप (यू॰ एस॰ ए॰)
किरीबू	माइक्रोनेशिया (यू॰ एस॰ ए॰)
उजबेकिस्तान	मॉनाको (फ्रांस)
मालदीव	नीयू (न्यूजीलैण्ड)
मारिशस	पलाऊ (संयुक्त राज्य अमरीका)।
नॉरु	
पनामा	**(स्रोत-बारबे 2001)**
सेन्ट किट्स और नेविस	
सेंट लूसिया	

सेंट विन्सेंट और ग्रेनाडियन्स

सोमाथा

सैन-मारिनो

सोलमेन द्वीप

तुवालू

वनयुआटो

वेटिकन

संप्रभुता का दावा करने वाले देशों के साथ समझौते के द्वारा, जैसे फिनलैण्ड का अलंद द्वीप अथवा अंटार्कटिका एवं मून को शामिल कर अंतर्राष्ट्रीय संधि के द्वारा कम-से-कम 18 परतंत्र प्रदेशों अथवा भौगोलिक क्षेत्रों को सेनामुक्त कर दिया गया है (बारबे-2001)।

उन देशों में सेना की अनुपस्थिति आश्चर्यपूर्ण हो सकती है जहाँ राष्ट्रीय पहचान, सामाजिक नियंत्रण, सुरक्षा तथा आक्रमण के लिए (सेना) का होना अनिवार्य माना गया है। यद्यपि वे देश जहाँ कि सेना नहीं है छोटे है एवं सशस्त्र अथवा अर्धसुरक्षाबलों पर निर्भरता से युक्त हैं, वे गैर-सैनिक दशा की संभावना को दिखाते हैं। हिंसामुक्त देश की कल्पना अविचारणीय नहीं है।

सेना में बलपूर्वक भर्ती के खुले विरोध को राज्य-स्वीकृति, अहिंसक राजनीतिक क्षमता का दूसरा साक्ष्य है। 1998 में 47 देशों के कानून में सैनिक सेवा में रहते हुए नागरिकों के मारे जाने के बारे में 'सैद्धांतिक इंकार' के रूपों को मान्यता दी है।

देश और क्षेत्र-जहाँ पर अंतरात्मा की आवाज़ पर सेना में सेवा का विरोध करने का अधिकार है।

ऑस्ट्रेलिया	इस्राईल	सूरीनाम
ऑस्ट्रिया	इटली	स्वीडन
अजरबैजान	किरगिज़िस्तान	स्विट्ज़रलैण्ड
बेल्जियम	लाटिविया	यूक्रेन
बारमूडा	लिथुआनिया	यूनाइटेड किंगडम
ब्राज़ील	माल्टा	संयुक्त राज्य अमरीका
बुल्गारिया	मोल्डोवा	उरुग्वे

कनाडा	नेदरलैण्ड्स	उज़बेकिस्तान
क्रोशिया	नॉर्वे	यूगोस्लाविया
साइप्रस (ग्रीक-साइप्रेस)	पराग्वे	ज़िम्बाब्वे
चेक गणराज्य	पोलैण्ड	
डेनमार्क	पुर्तगाल	
इस्टोनिया	रोमानिया	
फिनलैण्ड	रूस	
फ्रांस	स्लोवाकिया	
जर्मनी	द. अफ्रीका	
गुयाना	स्पेन	
हंगरी		

स्रोत- होरमैन और स्टोल्विक 1998

विरोध के स्वीकार्य वैध आधार, संकुचित धार्मिक आवश्यकताओं से लेकर व्यापक आध्यात्मिक पहचान, दार्शनिक, नैतिक, आदर्शात्मक, मानववादी अथवा हिंसा-निषेध के राजनीतिक कारणों के मध्य बड़े पैमाने पर बदलते रहते हैं। इसी प्रकार वैकल्पिक सेवाओं, सेवारत सैनिकों में 'अंतरात्मा के आधार पर विरोध' की क्षमता और कानून लागू करने में विश्वसनीयता के मामलों में अपार भिन्नता पाई जाती है।(मोस्को और चेम्बर्स 1993)। प्रचलित अहिंसा का उदारतम अधिकार संघीय गणराज्य जर्मनी के 1949 के मूल-कानून के अनुच्छेद 4 में है -**"किसी भी व्यक्ति को अपनी अंतःकरण के विरुद्ध शस्त्र से युद्ध-सेवा करने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा"** (कहुलमान और लिपर्ट 1993-98)। मृत्युदण्ड की समाप्ति और सेना-रहित राज्यों के उद्‌गम की तरह ही सैनिक हत्यारे बनने से इंकार को राजनैतिक स्वीकृति के विचार की व्युत्पत्ति, इससे संबंधित प्रक्रियाएं एवं विश्वस्तर पर इसकी रूपरेखा और भविष्य-अद्वितीय वैज्ञानिक रुचि का विषय है।

सामाजिक संस्थाएँ - ऐसी संस्थाएँ जो अहिंसक समाज के लिए लगभग उचित हों या भविष्य के अहिंसक समाज की रचना की ओर ले जाएं, अभी से विश्व के अनेक भागों में अस्तित्व में आ चुकी हैं। ये हत्या न करने के प्रति मनुष्य की क्षमता की प्रतिबद्धता के संबंध में नया साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

यदि इन बिखरी हुई संस्थाओं को रचनात्मक रूप से जोड़ दिया जाए और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल दिया जाए तो आज भी एक हिंसा रहित समाज की परिकल्पना का प्रदर्शन करना संभव है, जो अनुमानित अटकलबाज़ी का उत्पाद नहीं, बल्कि मनुष्य के प्रमाणित अनुभव पर आधारित है। बहुतों में से केवल कुछ के बारे में यहाँ संक्षेप में उल्लेख किया गया है। प्रत्येक समाज की अपनी कहानी है जो संपूर्णता में विस्तार से बताई जाने योग्य है।

आध्यात्मिक संस्थाएँ - अहिंसक विश्वासों से प्रभावित धार्मिक संस्थाएँ पूरे विश्व में देखी जा सकती हैं। उनमें पूर्व के जैन, पश्चिम के क्वेकर, जापान की 'अंतर्राष्ट्रीय शांति और भाईचारे की संस्था', फ्रांस में 'बौद्ध प्लम गाँव समुदाय', अफ्रीका में साइमन किंबंगु चर्च, रूस और 'कनाडा के दूखोबोर (आत्मा-योद्धा) और संयुक्त राज्य में 'यहूदी शांति सभा' आते हैं। विश्वस्तर पर, 1919 में स्थापित, 'फेलोशिप ऑफ रिकन्सिलियेशन', सभी तरह के विश्वासों (आस्था) वाले स्त्रियों और पुरुषों को आमने-सामने लाते हैं "जो न्याय की प्राप्ति तथा समुदाय को बचाये रखने के लिए प्रेम और सत्य की शक्ति में विश्वास रखने वाले आधार से संबंधित है, जीने के तरीके के रूप में तथा व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूपांतरण के साधन के रूप में सक्रिय अहिंसा के प्रति अपने आप को समर्पित करते हैं।"

राजनीतिक संस्थाएँ - अहिंसा के उच्च सिद्धांतों के प्रति 'फेलोशिप पार्टी ऑफ ब्रिटेन' है जिसकी स्थापना रोनाल्ड मेलोन जॉन लवरसीड और अन्य ईसाई शांतिवादियों एवं द्वितीय विश्वयुद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों ने 1955 में ब्रिटेन में की थी। यह युद्ध के लिए होने वाली सभी तैयारियों के विरुद्ध तथा आर्थिक तथा सामाजिक न्याय के लिए कला व खेल के माध्यम से प्रचार करती है। जर्मनी में पेट्रा के. केली तथा तीस अन्य लोगों द्वारा 1979 में स्थापित पर्यावरण संबंधी डाय ग्रुन (हरित-दल) में 'अहिंसा' महत्त्वपूर्ण मूल्य के रूप में स्वीकृत है। गाँधी और मार्टिन लूथर किंग इस अहिंसक आंदोलन की प्रेरणा के अन्य स्रोत हैं। (केली 1989)। हालाँकि पर्यावरण संबंधी राजनीतिक दल (Green Parties) का प्रभाव राजनीतिक नीतियों और व्यवहार में कम दिखाई देता है परंतु इनका विश्वभर में एक नए प्रकार की सामाजिक चुनावी पार्टी के रूप में, जिसका आधार अहिंसा है, प्रसार एक नई राजनीतिक मिसाल प्रस्तुत करता है। संयुक्त राज्य की शांतिवादी पार्टी 'पेसिफिस्ट दल', जिसकी स्थापना, 1983 में, ब्रैडफोर्ड लिटिल द्वारा की गई जो कि 1996 तथा 2000 में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के उम्मीदवार थे, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक तथा मानवतावादी सिद्धांतों पर की गई अमेरीकी समाज के अहिंसक रूपांतरण तथा विश्व में इसकी ऐसी

रूपांतरित भूमिका की माँग करता है। भारत में सर्वोदय पार्टी, जिसकी स्थापना टी॰ के॰ एन. उन्नीथन तथा अन्य लोगों द्वारा की गई सभी के हित के लिए, गांधीवादी मॉडल पर आधारित सामाजिक विकास को आगे बढ़ाने के लिए, चुनावी अखाड़े में उतरती है। राजनीति से बचकर अलग रहने वाली गांधीवादी परंपरा से विलगाव को न्यायोचित बताते हुए, सर्वोदय पार्टी कहती है, "सत्ता स्वभाव से उदासीन है, यह केवल भ्रष्ट लोगों के हाथ में पड़ कर ही भ्रष्ट होती है।" विश्व-स्तर पर *गाँधीवादी अहिंसा से प्रभावित अद्वितीय ट्रांसनेशनल* रैडिकल पार्टी का 1987 में इटली के पातीतो रेडीकल (Partito Radicale) में से जन्म हुआ। इसका उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र संघ पर अहिंसा का प्रभाव डालने के लिए विश्व-स्तर पर विशिष्ट बल देना है (जैसे मृत्यु-दण्ड की समाप्ति के लिए अंतरात्मा के विरोध को पहचानने के लिए तथा युद्ध अपराधियों पर मुकदमा चलाने के लिए)। पार्टी राष्ट्रीय चुनावों में हिस्सा नहीं लेती। सदस्य किसी भी पार्टी की दोहरी सदस्यता ले सकते हैं और सदस्यता-शुल्क प्रतिव्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद का एक प्रतिशत निश्चित हुआ है। गांधीजी की सोच के अनुरूप यह पार्टी कहती है, "एक बेहतर विश्व के निर्माण में बहु-राष्ट्रीय (Transnational) कानून तथा अहिंसा सबसे अधिक प्रभावशाली उपाय हैं।"

आर्थिक संस्थाएँ- अहिंसा के सिद्धांत को अभिव्यक्त करने वाली प्रमुख आर्थिक संस्थाओं में पूँजीवादी म्यूचुअल स्टॉक फण्ड शामिल है, जो युद्ध से संबंधित उद्योगों में निवेश नहीं करती (पैक्स विश्व फण्ड)। इसी प्रकार गांधीवादी तथा किंगवादी अहिंसा से प्रभावित एक मजूदर संगठन (United Farm Workers of America) जिसकी स्थापना सीज़र, शावेज़, डोलोर्स हयूरटा और दूसरे लोगों ने की, और श्रीलंका में बौद्ध अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित, एक बृहद् समुदाय विकास कार्यक्रम में (ए॰ टी॰ आर्यरत्ने के नेतृत्व वाला) सर्वोदय श्रमदान संगठन हैं, भी इसी प्रकार के संगठन हैं यद्यपि ये सीमित रूप से ही सफल रहे। विनोबा भावे (1994) तथा जयप्रकाश नारायण (1979) के नेतृत्व में, गांधीजी के 'ट्रस्टीशिप सिद्धांत' से प्रभावित भारत में भूदान आंदोलन (जिसके अंतर्गत भूमि को भूमिहीनों में हस्तांतरित किया गया) का अनुभव दिखाता है कि दुर्लभ संसाधनों का अहिंसापूर्ण पुनः वितरण अकल्पनीय नहीं है। गाँधी फाउण्डेशन (लंदन में), सर्वोदय अंतर्राष्ट्रीय ट्रस्ट (बंगलोर) तथा ए॰ जे॰ मस्त संस्थान (न्यूयार्क) जैसी लोकहितैषी संस्थाएँ भी समाज की अहिंसायुक्त सेवा का समर्थन करती हैं।

शैक्षिक संस्थाएँ - 'गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान' (मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय), तमिलनाडु, के संस्थापक शिक्षाविद् डॉ॰ जी॰ रामचन्द्रन् (1903-95) ने महात्मा गाँधी के विचारों से प्रेरित हो हमें अहिंसा की सर्वधर्म सम्मान भावना द्वारा मानवमात्र की आवश्यकताओं की पूर्ति की संभावना पर आधारित एक संपूर्ण विश्वविद्यालय विरासत में दिया है। यह विद्यालय तीस गाँवों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और इसकी महत्त्वपूर्ण संस्थागत विशेषता है – (1) व्यवहारिकता के आधार पर विषयों की शिक्षा : जैसे राजनीति विज्ञान तथा ग्राम निर्णयकारी क्रियाएँ, भौतिक विज्ञान तथा रेडियो की मरम्मत, जीव-विज्ञान तथा कुंओं की सफाई, कला और सृजनात्मक बाल-विकास; (2) स्नातक के प्रत्येक छात्र द्वारा समस्या-निराकरण शोध पत्र, (3) स्थानीय जरूरतों को पूरा करने के लिए तमिल को मिलाकर तीन भाषाओं का अध्यापन, राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी, विश्व से संपर्क के लिए अंग्रेज़ी, तथा स्थानीय आवश्यकताओं के लिए, तमिल; (4) कैम्पस के रखरखाव तथा सेवा के लिए श्रम दान क्योंकि द्वारपाल, ज़मीन की देखभाल करने वाले और रसोइयों को विश्वविद्यालय नहीं नियुक्त करता है।

रामचन्द्रन् का विशेष योगदान उच्च शिक्षा के इस संस्थान में सैनिक प्रशिक्षण के विकल्प के रूप में, अहिंसा 'शांति सेना' - (Peace Corps) की स्थापना हैं -इसके ऊर्जावान संगठनकर्त्ता साहित्य के प्रोफेसर एन. राधाकृष्णन रहे (1992; 1997)। 1958 से 1988 के मध्य शांति सेना में पाँच हज़ार स्व-अनुशासितों को प्रशिक्षण दिया जिन्होंने प्रण लिया कि वे 'शांति के लिए कार्य करेंगे एवं आवश्यकता पड़ने पर जीवन को कुर्बान करने के लिए तैयार रहेंगे।' आध्यात्मिक, शारीरिक, बौद्धिक तथा संगठनात्मक प्रशिक्षण को संयुक्त करते हुए, शांतिसेना, आपसी झगड़ों को शांत करने, सुरक्षा कार्यों, प्राकृतिक आपदाओं में सहायता करने तथा समुदाय की आवश्यकताओं के मद्देनजर सहकारी सामुदायिक सेवा के लिये विद्यार्थियों को तैयार करती है। शांति सेना की प्रवृत्ति हमेशा यही रही है कि **ग्रामीणों के साथ मिलकर**, बच्चों की देखभाल, स्वच्छता, गृह-निर्माण तथा स्थानीय कला परंपरा का संरक्षण करने जैसी बातों में सुधार लया जाए। 1970 के मध्य में जहाँ कुछ शहरी विश्वविद्यालयों की आलोचना अत्याचार के यंत्रों रूप में होने लगी वहीं गाँधी ग्राम के पास के ग्रामीणों ने अपने ग्रामीण संस्थान को 'मुक्त विश्वविद्यालय' का दर्जा मिलने का उत्सव मनाया। शांति सेना, कैम्पस की सुरक्षा की जिम्मेदारी को स्वीकार करती है। सशस्त्र सेना को कैम्पस में प्रवेश की अनुमति नहीं है, यहाँ तक कि भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू, इन्दिरा गाँधी और दूसरी महत्त्वपूर्ण लोगों के आने पर भी।

प्रशिक्षण संस्थाएँ-सामाजिक परिवर्तन, विवादित क्षेत्रों में हस्तक्षेप, सामाजिक संरक्षण तथा अन्य उद्देश्यों को पूरा करने वाली अहिंसक सामाजिक संस्थाएँ तेज़ी से उभर रही हैं। ऐसे अनुभवी प्रशिक्षकों की देश तथा विदेशी में तेज़ी से माँग बढ़ रही है जो मनुष्य की उसकी इस क्षमता में विश्वास को दृढ़ कर रहे हैं कि समस्या को हल करने के लिए हिंसक तरीकों के स्थान पर अहिंसक साधनों को प्रतिस्थापित किया जा सकता है। इस संबंध में कुछ संगठनों तथा प्रसिद्ध प्रशिक्षकों का विवरण इस प्रकार है - 'अहिंसा का जी॰ रामचन्द्रन स्कूल' (एन. राधाकृष्णन), 'अंतर्राष्ट्रीय शांति बिग्रेड' (नारायण देसाई), 'फ्लोरिडा मार्टिन लूथर किंग, लाफेयेटी और सहयोगियों का अहिंसा का जूनियर संस्थान, (बनार्ड लाफेयेटी, जूनियर चार्ल्स एल॰ आलफिन, सीनियर और डेविड जेनसन), इन्टरनेशनल फैलोशिप ऑफ रीकंसिलियेशन' (हिल्दगार्ड, गॉस-मायर और रिचर्ड डीट्स), 'ट्रेनिंग सेन्टर वर्कशाप' (जार्ज लेके), 'वार रेसिस्टर्स इन्टरनेशनल (हारवर्ड क्लार्क), 'फिलिस्तीनी सेंटर फार दी स्टडी ऑफ नानवाइलेंस', (मुबारक अवाड), 'नानवाइलसें इंटरनेशनल' (माईलिक बियर), 'सरवीसियो पाज़ ए जस्टिशिया', (एडोल्फ परेज इस्क्बील) 'इन्टरनेशनल नेटवर्क ऑफ एनगेज्ड बुद्धिस्टस' संबंधित बौद्धों का अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क (येशुआ मोज़र पुआंग सुवान) और 'ट्रान्सेन्ड' (जान गाल्तुंग)।

जापानी अहिंसक सैनिक कला 'अकीदो' अहिंसक आत्मरक्षा तथा चरित्र विकास का प्रमुख साधन हो सकती है जिसका सामाजिक परिवर्तन की अहिंसक रणनीति में अतिरिक्त प्रयोग संभव है। जैसा कि इसके संस्थापक मोरिहे योशिबा द्वारा पढ़ाया गया - 'टुकड़े-टुकड़े कर देना, चोट पहुँचाना अथवा नष्ट कर देना-मनुष्य द्वारा किये जा सकने वाले क्रूर पाप है।' अकीदो का उद्देश्य विश्व की जीवनी-शक्ति के साथ समरसता बनाना है। 'अकीदो प्रेम की अभिव्यक्ति है' (स्टैवेन्स 1987 : 94, 112; योडर 1983 : 28)।

सुरक्षा संस्थाएँ - अहिंसक साधनों से सामुदायिक सुरक्षा प्राप्त करने की क्षमता विश्व में उपस्थित भिन्न-भिन्न संस्थाओं ने दर्शायी है। जापान, जहाँ नागरिक सशस्त्र नहीं होते, इसका एक उदाहरण है। इसी प्रकार बिना आग्नेयास्त्रों की ब्रिटिश पुलिस, फिनलैण्ड की जेलों के निशस्त्र द्वारपाल, सिटियो कैन्टोमानयोग, फिलीपीन्स के निरस्त्रीकृत 'शांति क्षेत्र', जर्मनी का शस्त्र रहित नागरिक सुरक्षा संगठन (Bund fur Sozide Verteidigung) तथा ऐसे अहिंसक संगठन जो युद्ध क्षेत्र में शांतिपूर्ण हस्तक्षेप करते हैं, भी इसी श्रेणी में आते हैं (मोज़र-पुआंगसुवान तथा वेबर 2000; माहोनी तथा ईग्यूरेन, 1997)। इनमें हथियार-मुक्त विश्व की प्राप्ति की दिशा में सरकार तथा नागरिकों के संगठन

द्वारा चलाये जाने वाले विभिन्न आंदोलनों, जिनका उद्देश्य-परमाण्विक, जैविक तथा रासायनिक हथियारों को समाप्त करना है तथा हैण्डगन, लड़ाई के हथियार एवं बारूदी सुरंगों पर प्रतिबंध लगाना है- को भी अवश्य शामिल किया जाना चाहिए। ऐसे संगठनों में 'शांति और समझौते का केंद्र (Centre for Peace's and Reconciliation) है जिसकी स्थापना कोस्टारिका के पूर्व राष्ट्रपति तथा 1987 नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित आस्कर एरियास सांचेज ने की थी। 'शस्त्र व्यापार को समाप्त करने का आंदोलन' (Movement to Abolish Arms Trade) जिसकी स्थापना फिलीपिंस में रोनाल्डो पैको (Pacheco) और हैदी याराक (Yorac) द्वारा की गई, के अनुभव से प्रेरणा लेकर बना है, और प्राकृतिक बन्दूक-विहीन समाज समाज गुलाम व्यापार रोकने तथा विलुप्तप्राय प्रजातियों के रूप में मानव जाति को बचाने में लगा है (विलाविन्सेन्सियो-पॉरोम 1995)।

शोध संस्थाएँ - पश्चिम में अल्बर्ट आइंस्टीन संस्थान (कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स) जिसकी स्थापना जीन शार्प द्वारा की गई पूरे विश्व में लोकतंत्र के लिए अहिंसक संघर्ष, सुरक्षा तथा न्याय विषय पर शोध करता है। पूर्व में गांधीवादी अध्ययन संस्थान-(वाराणसी, भारत) जिसकी स्थापना जयप्रकाश नारायण ने की थी अहिंसक सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए समाज विज्ञान में शोध को बढ़ावा देता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर थियोडर एल॰ हर्मन द्वारा स्थापित अंतर्राष्ट्रीय शांति शोध संगठन का अहिंसावादी आयोग (Commission) अहिंसक अंतर्राष्ट्रीय शोध, शिक्षा व कार्यों के अनुभव को आपस में बांटने में सहायता करता है।

समस्या को हल करने वाली संस्थाएँ-अहिंसा के सिद्धातों के अनुसार समस्याओं को हल करने के प्रति समर्पित संस्थानों में 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' (मानव अधिकारों की सुरक्षा तथा मृत्यु-दण्ड को समाप्त करना), 'ग्रीनपीस इंटरनेशनल' (वातावरण की सुरक्षा तथा परमाणु हथियारों को समाप्त करना), 'वार रेसीस्टर्ज़ इंटरनेशनल' (सेना में जबरदस्ती भर्ती पर अंतरात्मा पर आधारित विरोध की रक्षा और युद्ध संबंधी सभी तैयारियों का विरोध), और मेडिसिन्स सैन्स फ्रन्टियर्स' (हिंसा के शिकार लोगों की मानवीय चिकित्सकीय देखभाल) आदि शामिल हैं।

संचार माध्यम-संचार माध्यमों की क्षमताएं जो कि अहिंसा के परिप्रेक्ष्य में, स्थानीय तथा भू-मंडलीय दशाओं की सूचना देती हैं एवं उनपर टिप्पणी करती हैं अद्वितीय पत्रकार कोलमैन मैकार्थी (1994) के कार्यों एवं विश्व के विभिन्न भागों में होने वाले बहुत से प्रकाशनों द्वारा उद्धृत की गई हैं। इसमें सम्मिलित हैं 'Day by Day', ब्रिटेन की शांति समर्थक पार्टी 'फैलोशिप पार्टी'

का मासिक, जो प्रेस, कला एवं खेलों पर अपने विचार व्यक्त करता है। बैंकाक के बौद्धों का 'सीड्स ऑफ पीस' (Seeds of Peace), अंतर्राष्ट्रीय पीसन्यूज : फार नॉनवायलेंट रिवोलुशन (अहिंसक आंदोलन के लिए शांति समाचार), लंदन, फ्रांस की मासिक पत्रिका 'अहिंसा की सत्यता' (Non-Violence Actualite) (मोन्टारगिस), इटली का 'एज़ीओन नॉनवायलेण्टा' (Azione Nonviolenta) (वरोना), जर्मनी का 'ग्रासवर्ट रिवोलुशन' (ओल्डनवर्ग), और अमरीकी पत्रिकाएँ 'फैलोशिप' न्याक, न्यूयार्क) और 'नानवाइलेंट एक्टिविस्ट (न्यूयार्क) आदि। अन्य बहुत सी पत्रिकाएँ जैसे 'सोशल आल्टरनेटिव्ज़' (ब्रिसबेन, आस्ट्रेलिया) 'गाँधी मार्ग' (नई दिल्ली) और 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नॉनवाइलेंस (वाशिंगटन डी॰ सी॰) विभिन्न सामाजिक मामलों पर अहिंसक बौद्धिकता का आह्वान तथा आदान-प्रदान करते हैं। कुछ प्रकाशन गृह जैसे नवजीवन (अहमदाबाद, भारत) नया समाज प्रकाशक (New Society Publishers) (ब्लेन, वाशिंगटन) नॉन वाइलेंस एक्चुलेट' (मोंटारमिस) फ्रांस और आरबिस बुक्स) (मैरीनॅल, न्यूयार्क) अहिंसक सामाजिक परिवर्तन की शिक्षा देने वाली विशिष्ट किताबें छापते हैं।

सांस्कृतिक संसाधन- अहिंसक सांस्कृतिक साधन कला एवं बौद्धिकता की ऐसी उपज हैं जो आत्मिक आनन्द प्रदान करते हैं और हमें एक अहिंसक समाज की प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसमें शामिल हैं लोकगीत (हम होंगे कामयाब, We shall overcome) फिलिप ग्लास का संगीत-नाटक 'सत्याग्रह' बरथा वॉन सटनर का उपन्यास 'ले डाउन योअर आर्म्स' स्टीव मेज़न का 'जानी के गीत', कैथे कोलविअ्ज की कृति 'सीड फार दी प्लांटिंग मस्ट नॉट बी दि ग्राउण्ड (Seed for the Planting Must Not be the Ground) और (रिचर्ड एटनबरा की फिल्म 'गाँधी') अहमदाबाद (भारत) में मल्लिका साराभाई द्वारा स्थापित The Centre for Nonviolence Through Arts, दृश्य, मंचीय कार्यक्रमों (performing) तथा साहित्यिक कलाओं में सृजनात्मक अहिंसक सामजंस्य के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का प्रयत्न करता है।

अहिंसक राजनीतिक संघर्ष-यद्यपि यह इतिहास के लिए नया नहीं है, बीसवीं शताब्दी के आखिरी हिस्से में अहिंसक राजनीतिक संघर्ष, अहिंसक मानव क्षमता की वृद्धि को दर्शाते हैं। जीन शार्प का कहना है कि 1980 तक यह बहुत से लोगों के लिए अविचारणीय था कि अहिंसक संघर्ष-अथवा लोगों की शक्ति-एक दशक के अंदर पूरे विश्व में, राजनीति की दिशा निर्धारित करने वाली एक प्रधान शक्ति बन जाएगी (शार्प 1989 : 4)। 1970 से 1989 के मध्य शार्प कम-से-कम निम्नलिखित स्थानों पर उल्लेखनीय संघर्ष का ज़िक्र

करते हैं जैसे - अफ्रीका (अल्जीरिया, मोरक्को, द. अफ्रीका और सूडान), एशिया (बर्मा, चीन, भारत, जापान, द. कोरिया, पाकिस्तान, फिलिपींस और तिब्बत), अमरीका (अर्जेंटीना, बोलेविया, ब्राजील, चीली, हैती, मैक्सिको, निकारागुआ, पनामा और संयुक्त राज्य अमरीका), यूरोप (इस्तोनिया, फ्रांस, पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी, हंगरी, आयरलैण्ड, लाटिविया और युगोस्लाविया), मध्य-पूर्व (इस्राइल अधिकृत फिलिस्तीन) और प्रशांत महासागरीय क्षेत्र (आस्ट्रेलिया और न्यू कैलेडोनिया) में। 1989 से अहिंसक लोगों के शक्ति प्रदर्शन ने, पूर्व सोवियत संघ, पूर्वी यूरोप, बाल्टिक के गणराज्य और मंगोलिया में, एक दलीय कम्युनिस्ट शासन को समाप्त करने में, जर्मनी के शांतिपूर्ण पुनर्गठन में, और दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का आचरण करने वाली सरकार की समाप्ति में, योगदान दिया है।

ये सभी अहिंसक आंदोलन पूर्णतया हिंसा-मुक्त नहीं है। कुछ को निर्दयतापूर्वक दबा दिया गया, जैसे 1988 में बर्मा में तथा 1989 में चीन में कुछ टिप्पणीकर्त्ता संहारकता की धमकी को इन आंदोलनों की सफलता का कारण मानते हैं फिर भी यह मानना पड़ेगा कि ये आंदोलन उल्लेखनीय रूप से अमरीका, फ्रांस, रूस, चीन और दूसरी हिंसक क्रांतियों से भिन्न हैं। भारत में गांधीवादी स्वतंत्रता आंदोलन जिसने कि विश्व से उपनिवेशवादी शासन के अंत में योगदान दिया, के उदाहरण से शिक्षा लेकर, संयुक्त राज्य में रंगभेद विरोधी नागरिक अधिकारों के लिए किंगियन आंदोलन, फिलिपींस में प्रजातंत्र के लिए अहिंसक जन-शक्ति आंदोलन, परमाणु विरोध आंदोलन, वातावरण बचाव कार्य और दूसरे अनुभव धीरे-धीरे अहिंसक आंदोलनों से संबंधित एक व्यावहारिक रणनीति व तकनीकों का शक्तिशाली कोष निर्मित कर रहे हैं। इसके बदले कुछ शासन प्रणालियां, जनता की अहिंसक मांगों यथा शांति, स्वतंत्रता एवं न्याय के विरोध में पहले से अधिक असंहारकता का प्रदर्शन करने लगी हैं।

ऐसे व्यापक आंदोलनों, जिन्होंने सत्ता परिवर्तन तथा संरचनात्मक परिवर्तन की क्षमता दिखाई है, के साथ ही कई सामाजिक आंदोलन भी हुए हैं जिन्होंने अहिंसक समाज की स्थापना के उद्देश्य से विशिष्ट परिवर्तन किए। इनमें हैं मृत्यु-दण्ड समाप्त करने संबंधी आंदोलन, गर्भपात के विकल्पों संबंधी आंदोलन, शहरी तथा ग्रामीण लड़ाई-झगड़े के क्षेत्रों में अहिंसक सुरक्षाकर्मियों की माँग; युद्धकर, परमाणु, जैविक, स्वचालित हथियार तथा बंदूकों को समाप्त करने की माँग : घातकला को आर्थिक सहायता बंद करने, व्यक्तियों अल्पसंख्यकों तथा समूहों के मानव अधिकार सुरक्षित करने, पर्यावरण को नष्ट न होने देने की मांगें तथा राजनीतिक, सैनिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन आंदोलन।

ऐतिहासिक रूप से स्वत: बढ़ने के साथ ही जीन शार्प (1073), जोहन गाल्तुंग (1992), याक सेमेलिन(1993), माइकल रैण्डल (1994) तथा अन्य लोगों के नवीन शोधों के कारण अहिंसक आंदोलन अधिक सिद्धांतयुक्त व सृजनात्मक हुआ है तथा विश्व संरचना व्यवस्था से मदद पाकर फैला और प्रसारित हुआ है। वैश्वीकरण के इस दौर में, आसपास के खूनखराबे के बावजूद अहिंसक आंदोलन अधिक से अधिक शुरू हुए हैं और नवीनीकरण तथा अनुकरण की प्रक्रिया के कारण फैले हैं, ताकि राज्य एवं समाज द्वारा की गई हिंसा एवं अन्याय का चुनौती दे सकें। (पावर्स तथा वोजेल 1997, ज्यूस्स कुर्त्ज तथा ऐशर; ऐकरमैन एवं डु वॉल 2000)।

ऐतिहासिक जड़ें

इतिहास हमारे सामने अक्सर अति-हिंसा के दौर में भी अहिंसक क्षमताओं के विशिष्ट दृश्यांश प्रस्तुत करता है। यदि विश्व भर की अहिंसक अभिव्यक्तियों को एकत्रित किया जाए तो मानव के अहिंसक इतिहास की रचना की जा सकती है। इस इतिहास के कुछ अंशों की झलक हम आज भी देख सकते हैं।

अहिंसक विश्वास तथा प्रतिबद्धता को दबाया नहीं जा सकता। जूडा-ईसाई इतिहास के दो हज़ार वर्षों में छठे आदेश **'तुम किसी की हत्या नहीं करोगे'** (एक्सौडस, 20 : 13), सरमन ऑन द माऊण्ट (मैथ्यू 5-7) और ईसा का सूली चढ़ना; मौखिक या लिखित परंपरा में यह सिद्ध करता है कि अहिंसक आदेश बार-बार घातकता के साहसी विरोध में ज्वलंत होंगे और यह कार्य मानव करेगा चाहे वह अशिक्षित किसान हो अथवा विशेषाधिकार प्राप्त विशिष्ट वर्ग से। इसी प्रकार का प्रयास 29 जून, 1895 में रूस के 7000 शांतिवादी दुखोबोर किसानों ने सुनियोजित रूप से तीन अलग-अलग स्थानों पर हथियारों को जलाकर किया था। उन्हें ऐसा करने पर उत्पीड़ित किया गया और 1899 में 7500 किसानों ने टॉलस्टाय की सहायता से कनाडा में प्रवास लिया (तारासॉफ 1995 : 8-9)। अहिंसक क्षमता की ऐतिहासिक जड़ें अन्य सांस्कृतिक परंपराओं में भी मिलती है : उदाहरण के तौर पर बौद्ध धर्म में (होरीगन 1996; पेज एवं जिलियट Gilliat 1991); इस्लाम में (बैनरजी 2000; क्रो 1990; ईश्वरन् 1991; किश्तैनी 1990; पेज, सदा आनन्द तथा जिलियट 1993a, सदा आनन्द 1990; तैयबुल्ला 1959) तथा यहूदी धर्म में (श्वार्ज़चाइल्ड n.d.; पोलनर तथा गुडमैन 1994; विलकॉक 1994)

इसी प्रकार मोस्कोस और चेम्बर्स ने आधुनिक लोकतंत्र में अंतरात्मा के आधार पर युद्ध से इंकार के तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन में पाया है कि

इस विरोध के अधिकतर आधार गैर-सांप्रदायिक, मानवीय और राजनीतिक होते हैं। अहिंसा का अब धर्मनिरपेक्ष आधार बन रहा है। धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष पक्ष, सिद्धांतवादी तथा व्यवहारवादी विचारक हत्या के विरोध की दिशा में एक बिंदु पर आ रहे हैं।

हमारा दूसरा ऐतिहासिक अवलोकन यह है कि आमतौर पर हिंसा के समर्थक शासकों ने भी सच्ची और मृत्यु को चुनौती देने वाली अहिंसा के प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन किया है। उदाहरणों में प्रशिया के राजा फ्रेडरिक-प्रथम द्वारा 1713 में, फौज में बलपूर्वक भर्ती से शांतिपूर्ण मैनोवाइट लोगों को छूट देने का फैसला है। रूस में कैथरीन द्वितीय (1763) तथा अलेक्जेण्डर द्वितीय (1875) ने भी मैनानाइटो को समान रूप से छूट दी थी। 1919 में लेनिन ने, टॉलस्टॉय के सहयोगी वी॰जी॰ चेर्टकोव के आग्रह पर और बॉलशविक वी॰ सी॰ बोच ब्रूविच की सलाह पर, टॉलस्टॉयवादी तथा अन्य शांतिवादी धार्मिक समुदायों को 'लाल सेना' (Red Army) में सेवा से छूट दी (जोज़फसन 1985. 162; कोपिटर्स और ज्चरेव 1995)। बॉल्शेविकों का प्रथम निर्णय सेना में मृत्युदण्ड को समाप्त करना था। ऐसे निर्णय अपनी क्षणभंगुरता के बावजूद वास्तविक अहिंसक अवसर प्रदान करते हैं। जेरोम डी॰ फ्रैंक के अनुसार नेताओं के व्यवहार में परिवर्तन लाकर शांति को बनाये रखने का एक सबसे प्रभावशाली योगदान दिया सकता है। क्योंकि सत्ता का अनुसरण करना जनता की प्रवृत्ति है। कभी-कभी नेता सही नेतृत्व देते हैं किंतु अनुयायी उनके साथ नहीं चल पाते। जिमरिंग तथा हाकिंस ने पश्चिमी लोकतंत्रों में मृत्युदण्ड की समाप्ति संबंधी अपने एक अध्ययन में उल्लेख किया है कि राजकीय दण्ड की समाप्ति को लगभग सदैव प्रजातंत्रों में बहुमत का विरोध सहना पड़ता है। संयुक्त राज्य अमरीका को छोड़कर सभी पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों ने फाँसी की सजा को समाप्त कर दिया गया है किंतु हम किसी ऐसे देश को नहीं जानते जहाँ पर फाँसी की सजा को रोक दिया गया और इसकी समाप्ति के समर्थन में कोई लोकतांत्रिक मतैक्य हो। फिर भी इसकी समाप्ति हो गई है हालाँकि सार्वजनिक विरोध दीर्घकाल तक बना रहेगा (1986 : xvi)

अहिंसक सामाजिक परिवर्तन के लिए राजनीतिक नेतृत्व के महत्त्व पर ध्यान देने (पेज 1977, वर्न्स 1979) का अर्थ यह नहीं कि बहुसंख्य अहिंसक लोगों की ताकत की बढ़ती हुई शक्ति पर ध्यान न दिया जाए।

तीसरी ऐतिहासिक समझ यह है कि अहिंसा के प्रति समर्पण कष्ट के अन्य रूपों की समाप्ति के प्रयास तथा समाज में जीवन को प्रति सम्मानजनक परिवर्तन से विलक्षण रूप से संबंधित है। अहिंसा का अर्थ यह नहीं कि

उदासीन या निष्क्रिय हो जाया जाए। उदाहरण के लिए जैन अहिंसा के विस्तृत दायरे में पशु, पक्षी तथा जीवन के अन्य रूपों की रक्षा करना भी शामिल है। (टोबियास 1991)। महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तनों को लाने के प्रयास के साथ अहिंसा के संबंध को भारत में गांधीवादी आंदोलन में देखा जा सकता है। यह केवल राजनीतिक आज़ादी में ही दिखाई नहीं देता बल्कि गरीबों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों, जातियों और अंत:सामुदायिक संबंधों को प्रभावित करने वाले आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों में भी दिखाई देता है। इसी प्रकार संयुक्त राज्य में अहिंसक किंगियन आंदोलन की स्वतंत्रता तथा प्रजातीय समानता की खोज, संरचना में न्याय की बाधाओं को समाप्त करने के प्रयास तथा अमरीकी समाज में गरीबी से लड़ाई के कार्य से संबद्ध हो गई।

अहिंसक क्षमता के साक्ष्य, हिंसक आधुनिक राष्ट्र राज्यों के इतिहास में भी देखे जा सकते हैं। संयुक्त राज्य अमरीका इसका उदाहरण है। यहाँ प्रमुख हिंसक परंपराओं की तुलना में अहिंसक परंपराओं को अपूर्ण रूप से व्यक्त किया गया है इसलिए राजनीतिशास्त्र के अधिकांश विद्यार्थी इससे अपरिचित हैं। अब नए शोध इसकी उपस्थिति के अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं। (ब्राक 1968; कूने और माइकलवस्की 1987; हाकले और झुन्के 1993; कपूर 1992, लिंड उवं लिंड 1995, अमरीकी इतिहासकारों का संगठन 1994, श्लीसेल 1968; टू 1995; जिन-1990)।

संयुक्त राज्य अमरीका में अहिंसा

संयुक्त राज्य अमरीका के निर्माण में अहिंसा का तत्त्व विद्यमान था। इसकी शुरूआत स्वदेशी लोगों तथा शांतिवादी अप्रवासियों के मध्य शांतिपूर्ण संबंध के वातावरण हुई। 70 से भी अधिक वर्षों तक (1682-1756) डेलावेयर इन्डियन्स के साथ सैनिक-रहित पेन्सिलवेनिया के शांतिवादी क्वेकर समुदाय के लोगों ने मित्र आगन्तुकों के लिए अपने दरवाजों को खुला रखने तथा दुश्मनी से संबंधित अफवाहों पर आपसी सलाह करने की संधि का पालन किया। (ब्रोक 1990 : 87-91)। सैनिक सेवा में धार्मिक अंतरात्मा की आवाज़ पर हत्या के विरोध का प्रावधान, क्रांति से पूर्व के तेरह में से बारह उपनिवेशों में था। सबसे उदार रोड आईलैंड में (1673)। ऐसे लोगों को "प्रशिक्षण, शस्त्र उठाने, लड़ाई के लिए एकत्रित होने तथा हत्या करने से छूट थी जिन्हें धार्मिक मान्यताओं के कारण ऐसा करना मना था।" राज्य ने आदेश दिया था कि ऐसे व्यक्तियों को दण्ड स्वरूप शुल्क, कुर्क, दण्ड शुल्क और न ही जेल की सजा दी जाएगी। (कोह्न 1987 : 8)।

अहिंसा, उदीयमान राष्ट्र के वैधिक विचार में भी उपस्थित थी। 1775 में महाद्वीपीय कांग्रेस द्वारा पास किये गये प्रथम कानून में से एक अहिंसक धार्मिक शुद्धिमति के लिए 'हिंसा नहीं' का आग्रह था। (कोहन-1987 : 10 : 13)। उस विचार-विमर्श में जिसके द्वारा अमरीकी संविधान में 'बिल ऑफ राईट्स' को 1789 में शामिल किया गया था, प्रतिनिधि सभा के सदस्य जैम्स मैडिसन ने धारा 2 में प्रस्तावित किया था कि प्रत्येक नागरिक को हत्या करने से मनाही का अधिकार होगा "कोई भी व्यक्ति जिसे उसका धर्म हत्या करने से मना करता है-को शारीरिक रूप से सैनिक सेवा के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।" (कोहन 1987 : 11) मैडिसन का प्रस्ताव प्रतिनिधि सदन के द्वारा स्वीकृत हो गया परंतु सिनेट की राज्य अधिकारों की सुरक्षा संबंधी समिति ने इस बात पर एतराज किया और कहा कि राज्य की सैनिक व्यवस्था पर केंद्रीय नियंत्रण नहीं होना चाहिए।

अमरीकी क्रांति (1775-53) में विभिन्न जाति एवं धर्म को मानने वाले उपनिवेशों में दोनों पक्षों की ओर से हत्या का निषेध मौजूद था। बाइबिल को पढ़ने वाले एक ब्रिटिश सैनिक टॉमस वाट्सन ने पहले हिंसा का परित्याग किया और बाद में मैसाचुसट्स का एक वरिष्ठ क्वेकर बन गया (ब्रोक 1968 : 280-81)। ब्रिटिश घेराव तथा तत्पश्चात् अमरीका द्वारा बोस्टन के घेराव के दौरान (1774-76), शांतिवादी क्वेकरों ने एक दूसरे के विरुद्ध लड़ रहे जनरल वाशिंगटन तथा हॉव पर, नागरिकों तथा शरणार्थियों को मानवीय सहायता उपलब्ध करने की अनुमति देने के लिए दबाव डाला (ब्रोक 1968 : 193-94)। कष्ट के बावजूद अहिंसक शुद्धिमति की सहायता तथा सम्मान किया गया।

यह अविचारणीय नहीं है कि अहिंसक संघर्ष से स्वतंत्रता प्राप्त करना संभव हो सकता था(कन्सर तथा अन्य 1986)। चार्ल्स के व्हिप्पल (Whipple) ने अपनी कृति, 'क्रांतिकारी युद्ध की बुराइयाँ' (Evils of the Revolutionary War) में (1839) लिखा है "हमें स्वतंत्रता को इतने ही प्रभावी, शीघ्रतापूर्वक, सम्मानजनक तथा बहुत अधिक अनुकूल दशाओं में प्राप्त कर सकते थे यदि हम शस्त्र नहीं उठाते" बल्कि हमारा तरीका होता "प्रथम, अन्यायपूर्ण अनुरोध का शीघ्र और पूर्ण निषेध; द्वितीय, सार्वजनिक रूप से शिकायतों तथा उनके दूर करने के उपायों का स्पष्टीकरण; तृतीय, धैर्यपूर्वक दबाव डालने/हार मनवाने के लिए की जा रही हिंसा को बर्दाश्त करना" (2) व्हिप्पल (Whipple) का अहिंसक संघर्ष की शक्तिमता का विश्लेषण वस्तुत: गाँधी और जीन शार्प के (1973) के पश्चवर्ती विचार की पूर्व छाया है। अहिंसक शांति के लाभों की

गणना में, व्हिप्पल अनुमान लगाते है कि केवल कुछ ही लोग मारे जाते, संभवत: 1,000 नेता और 10,000 पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे बजाए 100,000 लोगों के जो कि आठ वर्ष तक चलने वाले संघर्ष में मारे गए तथा युद्ध की आर्थिक लागत (13.5 करोड़ डॉलर) और सैनिकीकरण (30 करोड़ डालर) का खर्चा बचाया जा सकता। नए राष्ट्र की आध्यात्मिक एवं नैतिक आधारशिला अपेक्षाकृत अधिक ऊँचे स्तर पर स्थापित की गई होती। इसके अतिरिक्त अमरीकी क्रांतिकारी, गुलामीकरण की संस्थाओं को जारी नहीं रखते", इस देश के मूल-निवासियों को ठगने, भ्रष्ट करने और समाप्त करने की दिशा में नहीं बढ़ते और मृत्यु दण्ड समेत अपनी सरकार के अंग के रूप में हिंसा तथा बदले को शामिल नहीं करते।" (10)

गृह युद्ध से पहले अहिंसा विद्यमान थी। कष्ट तथा बलिदान को स्वीकारते हुए देश भक्तों ने इग्लैण्ड (1832) तथा मेक्सिको (1845) के युद्धों में शांति के लिए कार्य किया। उन्होंने स्त्रियों के अधिकारों तथा दास-प्रथा को समाप्त करने के लिए भी कार्य किया। ऐसे देश भक्तों में स्त्री और पुरुष, श्वेत तथा अश्वेत एवं धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष शामिल थे (कूनी और माइकलवस्की 1987 : 20-33; लिड और लिंड 1995 : 13-41)। गुलाम-प्रथा उन्मूलन का अहिंसक प्रयास उत्तरी राज्यों की विधान सभाओं में गुलाम मुक्ति के कानूनों को पारित करवाने में सफल रहा। स्वेकर जॉन वुलमैन जैसे क्वेकर के किए गए आरंभिक प्रयासों को जारी रखते हुए (1970-72)। सीमावर्ती तथा दक्षिण राज्यों में गुलामों के कुछ मालिकों को आध्यात्मिक अथवा आर्थिक कारणों से अपने गुलामों को मुक्त करने के लिए मना लिया गया अहिंसक मुक्ति अविचारणीय नहीं थी। ब्रिटेन में 1777 में गुलामी को समाप्त कर दिया गया, 1807 में गुलामों का व्यापार करना समाप्त कर दिया और 1833 में पूरे ब्रिटिश साम्राज्य में गुलामीकरण पर प्रतिबंध लगा दिया। संयुक्त राज्य में भी गुलामीकरण को शांतिपूर्ण तरीके से समाप्त किया जा सकता था यदि अमेरीका ने भी कनाडा के समान मातृदेश के साथ संबंध रखे होते।

गृह युद्ध के दौरान (1861-65) युद्ध-विरोधियों के दुर्व्यवहार के फलस्वरूप (जिनमें यातना, जेल में डालना, फाँसी देना और वध करना शामिल थे) अंतरात्मा के आधार पर हत्या न करने का अधिकार 1862 के परिसंघीय (Confederacy) तथा 1864 के संघीय (Union) कानूनों के मसौदे में शामिल किया गया। यद्यपि इन कानूनों को असमान रूप से तथा प्रतिशोध की भावना से निचले स्तर पर ही लागू किया गया, तथापि व्यक्तिगत मामलों में अपील को राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन, युद्ध सचिव एडविन स्टैंटन, परिसंघ के अतिरिक्त युद्ध

सचिव जॉन ए कैम्पबॅल के द्वारा सहानुभूतिपूर्व स्वीकार किया गया। (मोस्कोस तथा चेम्बर्स 1993 : 30-1) युद्ध के उतार-चढ़ाव में भी टेनीसी डिसाईपल्स ऑफ क्राईस्ट' (Tennessee Disciplines of Christ) ने सफलतापूर्वक पहले परिसंघ के राष्ट्रपति जेफरसन डेवीस से, और फिर संघ के सैनिक गर्वनर, जिन्होंने इस इलाके पर कब्जा कर लिया था, से, आवश्यक सैनिक सेवा से छूट प्राप्त कर ली थी। भाई-भाई के बीच खूनखराबे से ग्रस्त गृहयुद्ध में भी अहिंसक शुद्धमति ने अपना निश्चय स्पष्ट किया और दोनों पक्षों से भिन्न-भिन्न दर्जे का समर्थन प्राप्त किया।

औद्योगीकरण से साम्राज्यवादी विस्तार, और फिर, बीसवीं शताब्दी के तीन विश्व युद्धों से आगे तक, अहिंसा विद्यमान रही है। मालिक, पुलिस, राज्य और कभी-कभी मज़दूर-हिंसा के बावजूद, अमरीका के मजदूरों को संगठित करने और उनकी स्थिति को सुधारने से संबंधित आंदोलन पूर्णरूप से अहिंसक रहे हैं। यह 'मजदूरों की सशस्त्र क्रांति' नहीं थी। महिला आंदोलन, जिसके फलस्वरूप जीनेट रैनकिन कांग्रेस में रिपब्लिकन पार्टी से निर्वाचित पहली प्रतिनिधि के रूप में 1916 में चुनी गईं, भी अहिंसक ही था। (जोसफसन 1974)। 1917 में 49 पुरुष सहयोगियों तथा 6 सिनेटरों के साथ मिलकर उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका के प्रथम विश्व युद्ध में शामिल होने के खिलाफ़ मत दिया। 1940 में पुनर्निबाचित होने के बाद वे अमरीका के दूसरे विश्व युद्ध में शामिल होने की एकमात्र विरोधी थीं। 88 वर्ष की आयु में उन्होंने 'जीनेट रैनकिन ब्रिगेड' की 5000 महिलाओं का वियतनाम युद्ध में अमरीकियों की हत्या के विरोध-प्रदर्शन का नेतृत्व किया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 4000 अमरीकी अनिवार्य सैनिक सेवा में नियुक्त सैनिकों ने युद्ध में हत्या करने से इंकार कर दिया। तेरह सौ ने गैर लड़ाई सैनिक सेवा को अपनाया (ज़्यादातर चिकित्सकीय सेवा को) और दूसरे 1,500 कृषि श्रमिक के रूप में नियुक्त किये गये; 940 को सैनिक प्रशिक्षण इकाई से अलग रखा गया और 450 कट्टर युद्धविरोधियों को-जिन्होंने किसी भी प्रकार से हत्या में सहयोग करने से इंकार कर दिया था – कोर्ट-मार्शल कर दिया गया तथा सैनिक जेलों में डाल दिया गया, जहाँ 17 कठोर व्यवहार तथा बीमारी से मर गए (मास्कोज और चेम्बर 1993 : 34-5; फोन 1987 : 42; लिंड और लिंड 1995 : 91-117; श्लिसेल (Schlissel 1968 : 128-175)।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, फौज में जबर्दस्ती भर्ती किये गये सैनिकों में से, 72,354 पुरुषों ने अंतरात्मा की आवाज़ पर युद्ध का विरोध करने का दावा किया; 25,000 ने गैर योद्धा के रूप में सेवा की, 213 धार्मिक संप्रदायों के

11,996 पुरुषों ने 151 नागरिक-राजकीय सेवा शिविरों में कार्य करने के लिए सहमति दी (परिशिष्ट डी) और 6,086 पुरुषों को जिन्होंने किसी भी प्रकार के युद्ध में भाग लेने से मना कर दिया था, को जेल में डाल दिया गया। जेल की सजा पाने वाले तीन-चौथाई 'जेहोवा के साक्षी' (Jehovahs Witnesses) थे। (एण्डरसन 1994 : 1-2, मोस्कोस और चैम्बर्ज 1993 : 37-8; कूने और माइकलवस्की 1987 - 94-5; गारा और गारा 1999)।

अमरीकी समाज में अहिंसक क्षमता बार-बार दिखाई दी है -परमाणु युगीन 'शीत युद्ध' (1945-91) में, द्वितीय विश्वयुद्ध में, गृह-युद्ध में, प्रथम विश्वयुद्ध में तथा अमरीकी इतिहास के चौथे और पांचवें भीषण रक्त रंजित युद्धों, वियतनाम (1964-75) और कोरिया (1950-53)में। अमरीका तथा सोवियत संघ के मध्य हुए शीत युद्ध के संघर्षों में विश्वभर में लगभग 2 करोड़ लोग क्रांतिकारी, क्रांतिकारी विरोधी और भू-राजनैतिक (geopolitical) घातकता की बलि चढ़ गए। कोरिया के युद्ध में 22,500 अनिवार्य रूप से भर्ती सिपाहियों ने हत्या से इंकार कर दिया। वियतनाम युद्ध के खिलाफ़ हुए व्यापक विरोध में अभूतपूर्व संख्या में सैनिकों ने मुख्यत: धर्मनिरपेक्ष आधार पर, हत्या से इंकार कर दिया। (मोस्कास तथा चैम्बर्स 1993 : 39-43)। 1972 में सैनिक भर्ती के लिए अधिकतर युवा, नैतिक आपत्तिकर्ता थे, न कि युद्ध के लिए तैयार सैनिक। दूसरे युद्ध विरोधियों ने वियतनाम युद्ध के दौरान नाम दर्ज करवाने से इंकार कर दिया, जेल गए या दूसरे देशों में निर्वासन ले लिया। इस प्रकार इन लोगों ने उस इतिहास की दिशा को पलट दिया जिसमें दूसरे देशों से लोग अनिवार्य सैनिक सेवा से मुक्ति के लिए अमरीका आते थे। वियतनाम के नरसंहार के मध्य निशस्त्र नैतिक आपत्तिकर्ता, जो असैनिक भूमिका के लिए राजी थे, जैसे चिकित्सा संबंधी सेवा के लिए, युद्ध के त्याग के बारे में और दृढ़संकल्प हो गए। (Gioglio 1989)।

शीतयुद्ध की गोधूलि में, इराक के विरुद्ध पश्चिमी खाड़ी में, अहिंसक दृढ़विश्वास एक बार पुन: तीव्र हो गया (1991)। इस समय यह नागरिक विरोधी भूमिका का मामला नहीं था, जब फौज में बलपूर्वक भर्ती का नियम प्रभावी नहीं था, बल्कि यह सेवारत सशस्त्र तथा संरक्षित सैनिकों के सेवा का मसला था जिन्होंने हत्या से इंकार कर दिया। पचास नौसैनिकों को, जिन में से 30 पर शुद्धिमति से विरोध का आरोप था, कोर्ट-मार्शल कर दिया गया तथा जेल में डाल दिया गया। (मोस्कोस तथा चेम्बर्स)।

मृत्यु-दण्ड को समाप्त करने का प्रयास, अमरीकी इतिहास में अहिंसक क्षमता का प्रतीक है। मृत्यु-दण्ड-योग्य अपराधों की संख्या में कमी के साथ,

आरंभिक औपनिवेशिक काल में मिशिगन राज्य द्वारा राजद्रोह के अलावा अन्य अपराधों के लिए मृत्यु-दण्ड समाप्त किया गया (1846), और रोडद्वीप एवं विसकोन्सिन के द्वारा इसकी पूर्ण समाप्ति के साथ वर्तमान समय में पचास राज्यों में से 12 तथा कोलम्बिया जनपद में मृत्यु-दण्ड समाप्त किया जाना इस बात को दर्शाता है कि अमरीकावासी, नागरिक जीवन में सामूहिक रूप से एवं युद्ध में व्यक्तिगत रूप से, हत्या करने से इंकार कर सकते हैं। इन सबके बावजूद अभी तक संघीय स्तर पर सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा यह निश्चित किया जाना बाकी है कि नागरिकों की हत्या अमरीका के संविधान का उल्लंघन है। (जिमरिंग और हॉकिन्स 1986)।

संयुक्त राज्य में, अहिंसक क्षमता के अन्य आधारों में शामिल हैं परमाणु हथियार-मुक्त समाज के लिए संघर्ष 'तलवारों का हलों में परिवर्तन' आंदोलन (Swords into Plowshares Movement), गरीबी की सैन्यीकृत हिंसा रहित एक समाज (कैथोलिक मज़दूर आंदोलन), स्त्री विरोधी पुरुष प्रधान सांस्कृतिक हिंसा से मुक्ति के लिए तथा एक स्वतंत्र एवं न्यायशील समाज में अफ्रीकी-अमरीकी एवं अन्य जातियों के मध्य समानता लाने के लिए अहिंसक सामाजिक परिवर्तन संबंधी किंगियन आंदोलन। 1936 में अफ्रीकी-अमेरीकी नेताओं से मुलाकात के दौरान, गाँधी को यह बताया कि उनका अहिंसा का संदेश 'नीग्रो आध्यात्म' में स्पष्टता से प्रतिध्वनित हो रहा है और अफ्रीकी-अमरीकी लोग इसे स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। गाँधी ने प्रत्युत्तर में कहा कि, हो सकता है कि अहिंसा का विशुद्ध संदेश शायद नीग्रो लोगों के माध्यम से पूरे विश्व में फैले। (कपूर 1993 : 89-90)। इस प्रकार गांधीवादी किंगियन तथा विश्व के दूसरे आंदोलनों के बीच परस्पर संबंध के द्वारा तथा स्वदेशी तथा अप्रवासी शांतिवादी जड़ों के माध्यमों से अमरीका विश्व के अहिंसक इतिहास से जुड़ा हुआ है।

अपनी प्रबल हिंसा-युक्त राजनीतिक परंपरा के बावजूद अमरीकी समाज की अहिंसक जड़ें-औपनिवेशिक युग से लेकर आज तक – प्राणिमात्र का सम्मान करने वाली नीति के अदम्य आग्रह में देखी जा सकती हैं। ये साक्ष्य मौजूद हैं युद्ध में हिंसा विरोध में, मृत्यु-दण्ड के विरोध में, गर्भपात के विरोध में, निःशस्त्रीकरण की माँग में, सैन्यीकरण तथा हिंसक भूमण्डलीय शक्ति को लागू करने के प्रतिकार में, अर्थशास्त्र की संरचना में, परिवर्तन के अहिंसक कार्यों में, प्रजाति संबंधों, महिला अधिकारों तथा सांस्कृतिक पहचान में, एवं धार्मिक, कलात्मक और साहित्यिक अभिव्यक्तियों में (टू, 1995) जिस प्रकार ग्वेनफोर इवांस जो वेल्स की शांतिवादी पार्टी 'प्लेड सिमरी' की संस्थापक हैं, ने

वेल्स के संदर्भ में कहा था, अमरीकी इतिहास में भी ऐसे तत्त्व मौजूद हैं' जो 'अहिंसक देशभक्ति' अथवा 'अहिंसक राष्ट्रीयता' का निर्माण सकते हैं। (इवांस 1982)। 'खूबसूरत अमरीका' इसका राष्ट्रीय गान बन सकता है, 'हम होंगे कामयाब' इसका प्रयाण गीत तथा 'अहिंसक विश्व में अहिंसक अमरीका को ईश्वर आशीर्वाद दें' यह इसकी 'प्रार्थना' बन सकता है।

अहिंसक जीवन - अंतिम रूप से अहिंसक समाज की जड़ें मानवमात्र के जीवन-वृत्तांत में ही सन्निहित हैं। स्त्रियों और पुरुषों ने, अकेले या समूहों में, नाम कमाकर या गुमनामी में, भूतकाल में और आज भी यह संभावना दर्शायी है कि हत्या न करने की प्रतिबद्धता के साथ भी सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन संभव है। जो थोड़े से लोग कर सकते हैं, बाकी भी कर सकते हैं।

पेरिस के संग्रहालय Musiee d' Art Moderne de la Ville de Paris के प्रवेश द्वार पर राउल डफी का एक चक्राकार भित्तिचित्र है, जिसमें प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग के वैज्ञानिक आविष्कारों को दिखाया गया है, जिन्होंने बिजली की खोज तथा इस्तेमाल में योगदान दिया। उसी प्रकार हम उन अहिंसावादी राजनीति शास्त्रियों की कल्पना कर सकते हैं जिन्होंने विश्वस्तर पर अहिंसक राजनीति शास्त्र के अध्ययन की आत्मा, सिद्धांत तथा व्यवहार में योगदान दिया। जोसफसन (1984) के द्वारा संग्रहीत आधुनिक शांतिवादी नेताओं के जीवनवृतांत के कोष में जिसमें 1800 से 1980 के मध्य के, 39 देशों के 717 व्यक्तियों के जीवन का संग्रह (Record) है - विश्व धरोहर की झलकियों को देखा जा सकता। 1134 पृष्ठों में एक-एक पृष्ठ अहिंसक दुनिया की खोज के लिए किये जाने वाले कार्य एवं तरीकों के बारे में सामान्य ज्ञान एवं सोचने की क्षमता में वृद्धि प्रदान करता है। हिंसा की अस्थायी स्वीकारोक्ति से लेकर अहिंसक सिद्धांत के प्रति पूर्ण समर्पण के मूल्य इस वृत्तांत में मिलते हैं। यदि इस निरीक्षण को ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक व समकालीन विस्तार दिया जाए तो यह अहिंसक साहस व प्रतिबद्धता की वैश्विक धरोधर दर्शायेगा व प्रेरित करेगा। विश्व स्तर पर अहिंसक जीवन को खोजना व उसके अनुभव को बांटना आवश्यक है।

अहिंसक जीवन, देश, काल एवं संस्कृति के बंधन से मुक्त है एवं उनमें प्रतिध्वनित है। प्राचीन शासक इसके उदाहरण हैं। मिस्र में नूबिया में जन्मे-फराओ शबाका (760 ई०-695 ईसा पूर्व) ने मृत्युदण्ड को समाप्त कर दिया था। (बेनेट 1988 : 11) भारत में बौद्ध शासक अशोक ने कलिंग युद्ध के पश्चात् (262 ई० पू०) जिसमें कि 100,000 लोग मारे गए, 150,000 निष्कासित किये गए तथा असंख्य निर्दोषों की हत्या हुई एवं कइयों ने कष्ट

सहे, युद्ध का त्याग किया और प्राणियों की हत्या को निषिद्ध कर दिया। (चौधरी 1997 : 52)। आध्यात्मिक नेताओं के अहिंसा के उदाहरण पीढ़ी दर पीढ़ी सृजनात्मक अनुकरणीयता को दिखाते है जैसे - बुद्ध, महावीर, ईसामसीह, मोहम्मद, जॉर्ज फॉक्स, गुरुनानक, बहाउल्लाह तथा अन्य व्यक्ति के हिंसा से अहिंसा की ओर मुड़ने संबंधी परिवर्तन आध्यात्मिक हों अथवा लौकिक, नाटकीय ढंग से होते हैं। सिपाही शांतिवादी हो जाते हैं (कोज़र 1938; तेन्दुलकर 1967; खान 1997; बोबाल्ट, गौचर्ड और मुलर 1986; रूसेल 1997)। क्रांतिकारी संहारकता का परित्याग कर देते हैं। (नारायण 1975; बेन्डाना 1998)। अंतरात्मा की आवाज़ पर हत्या का निषेध करने वाले, फौज में जबरर्दस्ती भर्ती का विरोध करते हैं। (मास्कोज और चेम्बरस् 1993)। न्यूजीलैण्ड के अर्चीबाल्ड बैक्सटर (बेक्सटर 2000) मानवता के लिए अहिंसक बहादुरी के साथ प्रथम विश्वयुद्ध में सैनिकों की बलपूर्वक भरती के विरोध में यातनाएँ सहते रहे। बाइबिल का अध्येता एक ऑस्ट्रिया का किसान फ्रैंज जगरस्टाटर (Franz Jagersttater) ने जब हिटलर के लिए युद्ध करने से इंकार कर दिया तो उसका सिर कलम कर दिया जाता है (जाहन 1964)। अहिंसक रक्षकों ने, हिटलर के महानरसंहार (Holocaust) से यहूदियों को बचाने के लिए अपने जान को जोखिम में डाल दिया (फॉजलमैन 1994; हैली 1979)। आधुनिक सैनिक-औद्योगिक-राज्य के व्यक्ति युद्ध को नैतिक भौतिक एवं श्रमिक समर्थन देने से पीछे हट गए (इवर्त 1989)। अन्य लोग भी व्यापक विध्वंसक हथियारों को अशक्त बनाने की खोज में लगे हुए हैं (नार्मन 1989; पोलनर और ओ 'ग्रेडी 1997)।

लाखों गुमनाम लोगों ने, एक नाटे कद वाले, पाँच फुट चार इंच लंबे भारतीय मोहनदास करमचंद गाँधी के अहिंसक नेतृत्व को स्वीकार किया। सांस्कृतिक रूप से हिंसक पठानों ने अहिंसावादी मुस्लिम नेता अब्दुल गफ्फार खाँन के नेतृत्व को स्वीकार किया। (बनर्जी 2000; ईश्वर 1999)। जैसा कि महान् गांधीवादी शिक्षक डॉ॰ जी॰ रामचन्द्रन ने कहा है - 'अहिंसा के अज्ञात वीर तथा वीरांगनाएं ज्ञात वीर तथा वीरङ्गनाओं से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।' (रामचन्द्रन 1983)। संयुक्त राज्य में, गांधीवादी तरीके से प्रशिक्षित अफ्रीकी-अमरीकी विद्यालय के छात्रों के एक छोटे से दल ने 'नागरिक अधिकार आंदोलन' की शुरूआत की जिसके रिवरेन्ड डॉ॰ मार्टिन लूथर किंग नेता बने (हेलबरस्टेम 1998)। अहिंसा के पुजारी अमरीकियों जैसे अदिन बालू (Adin Ballou) और हेनरी डेविड थोरो ने टालस्टॉय को प्रेरित किया (क्रिश्चियन 1978 : 588); टॉलस्टॉय ने गाँधी को, गाँधी ने किंग और इन

सभी ने मिलकर जर्मनी की 'हरित दल' की संस्थापक पेट्रा केली (केली 1989) को प्रेरित किया और बहुत से अन्य दूसरे लोगों ने अनुकरणीयता और नवपर्वतन की प्रक्रिया के आधार पर इस परंपरा को बढ़ाया। 1997से 1998 में अम्मान और जार्डन में होने वाले संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालयों के अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व एकेडमी के प्रथम दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वाले,साठ से अधिक देशों के दो सौ से भी अधिक युवा नेताओं ने, गाँधी को विश्व के सबसे अधिक प्रशंसनीय नेता के रूप में चुना। इस प्रशंसा में, औपनिवेशिक दुनिया की समाप्ति के बाद, 1945 के बाद के काल में अनेक स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं की प्रशंसा की गूंज सुनाई देती हैं।

अहिंसावादी नेता पूरी दुनिया में उत्पन्न हो रहे हैं, जिनमें, कम्बोडिया में महाघोषणानन्द, कोरिया में हँम सुक हन (Ham Suk Hon), नाइजीरिया में केन-सारो-वीवा (Ken Saro-Wiwa), श्रीलंका में ए०टी० आर्यरत्ने, थाइलैण्ड में सुलक सिवरक्षा (Sulak Sivaraksa), फ्रांस के लेन्जो-डेल-वेस्टो (Lenzo - del-Vasto) और जनरल याक-डी-बोलारडियर (Jacques de Bollardire), इंग्लैण्ड के रोनाल्ड मैलोन, इटली के अल्दो-केवीतीनी, भारत के एन. राधाकृष्णन, ब्राजील के डॉम हेल्डर कैमारा, संयुक्त राज्य के ए० जे० मुस्ट, शामिल हैं। गाँधी की ऐतिहासिक उपेक्षा को पलटते हुए नोबेल शांति पुरस्कार ने अहिंसा के प्रति विशेष लगाव को ध्यान में रखना शुरू किया। इस प्रकार अफ्रीका के अल्बर्ट जे. लुथुली और डेस्मण्ड टूटू, उत्तरी आयरलैण्ड के मैरी कोरिगन गुयर, अर्जिन्टीना के एडोल्फ परेज एस्केवल, बर्मा की आंग-सांग सूची तथा तिब्बत के दलाई लामा को सम्मानित किया गया।

महिलाओं ने, जिनमें प्रत्येक की अपनी कहानी है, नाना रूपों में व्याप्त सामाजिक हिंसा को साहस के साथ अहिंसक चुनौती दी है जैसे ऑस्ट्रिया की बर्था वॅन सटनर, बाली की जिदांग बगोस, ओका ; भारत की मेधा पाटेकर, संयुक्त राज्य अमरीका की डोरोथी-डे, बारबरा-डेमिंग और जीन-टूमर ने (स्टेनफिल्ड 1993 : 49) ब्रिटेन में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान शुद्धिमति के आधार पर 1704 महिलाओं ने फौज में बलपूर्वक भर्ती होने का विरोध किया था। 214 महिलाएँ, जिन्होंने गैर योद्धा अथवा नागरिक सेवाओं के रूप में युद्ध को समर्थन देने से इंकार कर दिया गया था, को जेल में डाल दिया गया (हैरिस-जेन्किन्स 1993 : 77)। सैनिक मानव अधिकारों के प्रति की जा रही क्रूरता के विरोध में महिलाओं ने सामूहिक रूप से कड़ा प्रतिकार किया। ('प्लाजा-डे-मायो की माँएं'-बूनोस एरिज़), जातीय कत्लेआम (वीमन इन ब्लैक, सर्बिया) परमाणु युद्ध की तैयारी (**ग्रीनहम कॉमन वीमेन्स पीस कैम्प,**

ब्रिटेन), पर्यावरण विनाश (चिपको-वृक्ष आंदोलन, भारत) और बहुत से दूसरे अन्यायों के प्रति (मैक अलिस्तर 1982, 1988; मोर्गन 1984; फोस्टर 1989), जोन वी॰ बोन्दुरन्त जैसी विद्वान् (1969), एलिस बोल्डिंग (1980; 1992), बेरनीस ए॰ कैरोल (Berenice A. Caroll) (1998) इत्यादि ने अहिंसक सामाजिक परिवर्तन के ज्ञान को आगे बढ़ाया।

सहयोगी जोड़े विवाहित अथवा अविवाहित, अहिंसक रूपांतरवाले संघर्षों को अन्योन्य समर्थन देते हैं-(जैसे) कस्तूरबा और मोहनदास गाँधी, कोरेटा स्कॉट और मार्टिन लूथर किंग, जूनियर डोलर्स हुर्ता (Dolores Heurta) और सेजर शावेज़ (Cesar Chavez), डोरोथी-डे और पीटर मौरिन (Maurin), फ्रांसेस-मे-विदरस्पून और चार्ल्स रेक्ट (Recht) एलिजाबेथ मैकअलिस्तर और फिलिप बेरिगन (Berrigan)। स्त्रियों एवं पुरुषों दोनों की शक्ति 1986 में फिलिपींस में हुए अहिंसक लोकतांत्रिक हस्तक्षेप पर साफ़ दिखाई देती है जहाँ साध्वियों, पुजारियों तथा सामान्य पुरुषों एवं महिलाओं ने इकट्ठे मिलकर तानाशाही एवं क्रांति विरोधी सैनिक खून-खराबे की धमकी का सामना किया (सेन्टियागो (1995) पूरे विश्व पर यदि हम नज़र डालें तो पाएंगे कि मानव मात्र का अहिंसक जीवन-वृत्तांत इस विश्वास को दृढ़ करता है कि स्त्री और पुरुष, सभी की आवश्यकताओं को सम्मान देने वाले हत्यामुक्त व न्यायोचित समाज का निर्माण करने में सक्षम हैं।

अहिंसक समाज के लिए क्षमताएँ

अहिंसक समाज की क्षमताओं की जड़ मानव के अनुभव और सृजनात्मक सामर्थ्य में सन्निहित है। विशाल मानव समुदाय के अधिकांश भाग ने न तो किसी को मारा है और न ही मारता है। यद्यपि हम हिंसा करने में समर्थ हैं परंतु हम स्वभाव से हिंसा करने के लिए विवश नहीं है। बेशक इसका पूरी तरह से पालन नहीं होता, फिर भी सभी आध्यात्मिक परंपराओं की मुख्य शिक्षा है-'जीवन का सम्मान करो। हत्या मत करो।' इस शिक्षा का मनुष्य ने अत्यधिक हिंसक परिस्थितियों में भी पूरे विवेक व अपने संपूर्ण अस्तित्व से समर्थन किया है। जहाँ हत्या होती भी है वहाँ विज्ञान ने अपनी सृजनात्मक शक्ति से उसके कारणों को समझने का प्रयत्न किया है। उन कारणों को दूर करने की कोशिश की है और यह प्रयास किया है कि किस प्रकार व्यक्ति और समाज को घातकता से मुक्ति दिलाई जा सके।

अहिंसक समाज के मूल प्रतिमान पहले से ही बीते हुए और वर्तमान विश्व के अनुभव में विद्यमान हैं। ये अनुमानित कल्पना के उत्पाद नहीं है।

अहिंसावादी सिद्धांत पर आधारित आध्यात्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाएँ एवं व्यवहार मानव अनुभव में पाये जा सकते हैं। सेना-मुक्त, प्राणदण्ड-मुक्त और पूर्ण रूप से हथियार-विहीन समाज मौजूद हैं। मनुष्य के अस्तित्व व कल्याण को ख़तरा पहुँचाने वाली समस्याओं का हल करने के लिए समर्पित अहिंसक संगठन एवं आंदोलन अस्तित्व में हैं। अहिंसक ऐतिहासिक अनुभव वर्तमान तथा भावी परिवर्तन के कार्य की दिशा प्रदान करते हैं। अहिंसक जीवन का महान उत्तरदान बीते हुए समय और वर्तमान में है तथा ऐसे व्यक्तियों की विरासत में भी है जिनका साहस व कार्य दूसरों को प्रेरित करते हैं, उन्हें प्रशिक्षित करते हैं।

आज भी एक अहिंसक समाज का लगभग पर्याप्त स्वरूप उन लोगों की पहुँच के दायरे में है जो वैश्विक मानवीय अनुभव से जुड़ना, उसमें ढलना, और उनसे संबंधित होना चाहते हैं। वस्तुतः क्षमताओं की स्वीकारोक्ति, निश्चितता की गारंटी नहीं देती बल्कि पूर्व की अविचारणीयता को संभव बनाती है एवं इस विश्वास को बल प्रदान करती है कि हम मनुष्य 'अहिंसक वैश्विक रूपांतरण' में समर्थ हैं।

अध्याय-3

राजनीतिक-विज्ञान के लिए निहितार्थ

अहिंसा केवल धर्म का विषय नहीं है।
अहिंसा केवल समाज का विषय नहीं है।
अहिंसा शक्ति का विज्ञान है। **- जी॰ रामचन्द्रन**

अहिंसक समाज की प्राप्ति से संबंधित क्षमताओं में राजनीति शास्त्र शिक्षण विषय (academic discipline) के लिए क्या अर्थ निहित हैं? राजनीति शास्त्र किस प्रकार के विज्ञान का सृजन करने का प्रयत्न करे, यदि अनिवार्य घातकता का पूर्वानुमान इसका आधार न रहकर उसका स्थान अहिंसक संभावना ले ले? किस प्रकार के मूल्य हमारे कार्यों को प्रेरणा देंगे और उनका संचालन करेंगे? किन तथ्यों की हम तलाश करेंगे? किस प्रकार के व्याख्यात्मक तथा भविष्यवाची सिद्धांतों का हम अन्वेषण करेंगे? ज्ञान के किस प्रकार के उपयोगों को हम आगे बढ़ाएंगे? हम अपने आपको और दूसरों को किस प्रकार शिक्षित एवं प्रशिक्षित करेंगे? हम किस प्रकार की संस्थाओं का निर्माण करेंगे? और हम किस प्रकार से दूसरों के साथ अन्वेषण की प्रक्रियाओं, सृजन, साझेदारी और ज्ञान के प्रयोग से अहिंसक विश्व बनाने के लिए अहिंसक समाज का निर्माण करेंगे?

अहिंसावादी समाज की प्राप्ति संबंधी मान्यताओं में राजनीति शास्त्र के विषय का अहिंसक सृजनात्मकता की ओर झुकाव निहित है। यह वेबर की इस हठधर्मिता को प्रश्न के घेरे में लेता है कि हिंसा की स्वीकृति राजनीति के विज्ञान एवं व्यवहार के लिए आवश्यक है और अहिंसा की नीति उसके साथ मेल नहीं खाती। अत: अब तक अविचारणीय समझा जाने वाला विचार, समस्यामूलक बनकर रह जाता है।

अहिंसक राजनीतिक विश्लेषण का तर्क

अहिंसक राजनीति विज्ञान के प्रतिमान के परिवर्तन में राजनीतिक विश्लेषण के चार तर्क निहित है। ये इस प्रकार हैं-हमें हिंसा के कारणों को जानने की आवश्यकता है, हमें हत्या न करने के कारणों को जानने की आवश्यकता है, हमें हिंसा से अहिंसा के पारगमन (transition) के कारणों की जानने की आवश्यकता है, तथा पूर्णरूप से अहिंसक समाज की विशेषताओं को जानने की आवश्यकता है।

यह विरोधाभास लगता है कि हिंसा की परंपरागत मान्यता रखने वाले शिक्षण विषय की तुलना में अहिंसक राजनीति को हिंसा को समझने की ज्यादा ज़रूरत है। जिन परिस्थितियों में घातकता एवं उससे संबंधित विशेषताएँ बिल्कुल मौजूद नहीं होतीं वहाँ अहिंसक तरीके से योगदान देने का लक्ष्य ही हिंसा को समझना की ज़रूरत दर्शाता है। जहाँ हिंसा को व्यक्तिगत एवं सामूहिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनिवार्य तथा स्वीकार्य माना गया है, वहाँ स्वयं अपनी,दूसरों की, एवं जो इनके संपर्क में है, उनकी, संहारकता के कारणों को समझने एवं दूर करने की कम आवश्यकता है। समस्याप्रद ही सही, अंतिम हथियार के रूप में यह कथन "मैं/हम तुम्हें मार देंगे', में सुरक्षा का भाव है। जहाँ यह मान्यता अनुपस्थित है, वहाँ अतिजीवन एवं कल्याण के लिए हिंसा के कारणों को समझना तथा समाप्त करना अत्यंत आवश्यक है।

कारणत्व (causation) का विचार अहिंसावादी विश्लेषण का केंद्र बिंदु है। जहाँ कहीं भी हिंसा की घटना होती है- मानवहत्या, विशाल नरसंहार से लेकर पारमाण्विक पूर्णविनाश तक-तो वहाँ यद्यपि मिश्रित एवं निर्भर रूप से ही सही, कारण एवं प्रभाव की प्रक्रिया को समझने की ज़रूरत है। हिंसा की प्रत्येक घटना में कारणता की व्याख्या आवश्यक है। हमें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि कौन, किसको, कैसे, कहाँ, कब और किस पृष्ठभूमि के कारण, किन संदर्भीय परिस्थितियों में मारता है और उसके क्या व्यक्तिगत व सामाजिक अर्थ व परिणाम होते हैं। निश्चित रूप से हमें विपरीत अथवा भिन्न मामलों की घातकता के कारणों की रूप-रेखा भी जाननी चाहिए ताकि गहन, अल्प या प्रतीकात्मक/वर्गीकृत व्याख्या मिल पाए।

ठीक इसी प्रकार, हमें अहिंसा के कारणों को भी समझने की आवश्यकता है। मनुष्य क्यों नहीं मारते? मनुष्य के जीवन में अहिंसा का विचार क्यों आया? मनुष्य ने अहिंसा के सिद्धांतों से अपने आप को क्यों प्रतिबद्ध कर लिया है? संपूर्ण इतिहास में क्यों कुछ लोगों ने उपहास के सामने जाति-बहिष्कार के

समक्ष, निर्वासन, एकांतवास, कारावास में, यातनाएं, अंगभंग, हत्या की धमकी, वध, फाँसी और सामूहिक विनाश को झेलते हुए भी जीवन के सिद्धांत को संहारकता से ऊपर माना? उन्होंने क्यों अहिंसावादी साधनों के द्वारा, अहिंसा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए नीतियों, सिद्धांतों एवं व्यहवहारों एवं संस्थाओं की रचना की?

इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से, हिंसा से अहिंसा या अहिंसा से हिंसा की ओर पारगमन का कारण क्या है? हत्यारे क्यों हत्या मार्ग को छोड़कर हत्याओं को रोकने की ओर बढ़ रहे हैं? सिपाही शांतिप्रिय क्यों हो गए? क्यों क्रांतिकारी संहारकता का परित्याग करने लगे और हत्यारे अहिंसक हो गए? क्यों कुछ विचारकों, व्यक्तियों, नेताओं, संगठनों, संस्थाओं और नीतियों का रुख अहिंसावादी हो गया है? ऐसी स्थिति में जबकि कुछ राज्यों में मृत्युदण्ड समाप्त कर दिया गया हो, कुछ ने इसे पुनः लागू कर दिया हो तथा कुछ शांतिवादी अस्थायी रूप से युद्धों का समर्थन कर रहे हो, क्यों कुछ लोग जो पहले अहिंसावादी थे पुनः खूनखराबे में लिप्त हो गए एवं इसके समर्थक बन गए? अहिंसा का विश्लेषण प्रतिगामी रेखिक प्रगतिशीलता (irreversible linear progression) को मान्यता नहीं देता; अहिंसावादी संक्रमण के काल में सम्पन्न घटनाओं, परिणामों और आंदोलनों के कारणों की समझ अहिंसावादी परिवर्तन को सहज बनाने के लिए आवश्यक है। इस विश्लेषण का दायरा व्यक्ति, समाज के अंग व पूरे समाज तक फैला हुआ है।

इस बात को जानते हुए कि उनमें असीमित भिन्नताएँ संभव हैं अहिंसक राजनीतिक विश्लेषण की चौथी आवश्यकता है पूर्णरूप से हिंसामुक्त समाजों की विशेषताओं को समझना मानव अन्वेषण शक्ति को स्वीकारते हुए एकरूपता की उम्मीद नहीं की जा सकती। राजनीतिक विश्लेषण की यह चौथी आवश्यकता सर्वाधिक सृजनात्मक है, हालाँकि अन्य आवश्यकताएँ भी कम सृजनात्मकता की अपेक्षा नहीं रखती। प्रथम तीन, इतिहास तथा समकालीन संदर्भों से प्रामाणिकता प्राप्त करती हैं। चौथी आवश्यकता इन तीनों से प्राप्त ज्ञान का तथा व्यक्तिगत, सामाजिक एवं वैश्विक स्तर की स्थितियों (जो नैतिक रूप से स्वीकार्य हों, संभव हों, या कभी-कभी अनुमानित कल्पनामात्र हो) का प्रगतिशील अन्वेषण करती हैं। यह हमें उसी प्रकार चुनौती देते हैं जैसा कि कवि वाल्ट व्हिटमैन ने कहा था "To leap beyond, yet nearer bring" 'उसके पार छलांग मारो पर नजदीक ले आओ' (व्हिटमैन -1977-1985 : 71)।

ऐसा माना जाता है कि अभी तक किसी समाज ने, जो हिंसा के प्रति झुकाव की विशेषता रखता हैं, मानव की अहिंसक क्षमताओं के पूर्ण प्रदर्शन का

मौका नहीं दिया है। किंतु विश्व-स्तर पर ऐतिहासिक एवं समकालीन अनुभवों को लेते हुए एवं उनके साथ निर्देशित क्षमताओं को काल्पनिक रूप से संयुक्त करते हुए किसी भी समाज में अहिंसा की नई संभावनाओं के विषय में विचार किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, अनुभव पर आधारित इन अंतर्दृष्टियों से 'शुद्ध सिद्धांत' के निर्माण का प्रयत्न किया जा सकता है ताकि अहिंसक समाजों की वांछनीय विशेषताओं की पहचान की जा सके तथा वर्तमान परिस्थितियों में उन्हें प्राप्त की युक्तियुक्त प्रक्रियाओं को अपनाया जा सके।

अब तक राजनीति शास्त्र अनुमानित सैद्धांतिक कल्पना (hypothetical theoretical imagination) के प्रति उदासीन रहा था जबकि अन्य विज्ञान व्यावहारिक प्रयोग के लिए 'शुद्ध सिद्धांत' के विकास को प्रोत्साहन देते रहे हैं (जैसे गणित, भौतिक विज्ञान तथा अर्थशास्त्र)। हिंसा के संदर्भ में यह विशेष रूप से सच है। हिंसा की मान्यता रखने वाले राजनीति विज्ञान की प्रवृत्ति अहिंसा की रचनात्मकता को हतोत्साहित करने की रही है। अपने व्यवसायिक प्रशिक्षण में इसे 'असंभव कल्पना' (Utopian), 'आदर्शवादी' अथवा 'अव्यावहारिक' कहकर खारिज करके राजनीति शास्त्र अपने आपको सतत संहारकता में सीमित रखने के लिए अभिशप्त है। अहिंसावादी सृजनशीलता इस संकुचित दृष्टिकोण से मुक्ति का वचन देती है।

अहिंसक विश्लेषण के आधारभूत ज्ञान को परिवर्तनकारी व्यवहार में लागू करने की आवश्यकता है ताकि हिंसा की 'कीप' (Funnel) (जिसे नीचे दर्शाया गया है) के पाँच क्षेत्रों में लिए विकल्पों का सृजन किया जा सके।

उपर्युक्त चित्र में *हिंसा क्षेत्र* मानव हत्या से लेकर सामूहिक विनाश वाले खून-खराबे का क्षेत्र है। *समाजीकरण क्षेत्र* वह क्षेत्र है जहाँ लोग हिंसा का पाठ पढ़ते हैं, प्रशिक्षण द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अथवा अनुकरणीय नमूनों को देखकर परोक्ष रूप से *सांस्कृतिक अनुकूलन क्षेत्र* में हम हिंसा को अनिवार्य एवं वैध स्वीकार करने का पूर्वाग्रह रखते हैं। इसके अनुकूल स्रोतों में धार्मिक, राजनीतिक 'वाद' (isms), विजय एवं नृशंसता के उत्सव, पारिवारिक परंपराएँ, कानून, संचार साधन और कलाएँ हैं। *संरचनात्मक सुदृढ़ी-करण* क्षेत्र में हैं सामाजिक-आर्थिक संबंध, संस्थाएँ एवं भौतिक साधन जो व्यक्ति को हिंसा के प्रति अनुकूल बनाते हैं तथा हिंसा के समर्थक हैं। *तंत्रिकातंत्रीय जैव-रसायन क्षमता का क्षेत्र*, शारीरिक तंत्रिकातंत्रीय एवं मस्तिष्क संचालन संबंधी उन तत्त्वों को दिखाता है, जो परभक्षी अथवा जीवन बचाने के लिए घातकता (आत्मरक्षा) एवं अहिंसावादी व्यवहार वाली मानव-क्षमताओं को उत्प्रेरित करने में योगदान देते हैं। (लोपेज़ रेज़ 1998 : मार्टन 2001)।

अहिंसक रूपांतरण का काम है, हिंसा की कोप को 'क्षेत्र' के अंदर तथा उसके पार, उद्देश्यपूर्ण प्रयासों द्वारा अहिंसक विकल्पों के खुले पंखें में परिवर्तित करना। (चित्र-2) 'हत्या क्षेत्र' में इस प्रकार के परिवर्तन आध्यात्मिक से लेकर असंहारकता की उच्च तकनीक तक के हो सकते हैं, अहिंसक समाजीकरण तथा सांस्कृतिक अनुकूलन के रूप में हो सकते हैं अथवा सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का इस प्रकार पुनर्गठन के रूप में जिससे न ये संहारकता को जन्म दें न इन्हें बनाए रखने के लिए संहारकता की आवश्यकता पड़े। ये परिवर्तन हत्या की जैविक प्रवृत्ति को कम करने वाले रोग-विषयक, दवा-विषयक, शारीरिक, ध्यान द्वारा रूपांतरणशील और जैविक पुनर्निवेशित (biofeedback) भी हो सकते हैं।

विकल्पों का खुलता हुआ पंख

चित्र-२

हत्यामुक्त विकल्प (Nonkilling Alternatives)

हत्यामुक्त प्रतिमान विस्थापन (paradign shift) के लिए केवल यही काफी नहीं कि हत्या की दिशा में संकुचित हो रहे क्षेत्र के लिए (अहिंसक राजनीतिक विश्लेषण के तर्क की आवश्यकतानुसार) हत्यामुक्त विकल्पों की जानकारी प्राप्त करे बल्कि यह भी जरूरी है कि रोज़ाना के व्यक्तिगत तथा सामाजिक निर्णयों से लेकर, वैश्विक राजनीति तक, सहायता देने वाले अहिंसक सिद्धांतों को परिशुद्ध (perfect) करे। इसे अन्वेषक अनुरूपण (exploratory simulation) को जोड़ने वाले एक प्रयोगपरक प्रमाणीकरण की विधि द्वारा आगे बढ़ाया जा सकता है। 'सैनिक-मानव-कम्प्यूटर' और 'दृश्य वास्तविकता' जैसे छद्म-युद्ध पहले से ही काफी विकसित हो चुके है।

वे अहिंसावादी सिद्धांत, जो कि बीसवीं शताब्दी के उल्लेखनीय कार्यों में प्रकट हो चुके हैं (जिनमें गांधीवादी तथा मार्टिन लूथर किंग के आंदोलन सम्मिलित हैं) निम्नलिखित हैं -

जीवन का सम्मान करने वाली प्रेरणाओं से शक्ति ग्रहण करो चाहे वे धार्मिक हो या मानवतावादी।

अपने तथा दूसरों के जीवन का सम्मान करो।

सभी का कल्याण चाहो। हिंसा बांटती है, अहिंसा जोड़ती है।

शुरू से लेकर अंत तक संघर्ष में समाधान/मेल-मिलाप ढूँढ़ों, अपमान, अवमूल्यन, परभक्षिता अथवा पूर्णविनाश नहीं।

जरूरतमंद लोगों के कष्टों को दूर करने के लिए रचनात्मक कार्य करो।

सर्जक बनो। तकनीकी विकास एवं रचनात्मक विनाश की अवस्था तक पहुँचने में महान् सृजन हुए है। अहिंसावादी रूपांतरण के कार्य में इससे भी अधिक महान् सृजन की आवश्यकता होगी।

परिवर्तन के लिए प्रायोगिक विधि अपनाओ। अहिंसक समाज की प्राप्ति का ध्येय रखो और सफलताओं एवं असफलताओं से सीख लो।

लोगों के सामूहिक अहिंसावादी शक्ति के उदाहरण से प्रेरणा लेकर व्यक्तिगत एवं बड़े पैमानेपर होने वाले सामाजिक कार्यों, का सम्मान करो।

रचनाशील रूप से साहसी बनो। हिंसा से अपना समर्थन वापस लेकर इसका प्रयोग अहिंसक विकल्पों को मज़बूत करने के लिए करो।

धरती पर मंदगति से चलो। हिंसा में वृद्धि करने वाले, प्रकृति एवं साथी मनुष्यों से की जाने वाली अपनी मांगों में कमी लाओ।

वह प्रत्येक व्यक्ति जो कि अहिंसाकरण के कार्य एवं खोज की प्रक्रिया में हिस्सा लेता है, विशिष्ट दशाओं एवं संदर्भों के लिए उपयुक्त, वैश्विक जीवन की अहिंसावादी स्वीकृति के लिए, अधिक शक्तिशाली सिद्धांतों एवं कौशल को प्रगतिशील रूप से पूर्ण बनाने में मदद कर सकता है।

समकालीन राजनीति विज्ञान के संदर्भ में, अहिंसावादी समाज की प्राप्ति संबंधी संभावना की समझ, राजनीति विज्ञान विषय के प्रत्येक क्षेत्र में प्रश्न पैदा करती है। राजनीति शास्त्री भी, समाज के अन्य सदस्यों की तरह ही हिंसा के औचित्य व अनिवार्यता के प्रति आम अनुकूलन के अनुरूप निम्नलिखित विचारों के प्रति अलग-अलग तरह से प्रवृत्त पाए गए हैं : हिंसा-समर्थक (proviolent) - स्वयं के लिए अथवा सभ्यता के लिए हिंसा को लाभदायक मानने वाले; हिंसा-प्रवृत्त (violence-prone)- हिंसा की प्रवृत्ति अथवा यदि लाभदायक हो तो हिंसा का समर्थन करने वाले; द्वयर्थक हिंसक (ambiviolent) - हिंसा करने अथवा नहीं करने एवं इसका समर्थन करने अथवा विरोध करने की तरफ समान रूप से झुकाव वाले; 'हिंसा करने से बचने वाले' (violence avoiding) हिंसा नहीं करने अथवा इसका समर्थन नहीं करने की प्रवृत्ति वाले किंतु हिंसा के लिए तैयार; *अहिंसक*- हिंसा नहीं करने तथा संहारकता से संबंधित दशाओं में परिवर्तन करने के लिए कटिबद्ध। यदि इसे संपूर्णता में समझा जाए तो प्रथम चार अनुकूलनों को हिंसक मान्यतायुक्त अथवा हिंसा को स्वीकार करने वाली राजनीति अथवा राजनीति विज्ञान की विशेषता कहा जा सकता है। अंतिम अनुकूलन अहिंसक राजनीति विज्ञान की माँग करता है जो विज्ञान व समाज में अहिंसक परिवर्तन में योगदान दे। व्यक्त अथवा अव्यक्त मान्यताओं में समकालीन राजनीति विज्ञान को प्रबल रूप से 'हिंसा अनुमोदक' के रूप में चित्रित किया गया है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी राजनीति वैज्ञानिक अपने कक्षाओं में विद्यार्थियों को 'मारो! मारो' का उपदेश देते हैं जैसा कि सैनिक कवायद में सारजेण्ट या अफसर करते हैं। बल्कि 'हिंसा से बचने वाले' राजनीति वैज्ञानिकों के इस योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती जिसमें वे गृह एवं अंतर्राष्ट्रीय युद्धों को समाप्त करने के लिए उनके स्थान पर लोकतांत्रिक संस्थाओं जैसे - दलीय प्रतियोगता वाले चुनाव, अधिनियम तथा कानूनों को स्थापित करने में लगे रहते हैं। किंतु वर्तमान राजनीति शास्त्र की

हिंसक प्रवृत्ति की स्वीकृति और अहिंसक विकल्पों की संभावनाएँ अनुभूतिमूलक -नैतिक (empirical ethical)और नैतिकतापूर्ण-अनुभूतिमूलक विकास का वचन देती हैं। इसका निहित अर्थ यह है कि अहिंसकता भी स्वतंत्रता, समानता, न्याय व लोकतंत्र के प्रश्नों के साथ ही राजनीतिशास्त्र के नियामक-वैज्ञानिक (normative empirical) तथा वैज्ञानिक-नियामक (empirical normative) केंद्र में स्थापित हो जाएगी।

अहिंसक वैज्ञानिक क्रांति

राजनीतिशास्त्र के अहिंसक समाज की प्राप्ति की संभावना के विचार में अहिंसक वैज्ञानिक क्रांति निहित है। इसके लिए, इससे संबंधित सात अंत:निर्भर उपक्रांतियों (sub-revolution) की आवश्यकता है-हिंसा की स्वीकृति से लेकर हिंसा के निषेध तक के लिए *नियामक क्रांति* (normative revolution); समाज के *अहिंसावादी रूपांतरण* के लिए *आवश्यक* तथ्यों की पहचान के लिए *तथ्यपरक क्रांति* (factual revolution); अहिंसात्मक परिवर्तन के कारण एवं प्रक्रियाओं को समझने से संबंधित *सैद्धांतिक क्रांति* (Theoretical); अहिंसात्मक रूपांतरण के लिए आवश्यक ज्ञान एवं योग्यताओं को प्रदान करने वाली *प्रशिक्षणात्मक क्रांति;* अहिंसावादी परिवर्तन को व्यवहारिक रूप देने के लिए *व्यावहारिक क्रांति* (applied revolution); *अहिंसात्मक परिवर्तन* को सुविधाजनक बनाने के लिए संस्थाओं को बदलने एवं उनके पुनर्निर्माण संबंधी *सांस्थानिक क्रांति* (institutional revolution); निरीक्षण, विश्लेषण एवं अहिंसात्मक रूपांतरण के कार्य के लिए योग्यतम विधि के निर्माण एवं उसे अपनाने के लिए *विधिपरक क्रांति* (methodological revoltuion)।

नियामक क्रांति (Normative recolution)- हत्या करने के आदेश के बजाए हत्या न करने के आदेश में नियामक परिवर्तन निहित है। इसका एक तरीका है 'नैतिक तथा वैज्ञानिक खोजों को मूल्यों सहित प्रक्रियाओं द्वारा किया जाए। इस विचारधारा के विकास का नैतिक पथ होगा 'हत्या नैतिक रूप से आवश्यक है' की मान्यता से 'हत्या संदेहास्पद रूप से आवश्यक है' की मान्यता तक, और फिर, 'अहिंसा अनुमानित रूप से अन्वेषणीय है- कि मान्यता से बढ़कर अहिंसा के प्रति नियामक (normative) प्रतिबद्धता तक पहुँचना। इसके समानांतर व्यावहारिक/अनुभवमूलक (empirical) पथ होगा 'अहिंसक समाज असंभव है' से 'अहिंसक समाज समस्यामूलक (problematic) हैं' से वास्तविक तथा अनुमानित अन्वेषण द्वारा अहिंसक समाज की विशेषताओं का

पता लगाना तथा अहिंसक समाज व अहिंसक विश्व के सृजन तथा पालन के प्रति वैज्ञानिक प्रतिबद्धता।

एक ओर नैतिक चुनौती एवं प्रयोग-परक उत्तर के इस प्रकार की एक-दूसरे में प्रविष्टि प्रक्रिया से तथा दूसरी ओर प्रयोगपरक चुनौती एवं नैतिक प्रतिवचन के एक-दूसरे में प्रविष्ट होने की प्रक्रिया से अहिंसावादी सिद्धांतों एवं हिंसापूर्ण राजनीति के मध्य वेबर (Weber) द्वारा लगाये जाने वाले अवरोधक को भी तोड़ा जा सकता है। इस प्रकार जीवन के प्रति गैर समझौतावादी सम्मान के साथ 'प्रमाणों तथा निष्कर्षों के प्रति प्रतिबद्धता' को जोड़ा जा सकता है (आमण्ड 1996 : 89) जो समकालीन शैक्षणिक राजनीति शास्त्र का नैतिक आधार होगा।

चित्र-३

प्रायोगिक नियामक अहिंसावादी प्रतिमान विस्थापन की प्रक्रिया

(Process of Normative-Empirical Nonkilling Paradign shift)

नियामक विस्थापन	**अंत:क्रिया की प्रक्रिया**	**प्रायोगिक विस्थापन**
हिंसा अवश्यकरणीय है	⟷	अहिंसा असंभव है
हिंसा प्रश्न करने योग्य है	⟷	अहिंसा समस्याग्रस्त है
हिंसा अस्वीकार्य है	⟷	अहिंसा अन्वेषणीय है
अहिंसा अवश्यकरणीय है	⟷	अहिंसा संभव है

तथ्यपरक क्रांति

तथ्य की दृष्टि से एक अहिंसावादी विस्थापन का उद्देश्य, अहिंसावादी मानवीय क्षमताएँ जिनकी प्रकृति हिंसापूर्ण मान्यताओं द्वारा उपेक्षित अथवा अवमूल्यित हैं, का पुनर्लाभ एवं खोज करना है। इस प्रकार के तथ्य तंत्रिका-विज्ञान से लेकर असंहारक उच्च तकनीक के मध्य फैले हो सकते हैं। हिंसक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में अहिंसा की अभिव्यक्ति रोचक है। उदाहरण के लिए यूनान में ईसा पूर्व 399 ई॰ में, अनुमानत: ऐथेन्स के 500 सेनेटरों में से 140 ने सुकरात को मृत्यु-दण्ड नहीं दिये जाने के पक्ष में मतदान किया था (स्टोन 1989 : 187)। जापान में बौद्ध हेन (Buddhist

Heian) के काल में (794-1192) लगभग 350 वर्षों तक मृत्यु दण्ड का प्रयोग नहीं हुआ था (नाकामुरा-1967 : 145)। 4 और 6 अप्रैल 1917 को संयुक्त राज्य अमरीका के 6 सिनेट सदस्यों एवं 50 प्रतिनिधि सदन के सदस्यों ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा के विरोध में मतदान किया था। रूस में 23 अक्टूबर 1917 को, आधिकारिक रूप से कम-से-कम दो और अधिकतम रूप से संभवत: 5 अथवा 6 बॉल्शेविकों ने, केंद्रीय सभा में, लेनिन द्वारा सशस्त्र क्रांति की नीति को अपनाये जाने का विरोध किया था। (शुब-1976 : 271)। नागासाकी एवं हिरोशिमा पर बम गिराये जाने की पूर्व सन्ध्या पर जुलाई 1945 के अंत में -संयुक्त राज्य अमरीका में मैनहैट्टन परियोजना के 150 वैज्ञानिकों में से 19 वैज्ञानिकों ने, ऐसे हथियार, जिनके निर्माण में उन्होंने सहयोग किया था, के किसी भी प्रकार के सैनिक प्रयोग करने के विपक्ष में मतदान किया था (जिवोंती और फ्रीड-1965 : 168; एल्परोविट्स-1995)। 1996 में संयुक्त राज्य अमरीका की जल-सेना, ऐसी कार्यकारी ऐजेण्ट' बन गई जिसका काम प्रतिरक्षा विभाग तथा अन्य सरकारी विभागों द्वारा असंहारक हथियारों के शोध, विकास एवं प्राप्ति से संबंधित कार्यवाहियों को समन्वित करना था (लिवर और स्कोफिण्ड-1997-45)। यह कार्यवाही सुरक्षा नीतियों में अहिंसात्मक विस्थापन का संकेत देती है हालाँकि अभी यह हथियार घातक तकनीकों के सहायक के रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं और विकलांग करने और हत्या की क्षमता रखते हैं।

अहिंसावादी तथ्यात्मक विस्थापन हर समाज के इतिहास एवं वर्तमान काल में, अहिंसावादी प्रवृत्तियों के संकेतकों को खोजने में लगा हुआ है।

सैद्धांतिक क्रांति

निहित सैद्धांतिक क्रांति का उद्देश्य ऐसे नियामक (normative) और अनुभूतिमूलक (empirical) सिद्धांतों का सृजन करना है, जो अहिंसक विश्लेषण की आवश्यकतानुसार ज्ञान का विकास करें जिनसे व्यक्तिगत निर्णयों, नागरिक समाज की क्रियाओं और सार्वजनिक नीतियों में योगदान मिले। उदाहरण के लिए, सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि के तीन अपूर्व स्रोतों का संयोग-सैद्धांतिक, व्यावहारिक और प्रक्रियागत (processual)-अहिंसावादी राजनीतिक शक्ति की रूपांतरणशील क्षमता पर विलक्षण अंतर्दृष्टि डालने का अवसर प्रदान करता है। पहला है, परंपरागत रूप से उपेक्षित गांधीवादी विचार, जिसमें जीवन का सम्मान करने वाले आध्यात्मिक बल को सत्यान्वेषी व्यक्ति और सामूहिक क्रियाओं में देखा जा सकता है-जैसे गाँधी के 'सत्याग्रह के विज्ञान' में (1970)। गाँधी के लिए

ईश्वर, जिसकी परिभाषा वे सत्य, प्रेम और अहिंसा के रूप में करते हैं में जीवंत विश्वास सभी धर्मों को अपने में समेटे हुए है-और अहिंसक शक्ति का अजेय स्रोत है। अहिंसा की भावना व उसकी सच्चाई मानव जीवन का आधारभूत नियम है। हिंसा इस आधारभूत नियम का उल्लंघन (violation) है।

दूसरा है, अहिंसक शक्ति का सिद्धांत जैसा कि जीन-शार्प ने 'अहिंसक क्रिया की राजनीति' (The Politics of Non-Killing Action - 1973) में प्रस्तुत किया है। शक्ति की प्रकृति है कि वह आज्ञा के पालन पर निर्भर है। इस विश्लेषण के आधार पर शार्प इतिहास में प्रदर्शित अहिंसक संघर्ष की तकनीकों का विशाल भण्डार प्रस्तुत करते हैं तथा अहिंसक राजनीतिक परिवर्तन की गतिशीलता की रणनीति का विश्लेषण करते हैं। शार्प का विचार है कि अहिंसक राजनीतिक क्रियाएँ अपने आप में व्यावहारिक रूप से शक्तिशाली हैं। इनके लिये किसी प्रकार के आध्यात्मिक, धार्मिक या शांतिवादी सिद्धांतों के लिए पूर्व प्रतिबद्धता की आवश्यकता नहीं।

अहिंसावादी सैद्धांतिक कल्पनाओं को चुनौती देने वाली एक तीसरी अंतर्दृष्टि का स्रोत, है जॉन बर्टन का सिद्धांत। उनका सिद्धांत हिंसा को आवश्यकता की पूर्ति न होने के साथ जोड़ता है तथा अहिंसावादी रूपांतरण को आवश्यकता पूर्ति के साथ जोड़ता है और अहिंसक परिवर्तन के लिए आवश्यकताओं की पूर्ति की सहभागी प्रक्रियाओं का निर्देश देता है। बर्टन के सिद्धांत -'*असामान्य व्यवहार, आतंकवाद तथा युद्ध*, अनसुलझी सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं को हल करने की प्रक्रिया' (1979) नामक पुस्तक तथा अन्य पुस्तकों में मिलता है (1984, 1996, 1997)। बर्टन का सिद्धांत है कि मानव हत्या से लेकर संहारकता के जितने भी रूप है वे सभी मानवीय आवश्यकताओं के उल्लंघन से उत्पन्न हुए-जिसमें प्रथम आवश्यकता है अपने अस्तित्व की पहचान और सम्मान तथा यह बोध कि उल्लंघन कर्त्ता एवं उल्लंघित व्यक्ति की आवश्यकताएँ समान होती हैं। उल्लंघन की दशा में प्रहारकर्ता को, न तो मूल्यों के प्रति आग्रह और न ही कठोर नियंत्रण दबा सकता है। ऐसी समस्याओं को सुलझाने की प्रक्रिया की व्यवस्था में यह ज़रूरी है कि वे लोग जिनकी आवश्यकताओं का उल्लंघन हुआ है, इसमें भाग ले सकें, और अपनी समस्याओं का संतोषजनक हल प्राप्त करने की उम्मीद कर सकें। ऐसी व्यवस्था ही अहिंसक विश्व में अहिसंक समाज को प्राप्त करने का एक वादा है।

आध्यात्मिक शक्ति प्रभावी व्यावहारिकता तथा सहभागी समस्या निवारण संबंधित अंतर्दृष्टि अहिंसक सिद्धांत के ऐसे तत्त्वों की ओर संकेत करते हैं जिन्हें

इतिहास, राज्य, वर्ग, अर्थव्यवस्था, संस्थाओं, लिंग, नस्ल, प्रजाति, धर्म, संस्कृति, पर्यावरण, भविष्य की उम्मीदों तथा अन्य स्थानीय व वैश्विक परिस्थितियों के अहिंसक कारणत्व के संदर्भ में समझा जा सकता है।

अहिंसावादी सिद्धांत को संदर्भित करने एवं उसकी रचनाशीलता को आगे बढ़ाने में रार्बट जे. बरोस (1996) एवं बेरनिस ए॰ केरोल ने (1998) जॉन गाल्तुंग (1996) ब्रेआन-मार्टिन (1989) और केट मैक गिनिस (1993) ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

व्यावहारिक क्रांति (Applied Revolution)

नियमित, तथ्यपरक एवं सैद्धांतिक विस्थापन का संयोग अहिंसावादी विज्ञान के प्रति नई व्यवहारिक प्रतिबद्धता को दिखाता है। अहिंसावादी विचार के लिए, नियमित विस्थापन, व्यक्तियों, संगठनों, आंदोलनों, नीतियों एवं संस्थानों में नई रुचि एवं रचनात्मक समर्थन को दिखाता है। शार्प का सिद्धांत, हिंसा के द्वारा दमित शासन-पद्धति के अहिंसावादी रूपांतरण में सहायता पहुँचाने के लिए स्पष्ट रूप से अपनी कटिबद्धता का सुझाव देता है, जिसका प्रयोग अनुत्तरदायी लोकतांत्रिक प्रणालियों को प्रभावित करने अथवा उन्हें बदलने के लिए किया जा सकता है। बर्टन का सिद्धांत सुझाव देता है कि राजनीति विज्ञान की केंद्रीय व्यावहारिक भूमिका, अहिंसक रूप से मानवीय आवश्यकताओं की समस्या को हल करने वाली सामाजिक एवं राजनीतिक भागीदारी की प्रक्रिया की सहायता करना है। गांधीवादी सिद्धांत, नैतिकता, विधियों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति न होने की संवेदनशीलता को एकसार करता हुआ, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचागत हिंसा(जो कि हत्या एवं हत्या की धमकी दोनों के उत्पाद एवं उत्पादक है) की दशाओं को बदलने के प्रति अपनी स्पष्ट प्रतिबद्धता को दिखाता है। यह याद रखना चाहिए कि गाँधी तथा किंग जैसे नेता, जो अहिंसक सिद्धांतों से प्रेरणा लेते थे, अहिंसक संरचनात्मक परिवर्तन के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध थे।

अहिंसावादी विश्लेषण की तकनीक के लिए अपेक्षित ज्ञान को लेते हुए तथा अहिंसक विकल्पों के माध्यम से हिंसा की 'कीप' के पंखों को खोलते हुए व्यावहारिक राजनीति विज्ञान का उद्देश्य स्थानीय तथा वैश्विक स्तर पर रूपांतरण के कार्य में सहायता पहुँचाना है। 'लोकतांत्रिक राजनीति' और 'स्वतंत्र बाज़ार' की समकालीन दशाओं में व्यक्तिगत एवं सामूहिक संहारकता का जमे रहना इस बात का संकेत है कि अपने वर्तमान रूप में ये दोनों ही मानव कल्याण के दृष्टिकोण से समस्याग्रस्त अवधारणाएँ हैं। 'अलोकतांत्रिक राजनीति

एवं 'बंद बाज़ार' के साथ अंतर्व्यवहार करने पर ये दशाएं व्यावहारिक अहिंसावादी राजनीति विज्ञान की रचनात्मकता को चुनौती देती हैं।

शैक्षिक क्रांति

अहिंसावादी राजनीति-विज्ञान की प्रगति, राजनीति शास्त्रियों के व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा उनके द्वारा दी जाने वाली समाज के अन्य लोगों की शैक्षिक सेवा में परिवर्तन की अपेक्षा रखती है। संहारक परंपराओं एवं दशाओं को प्रतिबिंबित करने एवं उन्हें स्वीकार करने के बजाए, अहिंसक वैश्विक परिवर्तन में राजनीति विज्ञान की शिक्षाओं को-मुखर अथवा अव्यक्त रूप से-अवश्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। अहिंसक राजनीति शास्त्र का स्पष्ट उद्देश्य अहिंसक नेताओं एवं नागरिकों को तैयार करना है। अनुसंधान, पुनर्निर्माण एवं अहिंसक ज्ञान की हिस्सेदारी के द्वारा तथा अनुसंधान, शिक्षा, सलाहकारिता, नेतागिरी, नागरिक कार्यों और आलोचनात्मक प्रतिक्रियाओं में राजनीति शास्त्र के समक्ष अहिंसक योग्यताएँ विकसित करने की चुनौती है।

राजनीति शास्त्र के अहिंसक प्रशिक्षण में यह आवश्यक होगा कि भाग लेने वालों को अपनी अहिंसक योग्यताओं के बारे में जानकारी होनी चाहिए जैसी कि मनोरोग विशेषज्ञों तथा आध्यात्मिक सलाहाकारों से अपेक्षा की जाती है। हमें अपने विश्वासों, दृष्टिकोणों, हिंसा एवं अहिंसा की सेवाओं के मूल कारणों एवं उनके उपयोगों को समझने की ज़रूरत हैं। स्वयं की समझ, अहिंसक सामाजिक परिवर्तन की पूर्वापेक्षा है। ऐसे समाधि ध्यान का वैज्ञानिक विधि में प्रशिक्षण उपयुक्त है जो विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं में मान्य हों। पूर्णलाभ एवं समर्थन के लिए व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक वृद्धिकारक अनुभवों में भाग लेने का सु-अवसर देने की ज़रूरत है। अन्य मामलों में भिन्न होने के बावजूद राजनीति शास्त्रियों को व्यक्तिगत या सामूहिक तौर पर जीवन के प्रति सम्मान व्यक्त करना चाहिए और जीवनभर चलने वाले विकास में परस्पर सहयोग देना चाहिए। ये ऐसी आवश्यकताएँ हैं जो समाज के दूसरे सदस्यों की आवश्यकताओं से भिन्न नहीं है।

सलाहकारी एवं व्यावहारिक भूमिका की तैयारी में राजनीतिक वैज्ञानिकों में ऐसे सामर्थ्य की अपेक्षा है, जो औषधि अन्वेषकों, चिकित्सकों और चिकित्सा अध्यापकों तथा जीवन एवं मृत्यु के व्यवसाय में लगे हुए अन्य लोगों से अपेक्षित सामर्थ्य से किसी भी प्रकार से कम न हो। अहिंसावादी समाज के निर्माण में राजनीति वैज्ञानिकों के योगदान का महत्त्व, व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्य में लगे हुए औषधि व्यवसायियों के महत्त्व से किसी भी प्रकार से

कम नहीं आकलित करना चाहिए। दोनों ही सर्वोत्तम ज्ञान पर आधारित नुस्खे और इलाज के महत्त्व की दृष्टि से जीवन और मृत्यु में भागीदारी लेते हैं। अहिंसावादी राजनीति विज्ञान का शैक्षिक उद्देश्य प्रत्येक भागीदार सहयोगी को उसके *व्यक्तिगत विकास* के लिए तथा उस ज्ञान एवं *कुशलता* की प्राप्ति के लिए जो अहिंसक नेतृत्व क्षमता एवं नागरिकता के जीवन-पर्यंत विस्तार में सहयोग देगी, के विकास के लिए प्रत्येक स्तर पर अवसर उपलब्ध कराना है। सभी शिक्षा दें, सभी सीख लें।

शिक्षा में पाठ्यक्रम का स्वरूप, अहिंसक विश्लेषण के लिए आवश्यक ज्ञान, हिंसा की प्रवृत्तियों के अहिंसक विकल्पों में रूपांतरण, व्यावहारिक कुशलता की एवं व्यक्तिगत तथा सामाजिक कार्यों का मार्गदर्शन करने के लिए एक पूर्ण विकसित सिद्धांत की आवश्यकता से प्रेरित होगा। एक परिचयात्मक पाठ्यक्रम या मुख्य सेमिनार में विद्यार्थियों के सामने संहारकता की मानवीय क्षमता के भयानक ऐतिहासिक एवं समकालीन साक्ष्य प्रस्तुत करने चाहिए। क्योंकि हमारे विषय (राजनीति शास्त्र) का उद्देश्य है मानव हत्या का अंत करने में योगदान करना अतः सहपाठियों को जीवन पर्यन्त हिंसा की चुनौती का सामना करने के लिए सहयोग देने को तत्पर रहना होगा। दूसरा शैक्षणिक अनुभव मानव की अहिंसक क्षमता के वैश्विक साक्ष्य का सजीव चित्रण करने से से संबंधित होना चाहिए। तीसरा भाग, व्यक्तिगत एवं सामाजिक परिवर्तनों एवं आंदोलनों से परिचय करवाता हो। चौथा केंद्रीय अनुभव इच्छित समाजों की प्राप्ति के लिए राजनीतिक संस्थाओं को बनाने वाली मानवीय उत्प्रेरणाओं का पुनर्निरीक्षण करता हो जो हिंसा मुक्त समाजों के चरित्र संबंधी सृजनशीलता को चुनौती देती हैं। इसके पश्चात् संभव उपायों को जिनमें कि राजनीति विज्ञान योगदान का पता चलता है इस पाठ्यक्रम के प्रत्येक भाग में स्थानीय तथा विश्वस्तर के ज्ञान व आवश्यकताओं तथा वैश्विक-स्थानीय अंतःक्रिया से सहभागियों को परिचित करवाया जाए।

इस प्रकार के आधारों पर, *अहिंसक शैक्षिक नवप्रर्वतनों* का *निर्माण* हो सकता है। अहिंसक राजनीतिक विकल्पों के एक अनुस्नातक पाठ्यक्रम का उदाहरण जिसमें लोगों ने अर्थपूर्ण रुचि दिखाई तथा रचनात्मकता रूप से भाग लिया, में प्रत्येक भागीदार को हिंसा के एक आयाम, जिससे वे निजी रूप से संबंधित हों, चुनने का आह्वान किया गया; उसकी प्रकृति तथा कारणों के विषय में *संबंधित विद्यमान साहित्य* का *पुनरावलोकन* करने को कहा गया, *स्थानीय* लोगों की सलाह लेने के लिए जो दुर्घटना से प्रत्यक्ष रूप से निबटते हों ताकि उसके संबंध में प्रभाव क्षेत्र, प्रवृत्तियों, कारणों तथा विकल्पों की जानकारी मिल

सके, कहा गया; विकल्पों के विषय में अपने आप भी रचनात्मक ढंग से सोचना सिखाया गया, एक-दूसरे के साथ विश्लेषण एवं समस्या को हल करने वाले प्रस्तवों को सांझा करना तथा सामूहिक निर्णयकारी प्रक्रिया में प्रस्तावों पर मतैक्य को बनाने के लिए प्रयास करने के लिए उत्साहित किया गया।

विधिपरक क्रांति

अहिंसावादी विस्थापन विधिक दृष्टि से अनुसंधान, शिक्षा, व्यावहारिक राजनीति और संस्था निर्माण के विधि-संबंधी विचारों को चुनौती देता है। यह अहिंसक खोजों एवं प्रयोग के लिए स्थापित विधियों को अपनाने, आवश्यकतानुसार नई विधियों का निर्माण करने और अन्य विषयों को, जैसे तंत्रिका विज्ञान को, ऐसी विधियों को अहिंसक रूपांतरण संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए प्रयुक्त करने के लिए, उत्साहित करता है। 'हिंसा क्षेत्र' में अनुसंधान तथा हस्तक्षेप की आवश्यकता विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है। मारकता के संकुचित क्षेत्र में या उसके पार अनुसंधान या हस्तक्षेप के लिए किस प्रकार का विश्लेषण उपयुक्त होगा, यह भी चुनौतीपूर्ण है। अहिंसक राजनीति विज्ञान निरंतर वृद्धि को प्राप्त कर रहे निरीक्षण विधि (methods of enquiry) भण्डार से मदद ले कर दार्शनिक, ऐतिहासिक, संस्थागत और विधि-परक विश्लेषण को; साक्षात्कार (Interview), भागीदारों के विचार 'केस स्टडी', तुलनात्मक अध्ययन, वस्तुपरक विश्लेषण पुस्तक व्याख्या (Textual interpretation), 'गेम थ्योरी', सार्वजनिक चयन विश्लेषण को; सांख्यिकीय अनुमान; 'सर्वे' पर आधारित शोध; प्रयोगशाला शोध एवं स्थानिक प्रयोग (field experimentates) तथा कम्प्यूटर का मानवीय स्वांग की विभिन्न विधियों के मिश्रणों का आवश्यकतानुसार प्रयोग कर सकता है। शिक्षण विधियों का विस्तार परंपरागत भाषण पढ़ना-देखना, शोध, प्रशिक्षण के दौरान हुए वार्तालाप तथा स्वप्रेरित कम्प्यूटर के माध्यम से प्राप्त ज्ञान तक हो चुका है। राजनीतिक व्यवहार के अंतर्गत, संविधान का प्रारूप, संघर्ष-समाधान, संगठनात्मक सलाहकारिता, चुनावी-सलाह, पत्रकारों की टिप्पणियाँ, सुरक्षा-नीति-सलाह और सामाजिक निर्णयों के निर्माण में नेताओं एवं नागरिकों की प्रत्यक्ष भागीदारी शामिल है। इस संबंध में जो विधिपरक प्रश्न उठता है वह है - "मानवीय दशाओं से संहारकता को समाप्त करने के लिए नयी एवं पुरानी विधियाँ किस प्रकार अपना सर्वोत्तम योगदान दे सकती है?"

संस्थागत क्रांति

संस्थागत रूप से अहिंसक विस्थापन का प्रश्न है कि राजनीति शास्त्र के नियमों को कैसे संगठित किया जाना चाहिए, इसके उप-विषय (Sub-desciplines) क्या होने चाहिए और समाज के अन्य संस्थाओं एवं विषयों से इसके संबंध क्या होने चाहिए? इसका अर्थ है अहिंसक परिप्रेक्ष्य से, वर्तमान संरचनाओं में वैश्विक, राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर सवाल किए जाएं। इसका यह भी अर्थ है कि नव-स्थापित संस्थाओं में नए अहिंसक या मिश्रित व्यवसाय का अहिंसक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सृजन करना।

वर्तमान व्यवस्थानुसार राजनीति शास्त्र के वैश्विक व्यवसाय का प्रतिनिधित्व 1949 में स्थापित 'अंतर्राष्ट्रीय राजनीति विज्ञान संगठन' (IPSA) करता है। इसकी केंद्रीय सदस्यता का प्रतिनिधित्व 42 राष्ट्रीय राजनीति शास्त्र संगठन, 35,689 सदस्यों के माध्यम से संस्थागत रूप से 'इप्सा' की कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में करते हैं। (परिशिष्ट-क)। इसके विविध सदस्यों को अपनी रुचियों के अनुसार से 18 मुख्य क्षेत्रों, 38 अनुसंधन समितियों और 12 अध्ययन समूहों में संरचनात्मक रूप से संगठित किया जाता है (परिशिष्ट-ख)। इसके साथ उन राजनीति शास्त्रियों के नामों को जोड़ा जा सकता है जो राष्ट्रीय संगठनों का प्रतिनिधित्व नहीं करते तथा अपने विद्यार्थियों के माध्यम से भी नहीं जाने जाते।

42 लेखकों द्वारा लिखित 'राजनीति-विज्ञान की नयी लघु-पुस्तक' (गुडविन एवं क्लिंगमैन संपादक 1996) IPSA की बृहत्कार्य योजना के अंतर्गत विषय की वर्तमान पद्धति का निरीक्षण करने का प्रयास है। पिछले दो दशकों में विकास की दृष्टि से आठ उपविषयों की पहचान की गई है एवं उन पर पुनर्विचार किया गया; अर्ध राजनीतिक संस्थाएँ (विवेकपूर्ण चुनाव, कानूनी संदर्भ), राजनीतिक व्यवहार (तर्कशील मतदाता एवं बहुदलीय प्रणाली, संस्थागत एवं अनुभव आधारित दृष्टिकोण), तुलनात्मक राजनीति(समष्टिगत व्यवहारिक संदर्भ, प्रजातंत्रवादी अध्ययन) अंतर्राष्ट्रीय संबंध (नव यथार्थवाद एवं नवउदारवाद, विज्ञानवाद पश्चात् और स्त्रीवादी-संदर्भ), राजनीतिक सिद्धांत (दार्शनिक परंपराएँ, विज्ञानवाद पश्चात् और स्त्रीवादी-संदर्भ), राजनीतिक सिद्धांत (दार्शनिक परंपराएँ, प्रयोगपरक सिद्धांत), सार्वजनिक नीति तथा प्रशासन (तुलनात्मक नीति विश्लेषण; विचार, हित तथा संस्थाएँ), राजनीतिक अर्थव्यवस्था (समाजास्त्रीय और डाऊन्स (Downsian) का संदर्भ) और राजनीति विधिशास्त्र)(गुणात्मक विधियाँ, अनुसंधान प्रारूप तथा प्रयोगपरक विधियाँ) IPSA के अध्यक्ष के अनुसार "राजनीति विज्ञान को नई शताब्दी में ले जाने वाली इससे बेहतर पुस्तक नहीं हो सकती।"

इन उपलब्धियों के बावजूद यह नई लघु पुस्तक राजनीति शास्त्र के अहिंसापूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता की ओर संकेत नहीं करती है। उदाहरण के लिए सूची में, 'हिंसा' अथवा 'अहिंसा' और न ही 'मानव-हत्या', नरसंहार 'मृत्यु-दण्ड', 'सैनिक', 'आतंकवादी' अथवा 'पुलिस' की प्रविष्टि की गयी हैं। इसमें युद्ध के लिए 60 तथा शांति के लिए 8 प्रविष्टियां हुई हैं। सूची में 'हिटलर' एवं 'लेनिन' का नाम लिखा है परंतु गाँधी और किंग का नहीं। लोकतंत्र, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं सैनिक आघातों से बचाव के लिए अहिंसक राजनीतिक संघर्ष के सिद्धांत एवं व्यवहार विषय पर विश्व-राजनीति विज्ञान को दिशा देने वाले- जीन शार्प और 'अहिंसक क्रिया की राजनीति (The Politics of Non-violent-1973) के नाम एवं कार्य का उल्लेख नहीं किया गया और न ही अहिंसापूर्ण संघर्ष समाधान के प्रवर्त्तक सिद्धांतकार जॉन बर्टन (1979-1984) के नाम एवं योगदानों को स्मरण किया गया है। प्रतिष्ठित विश्व-शांति अध्येता जोहान गाल्तुंग (1996) के कार्यों की भी वहाँ बहुत थोड़ी बहुत ही चर्चा है।

1903 में स्थापित IPSA की सबसे बड़ी एवं सबसे पुरानी शाखा अमरीकी राजनीति विज्ञान संगठन APSA है। इसके सदस्यों की सदस्य संख्या लगभग 13,300 है व रुचि आठ प्रधान क्षेत्रों, 96 उपक्षेत्रों तथा 31 विशेष रुचि के विभागों में है। (परिशिष्ट-सी में देखें)। APSA तथा IPSA की रुचि संरचना (प्राथमिकता का ढाँचा) लगभग समान है। अमरीकी राजनीति विज्ञान के प्रधान क्षेत्र हैं-अमेरीकी सरकार तथा राजनीति, तुलनात्मक राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, विधि विज्ञान (methodology) राजनीतिक दर्शन तथा सिद्धांत, सार्वजनिक कानून तथा न्यायालय, सार्वजनिक नीति तथा राजकीय प्रशासन। यद्यपि 'संघर्ष प्रक्रिया' एवं 'अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा तथा शस्त्र नियंत्रण' के लिए विशेष विभाग है किंतु अहिंसक राजनीतिक विश्लेषण एवं कार्य के लिए तर्क के ज्ञान एवं समस्या को हल करने के लिए आवश्यक संस्थागत ढाँचों का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है। उदाहरण के लिए 'हिंसा', 'अहिंसा' अथवा 'शांति' का भी (अंतर्राष्ट्रीय) शांति अनुसंधान संगठन की तुलना में) कोई विशेष विभाग नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह सांस्कृतिक मान्यता जो घातकता द्वारा संरक्षित लोकतंत्र को सभ्यता के विकास की सर्वोत्तम आशा स्वीकार करती है, ने अहिंसक सभ्यतामूलक विकल्पों के अन्वेषण पर स्पष्ट संस्थागत प्रकाश डालने से रोका है।

अहिंसक प्रस्थापन में ऐसे सवाल निहित हैं जो राजनीति शास्त्र के क्षेत्रों या उपक्षेत्रों के संबंध में उठाए जा सकते हैं जिनका प्रतिनिधित्व अमरीकी तथा

अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक शास्त्र संगठनों की विषय संरचना में होता है। आप हमें अहिंसक समाज की संभावना तथा अहिंसक समाज के प्राप्त करने के तरीकों के विषय में क्या बता सकते हैं? इसका अर्थ है अब तक कि उपलब्धियों का लाभ लेना तथा नए तत्वों को शामिल करना। इसका उदाहरण समकालीन बढ़ती हुई विविधता में रहने वाले अमरीकी राजनीति विज्ञान के चार परंपरागत क्षेत्रों में उठते हुए प्रश्नों में देखा जा सकता है। ये क्षेत्र हैं - राजनीतिक दर्शन तथा सिद्धांत, अमरीकी सरकार तथा राजनीति, तुलनात्मक राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध।

राजनीतिक दर्शन तथा सिद्धांत

राजनीतिक दर्शन तथा सिद्धांत में, अहिंसावादी विस्थापन का तात्पर्य है प्रत्येक अहिंसक संस्कृति के राजनीतिक विचारों के धरोहर का पुनर्निरीक्षण करना तथा नयी अहिंसावादी सृजनशीलता का परिचय देना। उदाहरण के लिए प्लेटो के 'रिपब्लिक' में, डेनिस डाल्टन, 'हानि न पहुँचाने' (Non-injury) के नैतिक विचार को पाते हैं जो कि प्लेटो द्वारा युद्ध, राजकीय-दण्ड तथा 'सैनिक संस्कृति' जैसे विचारों को अपनाने के बावजूद भी, दार्शनिक एवं राजनीतिज्ञों के द्वारा प्रेरणा लेने योग्य है। यह विचार प्लूटार्क के निरीक्षण में प्रतिबिंबित हुआ है। 'चाकू की तरफ गमन न तो एक अच्छे चिकित्सक और न ही एक अच्छे राजनीतिज्ञ की पहचान है, बल्कि यह दोनों की अकुशलता को दिखाता है तथा राजनीतिज्ञ के मामले में यह अन्याय तथा क्रूरता दोनों को दिखाता है' (प्लूटार्क-10 : 249)। चीनी परंपरा में मेन्सियस के निरीक्षण की तुलना कीजिए (371-289 ई.पू.)-'जो व्यक्ति शक्ति का प्रयोग करके अच्छाई (virtu) का दावा करता है वह 'पा' अर्थात् अत्याचारी शासक है। वह जो अच्छाई का पालन करते हुए 'जॅन' अर्थात् 'मानव सहृदयता' का पालन करता है वह 'वांग', राजा है।' चीनी परंपरा में ही मो ज़ू (मो टी 468-376ई.) जो कि युद्ध तथा दमन का आलोचक है और 'विश्वप्रेम' की भूमंडल में 'पुनर्खोज' का आह्वान करता है। (फंग 1952 : 105)।

हिंसा का समर्थन न करने वाली, शास्त्रीय (प्रतिष्ठित) लेखन की संहारकता में कमी लाने के लिए, पुनर्व्याख्या करने की आवश्यकता है और इसकी अहिंसक अंतर्दृष्टि को बचाकर रखना तथा बढ़ाना चाहिए। इसके उदाहरण मैक्यावली के अहिंसक राजकुमार (The Nonviolent Prince—1981) की चैवट सदा आनंद द्वारा की गई पुनर्व्याख्या में, तथा अहिंसक रणनीतिक सुरक्षा (1996) संबंधी क्लॉजविट्ज के युद्ध पर सिद्धांत की रचना की बरोज़ (Burrowes) की पुनर्व्याख्या में दिखाई देता है। ये दोनों अहिंसक कृतियाँ हमें

गाँधी द्वारा भगवद्गीता (हिंदुओं के आध्यात्मिक शास्त्र) के कृष्ण-अर्जुन संवाद में अहिंसक आदेश ढूंढने का स्मरण कराते हैं। (गाँधी 1971)।

हिंसा का समर्थन करने वाली प्राचीन प्रतिष्ठित कृतियाँ भविष्यकालीन अहिंसक सृजनशीलता को चुनौती देती हैं। यदि प्लेटो सैनिक गुणों से युक्त शासक द्वारा शासित गणराज्य का प्रस्ताव कर सकता है तो अहिंसावादी गणराज्य की भी कल्पना की जा सकती है। यदि अरस्तू युद्ध और संघर्ष वाले राजनीतिक संविधान की बात कर सकता है तो अब हम अहिंसक समाज बनाने वाले संविधान का विचार कर सकते हैं। यदि मैक्यावेली हिंसा को स्वीकार करने वाली प्रधानता (दबदबा) के लिए कुशलता (चातुर्य) की सिफारिश कर सकता है तो अब यह संभव है कि अहिंसक राजनीतिक शक्ति की रणनीति एवं रण कौशल का निर्माण किया जाए। यदि हॉब्स सामाजिक शांति से संबद्ध, हिंसा के एकाधिकार वाले दानव-राज्य का प्रस्ताव कर सकता है तो मानवीय आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील, शासन के ऐसे नये प्रारूप का भी अन्वेषण किया जा सकता है जिसमें खूनखराबे की कोई आवश्यकता न हो। यदि लॉक निरकुंश शासन को समाप्त करने के लिए हिंसक क्रांति की कल्पना कर सकता है तो अब हम अहिंसक लोकतांत्रिक स्वतंत्रता की रणनीति एवं रणकौशल को अपना सकते हैं। यदि मार्क्स एवं एंगल्स, अंतिम मध्यस्थ के रूप में हिंसायुक्त संघर्ष की बात कर सकते हैं तो अब हम आर्थिक न्याय की अत्यंत प्राचीन अभिलाषा को पूरा करने के लिए अहिंसापूर्ण संघर्ष की प्रक्रियाओं की कल्पना कर सकते हैं। यदि रूसो उल्लंघनकर्त्ताओं के खिलाफ संहारकता पर आधारित सामाजिक संविदा की सलाह दे सकता है और यदि समकालीन (वर्तमान कालीन) नेता 'हिंसा युक्त' 'संविदा' और 'संधियों' के विषय में भाषण देना जारी रखते हैं तो हम अहिंसक समुदायों में खुशहाली के प्रति परस्पर कटिबद्धता का अन्वेषण कर सकते हैं। यदि काण्ट (1795/1959) युद्ध रहित श्रेणीवार नियोजन से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध स्थायी शांति की कल्पना कर सकता है तो हम अहिंसा की आज्ञा को सार्वभौमिक सत्य में बदलने के लिए आवश्यक तत्त्वों को अपना सकते हैं। यदि अमरीकी राजनीतिक परंपरा हिंसा-पूर्ण स्वाधीनता वाला और हिंसा का समर्थन करने वाला संविधान हमें विरासत में देती है तो अब हम सामाजिक हिंसा से मुक्ति की घोषणा कर और एक नये अहिंसक अमरीकी संविधान की कल्पना कर सकते हैं। यदि वेबर जो राजनीति को व्यवसाय के रूप में निर्देशित करता है और हिंसा की दुर्निवार्यता को आवश्यक रूप से स्वीकार करता है तो अब हम राजनीति एवं राजनीतिक विज्ञान को एक ऐसे व्यवसाय के रूप में कल्पित कर सकते जिससे 'हिंसा से

मुक्ति संभव है'। अरन्ड (Arendt 1970, मुलर और सेमेलिन 1995; स्टेज़र बौर लिंड 1999)।

अहिंसावादी विस्थापन नवीन मूल्यांकन के लिए गांधीवादी राजनीतिक विचारधारा को दर्शन व सिद्धांत के क्षेत्र में शामिल करने की माँग करता है। इसकी अनुपस्थिति, हिंसापूर्ण संसार में, नोबेल शांति पुरस्कार के लिए गाँधी के नाम पर विचार किये जाने की असफलता के समान ही है। इस क्षेत्र में काम करने के लिए बहुत से साधन उपलब्ध हैं, मुख्य रूप से विभिन्न विचारधाराओं तथा विषयों से संबंधित भारतीयों के लिए, जिनके साथ कई पथप्रदर्शक अभारतीय भी योगदान दे रहे हैं। (धवन 1957; डांग तथा अन्य 1977, ऐय्यर 1973, पारेख-1989a, 1989 b, बंदुरन्त 1969; डॉल्टन 1993; गाल्तुंग 1992; शार्प 1979; स्टेगर 2000)।

अहिंसावादी सिद्धांत के रचनात्मक विकास के लिए अवसर, संपूर्ण विश्व के भूत एवं वर्तमान कालीन अहिंसावादी विकल्पों को प्रस्तुत करने वालों के विचार से आये हैं। आर्थर और लीला विनबर्ग ने 550 ई.पू. का ऐसा सर्वेक्षण प्रस्तुत किया है। विभिन्न धर्मों में इसकी जड़े ढूंढी हैं। इसी प्रकार विल मौरिस यूनानी रोमन तथा यूरोपीय अमरीकी परंपरा में प्राचीनकाल से चली आ रही शांति परंपरा का व्यापक पांडित्यपूर्ण विश्लेषण करते हैं।

जैसे-जैसे अहिंसक राजनीतिक विचारधारा के सार्वभौमिक अहिंसावादी दृष्टिकोण की जांच होती है, कुछ आश्चर्यजनक बातें सामने आती हैं। कोरिया के राजनीति दार्शनिक ह्वांग यांग (Hwang Jong Yop) ने अहिंसक 'राजनीति' की परिभाषा देते हुए 3 दिसंबर 1987 में प्योंगयांग में अपने एक इन्टरव्यू में यह कहा, **"राजनीति का अर्थ है प्रेम और समानता की भूमि पर समाज के सभी सदस्यों के हितों के मध्य समरसता कायम करना।"** उस समय तक वे, तथा उनका साक्षात्कार लेने वाला, दोनों ही समाजास्त्री सोरोकिन के 'प्रेम' और 'रचनात्मक-उपकार' के विलक्षण अध्ययन से अपरिचित थे जिसे एरेन्ड (Arendt) के बातचीत करने, निर्णय लेने, साथ मिल कर काम करने (1970) तथा बर्टन की मानवीय आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता की प्रक्रिया पर बल देने संबंधित विचारधारा के साथ जोड़ा जा सकता है। ये सभी विचार नये अहिंसक राजनीतिक सिद्धांत के बीज हो सकते हैं।

राजनीतिक व्यवस्था अथवा राज्य का अध्ययन

राजनीतिक दृष्टि से संगठित समाजों और उनके अंगों के संपूर्ण अध्ययन में, गाँव से लेकर राष्ट्रीय राज्यों और बहुराष्ट्रीय सत्ताओं तक- जैसे अमरीकी

सरकार एवं राजनीति के क्षेत्र (विषय) - में अहिंसक विश्लेषण का तर्क प्रश्न पैदा करता है, जिसे भविष्यवादी हेराल्ड लिनस्टन के शब्दों में 'मान्यताओं के पिछड़ेपन' पर विजय प्राप्त करने के लिए साहस के साथ पूछा जाना आवश्यक है। राजनीतिक घातकता को देशभक्ति के दुर्ग में बिना प्रश्न पूछे सुरक्षित रखा गया है। यदि राजनीति व्यवस्था के अंदर प्रश्न नहीं पूछे जा सकते तो बाहरी राजनीतिक शास्त्रियों को ऐसे प्रश्न उठाने चाहिए।

प्रथम, राजनीतिक समाजों के निर्माण एवं कायम रखने में हिंसा का क्या योगदान है? राजनीतिक व्यवस्था का अपना स्वरूप किस सीमा तक प्रतिष्ठित संहारकता के इतिहास पर निर्भर है? किस प्रकार की सरकारी तथा गैर-सरकारी हिंसा की निरंतरता रहती है और उसका भविष्य क्या है? हिंसा का समर्थन करने के लिए चाहे वह कानूनी हो अथवा गैर-काननी, शासन के समर्थक अथवा विरोध में, घर में हो अथवा विदेश में नागरिक किस प्रकार से समाजीकृत है? राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विचार, व्यवहार एवं संरचनाएँ किस प्रकार से संहारकता में सहयोग देती हैं? हिंसा, राजनीतिक व्यवस्था के अन्य मूल्यों के पालन करने की क्षमता को किस प्रकार प्रभावित करती है (ऐसे मूल्य जो भौतिक भी हो सकते हैं और आध्यात्मिक भी, जैसे स्वतंत्रता व समानता के मूल्य)?

द्वितीय, अहिंसा के विचार, व्यवहार, नीतियों और सामाजिक संस्थानों का ऐतिहासिक मूल क्या है? उनकी वर्तमान अभिव्यक्ति एवं भावी परिदृश्य क्या हैं? हिंसक राजनीतिक शक्ति/सत्ता के विरोध में अहिंसक प्रतिरोध का विवरण (record) क्या है? अहिंसक समाज की प्राप्ति की दिशा में सृजनात्मक तथा रचनात्मक विवरण क्या है?

राजनीतिक संगठनों के अध्ययन की तीसरी आवश्यकता, हिंसा तथा अहिंसा के बीच पारगमन (Transition) तथा वापसी के विवरण संबंधी यह प्रश्न करना है कि कौन-से महत्त्वपूर्ण व्यक्ति, समूह तथा संगठन इन पारगमनों में हिस्सा लेते रहे हैं? क्या सिपाही (रक्षक) शांतिवादी हो गए हैं? क्या हत्यारों ने जीवन का सम्मान करने के लिए अपने आप को परिवर्तित कर लिया है? क्या हिंसक क्रांतिकारियों ने अहिंसक सामाजिक परिवर्तन के लिए अपने आपको प्रतिबद्ध कर लिया है? क्या धार्मिक व्यक्तियों ने संहारकता के 'वरदान' का त्याग कर दिया है? क्या सांस्कृतिक स्वरूप ने हिंसा की स्वीकृति से निषेध की ओर कदम बढ़ा लिए हैं?

मृत्युदण्ड लागू करने, समाप्त करने और दोबारा स्थापित करने के बीच अपराधों के दायरे में क्या परिवर्तन हुए हैं? क्या सैनिक शक्ति को निष्क्रिय और फिर गतिमान किया गया है? क्या सेना को समाप्त कर दिया गया? क्या पुलिस और नागरिक शस्त्र-विहीन हो गए हैं और पुनः शस्त्र से युक्त? क्या पूर्व हिंसक विरोधियों के सच्चे शांतिपूर्ण समझौते के पश्चात् घातकता का पुनर्विस्फोट हुआ है? क्या पूर्व हिंसा का समर्थन करने वाली अर्थव्यवस्था व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संपूर्ण रूप से अथवा आंशिक रूप से बदल चुकी है?

चतुर्थ, ऐतिहासिक तथा समकालीन अंतर-राजनीति व्यवस्थाओं के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तत्त्व क्या है जिन्हें यदि संक्रमणशील प्रक्रियाओं से संयुक्त कर दिया जाए और व्यक्त किया जाए तो ये अनुभव एक ऐसे समाज की प्राप्ति को दिखाएं है जिसमें जीवन की सभी मनोवांछित अहिंसक दशाएं विद्यमान हों? उस प्रसंग में, धर्मों, विधियों, कानूनों, संस्थानों, नीतियों, सामाजिक व आर्थिक संरचनाओं, शिक्षा, संचार, कला और अंतर्राजनीतिक संबंधों में होने वाले किस प्रकार के परिवर्तन अहिंसक समाज की प्राप्ति में सहायता पहुँचा सकते हैं? कौन-सी दशाएं - स्वतंत्रता, समानता, भौतिक कल्याण तथा सुरक्षा हिंसा अथवा उसकी वापसी की धमकी के बिना सुसाध्य बना सकती हैं।

तुलनात्मक राजनीति

अहिंसा का विस्थापन, तुलनात्मक राजनीतिक निरीक्षण के केंद्र में, मानव की अहिंसावादी क्षमताओं के प्रश्न को अवस्थित करता है। प्रश्न यह है कि विचारों, संस्थाओं, संरचनाओं, प्रक्रियाओं और नीतियों (जो कि समाज के भीतर और बाहर सरकार अथवा नागरिकों द्वारा घातक शक्तियों के प्रयोग अथवा उनके भय को समाप्त करने से संबंधित हैं)- की सार्वभौमिक तुलना के द्वारा किस प्रकार की अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है? अहिंसक विश्लेषण के तर्क से निर्देशित और प्रभावी परिवर्तनकारी क्रियाओं की खोज में तुलनात्मक परिप्रश्न ऐसे विकल्पों की जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करते हैं जो कि एक राजनीतिक व्यवस्था की सीमा से परे हैं। जिस प्रकार प्रजातांत्रिक संस्थाओं को मानव अधिकारों, महिलाओं की स्थिति, बच्चों के कल्याण, आर्थिक विकास के स्तर के आधार पर मापा जाता है, ठीक उसी प्रकार हिंसा अथवा अहिंसा की प्रवृत्ति के आधार पर समाजों की परस्पर तुलना की जा सकती है एवं उनका स्थान निश्चित किया जा सकता है। संहारकता के मापक में, राज्य के शत्रुओं

अथवा दलालों द्वारा की गई हिंसा, आपराधिक-लूट, नागरिकों द्वारा हत्याएँ, राज्य-पार दूसरे समाजों के सदस्यों की हत्या, हिंसा का व्यवसायिक प्रशिक्षण, तकनीकी क्षमताएँ तथा संहारकता के अन्य रूप को राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था के भौतिक संकेतक शामिल हैं। केवल एक राजनीतिक व्यवस्था से प्राप्त अहिंसा के विशेषताओं का भी इसके समान रूप से ही समानांतर स्थान निर्धारित किया जा सकता है। हिंसावादी तथा अहिंसावादी देशों का समय-समय पर तुलनात्मक स्थान-निर्धारण, विश्व-राजनीति-विज्ञान का सार्वजनिक सेवा में योगदान होगा। संहारकता के उतार-चढ़ाव के स्तर और अहिंसक परिवर्तनकारी क्षमताओं की प्रगति अथवा दमन का विवरण देना। अंतर्राष्ट्रीय स्टॉक बाजार के उतार-चढ़ाव व खेतों के स्कोर बताने की खबरों से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

अधिक समान अथवा कम समान स्थितियों में अंतर्राज्यीय तथा राज्य के अंदर सामाजिक अवयवों का अध्ययन कारणत्व व परिवर्तनकारी समझ को बढ़ाने में सहायता करता है। इसमें धर्म, विचारधाराओं, कलाओं, दलों, लिंगों, समवयस्कों, शिक्षा स्तरों, वर्गों, जातीय समूहों, आर्थिक उद्यमों, विश्वविद्यालयों तथा व्यवसायों की संहातक और अहिंसक क्षमताएँ शामिल हैं।

समकालीन राजनीतिक विज्ञान के अनुसंधान कार्यों के लिए आवश्यक है कि अहिंसक तुलनात्मक अध्ययन के इस विचार को आगे बढ़ाया जाए कि तानाशाही राज्यों की तुलना में प्रजातांत्रिक राज्य आपस में युद्ध नहीं करते और अपने नागरिकों की कम ही हत्या करते हैं। संसदीय अथवा प्रधानात्मक उदारवादी लोकतंत्रों में हिंसा की उपस्थिति व स्पष्ट हिंसक संस्कृति, इस आवश्यकता को दर्शाती है कि तुलनात्मक राजनीति में अहिंसक संरचनात्मक व सांस्कृतिक विकल्पों की अंतर्दृष्टि रखने वाले अध्ययन की जरूरत है। उदाहरण के लिए जैसा कि हमने अध्याय-2 में देखा, मैक्सिको के दो समान विशेषताओं वाले गांवों के तुलनात्मक अध्ययन में जिनका हिंसा की दृष्टि से ऊपर-नीचे स्थान है-परंतु जिनकी सामाजिक-आर्थिक दशाएं समान है-सांस्कृतिक विशेषताएं अलग-अलग देखी गईं। हिंसक गाँव के निवासी अपने को हिंसक समझते हैं जबकि अहिंसक गाँव के लोग अपने को शांति-प्रिय मानते हैं तथा इसके लिए गर्व करते हैं(फ्राई-1994)। इण्डोनेशिया के दो गाँवों में जो कि हिंसा की दृष्टि से आगे-पीछे हैं-बच्चों के खेल के एक तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि जिसकी संस्कृति तुलनात्मक रूप से अधिक हिंसापूर्ण है वह मानव एवं पशु संबंधी अधिक आक्रामक खेल को पसंद करता हैं और जिसकी संस्कृति तुलनात्मक रूप से कम हिंसक है वह मधुर खेलों जैसे अंगूर की लताओं पर झूलना, जो शांतिपूर्ण वयस्क व पशु व्यवहार की नकल है, पसंद करता है

(रॉयस (Royce)-1980)। इस प्रकार के अन्वेषण, बाक्सिंग, हॉकी, कुश्ती और अमरीकी फुटबाल जैसी प्रतियोगी संस्पर्शी (contact)खेलों के हिंसक-सांस्कृतिक सहसंबंधों पर अंतर्दृष्टि डालने में सहायता करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति

अहिंसक परिवर्तन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा विश्व राजनीति में समष्टि या व्यक्ति की दिलचस्पी को स्थापित करता है। यह मध्यम स्तरीय संस्थाओं के लिए परंपरागत दिलचस्पी के साथ समष्टिगत एवं व्यक्तिगत परिप्रेक्ष्य संयुक्त करता है। एक ओर इसमें विश्व राजनीति के विभागों (राज्य एवं गैर राज्य) में संबंधों की संरचनाओं व समस्या को हल करने वाली प्रक्रिया पर संपूर्णता से विचार किया गया है। (इसका तात्पर्य ऐतिहासिकता के बिना (ahistorical) अथवा असंदर्भित होना नहीं है। इतिहास मानव मात्र का है। विश्व तथा स्थानीय दशाओं में परस्पर-निर्भर अंतर्क्रियाओं के प्रारूप के संदर्भ में इन विभागों का अध्ययन किया जाता है)।

दूसरी तरफ, अहिंसक विश्व-समाज की प्राप्ति-संबंधी मान्यता, उस प्रत्येक व्यक्ति की, जो भूत, वर्तमान और भविष्य में धरती के जीवन में हिस्सा बटाता है-के कल्याण पर ध्यान देने की ज़रूरत को दिखाती है। अहिंसावादी राजनीतिक वि लेषण की मूलभूत इकाई व्यक्ति है। संगठन, संरचनाएँ तथा प्रक्रिया सामूहिक व्यक्तिगत व्यवहारों के उत्पाद हैं। विश्व राजनीति विश्व के व्यक्तियों की राजनीति है। अहिंसावादी विश्व-समाज हिंसा न करने वाले व्यक्तियों पर निर्भर है।

यह संपूर्ण रूप से विश्व के अहिंसक विश्लेषण एवं कार्य के तर्क को लागू किये जाने की आवश्यकता को दिखाता है। हिंसा के संबंध में इसका तात्पर्य है, अनुसंधान की राजनीति शास्त्रीय परंपरा को राज्य हिंसा, राज्य के खिलाफ हिंसा और समाजों के मध्य तथा उनके अंदर संहारकता के सभी रूपों तक विस्तृत करना तथा इन्हें विश्व प्रतिमान में संयुक्त कर इनकी कारणत्व पर आधारित व्याख्या करना। अहिंसा के संबंध में इसका अर्थ है, विश्व-स्तरीय राजनीतिक सत्ताओं के अंदर एवं बाहर अहिंसा की शक्तियों को पहचानना। अहिंसायुक्त परिवर्तन के संदर्भ में इसका अर्थ है, विश्व की सामान्य प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में समाजों के भीतर एवं उनके बाहर हिंसा तथा अहिंसा की शक्तियों के मध्य क्रिया-प्रतिक्रिया संबंधी प्रक्रियाओं को समझना।

अहिंसावादी विश्व समाज के व्यवहार, संभावना एवं इच्छित-प्रारूप की व्यापक समझ के लिए- इस बात को स्वीकार करते हुए कि सैद्धांतिक रूप में

अहिंसक समष्टि में कई भिन्नताएँ हैं। भूत तथा वर्तमानकालीन सामाजिक अभिव्यक्तियों एवं आकांक्षाओं को जानने की आवश्यकता है, व्यक्ति के स्तर पर से इसका अर्थ है व्यक्ति की हिंसक एवं अहिंसक प्रवृत्तियों, अहिंसावादी रूपांतर के संदर्भ में उनकी गतिशीलता (लोचशीलता), रचनात्मक व्यक्तिगत अहिंसक क्षमता के जीवनपर्यंत रहने वाली अभिव्यक्तियों का समर्थन करने वाले सामाजिक संदर्भों की विशेषताओं को समझना।

संहारकता की 'कीप' को अहिंसा के विकल्पों में बदलने के व्यवहारिक अनुकूलन का विश्व परिप्रेक्ष्य है 'हिंसा क्षेत्र' के ऐसे संपूर्ण हस्तक्षेप की खोज करना जो दबावपूर्ण घातक व्यवहारों का दमन करता हो। इसका तात्पर्य है अहिंसा की समस्या को हल करने वाले विश्व नेतृत्व एवं नागरिकता के समाजीकरण एवं उनके प्रशिक्षण में सहयोग करना। इसका अर्थ है अहिंसावादी परिवर्तन के विश्व संस्कृति के योगदान को पहचानना एवं उसे प्रोत्साहित करना। राजनीतिक, सैनिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं में होने वाले विश्वस्तरीय अहिंसावादी परिवर्तनों को समझना तथा उनको मदद करना भी इसमें शामिल हैं।

अहिंसक राजनीतिक विज्ञान

यह मान्यता कि मनुष्य हिंसामुक्त समाज की रचना करने में समर्थ है- प्रत्येक क्षेत्र, उप-क्षेत्र और समकालीन राजनीति विज्ञान के संदर्भ में-प्रश्न खड़े करता है। इस मान्यता को लेते हुए कि राजनीति-विज्ञान मूल्यविहीन हो सकता है क्या यह समझा जाए कि अहिंसा राजनीति शास्त्र का एक स्वीकार्य मूल्य है? क्या अहिंसावादी राजनीतिक शक्ति का सिद्धांत एवं व्यवहार हिंसक विचारों तथा अभिव्यक्तियों का सफलतापूर्वक मुकाबला व उनमें परिवर्तन कर सकता है? क्या स्थानीय स्तर से लेकर विश्वस्तर तक अहिंसापूर्ण लोकतांत्रिक संस्थाएं संभव हैं? क्या हिंसक राष्ट्रीय सुरक्षा से अहिंसक राष्ट्रीय एवं विश्वस्तरीय सुरक्षा तक पारगमन (transition) संभव है? क्या हिंसक राजनीतिक अर्थव्यवस्था के बजाय अहिंसक राजनीतिक अर्थव्यवस्था संभव है? क्या नारीवादी, जातिवादी, वर्ग, भाषाई और धर्म परिप्रेक्ष्य से अहिंसक राजनीति के सिद्धांत एवं व्यवहार में योगदान हो सकता हैं? कौन-सी विधियाँ (methodologies) सामाजिक हिंसा की व्यापक समझ, अहिंसक क्षमताओं, परिवर्तनशील प्रक्रियाओं तथा स्थिर, किंतु सृजनात्मक रूप से भिन्न, अहिंसक परिणामों को सामने लाने तथा नियंत्रित करने में सबसे उपयुक्त हैं?

इसका यह अर्थ नहीं है कि राजनीतिक शास्त्र ने, प्रत्येक क्षेत्र में इन प्रश्नों के उत्तर से संबंधित योगदान नहीं किया परंतु यह उस विचार को आमंत्रित करने के लिए है कि राजनीति शास्त्र का रूप क्या होता यदि इसने अहिंसक विश्व की अहिंसक समाज में संभावना को गंभीरता से लिया होता। इस तरह की संभावना की स्वीकृति का तात्पर्य है राजनीति शास्त्र की विश्वस्तर पर अहिंसक रूप से समस्या हल करने की वचनबद्धता।

अध्याय-4

समस्या-समाधान

"इस सामूहिक नर-संहार की निंदा व विरोध करने वाले सभी सर्वसम्मति से यह स्वीकार करते हैं कि इस त्रासदी, जिसमें करोड़ों की कुपोषण एवं आर्थिक वंचन से मृत्यु हुई, के कारण राजनैतिक थे।"

तिरपन नोबेल पुरस्कार विजेताओं का घोषणापत्र, 1981

अहिंसक राजनीति का समस्या-समाधान संबंधी आशय क्या है?

अहिंसक राजनीति का व्यापक लक्ष्य विश्व-जीवन से संहारकता को समाप्त करना है। मनुष्य (जिसमें शिकार एवं शिकारी बनने की संभावना मौजूद रहती है) के आजीवन कल्याण में रुचि रखना इसका अभिप्राय है। यह राजनीति शास्त्र के केंद्र में व्यक्ति एवं सृजनशील उद्देश्य को स्थापित करता है। दूसरी ओर यह समस्या-समाधान से संबंधित है, ऐसे समस्या समाधन से जो प्रत्येक आध्यात्मिक, लिंगीय, वय-संबंधी, जन-जातीय, वर्गीय, व्यावसायिक, राष्ट्रीय या राजनीतिक पहचान को स्वीकार तो करता है, किंतु उसके पार जाता है। इसका तात्पर्य ऐसी अहिंसक 'बहु-निष्ठाओं' से है (Guetzkow 1955) जो पारीण (transcendent) प्रतिबद्धता के साथ मिलकर समस्या-समाधान की प्रक्रियाओं को सरल बनाती हैं और सभी की आवश्यकताओं को, बिना घातकता की धमकी या इस्तेमाल के, पूरा करती हैं।

इसके साथ ही अहिंसक राजनीति शास्त्र का आशय है संहारकता उत्पन्न करने वाले कारकों को घटाना, तथा ऐसे कारकों को बढ़ावा देना जो अहिंसा का

समर्थन करते हैं। इसका उद्देश्य है घातकता की संकुचनशील 'कीप' के सभी पाँच 'क्षेत्रों' में, तथा उनके मध्य, समस्या-समाधान करना (चित्र 1, 2)। इसका अर्थ है राजनीति शास्त्र के व्यवसाय का सीधे तौर पर, तथा अन्य लोगों द्वारा, अप्रत्यक्ष रूप से, समस्या-समाधान के उत्तरदायित्व को स्वीकारना। इसमें ऐसे शोध व प्रशिक्षण को सहायता देना शामिल है जो सार्वजनिक और निजी समस्या-समाधान की प्रक्रिया में हाथ बटा सकें। इसका अर्थ है व्यक्तिगत और सामाजिक निर्णय-निर्माण में सभी की भागीदारी से आवश्यकता पूर्ति की प्रक्रियाओं को सुसाध्य बनाना।

अहिंसक राजनीति शास्त्र में समस्या-समाधान की भूमिका को स्वीकार करने का अर्थ यह नहीं है कि यह विषय सर्वज्ञ, सर्वसक्षम या सर्वशक्तिशाली है परंतु इसका यह अर्थ है कि इस भूमिका का महत्त्व व्यक्ति के हर क्षेत्र में कल्याण के लिए है चाहे वह क्षेत्र आध्यात्मिक हो, शारीरिक हो, भौतिक हो अथवा सांस्कृतिक हो। इसका अर्थ सर्वसत्तावादी राज्य का हस्तक्षेप नहीं है पर इस बात की स्वीकृति है कि अहिंसक राजनीतिक समर्थन करने वाले राजनैतिक व्यक्तित्व, संस्थाएँ और सरकारें, जो कुछ कर पाते हैं या नहीं कर पाते, उनके दूरगामी प्रभाव पड़ते हैं-आर्थिक समृद्धिता से उत्पन्न आनंददायक जीवन से लेकर व्यक्ति की आकांक्षाओं का सर्वोच्च शिखर प्राप्त करने तक। अहिंसक समाज की सेवा के इच्छुक राजनीतिशास्त्रियों को दवा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य से संबंधित व्यवसायों की तरह ही अपनी रुचियों व योगदान में संकुचित नहीं होना चाहिए।

समस्या की परिभाषा है 'इच्छित' तथा 'वास्तविक' में असंतुलन। प्रत्येक समस्या अनिश्चितता की जटिल उप-समस्या प्रस्तुत करती है, जैसे *नियामक* (normative), 'क्या होना चाहिए', *अनुभववादी अथवा वैज्ञानिक* (empirical) 'क्या है', *सम्भावित* (potential) 'क्या हो सकता है'। इसके साथ ही हर समस्या में प्रणालीगत जटिलताएं, परस्पर निर्भर पुनर्निवेशीय प्रक्रियाएं (mutually dependent feed back processes) तथा भूत-वर्तमान-भविष्य के कालिक (time) घटक होते हैं। परंतु कोई समस्या, नैतिक दार्शनिक एवं व्यवहारिक रूप से कितनी भी कठिन या जटिल क्यों न हो, अहिंसक राजनीति उसे छोड़ नहीं देती, क्योंकि उसका प्रयास है ऐसी समस्याओं जो मनुष्य के जीवन और खुशहाली के लिए खतरा हों, का हल ढूंढ़ना। अहिंसक राजनीतिक विज्ञान व्यवहारवादी हिंसा को खत्म करने की तथा संरचनात्मक हिंसा की परिस्थितियों को बदलने की कोशिश में लगा है, तथा दोनों की अन्तर्क्रिया से होने वाली समस्या का हल ढूंढ़ने में व्यस्त है। वह घातकता के समर्थन को समाप्त कर

वर्तमान संस्थाओं की अहिंसक नीतियों तथा संस्थाओं का सृजन करना चाहता है।

व्यावहारिक विज्ञान तथा व्यावहारिक मानवशास्त्र के समान राजनीतिक शास्त्र के लिए समस्यासमाधान की भूमिका स्वीकार करने में यह मानना अवैज्ञानिक होगा कि समस्या के समाधान पहले से ही ज्ञात होंगे। न तो यह मान्यता कि बीमारियाँ लाइलाज हैं और न यह कि इलाज, निदान (diagnosis), नुस्खे (prescription) इलाज से पहले से ही ज्ञात होंगे, चिकित्सा शास्त्र के आधारभूत एवं व्यावहारिक विज्ञान का विकास रोकता है। राजनीति शास्त्र को चिकित्सा विज्ञान से अलग नहीं होना चाहिए क्योंकि राजनीति शास्त्र के आधार पर में भी जीवन और मृत्यु हैं।

ऐसी समस्याओं की जिन्हें हिंसा स्वीकार करने वाली राजनीति तथा राजनीति शास्त्र न हल कर सके हों, अहिंसक राजनीति शास्त्र से तत्काल समाधान प्रस्तुत करने की अपेक्षा करना उचित नहीं। वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिक, मानवीय तथा भौतिक संसाधनों की हिंसा को हिंसा से रोकने (जिसमें अपार खून-खराबा होता है), की विशाल प्रतिबद्धता युद्ध, विशाल नर-संहारों तथा हिंसा की राजधानियों में हत्याओं को नहीं रोक पाई है। हत्या के लिए अपार सृजनशीलता का उपयोग हुआ है। कारगर अहिंसक विकल्पों के लिए अधिक इससे आविष्कारिक क्षमता की आवश्यकता है।

मानव घातकता के युग को समाप्त करना केवल राजनीतिशास्त्र का काम नहीं। इसमें सभी विज्ञानों, मानव शास्त्रों (humanities), व्यवसायों तथा सभी व्यक्तियों की सहभागिता जरूरी है। परंतु यह एक ऐसा कार्य है जिसमें राजनीति शास्त्र को पहल करनी चाहिए तथा दूसरों को इस प्रकार की पहल का समर्थन करना चाहिए। अहिंसक राजनीति शास्त्र की संभावना को नकारने वाली परंपरागत रूप से दुष्कर समस्याओं का समाधान ढूंढ़ना इसकी प्राथमिकता की होनी चाहिए। इनमें से तीन मूलभूत (generic) समस्याएँ हैं–"हिटलर तथा विशाल नर-संहार" की समस्या; क्रांतिकारी संरचनात्मक परिवर्तन; व्यक्ति से लेकर राष्ट्रीय राज्य तक की सुरक्षा की समस्या।

अहिंसा, हिटलर और सामूहिक नर-संहार

राजनीतिक नेतृत्व एवं घातकता की समस्या को–जिसके मूलभूत उदाहरण के रूप में हिटलर को लिया जा सकता है और जो हिटलर तक ही सीमित नहीं–का प्रत्यक्ष सामना करना पड़ेगा और इसे समस्या-समाधान विज्ञान के मूलभूत तथा व्यावहारिक प्रयत्नों से सुलझाना होगा। नर-संहारक आक्रमण के

भयावह उदाहरणों, सामूहिक वर्ग-विनाश और नागरिक हत्याओं को अहिंसक राजनीति की सृजनशीलना में बाधा डालने नहीं देना चाहिए। यदि ऐसा किया गया तो राजनीति शास्त्र हमेशा के लिए स्पष्ट या अप्रकट रूप से, प्रतिशोधात्मक हत्याओं, पहले से भी अधिक क्रूर तानाशाही, नर-संहार, क्रांतिकारी वर्ग विनाश तथा शहरों तथा गाँवों के 'न्याय-संगत' विनाश का सामना करने के लिए अभिशप्त है।

अभी तक अविकसित राजनीतिक-नेतृत्व के अध्ययन क्षेत्र में अंतर्विषयक शोध-कार्य करके इस दिशा में व्यवहारिक रूप से शुरूआत की जा सकती है। इसका अर्थ है घातकता की तरफ झुकाव वाले व्यवहार तथा प्रणालीगत कारकों की पहचान करना तथा उनमें अहिंसक नेतृत्व तथा अनुसरण को पुष्ट करने वाले परिवर्तन लाना। इनमें से कुछ कारकों की अभी से पहचान हो चुकी है। ये हैं–हिंसा की तरफ झुकाव वाली नेतृत्व की धारणा; व्यक्तिगत पूर्व आवश्यकताएँ (prerequisites); भूमिका संबंधी शक्ति (role powers); संगठनात्मक समर्थन; कार्य से अपेक्षाएँ; मूल्यों का क्रम/महत्त्व (value saliencies); तकनीकी क्षमताएँ तथा हत्या को बढ़ावा देने वाले सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक समर्थन/सम्बल। (पेज 1977)।

बीसवीं शताब्दी के अनुभव कुछ दूसरी दिशाओं की ओर भी संकेत करते हैं। हत्या-प्रवृत्त नेतृत्व तथा हत्या-प्रवृत्त *अनुयायियों* के आविर्भाव को रोकने के लिए इतिहास के किसी बिंदु पर लोगों को, हत्या करने, तथा हत्यारी व्यवस्था का समर्थन करने से, पूर्ण रूप से इंकार कर देना चाहिए, नहीं तो प्रतिशोध के इच्छुक हारे लोगों, और मानसिक रूप से आघातित विजयी लोगों के मध्य, हिंसा के चक्र चलते रहेंगे। पीछे देखने पर बीसवीं शताब्दी के अत्याचार दर्शाते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी के आखिर में जो लोग शांति की वकालत करते थे, वे सही थे। प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्वयुद्ध से शीत शुद्ध एवं उससे आगे के युद्धों में स्पष्ट संबंध है। ऐसी *प्रतिशोधात्मक दुश्मनियों* को जो हाल की हों या पुरानी, पहचानना तथा उन्हें आपसी समझौतों में परिवर्तित करना ताकि वे अत्याचारों के रूप में न फट पड़े, निवारक (preventive) राजनीति का योगदान होगा। ऐसे नेताओं और उनके अनुयायियों को, जो दुश्मनों के विनाश का जश्न मनाते हों, के उदय को रोकना होगा। राजनीति शास्त्र को इन बातों के लिए प्रतिबद्ध होना पड़ेगा कि हत्या को रोका जाए, दुश्मनों में मेल-मिलाप करवाया जाए और अहिंसक जीवन के लिए परिस्थितियाँ पैदा की जाएं।

सम्भावित हिटलरों, स्टालिनों, माओं, अमीनों, पोलपॉटों तथा परमाणु बम गिराने वाले ट्रूमैनों के उदय को रोकने के लिए आवश्यक है–राजनीतिक नेता

की धारणा की पुनःपरिभाषा की जाए जिसमें, नेता घातक सेनापति न होकर समाज की समस्याओं का हल करने वाला हो। शीघ्र ही ऐसे नेताओं की पहचान की जाए जो आक्रामक या हिंसक व्यक्तित्व के हैं तथा उनसे समर्थन वापस ले लिया जाए। नेता की भूमिका से यह उत्तरदायित्व ले लिया जाए जिसमें हत्या की इच्छा की संभावना हो या दूसरों को हत्या का आदेश देने की शक्ति हो। नेताओं को ऐसे व्यवसायिक हत्यारों के संगठन न दिए जाएं जो आदेश मानने के लिए बाध्य हों तथा घातक हथियारों से लैस हों। हत्या-प्रवृत्त संस्थाओं से धार्मिक, व्यापारिक, मजदूर संबंधी, वैज्ञानिक तथा कलात्मक समर्थन वापस लेकर यह समर्थन अहिंसक विकल्पों को दे दिया जाए। आवश्यकता-पूर्ति संबंधी समस्या–समाधान को नेताओं तथा नागरिकों के आवश्यक कार्यों के रूप में प्रतिष्ठित किया जाए। अहिंसा के मूल्य के प्रति सकारात्मक प्रतिबद्धता को राष्ट्रीय सम्मान एवं पहचान का केंद्र बिन्दु बनाया जाए तथा किसी समूह की ऐसी परिभाषा कि वह मानव से कम (Subhuman) या अन्य रूप से इतना दुष्ट है कि उसका विनाश किया जाए, का समर्थन नहीं हो सके। समूहों के बीच आपसी भलाई के लिए बातचीत को प्रोत्साहित किया जाए। ऐसी सामाजिक- आर्थिक तथा संरचनात्मक परिस्थितियाँ जो व्यक्ति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा के माध्यम से संतुष्ट करती हों, को बदल दिया जाए। हत्या की अर्थव्यवस्था को परिवर्तित कर उसे जीवनदायी मानव आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला जाए तथा कला व विज्ञान के माध्यम से अहिंसक संस्कृति के सृजन में समर्थन दिया जाए।

हिटलर के द्वारा किए गए अत्याचारों जैसे उदाहरण के खिलाफ 'हत्या क्षेत्र' में हस्तक्षेप, व्यावहारिक, अहिंसक, राजनीतिक, सृजनात्मकता के लिए बहुत बड़ी चुनौती प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से आज के युग की अभूतपूर्व तकनीकी विकास की क्षमता के संदर्भ में इस चुनौती का सामना करना असंभव नहीं। जिन तरीकों के बारे में सोचा जा सकता है और आजमाया जा सकता है वे हैं–सूक्ष्म तथा विशाल स्तर पर नेता व अनुयायियों को प्रेरित करना और आध्यात्मिक-मनो-वैज्ञानिक तरीके अहिंसक-क्षमताएं–रुकावटों का प्रयोग; हत्या का वैश्विक स्तर पर विरोध अथवा समर्थन न देना व खण्डन; तेज़ी से बचाव के रास्ते की व्यवस्था; अन्तरिक्ष, आकाश, समुद्र तथा ज़मीन से उच्च तकनीकों से लैस बल के द्वारा हस्तक्षेप ताकि ऐसे व्यक्तियों, समूहों तथा तकनीकों को निरस्त कर दिया जाए जो संहारक हैं। हमें घातकता के निवारण-योग्य स्रोतों पर प्रत्यक्ष या अन्य तरीकों से विशेष व व्यापक सकारात्मक अथवा नकारात्मक हस्तक्षेपीय दबाव डालना चाहिए।

हिटलर जैसे सदमों के बाद अहिंसक मानव क्षमताओं की परिवर्तनकारी स्वीकारोक्तियों को हत्यारों, शिकारों तथा रिश्तेदारों से प्राप्त करना चाहिए। राजनीति शास्त्र को ऐसी प्रक्रियाओं के सृजन में संलग्न होना चाहिए जो *अत्याचार के उत्तरदायित्व की पहचान करती हों; क्षतिपूर्ति*, मेल-*मिलाप*, तथा सबसे महत्त्वपूर्ण रूप से, उन निवारक व संरचनात्मक परिवर्तनों को लाने में सहायता करती हों जो अहिंसक विश्व में अहिंसक समाज की प्राप्ति के पक्ष में हैं। आत्मिक, वैज्ञानिक तथा परंपरा के सभी स्रोतों से मदद लेते हुए भविष्य की सांस्कृतिक पहचान के हृदय तथा लोक सम्मान में अहिंसा का उत्सव होना चाहिए। इस प्रकार का व्यवहारिक वचन कि भविष्य में ऐसे अत्याचार न दोहराए जाएं, दिया जाना चाहिए।

सामूहिक हत्याओं तथा युद्ध में होने वाले अत्याचारों के युग के अन्त के लिए अहिंसक राजनीति शास्त्र को तीन व्यवहारिक विज्ञान के कार्यों में हिस्सा लेना चाहिए—निवारण, हस्तक्षेप तथा सदमे के बाद का अहिंसक परिवर्तन। राजनीति शास्त्र को सृजनात्मक सेवा को उस अवरोधक से मुक्त कर लेना चाहिए जिसकी मान्यता है कि अहिंसक सिद्धांतों से ऐसे अत्याचारों को नहीं रोका जा सकता।

अहिंसा और हिंसक क्रांति

समस्या—समाधान के प्रयत्नों के सम्मुख दूसरी प्रमुख समस्या हिंसक क्रांति तथा प्रति-क्रांति (counter revolution) की है। इससे संबंधित क्षेत्र हैं सैनिक सत्ता परिवर्तन, प्रति-परिवर्तन (counter coup), आतंकवाद, प्रति-आंतकवाद, गुरिल्ला युद्ध तथा बड़े स्तर का गृह युद्ध। परंपरागत राजनीति शास्त्र इन क्रांतियों को और उनमें हुए अत्याचारों को हिंसा स्वीकृति के द्वैधी-भाव (Ambiguity) से देखता है। बुरी राजनीतिक व्यवस्था के खिलाफ हिंसा बुरी नहीं है परंतु अच्छे शासन के खिलाफ हिंसा बुरी है। बुरे क्रांतिकारियों के खिलाफ प्रतिहिंसा स्वीकार्य है परंतु अच्छे क्रांतिकारियों के खिलाफ नहीं। दोनों स्थितियों में राजनीतिक परिवर्तन के पक्ष अथवा विरोध में हिंसा कभी अस्पष्ट तथा कभी राजनीतिक जीवन का सराहनीय तथ्य है। कुछ अमरीकी विद्वानों के द्वारा जाने पहचाने तर्क दिए जाते हैं जैसे वे कहते हैं कि यदि आर्थिक विशिष्ट वर्ग अपनी सम्पत्ति तथा शक्ति को शांतिपूर्ण ढंग से नहीं त्यागता हो तो क्रांतिकारी हिंसा उचित है। दूसरे लोग प्रतिहिंसा का समर्थन करते हैं यदि विद्रोही, शोषणकारी, निजी सम्पत्ति व्यवस्था में, परिवर्तन लाने की कोशिश करें। अमरीका के चुनावी लोकतंत्र में भी क्रांतिकारी घातकता का विचार है जब कुछ

नागरिक यह मांग करते हैं कि राज्य के खिलाफ स्वतंत्रता की रक्षा के लिए उन्हें बन्दूक रखने की आवश्यकता है।

इस बात को मानते हुए कि दमनकारी राजनीतिक शासन को हटाने की, तथा सामाजिक, आर्थिक संरचना की असहनीय हिंसा की परिस्थितियों को बदलने की आवश्यकता है, अहिंसक राजनीति शास्त्र, अहिंसक क्रांतिकारी विकल्पों की पहचान में सहायता कर सकता है। इसके लिए उस मान्यता को जो यह स्वीकार करती है कि क्रांतियां हिंसक ही होती हैं, चुनौती देने की, तथा प्रभावी अहिंसक विकल्पों –सिद्धांतों, रणनीतियों, रणकौशलों, संगठनात्मक तरीकों तथा लागू करने की क्षमताओं - का ज्ञान करवाने की आवश्यकता है।

शीत युद्ध के आखिरी अर्द्धांश में विश्व की तीन प्रभावशाली क्रांतिकारी परंपराओं वाले देशों, संयुक्त राज्य अमरीका, सोवियत संघ तथा चीन के राजनीतिक सिद्धांतदाताओं से अहिंसक क्रांति की संभावना की स्वीकारोक्ति आई।

अमेरीका में जीन शार्प ने (1973) में अहिंसक राजनीतिक क्रांतियों का विशिष्ट सिद्धांत व व्यवहार प्रस्तुत किया। इस सिद्धांत के मूल में राजनीतिक शक्ति के 'पालनकारी' (acquiescent) आधार का तीखा विश्लेषण था, तथा प्रभावी अहिंसक संघर्षों के उदाहरणों की विस्तृत ऐतिहासिक जांच थी। शार्प ने अहिंसक व्यवहार के 198 तरीके बताएं हैं–विरोध प्रदर्शन और अनुनय (protest and persuasion) से लेकर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक असहयोग और फिर, प्रत्यक्ष अहिंसक हस्तक्षेप। इसके पश्चात् शार्प इन सभी को अहिंसक परिवर्तन के गतिशील सिद्धांत में संयुक्त कर लेते हैं, जिसमें 'मतान्तरण (conversion), मेल-मिलाप (accommodation), बल प्रयोग (coercion) की प्रक्रियाएं शामिल हैं तथा जिनमें वे बाद में 'विघटन' (disintegration) को भी जोड़ लेते हैं। सोवियत संघ में ई. जी. प्लीमाक (E. G. Plimak) तथा वाई. के. कार्याकिन (Y. J. Karyakin) ने क्रांति की परिभाषा इस प्रकार दी–क्रांति का अर्थ है राज्य शक्ति का एक वर्ग से दूसरे वर्ग में विस्थापन जो "जो जनता के विशाल समूह के जीवन में जबरदस्त परिवर्तन लाता है।" मार्क्सवादी–लेनिनवादी सिद्धांत तथा द्वितीय विश्व युद्ध उपरांत विउपनिवेशीकरण तथा प्रजातांत्रिक अनुभव के आधार पर वे तर्क देते हैं कि शांतिपूर्ण समाजवादी क्रांतियां संभव हैं। वे शांतिपूर्ण समाजवादी क्रांति की परिभाषा इस प्रकार देते हैं कि जो "सशस्त्र संघर्ष के बिना, गृह युद्ध के बिना तथा सशस्त्र प्रति-क्रांतिकारी (counter revolutionary) हस्तक्षेप के बिना" हों। उनके अनुसार भूतकालीन असफलताओं से हतोस्साहित हुए बिना हमें नई ऐतिहासिक परिस्थितियों में हमें शांतिपूर्ण क्रांतियां का लक्ष्य रखना चाहिए बिना

शांतिपूर्ण क्रांतिकारी, विकास के हर पक्ष का ध्यानपूर्वक, निष्पक्ष अध्ययन होना चाहिए।" चीन में जांग यि. पिंग (1981 : 79) अपने तर्क को मार्क्सवादी सिद्धांत तथा एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका के अहिंसक राष्ट्रीय आंदोलनों पर आधारित करते हुए विशेष रूप से भारत के गांधीवादी आंदोलन के द्वारा प्रदर्शित जन-लामबन्दी (mass mobilization) की क्षमता को ध्यान में रखते हुए कहते हैं–"वह विचार जो बिना समय, स्थान तथा स्थिति को ध्यान में रखते हुए–हिंसक क्रांति की एक तरफा वकालत करता है– तथा अहिंसक क्रांति को घटिया बताता है, *सिद्धांत में गलत है तथा व्यवहार में नुकसानदेह*" है।

जटिल वैश्विक क्रांति तथा प्रति-क्रांति के खूनखराबे से युक्त इस युग में स्वतंत्र रूप से तथा बिना आपसी जानकारी के – राजनीतिक विश्लेषक तीन हिंसक परंपराओं से बाहर आ रहे हैं और अहिंसक क्रांति के सिद्धांत तथा व्यवहार के वैज्ञानिक कार्य में लगे हैं। इन सभी में जो तत्त्व समान रूप से विद्यमान है वह है भारत का गांधीवादी आंदोलन जिसने केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं चाही बल्कि सामाजिक-आर्थिक एवं सास्कृतिक परिवर्तन की भी कोशिश की।

अब तक अहिंसक क्रांति का सिद्धांत, चाहे वह "पूँजीवादी" दृष्टिकोण से हो चाहे "समाजवादी" दृष्टिकोण से–उत्पीड़ित के परिप्रेक्ष्य में सोचा गया है। इसकी तुलना में अहिंसक विशिष्ट वर्गीय प्रति-व्यवहार (counteraction) का विकास नहीं हुआ है जो अहिंसक क्रांतिकारी व्यवहार के हिंसक दमन के विरुद्ध विकल्प दे सके। इसमें शार्प के विश्लेषण को पलटना निहित है। क्या अमीर, सम्पत्ति के मालिक, जातीय प्रभुत्व रखने वाले, राजनीतिक नेता, पुलिस और सेना के पास अहिंसक रूप से, बिना शस्त्रों के–गरीबों भूमिहीनों, दलितों, अल्पसंख्यकों या बहुसंख्यकों–जो अहिंसक रूप से, अपने मानव अधिकारों तथा आर्थिक न्याय की मांग कर रहे हों, का मुकाबला करने का सिद्धांत या साहस है?' क्या लाभित (advantaged) वर्ग, मतपरिवर्तन, मेल-मिलाप तथा बल प्रयोग का व्यवहार कर अपने सम्मान तथा मान्यता संबंधी प्रति-दावों (counterclaims) को बिना खून-खराबे आगे बढ़ा सकता है?

इसके अतिरिक्त "अहिंसक संघर्ष" या "अहिंसक वर्ग संघर्ष" का व्यावहारिक सिद्धांत–जिसके द्वारा ऐसा सामाजिक परिवर्तन, जिसमें अत्याचारी/लाभित तथा दलित/पिछड़े वर्गों के बीच संतोषजनक संबंध हो–आज संभव लगता है? उन अहिंसक तत्त्वों से जो मानव-स्वभाव में प्रेरित किए जा सकते हैं–तथा उस दमित शत्रुता से जिसका प्रदर्शन हिंसक विशिष्ट वर्ग और उनके हिंसक विरोधियों के द्वारा शांतिपूर्ण परिवर्तन के प्रवर्तकों के प्रति होता है–से

यह अंदाजा लगाया जा सकता है। प्रत्येक संघर्षरत पक्ष अहिंसक व्यवहार के प्रवर्तकों का इस आधार पर दमन करता है कि ऐसे विचारों से उनके समर्थन (विशिष्ट वर्ग का समर्थन) आधार/वर्ग की हत्या करने की तत्परता कमजोर पड़ जाएगी। उदाहरण के तौर पर, शीत युद्ध के मुकाबले (confrontation) में अमरीका तथा सोवियत संघ–दोनों में ही विशिष्ट वर्ग (elites) व मीडिया शांतिवादी स्वरों को महत्त्वहीन करार देते थे या उनका दम घोंट देते थे। क्योंकि 'उन्हें ऐसा लगता था कि ऐसे स्वर सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रियाएं प्रेरित करेंगे जो उनके (शासन के) सैनिकवाद के प्रति समर्थन को कमजोर कर देगा–न कि इन स्वरों के न दबाने से उनका दुश्मन कमजोर पड़ेगा। उसी प्रकार सशस्त्र विरोधी आंदोलनों के शिक्षा क्षेत्र से जुड़े तथा क्रियाशील (activist) समर्थक तेजी से अहिंसक क्रान्तिकारी विकल्पों की आलोचना करते हैं, क्योंकि उन्हें भय है कि दलितों में यह विचारधारा स्वीकार्य होगी।

इस प्रकार यदि दमनकारियों तथा दलितों–दोनों में ही अहिंसक सिद्धांत एवं प्रक्रियाएं स्वीकार्य हैं तो एक अहिंसक वर्ग-संघर्ष की कल्पना की जा सकती है। इसका तात्पर्य यह है कि राजनीति शास्त्र की अहिंसक क्रांतिकारी समस्या–समाधान प्रक्रिया में एक व्यवहारिक भूमिका होगी। विरोधियों के साथ 'मेल-मिलाप' के अंतिम लक्ष्य का प्रदर्शित प्रभाव–जो अहिंसक सामाजिक परिवर्तन के प्रत्येक स्तर पर होगा–नई दिशा दिखाता है। मैक्यावली ने भी कहा था कि राजनीतिक शासन में गहन परिवर्तन जो "निरकुंशता से स्वतंत्रता" की ओर या उसके उलट दिशा में ले जाते हों "बिना खूनखराबे" के संभव हैं यदि "नागरिकों की, जिन्होंने राज्य को महान् बनाया है, सहमति ली जाए" (The Discourse, Book 3, Chapter 7)।

अहिंसा और सुरक्षा

अहिंसक राजनीति शास्त्र को व्यक्तिगत, स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर घातक आक्रमणों के विरुद्ध विश्वसनीय सुरक्षा विकल्प प्रदान करने की समस्या का समाधान करना चाहिए। परंपरागत सुरक्षा सिद्धांत व व्यवहार घातकता के डर पर आधारित होते हैं–'मैं/हम तुम्हें स्पष्ट कहता/कहते हैं कि मैं/हम तुम्हें मार दूंगा/देंगे'। अहिंसक सुरक्षा का इससे विपरीत सिद्धांत है जो है–मैं/तुम्हें यह स्पष्ट करता हूं कि मैं/हम तुम्हें नहीं मारूंगा/मारेंगे। और तुम भी यह स्पष्ट करो कि तुम मुझे/हमें नहीं मारोगे।' संक्षेप में 'हम एक-दूसरे को विश्वास के साथ यह कहते हैं कि हम एक-दूसरे को नहीं मारेंगे।' जब तक मारने के लिए कोई दृढ़संकल्प है कोई भी सुरक्षित नहीं है। हत्या-बुद्धि हर

प्रकार की सुरक्षा को भेदने में समर्थ है—ढाल, अस्त्र, पानी, दीवारें, महल—और यहां तक कि परमाणु आश्रय भी। आक्रामक घातकता हर प्रकार की घातक सुरक्षा से पार पा सकती है—भालों के ऊपर तीर, बन्दूकों के ऊपर मशीन-गन, पैदल सेना के ऊपर तोप, घुड़सवारों के ऊपर टैंक, टैंक के ऊपर रॉकेट, लड़ाकू जहाज के ऊपर पनडुब्बियां, सभी के ऊपर हवाई तथा मिसायली शक्ति, और सभी पर आणविक, जैविक तथा रासायनिक हथियार। बन्दूकों से भरे हुए सशस्त्र मकान में भी सुरक्षा की गारंटी नहीं—घुसपैठियों के पास ढाल भेदने वाले मिसाइल हो सकते हैं, अधिक भारी तोप हो सकती है, लड़ने का बेहतर कौशल हो सकता है—या फिर मात्र हवा, अन्न, या पानी के भण्डार को विषाक्त करने की क्षमता हो सकती है। **हत्या करने की इच्छा का अभाव ही निश्चित सुरक्षा है।**

असंहारक सुरक्षा के संक्रमण काल में राजनीति शास्त्र की भूमिका है घातक शक्ति के विरुद्ध, या उसकी धमकी के विरुद्ध, विश्वसनीय विकल्पों के सिद्धांत तथा व्यवहार का विकास करना, जिनमें से एक है सम्भावित विरोधियों में इस प्रकार का असंहारक परिवर्तन लाना जिससे हत्या करने की इच्छा न रहे। हालाँकि परंपरागत राजनीति शास्त्र में इन्हें महत्त्व नहीं दिया गया है, साहित्य तथा अनुभव का एक विशाल भण्डार है जो इस दिशा में बढ़ने का आधार प्रदान करता है। ऐसे अन्वेषणों में हैं नाजियों द्वारा किया गया सामूहिक नर-संहार के विरुद्ध नागरिक अभियान (फोजनमेन हालिक Hallic 1979; Fogelman 1994) सेमेलिन Semelin 194); डैनिलो डोलची (Danilo Dolci) का माफिया अपराध के खिलाफ सामुदायिक विरोध (अमाटो 1979; चौधुरी 1998); मानव अधिकार कार्यकर्त्ताओं के लिए शस्त्रविहीन अंगरक्षक (माहोनी तथा इग्युरेन (Eguren 1997); सैनिक सत्ता-पलट के खिलाफ अहिंसक विरोध (रॉबर्ट्स 1975; शार्प 4990; 1993); अहिंसक राष्ट्रीय नागरिक तथा सामाजिक बचाव (बोसेरप एवं मैक 1974; शार्प 1990; मार्टिन व अन्य, 1991; रैण्डल 1993; बरोज़ 1996); परंपरागत सैनिक बलों का असंघातक उपयोग (केयस 1982 Keyes); वैकल्पिक अहिंसक बल (बैनरजी 2000, वेबर 1996; मोजर-पुआंगसुआन और वेबर 2000); और, असंहारक हथियारों का विकास (लीवर और शोफील्ड 1997 Lewer Schofield)।

कई सरकारों ने परंपरागत सैनिक साधनों के पूरक के रूप अहिंसक नागरिक प्रतिरक्षा की व्यवहारिक संभावनाओं का अध्ययन किया है। इन देशों में स्वीडन, नॉर्वे, डेनमार्क, नेदरलैण्ड्स, फ्रांस, लाटविया, लिथुआनिया, एस्टोनिया, ऑस्ट्रिया, स्विट्जरलैण्ड तथा फिनलैण्ड (श्मिड 1985; शार्प, 1990; रैण्डल

1994 : 212-37) शामिल हैं। थाईलैण्ड के नए संविधान (1997) की धारा 65 में भविष्य के सैनिक सत्ता परिवर्तन के अहिंसक वैध विरोध के पूर्व निवारण (pre-emptive) के प्रावधान का एक अनोखा प्रयास किया गया है–"लोगों को यह अधिकार है कि वे प्रशासनिक शक्ति की प्राप्ति के असंवैधानिक प्रयासों का शांतिपूर्वक विरोध करें।"

पुलिस तथा सैनिकों के द्वारा अंसहारक हथियारों के प्रयोग के विषय में अमरीका में 1965 से शोध हो रहा है जिसकी गति 1990 के दशक में तेज कर दी गई। कई प्रकार की तकनीकों का अन्वेषण किया गया, जैसे–लेजर, दृश्य, आवाज से संबंधित (accoustical) विद्युत-चुम्बकीय नब्ज (pulse), रासायनिक, जैविक तथा अन्य कई प्रकार के हथियार। इनमें से कइयों का पुलिस तथा समुद्र पार के सैनिक अभियानों में अभी से इस्तेमाल हो रहा है (लीवर तथा शोफील्ड 1997)। सरकार की सामाजिक प्रतिरक्षा में रुचि की तरह ही अघातक अस्त्रों में रुचि को भी परंपरागत घातक क्षमताओं के पूरक के रूप में ही समझा जाता है। परंतु यह सच है अहिंसक विकल्पों के विषय में परंपरागत विशेषज्ञ गम्भीरता से विचार कर रहे हैं, इससे राजनीति शास्त्र को गम्भीर तथा अधिक विकसित तकनीकों के विकास के प्रयास के लिए प्रेरणा मिलनी चाहिए। अब चुनौती यह है कि पूर्ण अहिंसक सुरक्षा परिस्थितियों की तरफ जाने कि दिशा में जो समस्याएँ आएंगी, उनका समाधान करना असंहारक सुरक्षा के प्रति जाने का एक और संकेत हिंसक संहार निवारण संबंधित कारनेगी आयोग (Carnegie Commission on Preventing Deadly Conflict) की अंतिम रिपोर्ट में मिलता है जिसका आह्वान है–"संरचनात्मक निवारण–हिंसक संघर्ष के कारणों को सम्बोधित करती रणनीतियाँ" (Structural Prevention : Strategies to Address the Root Causes of Deadly Conflict); तथा "निवारण की संस्कृति" ("culture of prevention") का सृजन। इस घोषणा में अंहिसक व्यक्ति तथा वैश्विक सुरक्षा की ओर बढ़ते कदम की संभावना निहित है। वैश्विक अहिंसक शांति सेना (Global Nonviolent Peace Force) के संगठन का प्रस्ताव इसका उदाहरण है।

अहिंसक राजनीति विज्ञान को ऐसी समस्याओं का समाधान ढूंढना होगा जो अब तक अहिंसक राजनीतिक समाज की प्राप्ति के रास्ते में अलंघनीय अवरोधों के रूप में समझी जाती रही हैं। राजनीति शास्त्र की प्राथमिकता ऐसे खतरों से निबटना होगी। जो आक्रामक शारीरिक हिंसा के द्वारा पूर्ण विनाश की प्रत्यक्ष धमकी देते हों। प्रथम, इसलिए कि जीवित रहे बिना किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। दूसरा, इसलिए, कि हिंसा के प्रति प्रतिबद्धता

संरचनात्मक तथा पर्यावरण संबंधी ऐसी हिंसा को जन्म देती है, जो व्यक्ति, समाज तथा ग्रहों की खुशहाली को प्रभावित करती है।

सामाजिक समस्यासमाधान की अहिंसक विचारधारा पर बल हमें ऐसे सवालों से दो चार करती है–जैसे, जब मनोवैज्ञानिक दुराचार, यातना, नस्ल-परस्ती, कामुकता, आर्थिक शोषण तथा निरंकुश शासन शारीरिक घातकता से अधिक कष्टदायी व मृत्युकारक हैं तो केवल अहिंसा पर ही ध्यान क्यों केन्द्रित किया जाए? इन प्रश्नों का आशय यह है कि ऐसी समस्याओं का समाधान हत्या द्वारा ही हो सकता है। एक जबाव यह है कि हत्या करने की इच्छा, सामर्थ्य तथा संस्कृति, सामाजिक, आर्थिक एवं संरचनात्मक असामानताओं का मुख्य आधारभूत कारण है। ये कारण हत्या तथा मनो-शारीरिक दुर्व्यवहार, जो अस्थायी रूप से हत्या से कुछ ही दूर हैं, को जन्म देते हैं। दुर्व्यवहार, यातनाएं, नस्ल परस्ती, स्त्रियों का दमन, आर्थिक शोषण तथा निरंकुश शासन किस प्रकार बचे रहते यदि डर अथवा मृत्यु की धमकी पर आधारित नहीं होते? मानव के अनुभव में से यदि मानव हत्या तथा युद्ध में हत्या को निकाल दिया जाए तो यह आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, भौतिक, प्रजातांत्रिक, पर्यावरण स्तर पर मनुष्यों के सामने उपस्थित अन्य समस्याओं के समाधान में योगदान होगा।

अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता का अर्थ है राजनीति शास्त्र का हर युग की मानव उत्तरजीविता तथा खुशहाली से संबंधित समस्याओं के समाधान से संबद्ध होना। गांधी अपने बाएं हाथ की उंगलियों पर मुख्य समस्यासमाधान क्षेत्रों की गिनती करते थे–अछूतों के लिए समानता; आर्थिक स्वतंत्रता के लिए सूती कपड़े को बुनने की आत्मनिर्भरता; नशीली वस्तुओं के सेवन से परहेज; हिन्दू-मुस्लिम मित्रता, तथा स्त्रियों के लिए समानता का अधिकार। फिर वे यह कहते थे "और यह कलाई है अहिंसा" (ऐश 1969 : 243)। इसी तुलना के समान हम विश्वस्तर की पांच मुख्य समस्याओं से संबंधित हो सकते हैं–निरन्तर हत्या तथा निःशस्त्रीकरण की समस्या; गरीबी के कारण सामूहिक मृत्यु और आर्थिक समदृष्टि की समस्या; मानव सम्मान का हनन और मानव अधिकारों के लिए परस्पर सम्मान की समस्या; जीवमण्डल (biosphere) के विनाश तथा ग्रहों के जीवन-समर्थन (life support) की समस्या; और दूसरों को वंचित करने वाली भेदभाव की नीति जो समस्या-समाधान में सहयोग के रास्ते में आती है, की समस्या।

ये पांचों समस्याएँ सभी व्यक्ति, परिवार, समुदायों, राष्ट्रों तथा संपूर्ण मानव मात्र के लिए समान हैं। हम सभी स्वतंत्रता चाहते हैं–मृत्यु से, आर्थिक वंचन से, सम्मान से वंचित होने से, जहरीले पर्यावरण से, तथा इन सभी समस्याओं

के समाधान में सहयोग की असफलता से। ये सभी समस्याएँ एक-दूसरे से संबंधित हैं तथा घातकता को अंतिम समस्या समाधानकर्ता मानने के कारण भीषण हो गई हैं। हम सुरक्षा ढूंढ़ते हैं हत्या करके या हत्या के लिए हथियारों से लैस होकर, जो प्रति-हत्या (counter killing) की धमकियों को जन्म देती है। हत्या के लिए हथियार बन्द होना आर्थिक वंचन को जन्म देता है जो संरचनात्मक असमानताओं को सुदृढ़ करता है। मानव अधिकार प्राप्त करने या न प्राप्त करने की स्थिति में हत्या देर तक कटुता उत्पन्न करने वाले जवाबी रोष को जन्म देती है। घातक संघर्ष और सैनिक औद्योगिकीकरण पर्यावरण का विनाश करते हैं। विरोधी अंत:क्षेत्रों (enclaves) में डर पर आधारित उपखण्डन (compartmentalizalion) समस्यासमाधान सहयोग के विकास, जिससे सभी का भला हो, में रुकावट पैदा करते हैं।

अहिंसक समस्या-समाधान का आशय केवल हिंसा की मनाही नहीं बल्कि आवश्यकता पूर्ति संबंधी परिवर्तन में रचनात्मक संबद्धता भी है। इसका अर्थ है युद्ध तथा हथियारों की समाप्ति में स्पष्ट सहभागिता, गरीबी का अन्त, मानव अधिकारों तथा उत्तरदायित्वों की अहिंसक अभिव्यक्ति, पर्यावरण संपोषण का क्रियाशील समर्थन तथा ऐसी समस्यासमाधान की प्रक्रियाओं में योगदान देना जो मानव आवश्यकताओं का प्रत्युत्तर देती हों तथा व्यक्तियों तथा संपूर्ण मानव समाज में असीमित सृजनात्मक संभावनाओं को प्रेरित करती हों।

इस तरह की कार्यसूची कल्पना लोक (utopian) की प्रतीत होती है, पर यह कार्य सूची हमें कुछ अति-व्यवहारिक अनुभवी राजनैतिक, सैनिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक तथा नागरिक समाज (civil society) के नेताओं से विरासत में मिली है (जिसमें नए वैश्विक समाज में प्राचीन मानव चिन्ताओं की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है)। राजनीति-शास्त्रियों के लिए यह ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि संयुक्त राष्ट्र अथवा दूसरे संगठनों के द्वारा बुलाए गए लगभग हर महत्त्वपूर्ण समस्यासमाधान के सम्मेलन से यह आह्वान किया जाता है कि आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए विश्व के सभी लोग मिलकर "राजनीतिक इच्छा शक्ति" का सृजन करें। इस तरह के आह्वान केवल सरकारों के लिए ही नहीं किए जाते बल्कि सहयोगी समस्यासमाधान व्यवहार के प्रत्येक स्रोत से किए जाते हैं। इनमें हैं राजनीतिक दल, गैर-सरकारी संगठन, सहकारी संस्थाएं, संघ, विश्व-विद्यालय, मीडिया, धर्म और कलाएं। जैसे-जैसे जीवन को संकट में डालने वाली वैश्विक समस्याएँ घनीभूत हो रही है यह जागृति आ रही है कि यदि हम अब कुछ कर पाने में असफल रहे तो उसके भविष्य में प्रलयंकारी परिणाम होंगे। ये सच्चाई इन आह्वानों को अत्यावश्यक

बना देते हैं। असफलता के भयावह परिणाम हो सकते हैं— जैसे हथियारों की वृद्धि; तेजी के साथ बढ़ती जनसंख्या के साथ में देश के भीतर तथा देशों के मध्य आर्थिक अंतर, जो सहनशीलता की भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक सीमाओं को तोड़ने का खतरा प्रस्तुत करता हैं; बेरोक-टोक औद्योगीकरण तथा कृषि के कारण प्रकृति के शोषण से जीवन को खतरा; स्त्रियों, स्थानीय जन-जातियों, दलित अल्पसंख्यकों, और भिन्न सांस्कृतिक पहचान वाले लोगों की उचित जीवनस्तर की प्राप्ति तथा समान सहभागिता की मांगों को पूरा करने के वायदे को निभाने में असफलता। युनेस्को के महानिदेशक, फ्रेडरिको मेयर की तरह विश्व परिस्थितियों की समझ रखने वालों के लिए आज का युग एक अत्यावश्यक कार्यों का युग है जिसमें कोई भी कार्य सामान्य नहीं है। (मेयर 1995 : 83-93) क्या अहिंसा पर आधारित सुरक्षा की खोज राजनीति शास्त्र के लिए अत्यावश्यक नहीं?

अहिंसा और निश्शस्त्रीकरण

न तो वे समस्याएँ जिन्हें हल करना है, और न ही वे अहिंसक आंदोलन जो इन समस्याओं से मुखातिब हैं, शैक्षणिक राजनीति विज्ञान के आविष्कार हैं। ये समकालीन वैश्विक जीवन के द्वारा उत्पन्न किए गए हैं। राजनीति शास्त्र को इन समस्याओं को सुलझाने का वचन देना चाहिए। समस्या समाधान व्यवहार के सामने स्पष्ट चुनौती के रूप में 'संयुक्त राष्ट्र की आम सभा के प्रथम निश्शस्त्रीकरण संबंधी विशेष अधिवेशन की 'अंतिम रिपोर्ट' है। (स. रा. आमसभा, 1978) जो कि "प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय नियन्त्रण में सामान्य तथा पूर्ण निशस्त्रीकरण" का आह्वान करती है। 159 राज्यों में आमसहमति से, केवल एक राज्य (अल्बानिया) की अनुपस्थिति में, सभी प्रकार के परमाणु हथियारों, जैव-रासायनिक हथियारों तथा अन्य व्यापक विनाश के हथियारों को समाप्त करने; सभी सैनिक अड्डों से वापसी; केवल सीमित क्षेत्रीय रक्षा के उद्देश्य से सशस्त्र सेनाओं की संख्या कम करने, परंपरागत हथियारों को घटाने, सैनिक खर्चे में "अपार बर्बादी" को समाप्त करके उन भौतिक, आर्थिक तथा मानवीय संसाधनों को आर्थिक रूप से कम अथवा अधिक विकसित देशों की आर्थिक व सामाजिक जरूरतों को पूरा करने में लगाने की घोषणा की। इसके अलावा कई और मिलते-जुलते उद्देश्यों के प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए। यह एक अहिंसक परिवर्तनकारी व्यवहार की, प्रबल, हिंसक राज्यों के द्वारा की गई आदर्श (classic) घोषणा थी। दुर्भाग्य से राजनीति शास्त्र के अधिकतर विद्यार्थी इस घोषणा से अनभिज्ञ हैं।

अहिंसक राजनीति विज्ञान अपने आपको शस्त्र-विहीन समाज की संभावना का वादा करने वाले सरकारी तथा नागरिक समाज की पहल का समर्थन करने वालों से अलग नहीं रख सकता है। इन में हैं आक्रामक हथियारों (assault weapons) सुरंगों तथा हथियारों की खरीद फरोख्त पर पाबंदी लगाने गांवों तथा शहरों में हथियार मुक्त शांति के क्षेत्र बनाने और विश्व में हथियार मुक्त क्षेत्र बनाने की अभियान।

अहिंसा और आर्थिक वंचन

समस्यासमाधान व्यवहार की एक और प्रतिष्ठित, आदर्श अपील, तिरपन नोबेल पुरस्कार विजेता, जिनमें रसायन शास्त्र से लेकर भौतिकी के विद्वान शामिल थे की वह घोषणा (Manifesto) थी जिसमें विश्वस्तर पर अनिवार्य आर्थिक वंचना से उत्पन्न सामूहिक मानव-मृत्यु (holocaust) को रोकने को कहा गया था (Nobel Prize Winners 1981 : 61 : 3)। घोषणा यह थी--"वे सभी जो इस सामूहिक नर-संहार की निंदा व विरोध करते हैं सर्वसम्मति से यह मानते है कि इस त्रासदी का कारण राजनैतिक था।"

यह आवश्यक है कि अपने-अपने स्तरों, पर नागरिक एवं राजनेता, चुनावों में, संसद में, सरकारों में या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, नए कानूनों, नए बजट, नए प्रोजेक्ट तथा ऐसे नए तरीकों के चुनाव के पक्ष में मत डालें जिनसे शीघ्र-अतिशीघ्र अरबों लोग कुपोषण तथा अल्पविकास एवं हर पीढ़ी में करोड़ों, भूख एवं मृत्यु से बचाए जा सकें।

एक परिवर्तनकारी आर्थिक क्रांति की आवश्यकता है कि अपने आलस्य व उदासीनता को छोड़कर सक्रिय रूप से जीवन बचाने व उसका विनाश रोकने में मदद पहुँचाए जाए।

> हालाँकि इस पृथ्वी पर रहने वाले शक्तिशाली लोगों की जिम्मेदारी अधिक है,परंतु वे अकेले नहीं हैं। यदि असहाय अपना भविष्य अपने हाथों में ले लें, यदि अधिक से अधिक लोग ऐसे कानूनों को, जो मानव अधिकारों (जिनमें में से मूलभूत है जीवन का अधिकार) के विरुद्ध हैं, मानने से इंकार कर दें यदि कमजोर अपने आपको संगठित कर लें और ऐसे थोड़े से किंतु शक्तिशाली हथियारों का इस्तेमाल करें जो उन्हें उपलब्ध हैं--(*गांधी के उदाहरण के अनुरूप अहिंसक व्यवहार)* तथा ऐसे लक्ष्य निश्चित कर लें जो सीमित और उचित हों : अगर यह सब हो तो संभव है कि इस यह महाविनाश से बचा जा सकता है (63)।

वे अपना कथन इस तरह समाप्त करते हैं "**अभी** इस काम को करने का समय है, **अभी** सृजन का समय है, **अभी** वह समय है कि हम इस तरह से जिये जिससे दूसरों को जीवन मिले।"

असमानता, जनसंख्या वृद्धि, तथा सैनिकवाद एक-दूसरे के साथ अन्तर्क्रिया करके आर्थिक घातकता (economic lethality), हिंसा तथा पर्यावरण विनाश को बढ़ावा देते हैं। 1999 में विश्व बैंक ने यह अनुमान लगाया था कि 1.5 अरब लोग "पूर्ण गरीबी" (absolute poverty), जिसकी परिभाषा है 1 डॉलर से भी कम दैनिक आमदनी, और 3 अरब लोग 2 डॉलर से नीचे की दैनिक आमदनी रखते हैं। यह अनुमान लगाया गया है केवल भारत में ही अति-गरीब लोगों की संख्या 1980 के अंतिम दशक से 3 करोड़ से बढ़कर 3.4 करोड़ हो गई है (विश्व बैंक 1999)। इसके साथ ही आमदनी की असमानताएं भी बढ़ी हैं। जून 1997 में संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय युवा नेतृत्व अकादमी (United Nations University, Young Leadership Academy) के 160 युवा नेताओं के प्रथम कार्यक्रम में बोलते हुए तारिक हुसैन ने कहा था–

> 1990 के मध्य का विश्व . . . ., 1980 की तुलना में अधिक बंटा हुआ है . . . . विश्व के सबसे गरीब लोगों के 20% ने पिछले तीस वर्षों में विश्व आमदनी में अपना हिस्सा 2.3% से घटकर 1.4% होते देखा है, इसी दौरान अमीरों के लिए यह 70% से बढ़कर 85% हो गया है। इस तरह सबसे अमीर और सबसे गरीब की आमदनियों का अनुपात दुगुना, 30 : 1 से 60 : 1, हो गया है। . . . . दुनिया के 360 अरबपतियों की संयुक्त सम्पत्ति अब दुनिया के 45% लोगों की आबादी वाले देशों की संयुक्त आमदनी से अधिक है (हुसैन 1997 : 13)

विश्व बैंक के अध्यक्ष जेम्स डी वुल्फन्सॉन (James D Wolfensohn) तथा महात्मा गांधी दोनों इस बात से सहमत हैं कि असमानता हिंसा को जन्म देती है। अध्यक्ष स्पष्टतया कहते हैं–"असमानता अस्थिरता की ओर ले जाती है। गरीबी युद्ध को जन्म देती है।" (हुसैन 1977 : 6) इसी प्रकार महात्मा चेतावनी देते हैं, "एक अहिंसक प्रणाली और करोड़ों भूखे लोगों के बीच खाई मौजूद है . . . . एक दिन हिंसक व खूनी क्रांति निश्चित है यदि अमीर स्वेच्छा से अपना धन व शक्ति को सार्वजनिक हित (common good) के लिए नहीं बांटते।" (Collected Works 75(1941) : 158)। अध्यक्ष तथा महात्मा की अन्तर्दृष्टि को संयुक्त करते हुए एक युवा शांति कार्यकर्त्री, बेट्सी ड्यूरन (Betersy Duren), जिन्होंने अपनी अधिकतर पैतृक सम्पत्ति दान में दे दी है, घोषणा करती हैं–"धन का पुनर्वितरण करके ही हम दीर्घकालीन शांति प्राप्त

कर सकते हैं। गरीबी, युद्ध और कष्ट उन लोगों के कारण उत्पन्न होते हैं जो अपने हिस्से से ज्यादा का 'पाई' (एक खाद्य पदार्थ) रखते हैं और उसे पकड़े रहते हैं। (मोगिल और स्लेपियन 1993 : 100 Mogil and Slepian)

अध्यक्ष, महात्मा और युवा अमरीकी के विचार 2300 वर्ष पूर्व किए गए अरस्तू के असमानता और घातकता के आपसी संबंधों के विश्लेषण को प्रतिध्वनित करते हैं।

> याद रखने योग्य बात यह है कि जो शक्ति का प्रयोग करते है - चाहे व्यक्ति हो या सरकार के अंग, या कबीले (बड़े या छोटे) वही ऐसी गड़बड़ी पैदा करते हैं जो क्रांति की ओर ले जाती है। वे अप्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी हैं जब अन्य लोग उनकी शक्ति से ईर्ष्या करके, क्रांति की शुरूआत करें। प्रत्यक्ष रूप वे ऐसा तब उत्तरदायी हैं जब वे स्वयं इतने उच्च स्तर पर हों कि दूसरों के साथ समानता के स्तर पर रह कर सन्तुष्ट न हो। (अरस्तू 1962 : 199)।

जनसंख्या की तेजी से वृद्धि, (1950 में 2.5 अरब से सन् 2000 में अनुमानित 6.1 अरब और सन् 2050 में 8.9 अरब) अहिंसक समस्यासमाधान के लिए चुनौती है। सन् 2050 में दुनिया के सबसे अधिक अनुमानित जनसंख्या वाले राष्ट्र होंगे भारत (1,529,000,000) चीन (1,478,000,000), संयुक्त राज्य अमरीका (349,000,000) पाकिस्तान (345,000,000) तथा इन्डोनेशिया (321,000,000), वर्ल्डवॉच (Worldwatch) के लेस्टर ब्राउन के विश्लेषणानुसार 8 करोड़ लोगों की प्रति वर्ष अभूतपूर्व वृद्धि पृथ्वी की जीवन-वहन क्षमता के लिए अति-विनाशकारी है। चिन्ता के 19 क्षेत्र की आशंका की जा सकती है जो हैं—जल-आपूर्ति, अनाज का उत्पादन, ईंधन, खेती योग्य भूमि, जंगल, जैविक-विभिन्नताएं, जलवायु परिवर्तन, बीमारियाँ, शहरीकरण, आवास, शिक्षा, नौकरियाँ, तथा देशों में और देशों के बीच युद्ध (ब्राउन, गार्डनर, हॉलवील (Halweil) 1999)।

चूँकि जनसंख्या वृद्धि को रोकने के परंपरागत घातक तरीके, जैसे युद्ध, सामूहिक नरसंहार, बालहत्या तथा गर्भपात और अकाल व बीमारी अवांछनीय हैं, अहिंसक राजनीति विज्ञान के सामने चुनौती यह है कि वह अहिंसक विकल्पों की खोज तथा कार्यन्वयन में मदद दे। इसका अर्थ है राजनीतिक सिद्धांत तथा व्यवहार के केंद्र में आर्थिक समस्या के समाधान के लिए मानव-जीवन के उत्कर्ष तथा जीवन-समर्थन वातारण को स्थापित किया जाए।

विश्व के कई प्रख्यात (celebrated) सैनिक नेताओं व व्यावसायिक रूप से हत्या करने वालों ने, आर्थिक असैन्यीकरण की आवश्यकता की गहन अन्तर्दृष्टि दिखाई है। उनमें से एक हैं द्वितीय विश्व युद्ध के जनरल ड्वाइट डी. आईजनहावर (1953–61)। जो बाद में राष्ट्रपति बने। युद्ध के लिए प्रतिबद्धता और आर्थिक संरचनात्मक हिंसा में अन्तर्सम्बन्ध का किसी शांतिवादी ने भी शायद उनसे से बेहतर विश्लेषण नहीं किया है--

उनका स्पष्ट व शक्तिशाली विश्लेषण था--

> 'प्रत्येक बन्दूक का निर्माण, प्रत्येक युद्ध-पोत का समुद्र में उतारा जाना, प्रत्येक रॉकेट का चलाया जाना, अन्तिम रूप यह दर्शाता है कि जो भूखा है उसे खाना नहीं मिला या जो ठिठुर रहे हैं उन्हें कपड़े नहीं मिले। युद्ध-रत यह विश्व केवल पैसे ही खर्च नहीं कर रहा। यह अपने मजदूरों का पसीना खर्च कर रहा है, अपने वैज्ञानिकों की विलक्षणता खर्च कर रहा है, अपने बच्चों की उम्मीदें खर्च कर रहा है। सच्चे अर्थों में, यह जीने का तरीका नहीं है। सम्भावित युद्ध के काले साये में मानवता लोहे की सलीब पर चढ़ी है।" (अमेरिकन सोसायटी ऑफ न्यूजपेपर ऐडिटर्स को सम्बोधन, अप्रैल 16,1953)।

मानवता के "लोहे की सलीब पर चढ़ने" का एक कारण है वह "चोरी" जिसकी कीमत 5.82। खरब डॉलर है, जो संयुक्त राज्य अमरीका के परमाणु हथियार बनाने के कार्यक्रम के दौरान 1940–1996 में हुई। (श्वार्ज 1998 Schwartz)। इसका उदाहरण है 500 अरब डॉलर की सालाना "अपार बर्बादी" जो 1990 के दशक के विश्वभर के सैनिक खर्चों के दौरान हुई। (सिवार्ड 1996 : 7)। अहिंसक राजनीति विज्ञान का तात्पर्य है वैश्विक सैन्यीकरण के कारण हुई आर्थिक वंचना पर रोक लगाना। राजनीति विज्ञान रचनात्मक भूमिका की मांग करता है ताकि गरीबी के सामूहिक नरसंहार का अन्त किया जाए और मानवता को 'लोहे की सलीब' से मुक्त किया जाए।

अहिंसक मानव अधिकार और उत्तरदायित्व

समस्यासमाधान के क्षेत्र में एक आदेशात्मक चुनौती मानव अधिकार के सार्वभौमिक (Universal) घोषणापत्र (1948) तथा उसे लागू करने वाली नागरिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक संविदाओं (covernants) की ओर से आती है। इसका मूल-पाठ (basic text) सभी राजनीति शास्त्रियों तथा विश्व नागरिकों को ज्ञात होना चाहिए।

हालांकि मानव अधिकारों की परिभाषा, सार्वभौमिकता बनाम सांस्कृतिक-विशिष्टता, के विवाद से ग्रस्त है, अहिंसक राजनीति विज्ञान इनके दावे तथा अहिंसक रक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। इसके अतिरिक्त यह मारे न जाने के अधिकार तथा दूसरों को न मारने के उत्तरदायित्व को सार्वभौमिक मान्यता प्रदान करने के लक्ष्य की प्राप्ति तथा क्रियान्वयन का दावा करता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक तरीका है सार्वभौमिक घोषणा (Universal Declaration) तथा वैश्विक व्यवहार में निम्नलिखित प्रावधान को शामिल किया जाना।

> धारा 3(2)--हरेक के पास यह अधिकार है कि उसे न मारा जाए और उत्तरदायित्व भी है कि वह दूसरों को न मारे।

अहिंसक राजनीति विज्ञान को यह चुनौती है कि वह अपने साधनों का, ऐसे व्यक्तियों तथा संगठनों के समर्थन में जो मानव अधिकारों का संरक्षण व विकास करते हों, के लिए शोध करने, प्रशिक्षण देने, सलाह लेने तथा व्यवहार करने में इस्तेमाल करे। उदाहरण के तौर पर, स्त्रियों तथा बच्चियों के खिलाफ सभी प्रकार की हिंसा को बन्द करने का कार्यक्रम जो 1995 के बीजिंग (Bejing) महिला सम्मेलन में तय किया गया था कार्यन्वयन प्रतिबद्धता का एक सशक्त कार्यक्रम है। (संयुक्त राष्ट्र 1996)।

संपूर्ण राजनीति विज्ञान की संबद्धता की दूसरी चुनौती है 1961 ने स्थापित 'एमनेस्टी इन्टरनेशनल' (Amnesty International) के द्वारा मानव अधिकारों का अहिंसक प्रतिरक्षण। एमनेस्टी का काम सार्वभौमिक घोषणा के सिद्धांतों पर आधारित है। "किसी को भी यातनाओं अथवा क्रूर, अमानवीय या अपमानजनक व्यवहार या सजा के अधीन (subject) नहीं किया जाएगा" (धारा 5)। "प्रत्येक के पास विचारों तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, इस अधिकार के अंतर्गत बिना हस्तक्षेप के विचार रखने की स्वतंत्रता है तथा बिना (भौगोलिक) सीमाओं की परवाह किए मीडिया से जानकारी प्राप्त करने, उसे जानकारी देने, तथा विचार व्यक्त करने का अधिकार है (धारा 18) एमनेस्टी इण्टरनेशनल विश्व-स्तर पर मृत्यु-दण्ड तथा उत्पीड़न की समाप्ति, की मांग करता है; यह निष्पक्ष मुकद्दमें की, तथा ऐसे -'अंतरात्मा के कैदियों' की रिहाई की मांग करता है जिन्होंने हिंसा की वकालत या प्रयोग न किया हो। इसके कार्य करने के तरीकों में सभी प्रकार का अहिंसक व्यवहार शामिल हैं।

मानव अधिकारों से संबंधित एक अन्य संस्था जो अहिंसक राजनीति शास्त्र को आकर्षित करती है वह है 'प्रतिनिधित्व-विहीन राष्ट्रों तथा लोगों का संगठन' (Unrepresented Nations and Peoples Organization, UNPO) जिसकी

यह स्थापना 1991 में हुई थी। UNPO पांचों महादेशों की पचास से भी अधिक स्थानीय जन-जातियों के सामूहिक मानव अधिकारों की मान्यता की मांग करता है। सभी सदस्य लिखित रूप से UNPO की संविदा के पालन का वचन देते है, जिसमें व्यवस्था है "अहिंसा को आगे बढ़ाना तथा आतंकवाद को नीति के अस्त्र के रूप में प्रयोग करने का विरोध"। UNPO, सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों गैर-सरकारी संगठनों और उनके नेताओं से ऐसी स्पष्ट व सिद्धांतपूर्ण नीति अपनाने को कहता है जिससे हिंसा में कमी आए।" ये नीतियाँ हैं :

> सभी लोगों तथा अल्पसंख्यकों–बिना उनके आकार, संस्कृति तथा धर्म को ध्यान में रखे –के समान अधिकारों को मान्यता तथा सम्मान प्रदान करना; प्रतिनिधि विहीन लोगों तथा अल्पसंख्यकों की जरूरतों और विचारों को गम्भीरता से लेना; प्रतिनिधि-विहीन तथा अल्पसंख्यकों के विरुद्ध बिना कारण की गई हिंसा तथा मानव अधिकार के घोर उल्लंघन के खिलाफ बोलना और उसका खण्डन करना व अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आंदोलनों तथा सरकारों के शांतिप्रिय व प्रजातांत्रिक ढंग से किए गए आंदोलनों की वैधता को मान्यता देना और ऐसे आंदोलनों तथा सरकारों के साथ वार्तालाप तथा उनकी अहिंसक धारणा को पुरस्कृत करना; (तथा) राज्य सरकारों तथा राष्ट्रों के द्वारा लोगों व अल्पसंख्यकों, जिनके ऊपर उसकी सत्ता है, के बीच संघर्षों के शांतिपूर्ण निबटारे में प्रोत्साहन तथा सक्रिय सहयोग देना (UNPO 1998 : 8)

इसके अतिरिक्त UNPO "निगमों तथा वित्तीय संस्थाओं को यह आह्वान करता है कि वे ऐसे संसाधनों के हिंसक शोषण को बन्द कर दें जिनपर लोगों का जीवन निर्भर है तथा मीडिया तथा उसके उत्पादों के माध्यम से गैर-जिम्मेदाराना शस्त्र व्यापार तथा हिंसा का वाणिज्यीकरण बन्द करें।" अहिंसक राजनीति के प्रति ऐसी प्रतिबद्धता उन लोगों के बीच जिन्होंने सामूहिक नरसंहार, जातीय संहार तथा पर्यावरण के स्तर पर संहार झेला हो, समर्थक (supportive) अहिंसक राजनीति विज्ञान के लिए एक स्पष्ट चुनौती है। विश्व के देशों तथा अल्पसंख्यक लोगों की बड़ी संख्या तथा पहचान की जरूरत को जानते हुए यह लगता है कि UNPO की सदस्य संख्या संयुक्त राष्ट्र की सदस्य संख्या से अन्ततः ज्यादा हो जाएगी।

अहिंसा तथा पर्यावरण जीवन-क्षमता

अहिंसक राजनीति का तात्पर्य है मनुष्य को पर्यावरणीय घातकता से मुक्ति दिलाना। हम पर्यावरण की हत्या करते हैं और पर्यावरण हमारी। एक अहिंसक समाज के लिए अहिंसक पर्यावरण की आवश्यकता है।

बीसवीं शताब्दी का अन्त जीव-मण्डल की जीवन-वहन शक्ति के मानव द्वारा विनाश के लिए जाना जाता है। सैनिक औद्योगीकरण और युद्ध द्वारा इस ग्रह पर आक्रमण इसके विनाश के मुख्य कारण हैं। 'प्रकृति का विश्व घोषणापत्र' (The World Charter for Nature) संयुक्त राष्ट्र आम सभा के 111 सदस्यों ने 28 अक्टूबर 1982 को स्वीकार किया। यह घोषित करता है कि युद्ध तथा अन्य हिंसक क्रियाओं के विनाश से प्रकृति को सुरक्षित रखा जाएगा। (धारा 1, उपभाग 5)। इसके दु:खदायी उल्लंघनों में शामिल हैं–संयुक्त राज्य अमरीका के द्वारा वियतनाम युद्ध में जंगलों का रासायनिक विनाश तथा खाड़ी युद्ध में ईराक द्वारा तेल भण्डारों को आग लगाया जाना। अहिंसक राजनीति शास्त्र बैरी कौमनर के कथन 'ग्रह पर शांति के लिए वहाँ बसने वाले लोगों के बीच शांति जरूरी है' की चुनौती को स्वीकार करता है (कौमनर 1990 : 243)

अहिंसक राजनीति शास्त्र को दूसरी चुनौती 1992 में रियो डी जेनीरो में पर्यावरण व विकास पर संयुक्त राष्ट्र के एक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन के सचिव मॉरिस एफ स्ट्रांग ने दी। उन्होंने 'विश्व को एक सुरक्षित, संपोषित तथा न्यायपूर्ण भविष्य प्रदान करने के लिए एक पर्यावरण-क्रांति' का आह्वान किया। इसी प्रकार 'एजेन्डा-21' के सिद्धांत 24 तथा 25 भी क्रमश: 'युद्ध संपोषित विकास के लिए विनाशकारी है', 'शांति, विकास व पर्यावरण की सुरक्षा एक दूसरे पर अंतर्निभर व अविभाज्य हैं' का विचार देते हैं। एजेन्डा-21 समस्या-समाधान के लिए राज्यों, सरकारों, नागरिकों, महिलाओं, युवाओं तथा स्थानीय जन जातियों से अपील करता है। इस अपील में हम सेनाओं, सैनिक उद्योगों, निगमों, मज़दूर संघों तथा राजनीतिशास्त्रियों को भी शामिल कर सकते हैं। जीवन तथा कल्याण के दूसरे खतरों की तरह ही पर्यावरण संबंधी समस्याएँ भी जटिल, अंतर्विषयक तथा वैश्विक हैं। इसलिए सार्वजनिक नीतियों के निर्माण व लागू करने के लिए राजनीति शास्त्र के संसाधनों का अहिंसक परिप्रेक्ष्य में प्रयोग होना चाहिए। हमें वैज्ञानिक आधार पर उन समस्याओं की पहचान करनी होगी जो ठीक तरह से समझी जा सकती है और जिनके बारे में तुरंत कार्यवाही करने की आवश्यकता है। हमें ऐसी समस्याएँ भी पहचाननी होंगी जिनपर तुरंत शोध करने की आवश्यकता है। इन समस्याओं को महत्त्व के आधार पर क्रम देना होगा। इसके

अतिरिक्त, समाज के निर्णय निर्माण की प्रक्रियाओं को आवश्यकता अनुकूल बनाने में विज्ञान के, बेहतर प्रयोग के तरीके ढूंढने होंगे। इस प्रकार का एक मॉडल रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साईन्सेज़ (Royal Swedish Academy of Sciences) ने दिया है (1983; सेबेक 1983)

ऐसे व्यक्तियों संगठनों तथा सामाजिक आंदोलनों के प्रति अहिंसक राजनीति शास्त्र का समर्थन व ध्यान है जो अहिंसक पर्यावरण समस्या-समाधान में लगे हुए हैं। इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण अहिंसक पर्यावरण आंदोलन है पेड़ों की रक्षा के लिए भारत का 'चिपको' आंदोलन (वेबर 1989; नौटियाल 1996); 'ग्रीनपीस' के द्वारा सार्वजनिक तथा निजी नीतियों के लिए 'डायरेक्ट ऍक्शन' (direct action) (स्टीवनसन 1997); जर्मनी में पर्यावरण आंदोलन तथा चुनावी राजनीति को संयुक्त करता 'डाय, ग्रुनेन' नामक 'हरित राजनीतिक दल'।

'डाय ग्रुनेन' पार्टी की संस्थापक पेट्रा कैरिन केली (1947-1997) की विरासत अहिंसक राजनीति शास्त्र को इक्कीसवीं शताब्दी के पर्यावरण समस्या-समाधान का कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। इस ग्रह को बचाने के लिए पेट्रा केली ने सभी महत्त्वपूर्ण मुद्दों-निशस्त्रीकरण से लेकर आर्थिक समस्याओं व मानव अधिकारों तक को उठाया। उन्होंने 'पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की वैश्विक संस्कृति' पर जोर दिया और 'देशों के बीच पर्यावरण संबंधों के लिए सिद्धांतों' की वकालत की। टॉलस्टाय, गाँधी, अब्दुल गफ्फार खां और मार्टिन लूथर किंग (जुनियर) की तरह ही पेट्रा केली भी आज और भविष्य में, बीसवीं शताब्दी तथा उसके बाद भी, महान् अहिंसक वैश्विक परिवर्तन की सहयोगी के रूप में जानी जायेंगी (केली 1989; 1992; 1994; पारकिन 1994)

अहिंसा तथा समस्या समाधान में सहयोग

इसका मूल कार्य है शांतिपूर्ण समस्या–समाधान की प्रक्रियाओं में व्यक्तियों तथा वैश्विक समुदाय को सहयोग देना। जीवन का सम्मान करने वाले उन लोगों के परस्पर सहयोग से जिनके सहयोग के बिना आवश्यकता हो। न सुरक्षा, न आर्थिक खुशहाली, न मानव अधिकारों के लिए सम्मान, न पर्यावरण की जीवन क्षमता और न ही जीवन की मूल्यवान परिस्थितियाँ प्राप्त की जा सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि राजनीति शास्त्र हर समस्या का समाधान कर लेता है परंतु इसका मतलब है कि राजनीति विज्ञान समस्या–समाधान सहयोग की प्रक्रियाओं में सहायता करने का उत्तरदायित्व स्वीकार करता है।

राजनीतिशास्त्र के ऐसा करने का यह अर्थ नहीं है कि यह सर्वसत्तावादी राज्य की तरह हर मामले में दखल करता है। अराजकतावादियों को भी

अराजकता की स्वतंत्रता में दूसरे अराजकतावादियों के समर्थन की आवश्यकता पड़ती है। राजनीति का प्रकट या अप्रकट हिंसा के द्वारा सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष या प्रतियोगिता के दृष्टिकोण का विस्थापन ही अहिंसक राजनीति शास्त्र का उद्देश्य है। आपसी सम्मान पर आधारित जीवन का उत्सव मानते हुए सहकारिता से समस्या-समाधान का क्षेत्र विस्तृत करना ही अहिंसक राजनीति का आशय है। हिंसा जहाँ प्रभुता तथा विभाजन पर आधारित है वहीं अहिंसा मेलमिलाप तथा एकता पर आधारित है। इसलिए अहिंसक राजनीति शास्त्र पुरुषों व स्त्रियों, धर्मों, सभ्यताओं, नस्लों, जातियों, वर्गों, समुदायों, राज्यों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय तथा वैश्विक संस्थाओं के मध्य सह-क्रिया (coaction) की अपेक्षा करता है। सभी के कल्याण के लिए हत्या या हत्या की धमकी के बिना समस्या-समाधान इसका लक्ष्य है। इस प्रयास में समस्या-समाधान से संबंधित सिद्धांत व व्यवहार की अंतर्विषयक तथा व्यवसायिक रुचि में वृद्धि एक सहायक साधन है (फिशन तथा उरी 1981; बर्टन 1996)

राजनीति शास्त्र हिंसा से ग्रस्त राज्यों व समाजों का अहिंसक समाज की ओर गमन के क्षेत्र में शोध में प्रगति कर रहा है। आधुनिक राजनीतिक प्रणालियों की लोकतांत्रिक विकास की दिशा में ऐतिहासिक प्रगति को मानते हुए, अहिंसक राजनीति शास्त्र व्यवहारगत व संरचनागत हिंसा, जिसे स्वतंत्र राजनीति व स्वतंत्र बाज़ार अकेले नहीं दूर कर सकते, की समस्या का समाधान ढूंढ़ता है। अहिंसक राजनीति शास्त्र निरकुंश शासन को सीमित करने में नागरिकों के द्वारा मान्यता प्राप्त संविधान के मूल्य को समझता है। यह नागरिक स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए अधिकारों की घोषणा का महत्त्व जानता है। उसे पृथक् कार्यपालिका, विधान पालिका एवं न्यायपालिका में संस्थागत 'नियंत्रण एवं संतुलन' की उपयोगिता का भी पता है। अहिंसक राजनीतिशास्त्र गृह युद्ध के स्थान पर चुनावी दलों की प्रतियोगिता, व्यवसायिक नौकरशाही की सेवाओं, धार्मिक स्वतंत्रताओं, प्रेस तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा सार्वजनिक सहभागिता की दिशा में मताधिकार के विस्तार, को महत्त्व देता है। (फाईनर 1997; गोल्डमैन 1990) हिंसक प्रणालियों में सेना तथा पुलिस बल की उपस्थिति को स्वीकार करते हुए अहिंसक राजनीतिशास्त्र विकल्पों की तलाश करता है।

प्रगतिशील लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी अहिंसक शास्त्र उन संकेतों को पहचानने की कोशिश करता है जो प्रणालीगत दुष्क्रिया (dysfunction) के कारण मानव आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते और जिनके कारण कई बार शारीरिक व संरचनात्मक हिंसा हो जाती है। संयुक्त राज्य अमरीका से

उदाहरण लेते हुए इनमें से कई चिंता के विषय निम्नलिखित हो सकते है : परिवार तथा स्कूलों में हिंसा व हत्या; नवयुवकों की निराशा जो हिंसक गिरोहों, नशाखोरी तथा आत्महत्या में व्यक्त होती है; व्याप्त राजनीतिक अलगाव, सरकार व राजनीति पर अविश्वास जो अल्प मतदान में व्यक्त होता है; अनुपयोगी सैनिक खर्चे पर साधनों की अपार बर्बादी; कुपोषण, अस्वस्थता, आवासीय समस्या, शिक्षा की कमी, परिवार के बिखराव से ग्रस्त व भीषण वंचना के शिकार देश की 20 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाला निचला तबका; सशस्त्र लूटमार, घृणा पर आधारित अपराध; लिंगीय व जातीय भेदभाव; एक अति संपन्न उच्च वर्ग (जो जनसंख्या का दूसरा 20 प्रतिशत बनाता है) अपने साथी मध्यम वर्ग की मदद से अधिक से अधिक पुलिस, जेल, कठोर सजाओं तथा सैनिक बल के माध्यम व हिंसक सांस्कृतिक प्रतीकों से उत्तरोत्तर अमीर बनता जाता है। जिन देशों में आधुनिक प्रजातांत्रिक शासन एवं समाज की विशेषताएँ मौजूद नहीं वहाँ निरकुंश तानाशाही तथा आर्थिक वंचना के कारण शारीरिक तथा संरचनात्मक अत्याचार के रूप में भयंकर हिंसा पाई जाती है। इसके उदाहरण हैं झटपट के मृत्युदण्ड, उत्पीड़न, चुनावी हत्याएं, नरसंहार, जाति-विनाश, सशस्त्र उगाही, आतंकवाद, सशस्त्र क्रांतियां तथा राज्य द्वारा संचालित आर्थिक वंचना से बड़े पैमाने पर मृत्यु।

अपने आपको साधन तथा लक्ष्य के लिए हिंसा स्वीकार करने वाली मान्यताओं से मुक्त करते हुए अहिंसक राजनीति शास्त्र का समस्या-समाधान कार्य है उन समाजों में जो कमोबेश प्रजातांत्रिक हैं, के भीतर और आपस में, मानव आवश्यकताओं के प्रति समझ की बेहतर प्रक्रिया में योगदान देना। वैज्ञानिक तथा मानवीय सृजनात्मकता के सामने चुनौतियाँ असंख्य है। अहिंसक मानव क्षमताओं के बारे में नई जानकारी की व्यवस्था, प्रजातांत्रिक नेतृत्व तथा नागरिकता में नई अहिंसक कुशलताओं के संपोषण, नीति-निर्माण की सहभागिता के सरलीकरण से, तथा नई असंहारक समस्या-समाधान की स्थापना करके परंतु अभी से यह स्पष्ट है कि रचनात्मक प्रक्रिया जनित (processual) परिवर्तन किया जा सकते हैं। इन परिवर्तनों में सहायता करने के लिए राजनीति शास्त्र को अपनी अहिंसक प्रतिबद्धताएं समाज की सेवा के लिए स्पष्ट करनी होंगी। संस्थागत रूप से राजनीति विज्ञान को व्यक्ति, परिवार तथा विश्व राज्य की ऐसी मानवीय जरूरतों के लिए जिन्हें पूरा नहीं किया गया हो, प्रतिसंवेदी (responsive) होना पड़ेगा।

अध्याय-5

संस्थागत समस्या-समाधान

जिन संस्थाओं के हम अभ्यस्त हो चुके होते है सामान्यतः हम उन्हीं संस्थाओं को अनिवार्य मानते हैं। विभिन्न समाजों में रहने वाले लोगों की कल्पना से भी परे, सामाजिक संरचना की असीम संभावनाएँ मौजूद हैं। - एलेक्स डी. टॉकविल

'वे समस्याएँ जिन्होंने पृथ्वी के जीवन को भयभीत कर रखा है–संगठित रूप में उत्पन्न होती हैं, संगठित रूप में हमें प्रभावित करती हैं अतः उन्हें समाप्त करने के लिए हमें अवश्य ही संगठित रूप से प्रयास करने चाहिए।' –पेट्रा के कैली

राजनीतिक विज्ञान में अहिंसक-नैतिक व्यावहारिक विस्थापन का संस्थागत आशय क्या है : उन लोगों के लिए जो इसका व्यवहार करते हैं; विषय के संगठन के लिए एवं ज्ञान के अन्य क्षेत्रों के साथ इसके संबंधें के लिए; एवम् उन विभिन्न संस्थाओं के लिए जिनकी जरूरत संपूर्ण मानवमात्र के लिए अहिंसावादी समाज के निर्माण हैं? संस्थाओं का निर्माण उन सामाजिक उद्देश्यपूर्ण संबंधों के लिए किया जाता है जो कि मानव आवश्यकताओं एवं अभिलाषाओं के संदर्भ में उठती है।

सभ्यता के इतिहास का एक बड़ा हिस्सा संस्थागत नव प्रवर्तन का इतिहास है। मंदिरों, सिनेगॉगों और मस्जिदों से संयुक्त होते हुई आस्था से समुदाय उत्पन्न होता है। राजनीतिक सहभागिता की आवश्यकता, दलों, चुनावों तथा संसदों को उत्पन्न करती है। सामाजिक नियन्त्रण की आवश्यकता से

पुलिस, न्यायालयों और जेलों का निर्माण होते हैं। युद्ध के उद्देश्य से धरती, समुद्र एवं आकाश में मार करने वाली तकनीकी शक्तियों का विकास होता है। सेना एवं राजकीय उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कर-संग्रह की आवश्यकता, नौकरशाही को जन्म देती है (फाइन–1997 : 16–17, 20–21)। परमाणु बम के निर्माण के लिए, देश के संसाधनों को मैनहट्टन प्रोजेक्ट में स्थानांतरित किया जाता है। अज्ञात सत्य के अनुसंधान से आत्मा, विज्ञान, तकनीक, कौशल और संसाधनों का स्थानांतरण आरम्भ होता है। जैसे पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रिंस हेनरी की समुद्री यात्राओं एवं बीसवीं शताब्दी के अपोलो प्रोजेक्ट, जिसका उद्देश्य मनुष्य को चाँद पर उतारना था, से हुआ।

एक अहिंसक विश्व-समाज की ओर संक्रमण (transition) में योगदान की दृष्टि से राजनीतिशास्त्र में किस प्रकार के संस्थागत परिवर्तन अपेक्षित हैं? संचार व सूचना प्रणाली के विश्व स्तर पर विस्तार के दौरान जिस प्रकार के व्यापक संस्थागत परिवर्तन हुए हैं, वैसे ही परिवर्तन अहिंसक, परिस्थितियों की उद्देश्यपूर्ण खोज में अपेक्षित हैं। अहिंसक परिप्रेक्ष्य पुरानी संरचनाओं जैसे सहभागी लोकतंत्र, लिंगीय, जातीय, वर्गीय या पर्यावरण-संबंधी राजनीतिशास्त्र के विभिन्न उपविषयों में आत्मसात् एवं एकीकृत किए जा सकते हैं। हो सकता है कि पुरानी संस्थाओं के पुनर्निर्माण की आवश्यकता पड़े या फिर अहिंसक परिवर्तन पूरी ताकत से लाने के लिए एक बिल्कुल नई या मिश्रित संस्था की आवश्यकता पड़े जो शक्ति के समस्त स्रोतों से युक्त हो।

अहिंसावादी समाजों की प्राप्ति के कार्य को गंभीरता से लेने का अर्थ है अहिंसावादी वैज्ञानिक तथा मानववादी खोजों के प्रति समर्पित संस्थानों, अहिंसक शिक्षण एवं प्रशिक्षक जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले एवं समस्या को हल करने वाली अहिंसक सुरक्षा तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अहिंसा के हित साधक सेवाओं का निर्माण किया जाए।

जिस प्रकार लोकतंत्र का निर्माण प्रजातंत्र को मानने, समझने हैं, उससे काम करवाने एवं उसे चलाने रखने वालों के द्वारा होता है की दृढ़ इच्छा वैसे ही अहिंसावादी समाज एवं संस्थानों का निर्माण अहिंसावादी व्यक्तियों के द्वारा किया जाएगा। अहिंसावादी राजनीतिक विज्ञान का यही उद्देश्य होगा। अहिंसावादी जागरूकता के अनेक रास्ते हैं और कोई भी रास्ता सबके लिए निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता। जन्म, आस्था, बौद्धिकता, आघात, शारीरिक आकांक्षाएं, करुणा, लागत-लाभ, विश्लेषण, अनुकरण और ध्यान–ये सभी अहिंसावादी खोज एवं कार्य के रास्ते हैं। अहिंसा के प्रति समर्पण को उत्पन्न करने वाले, विशाल (व्यापक) मानव क्षमता वाले ऐतिहासिक एवं तत्कालीन उदाहरणों से,

हममें से प्रत्येक को अपनी रूपांतरणशील क्षमताओं की खोज के लिए प्रोत्साहन लेना चाहिए।

राजनीति विज्ञान का हिंसा विरोधी विभाग

जबकि अहिंसा की आत्मा को राजनीति विज्ञान की स्थापित प्रत्येक विशिष्टता, विभाग एवं संगठन में स्थापित करने की आवश्यकता है, वर्तमान संस्थानों को एक आदर्शवादी संस्थान के रूप में पुनर्निर्मित करने के लिए एक नए अहिंसावादी विभाग की कल्पना की जा सकती है।

यह विभाग हिंसा, हत्या की धमकी एवं उनके घातक सह-संबंध को विश्व-जीवन से समाप्त करने के उद्देश्य की दृष्टि से दूसरे विभागों से भिन्न है। यह इसे–हिंसा पर आधारित उदारवादी लोकतंत्र का समर्थन करने वाले विभागों, हिंसा पर आधारित वैज्ञानिक-समाजवाद अथवा हिंसा पर आधारित अधिकारपूर्ण आदेशों से–विशिष्ट बनाती है। अहिंसक विभाग मूल्यों के अधीन नहीं है। यह तो बस एक भिन्न प्रकार का मूल्य है।

परिचयात्मक पाठ्यक्रमों से लेकर 'शोधपूर्ण' अध्ययनों से संबंधित ज्ञान की वर्तमान प्रगति की मान्यता को लेते हुए, यह विभाग अहिंसापूर्ण समाजों की प्राप्ति एवं उनके रखरखाव की आवश्यकतानुसार चरित्र एवं कौशलों का सम्पोषण करता है। चार प्रकार के कौशल आधारभूत हैं–अनुसंधान, शिक्षण एवं प्रशिक्षण, व्यावहारगत तथा आलोचनात्मक अभिव्यक्ति (जो हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में संचार माध्यमों के द्वारा होती हैं।

प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को मानव इतिहास की घातक परंपराओं के जीवन्त चित्रण से परिचित करवाया जाता है तथा व्यावसायिक राजनीति वैज्ञानिकों अथवा नागरिक सेवकों की तरह ही मानवीय परिस्थितियों से हिंसा को खत्म करने की चुनौती आमंत्रण दिया जाता है। (बूरस्ट्रिन 1983; 1992; 1998) राजनीतिक नवप्रवर्तन (फाइनर–1997) तथा सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानवीय गरिमा को आगे बढ़ाने शांतिपूर्ण सेवा के जीवन के लिए उपयुक्त सृजनशील मानव क्षमता से युक्त हो जाते हैं। (जो सफसन–1985)।

अगला चरण, समस्या को हल करने वाली संलग्नताओं (हिंसा, अर्थव्यवस्था, मानव अधिकार, वातावरण, सहयोग), समकालीन राजनीतिक संस्थानों एवं समस्या को हल करने वाली प्रक्रियाओं (स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, वैश्विक), एवं अहिंसावादी विश्लेषण के तर्क तथा कार्य के सिद्धांतों से संबंधित अतिनूतन ज्ञान, जो कि अहिंसावादी भविष्य को प्राप्त करने

के लिए वर्तमान निर्णयों में योगदान कर सकता है, की प्रधान समकालीन चुनौतियों का पुनर्निरीक्षण करना है।

अगला चरण होगा विद्यार्थियों को समस्या-समाधान तथा सामुदायिक सेवा के ऐसे वैकल्पिक परंतु संबद्ध अवसर प्रदान करना जो उनकी रुचियों व क्षमताओं प्रदान करना जो उनकी रुचियों व क्षमताओं से मेल खाते हों और उन्हें परख सकें। यह अनुसंधान, शिक्षण- प्रशिक्षण, नेता-नागरिक कार्य तथा आलोचनापूर्ण राजनीतिक मूल्यांकन के लिए कौशल के परिचय की अपेक्षा रखता है। इसका यह अर्थ नहीं कि यह बहुमुखी रुचियों एवं प्रतियोगी शक्तियों की संभावनाओं की इंकार करता है, बल्कि यह इस सत्य का अनुभव कराने के लिए है कि अहिंसावादी सामाजिक रूपांतरण के कार्य को सुविधाजनक बनाने के लिए संबद्धता की सभी चारों विधियों का आवश्यक रूप से सर्वोत्तम ढंग से अनुसरण किया जाना चाहिए। अन्योन्य रूप से एक-दूसरे का समर्थन करने वाली प्रतियोगी शक्तियाँ–जैसे कि ग्रामीण शिल्पकारों एवं खेलों में विजयी टीम में नजर आती है - की आवश्यकता है।

इस प्रकार की तैयारी के साथ अगला चरण, शारीरिक हिंसा, ढांचागत हिंसा, मानव अधिकारों का उल्लंघन, पर्यावरण अवमूल्यन एवं हिंसक शत्रुता – जो कि समस्या को हल करने वाले सहयोग में बाधा खड़ी करते हैं–के विकल्पों के निर्माण के लिए–अनुसंधान, शिक्षा, कार्य एवं विवेचनात्मक चिंतन में उपयुक्त कुशलताओं को संलग्न करने के लिए, व्यक्तिगत अथवा सामूहिक योजनाओं (प्रोजेक्ट) का अनुसरण करना है। ये योजनाएँ–स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय अथवा वैश्विक दशाओं के प्रति निर्देशित हो सकती हैं। इस प्रकार की निर्माणकारी योजनाओं को जो कि स्नातक शोध कार्य के रूप में प्रस्तुत होते हैं के (projects) परिणामं विभागीय स्मृति-कोष में जमा किए जाते है तथा उनको सामाजिक निर्णय-निर्माण कार्य में सहायता पहुँचाने के लिए विश्व-व्यापी संचार माध्यम (worldside web) पर प्रसारित किया जाता है।

स्नातक सार्वजनिक सेवा एवं नागरिक समाज के नव-प्रवर्तक व्यवसायों में हिस्सा लेते हैं (इससे संबंधित संस्थानों को नीचे देखें)। वे अहिंसावादी राजनीति विज्ञान, अन्तःसंबंधित क्षेत्रों अथवा राजनीति विज्ञान निर्माण के नये क्षेत्रों के निर्माण के लिए अथवा अनुशासन एवं व्यवसाय के अन्य क्षेत्रों में अपनी रुचियों को विकसित करने के लिए एम. ए. (स्नातकोत्तर) तथा पी-एच.डी. के कार्यक्रमों से संबंधित आधुनिक प्रशिक्षण पा सकते हैं। (परिशिष्ट ख,ग)

अहिंसावादी विभाग स्पष्ट रूप से सेवा-व्यवसाय के रूप में गठित है। परिचयात्मक से लेकर विकसित 'डाक्टरल' अध्ययन तक यह ज्ञान का संचित विकास है। शिक्षक एवं विद्यार्थी विभिन्न स्तरों पर समान रुचियों पर आधारित विशेष समस्या-समाधान की आवश्यकताओं में संलग्न रहते हैं। नए ज्ञान की खोज तथा शिक्षण तथा प्रशिक्षण उसके तथा सामाजिक समस्या-समाधान में उसके प्रयोग के परस्पर समर्थित संबंध में राजनीति शास्त्र विभाग खुलकर सहयोग देता है। विभाग अपने विचार विमर्श तथा समस्या-समाधान में भी अहिंसक समाज की विशेषताएँ उजागर करता है। समानता के आधार पर स्त्री तथा पुरुषों के मध्य सह-लिङ्गी सहभागिता की संस्कृति, जो कि अहिंसक समाज का हृदय है, को स्वीकार तथा सम्मानित किया जाता है। अनुसंधान की नयी आवश्यकताओं की पहचान के लिए तथा अनजान कठिनाई का सामना करने के लिए विद्यार्थियों को अपने व्यवसाय पर्यन्त की सुविधा पुनर्निवेशन (feedback) का है। अनुभवी व्यवसायिक नेता तथा अनुशासन के कार्यों से संबंधित उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता, कभी-कभी संयुक्त नियुक्ति के माध्यम से (द्वारा) विद्यालय के रचनात्मक कार्यों में योगदान करते हैं। क्योंकि अहिंसापरक ज्ञान तथा कौशल विश्वव्यापी है, राजनीतिशास्त्र विभाग विश्व के अन्य विद्यालयों की प्रतिभाओं के साथ प्रत्यक्ष सहभागिता तथा कम्प्यूटर व अन्य संचार साधनों के माध्यम से संपर्क रखता है। विश्व-कल्याण को प्रभावित करने वाले समस्याओं का सामना करने की दृष्टि से, स्थानीय समुदायों के अनुभव को भी मान्यता दी जाती है।

विश्व-विद्यालय की शांति सेना—अहिंसावादी समाजों का संक्रमण, अहिंसावादी छात्र-सामुदायिक-सेवा-सेना के निर्माण को दिखाता है, जिसे सैनिक प्रशिक्षण के विकल्प के रूप में विश्व के विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में गठित किया गया है। नायकत्व की जिम्मेदारी, राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा ली जा सकती है किंतु इसके सदस्यगण शिक्षा के सभी क्षेत्रों से हो सकते हैं। शांति सेना जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, अनुशासित है। यह विशिष्ट रूप से पहचानी जाने वाली सेना है। इसके सदस्यों को सामुदायिक सुरक्षा तथा नागरिक रक्षा, परा-चिकित्सकीय (para-medical) जीवन रक्षा, प्राकृतिक आपदाओं में राहत पहुँचाने तथा सामुदायिक उद्देश्यों को पूरा करने वाले निर्माण कार्यों से संबंधित संघर्षों को अहिंसात्मक तरीके से शांत करने एवं समाप्त करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। नायकत्व की कुशलता एवं विशेषताओं को विकसित करने वाले समानांतर एवं सम्पूरक शैक्षिक कार्य में सहभागिता, समस्त आस्थाओं के द्वारा जीवन को स्वीकार करने वाली प्रेरणाओं, संगीत एवं कला की प्रगतिशील

आत्मा, खेलों की जीवनीशक्ति तथा दूसरों को संतोष देने वाली सच्ची सेवा सेना से प्रेरणा लेती है। कैम्पस के अंदर तथा बाहर, शांति सेना को आपातकाल में सेवा के लिए बुलाया जा सकता है। यह शांति सेना अन्य सामाजिक संस्थानों को नेतृत्वकारी प्रतिभाएँ प्रदान करती है। सैनिक सेवा के लिए प्रदान किये जाने वाले तत्कालीन प्रशिक्षण की तुलना में इसका वित्तपोषण एवं समर्थन किसी भी तरह से कम नहीं। शैक्षिक संस्थाओं में शांति सेना को संगठित करने के लिए, व्यावहारिक-अनुभव के मूल्यांकन का एक स्रोत, भारत में गांधी-ग्रामीण विश्वविद्यालय में प्रो. राधाकृष्णन के कार्यों के द्वारा प्रदान किया गया (राधाकृष्णन 19976; 19976)। इस अनुभव में खुदाई-खिदमतगार (ईश्वर के सेवकों) से प्राप्त प्रशिक्षण के सिद्धांतों एवं व्यवहारों को जोड़ा जा सकता है; खुदाई खिदमतगार भारत में 80,000 शक्तिशाली अहिंसावादी मुस्लिम स्वतंत्रता सेनानी थे (बनर्जी 2000; 73-102) अहिंसावादी सामाजिक परिवर्तन का किंगियन आंदोलन (लाफायते और जॉन्सन-1995; 1996) तथा अन्य अहिंसापूर्ण प्रशिक्षण के अनुभवों (युद्ध प्रतिवादी लीग War Resisters League) के अनुभवों का भी लाभ लिया जा सकता है।

अहिंसावादी विश्वविद्यालय– अहिंसावादी समाज की ओर संक्रमण के लिए एक विषय अथवा विश्वविद्यालय के विभाग की क्षमताओं के परे के ज्ञान और कौशल की आवश्यकता है। इस प्रकार राजनीति विज्ञान के साधनों का *अहिंसावादी रूपान्तरण समस्त सामाजिक विज्ञानों, प्राकृतिक विज्ञानों, मानविकी* तथा व्यवसायों के क्षमतायुक्त योगदान की आवश्यकता को दर्शाता है तथा प्रतिक्रिया की अपेक्षा करता है। अहिंसक विश्वविद्यालय से हमारा आशय ऐसे विश्वविद्यालय से है जो स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय तथा वैश्विक समाजों में अहिंसक सेवा के प्रति समर्पित हो।

इस विश्वविद्यालय ने युद्ध में सर्वोत्तम संहारकता के लिए कुल बौद्धिक तथा मानवीय संसाधनों की लामबंदी के सामर्थ्य को दिखाया है। जैसा कि हावर्ड विश्वविद्यालय के कुलपति जेम्स बी. कोनन्ट ने कहा "हम अपने विद्वानों के इस प्राचीन समाज के सभी साधनों को इस उद्देश्य के लिए समर्पित करते हैं जिससे धुरी शक्तियों का बिना शर्तों का आत्म-समर्पण शीघ्र हो सके। उस समय हार्वर्ड - 'Conants Aresnal' 'कानेल्ट का शास्त्रागार' के रूप में जाना गया- जो युद्ध के प्रति समर्पित था, जिसने संस्थागत जीवन को नया आकार दिया। हार्वर्ड के युवा भौतिकी के विद्यार्थियों ने न्यू मैक्सिको के लॉस आल्मस के परमाणु बम प्रतिष्ठान में अतिगुप्त अंतर्विभागीय शोध छात्रों के रूप में कार्य किया। इसे याद करते हुए एक ने कहा, "यह एक प्रकार का वैज्ञानिक

'यूटोपिया' था .... सर्वोत्तम मेधाओं का एक खुला समाज था जहाँ बिना आयु, शैक्षणिक स्तर तथा पूर्व उपलब्धियों की परवाह के विचारों का स्वतंत्र आदान-प्रदान होता था।' (हावर्ड पत्रिका सितंबर अक्टूबर 1995 : cover-32 : 43)

मानव-जीवन तथा उनके कल्याण को आक्रांत करने वाले-युद्धों तथा संहारकता के सभी रूपों- जिन्होंने को समाप्त करने का नए तथा पुराने विश्वविद्यालयों को क्या जोर-शोर से प्रयत्न नहीं करना चाहिए? विश्वविद्यालयों के 'शांति अध्ययन' (peace studies) संबंधी विषयों के कार्यक्रमों तथा विभागों से सबंधित हिचकिचाहट तथा 'अहिंसा' को अपने लाखों के डॉलर के कार्यक्रमों में एक 'मूल्य' (value) या नीति (ethics)के रूप में सम्मिलित नहीं करना उच्च शिक्षा में प्रगति के भविष्य का मापदण्ड प्रस्तुत करता है।

अहिंसावादी राजनीतिक दल -व्यावहारिक अहिंसक राजनीतिक विज्ञान अहिंसावादी राजनीतिक दलों से ऐसी सेवाओं की अपेक्षा करता है जो सभी लोगों के हितों के लिए, सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु-आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी प्रक्रियाओं में भाग लें। राजनीतिक दलों के नाम में मूल शब्द 'अहिंसा सर्वोदय दल' होने चाहिए (अहिंसा, हिंसा नहीं; सर्वोदय, सबका-उदय, कल्याण)। ऐसे दल विचार, नाम, संगठन तथा विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक दशाओं की रचनाशील उपज हो सकते हैं

अहिंसावादी दलों का उद्देश्य स्थानीय एवं विश्वस्तर पर अहिंसावादी समाज की प्राप्ति में योगदान देना है। ये पुराने दलों से भिन्न हैं क्योंकि ये वर्गपर आधारित नहीं है बल्कि सभी के हित को संगठित तथा अभिव्यक्त करते हैं। संहारकता एवं इसके सहसंबंधों की अनुपस्थिति एवं स्वतंत्रता, न्याय तथा भौतिक कल्याण जैसे अहिंसावादी दशाओं से सभी को फायदा (लाभ) मिलता है। अहिंसावादी सिद्धांतों पर आधारित प्रतियोगिता करने वाले अनेक दल होंगे-ऐसी आशा की जा सकती है।

चुनावी प्रतियोगिता तथा सार्वजनिक नीति निर्माण, तथा अन्य क्रियाओं में अहिंसावादी राजनीतिक दलों का अपेक्षित निर्माणकारी योगदान, प्रत्यक्ष राजनीतिक भागीदारी के विरुद्ध गांधीवादी निषेध के विपरीत है। दिसंबर 1947 में अहिंसावादी रचनाशील कार्यकर्त्ताओं को गाँधी जी द्वारा दिया गया अंतिम संदेश राजनीति से बाहर रहने के लिए था, क्योंकि राजनीति अनिवार्यत: व्यक्ति को भ्रष्ट बना देती है (Collected Works 90 223-4) उनका विचार था कि अहिंसक कार्यकर्ता को समाज में उन लोगों के बीच कार्य करना चाहिए जिन्हें सेवा की जरूरत है तथा राजनेताओं और नीतियों को बाहर से प्रभावित करना

चाहिए। तात्विक दृष्टि से इसका अर्थ है अन्य लोगों को भ्रष्ट होने देना तथा करोड़ो डालरों के अपवंचन, लाखों लोगों तथा जीवन का प्रत्येक क्षेत्र जिसमें कि युद्ध, सुरक्षा, भोजन, वस्त्र, मकान, स्वास्थ्य, शिक्षा, अर्थव्यवस्था संस्कृति और वातावरण शामिल हैं- को प्रभावित करने वाले गलत निर्णयों को होने देना – जबकि अहिंसावादी कार्यकर्त्ता एवं उनके लोग भ्रष्टाचार तथा उसके समर्थकों को अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित करने में लगे रहे। गाँधी जी की दूर दृष्टि की प्रशंसा की जानी चाहिए क्योंकि उन्होंने अपने गैर राजनीतिक निर्देश को भागीदारीपूर्ण अपेक्षा के साथ जोड़ दिया जब उन्होंने कहा - 'किंतु एक ऐसी अवस्था आ सकती है जब लोग स्वयं यह महसूस करें और कहें कि वे चाहते हैं कि हमारे अतिरिक्त कोई अन्य सत्ता हासिल न करें। तब इस सवाल पर विचार किया जा सकता है।'

तार्किक दृष्टि से अहिंसावादी राजनीतिक दल, अहिंसावादी सामाजिक रूपांतरण के कार्य को संभव बनाने में मदद करने वाली संस्थाएं हैं। उनके जन्म की अनुकूल प्राकृतिक दशाएं अत्यधिक भिन्न प्रकार की है। कहीं भी अहिंसक राजनीतिक दल बनाना आसान नहीं यहाँ तक कि वहाँ भी जहाँ दलों, चुनावों एवं प्रतिनिधित्व इकाइयों को सामाजिक स्वीकृति मिल चुकी हैं। ऐसे अहिंसावादी राजनीतिक दल सबकी आवश्यकताओं से संबद्ध प्रक्रियाओं एवं नीतियों में योगदान करने के लिए व्यापक-त्यागपूर्ण संघर्षों में भागीदारी कर सकते हैं। कुछ समकालीन विषयों को, जो कि विवाद के केंद्र में है, से जूझने के लिए नये कौशल, संगठनों के नये रूप तथा प्रभावशाली तरीके से समस्या को हल करने वाले कार्य में नयी नीतियों संलग्न करने की ज़रूरत है। इनमें गर्भपात, राजकीय-दण्ड, फौज में जबरदस्ती भर्ती करना, युद्ध, सशस्त्र क्रांति, आतंकवाद, लिंगीय-हत्या, अपराधीकरण, सामाजिक एवं सांस्कृतिक हिंसा, निःशस्त्रीकरण और आर्थिक- विसैन्यीकरण शामिल है। इन समस्याओं के बावजूद, रचनाशीलता, साहस, वैश्विक एकता एवं सामाजिक ज्ञान की प्रक्रियाओं के द्वारा प्रगति को संभव बनाया जा सकता है।

अहिंसा का सार्वजनिक सेवा विभाग- प्रशासन के प्रत्येक स्तर पर कैबिनेट स्तर की जिम्मेदारियों वाले सार्वजनिक सेवा विभाग की आवश्यकता है। उनका कार्य अहिंसक राजनीतिक विश्लेषण के तर्क से जुड़े सामुदायिक दशाओं की निगरानी करना, निवारक एवं विध्वंस पश्चात् रूपांतरणशील सुविधाओं को पुनः बहाल करने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना, एवं अहिंसवादी सामुदायिक हित के कार्य को सुविधाजनक बनाने वाली सार्वजनिक नीतियों की सिफारिश करना है। जबकि हिंसा की दशाएं व्यापक रूप से एक समुदाय के

जीवन मूल्यों को प्रभावित करती है उनकी सार्वजनिक सेवाओं का महत्त्व कूड़ा उठाने तथा स्वच्छ जलापूर्ति के लिए किये गये प्रावधान से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

अहिंसा का विभाग हिंसा संबंधी आंकड़े इकट्ठे करेगा और सभी सार्वजनिक एवं निजी स्रोतों से हिंसा को समाप्त करने वाले कार्यों के लिए संस्तुति करेगा। यह समय-समय पर अहिंसक नीति संबंधी सिफारिशों के साथ सरकारी नीति निर्माताओं तथा नागरिक समाज को एक स्वतंत्र लेखा परीक्षण एजेंसी के रूप में स्थिति की रिपोर्ट देगा। व्यापक निरीक्षण की आवश्यकता वाले क्षेत्र हैं-मानव-हत्या एवं आत्म-हत्या,पारिवारिक हिंसा (बच्चों, महिलाओं, वैवाहिकों एवं अधेड़ों के प्रति), विद्यालयीय हिंसा, कार्य-स्थलों की हिंसा, आपराधिक गिरोहों की हिंसा, पुलिस हिंसा, जेल में हिंसा, संचार-सूचना माध्यमों की हिंसा, खेल-हिंसा, आर्थिक-हिंसा, सैनिक-परासैनिक-गुरिल्ला हिंसा तथा खूनखराबे के बाद हत्यारों एवं उनके संबंधियों, पीड़ित व्यक्तियों के संबंधियों एवं सामान्य सामाजिक संचेना पर मानसिक आघात संबंधित हिंसा। इस संस्था को रिपोर्ट को अहिंसावादी रूपांतरणशील क्षमताओं की ताकतों एवं कमजोरियों पर बल देना चाहिए तथा अधिक प्रभावशाली ढंग से समस्या को हल करने वाले कार्यों की सिफारिश करनी चाहिए। अहिंसावादी क्षेत्र में प्रगति की रिपोर्ट को, स्टॉक-बाज़ार की बोलियों, खेल के अंकों एवं मौसम संबंधी सूचनाओं से कम प्रमुखता नहीं मिलनी चाहिए।

अहिंसावादी सार्वजनिक सुरक्षा संस्थाएँ-अहिंसावादी समाजों का संक्रमण, परंपरागत ढंग के पुलिस तथा सेना के समान, रक्षात्मक एवं मानवीय अभियानों के लिए जल, थल एवं आकाश में अहिंसावादी सार्वजनिक सुरक्षा शक्तियों की अपेक्षा रखता है जो रक्षात्मक, आपदा एवं पुनर्निर्माण कार्यों तथा कार्य के पश्चात् उनकी प्रभावी क्षमता के मूल्यांकन के प्रति प्रशिक्षित हों। इसका नेतृत्व विद्यमान सैनिक तथा पुलिस शैक्षिक संस्थानों, अथवा नये अहिंसक सेवा शैक्षिक संस्थानों जहाँ विशिष्ट कार्यों के लिए विभागीय प्रशिक्षण दिया जाता हो, से मिल सकता है। विश्वविद्यालय की शांति-सेना इसका एक स्रोत हो सकती हैं।

अहिंसावादी सार्वजनिक सुरक्षा स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर संपूर्ण जनसंख्या की संलग्नता को दिखाती है। इसको निवास-स्थानों, स्कूलों, पूजास्थलों, कार्य-स्थलों एवं वृद्धिमान दर से इलेक्ट्रानिक नेटवर्कों से जुड़े अहिंसावादी सामान्य सुरक्षा समुदायों में केंद्रित कर अहिंसक अध्ययन मण्डलियों के संगठनों तथा नागरिक शांति-सेना द्वारा सुसाध्य बनाया जा सकता है। स्थानीय नागरिक संगठनों के लिए मॉडल Model अनेक क्षेत्रों में पहले से ही विद्यमान है।

अहिंसापूर्ण सुरक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर, अहिंसावादी सामूहिक सुरक्षा परिषद् तथा अहिंसावादी जासूसी संस्थाओं के साथ-साथ कूटनीतिज्ञ संस्थानों में अहिंसायुक्त सांस्कृतिक सहकारिता को भी दिखाता है। हिंसा ग्रस्त राष्ट्रों एवं उनके घातक मित्रों को नीति संबंधी विकल्प प्रदान करने के लिए सार्वजनिक सुरक्षा परिषद् आवश्यक है।

उदाहरण के तौर पर, संयुक्त राष्ट्र के स्तर पर एक 'अहिंसावादी विश्व सुरक्षा परिषद', का गठन उन देशों द्वारा किया जा सकता है जहाँ पर संहारकता का स्तर सबसे कम है जैसे वे देश जो परमाणु बम मुक्त, सेना-रहित, मृत्यु दण्ड रहित, कम संख्या में मानव हत्या वाले, शस्त्रों के व्यापार से रहित और अन्य ऐसी ही चीजों से मुक्त हों। अन्वेषणीय जनसंचार के साधनों तथा नागरिक चेतावनियों के साथ-साथ अहिंसक गुप्तचर एजेंसियों की भी आवश्यकता है जो संहारकता की सभी प्रकार की धमकियों का पर्दाफाश कर सकें तथा विपरीत सार्वजनिक एवं निजी परिवर्तनकारी कार्यों की पहचान कर सकें। इस प्रकार कूटनीतिक प्रतिष्ठानों में परंपरागत सैनिक सहकारियों तथा आर्थिक संबंधों के लिए जिम्मेदार अफसरों की तरह ही अहिंसक विशेषज्ञों की भी ज़रूरत है। अहिंसक सांस्कृतिक सहकारी अपने देश व अपने मेजबान देश के बीच अहिंसक मानव कल्याण संबंधी अन्वेषणों, परस्पर ज्ञान एवं सहयोग के पुल तैयार कर सकते हैं। वैश्वक इन्टरनेट क्षमताएँ विश्व के नागरिकों को सांझी सुरक्षा जानकारी जो पारंपरिक सरकारी, सामूहिक या संचार साधनों के द्वारा दी गई स्थितियों की परिभाषा पर निर्भर नहीं। जिन्हें संयुक्त अहिंसक कार्यवाही का रूप दिया जा सके।

सरकारी एवं निजी संगठनों में अहिंसक सार्वजनिक सेवा के लिए कुशलता वर्द्धन की आवश्यकता अहिंसावादी प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त संस्थाओं की माँग करती है। संभवत: शुरू में उपसाधन के रूप में तथा अंतत: कार्यात्मक दृष्टि से समकक्ष स्थानापन्नों के रूप में; युद्ध- विद्यालयों, राष्ट्रीय-सुरक्षा-विश्वविद्यालयों, सैनिक-सेवा-शिक्षण-संस्थानों, पुलिस प्रशिक्षण केंद्रों तथा सार्वजनिक-प्रशासनिक स्कूलों के साथ-साथ नागरिक समाज में विद्यमान अन्य हिंसा-आधारित व्यवसायिक प्रशिक्षण स्कूलों के विकल्पों के रूप में, अहिंसावादी प्रशिक्षण संस्थानों की आवश्यकता है।

अहिंसावादी नागरिक-समाज संस्थाएँ– नागरिक-समाज के पास अहिंसावादी समाजों के निर्माण, रख-रखाव एवं उनके रचनाशीलता (उत्पादकता) में सहयोग करने के अवसर, सामर्थ्य की दृष्टि से अनंत है।

बहुत-सी अहिंसा-आधारित संस्थाएँ पहले से ही विद्यमान हैं। इसी प्रकार के अन्य दूसरे विशेष महत्त्व के संस्थानों की कल्पना की जा सकती है।

अहिंसावादी अध्यात्मिक परिषद्– जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी मामलों में, जीवन के प्रति स्पष्ट सम्मान व्यक्त करने के लिए प्रत्येक स्तर पर अथवा समाज के प्रत्येक केंद्रीभूत घेरे के लिए अहिंसावादी अध्यात्मिक परिषदों की आवश्यकता है। ऐसे अन्त:आस्था वाले परिषद धार्मिक एवं मानववादी व्याख्याकारों के द्वारा निर्मित किए जाने चाहिए जो प्रत्येक संदर्भित तथा प्रासंगिक आस्था तथा दर्शन से जुड़े हों तथा जो अपनी परम्परा के शक्तिशाली अहिंसावादी सत्यों को साहस के साथ जोड़ने एवं उन्हें प्रकट करने में समर्थ हों। हिंसा के समर्थक परम्परागत धर्मों तथा धर्म निरपेक्ष विश्वासों के विकल्प के रूप में, मानव दशाओं से संहारकता को समाप्त करने के स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सार्वजनिक एवं निजी प्रयासों के लिए–ये परिषद प्रेरणादायक सहयोग प्रदान करते हैं। प्रेरणा के प्रत्येक स्रोत को प्राप्त कर अहिंसावादी आध्यात्मिक परिषद प्रत्येक व्यक्ति एवं सामाजिक संस्था के अन्त:करण में छुपी क्षमताओं को जगाकर मानवमात्र के अहिंसापूर्ण विचारों को शक्तिशाली बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

अहिंसावादी सलाहकारी समूह- विश्व के संसाधनों का लाभ उठा अहिंसावादी सलाहकारी समूह, समाज के अंदर एवं बाहर समस्या को हल करने वाले विकल्पों की पहचान में सहायता देने हेतु आवश्यक हैं। इस प्रकार के समूह, कार्य-विशेष के लिए उपयुक्त आध्यात्मिक व वैज्ञानिक संगठनात्मक कौशल एवं संसाधनों को उपलब्ध करवाकर खूनखराबे को रोकते हैं तथा मेल-मिलाप व पुनर्निर्माण की परिस्थितियाँ पैदा करते हैं। इस प्रकार के अहिंसक सलाहकारी समूहों का काम करने का ढंग घातक बल या आर्थिक धमकी वाले परंपरागत वार्ताकारों से भिन्न हैं। इनका ढंग नैतिक प्रत्ययकारी एकल आवाजों से भी अलग है। ये इसलिए भिन्न हैं क्योंकि ये स्पष्ट रूप से अहिंसा के प्रति दृढ़ हैं, इनके पास भिन्न-भिन्न प्रकार की क्षमताएं हैं तथा ये हिंसक राज्य के घातक विरोध से भी स्वतंत्र हैं। अपने अनुभवों को एकत्रित कर अपने आप को और भी प्रभावशाली बनाने वाले निजी वित्त से संपोषित परामर्श समूहों की आवश्यकता है। कवेकर धार्मिक समूह द्वारा संघर्ष समाधान व अन्य सेवाएं प्रदान करना तथा ऐसी ही अन्य धार्मिक तथा मानव-सेवा संस्थाएँ, इस प्रकार के अहिंसक समूहों के आंशिक अग्रप्रारूप हैं।

राष्ट्रपारीण समस्या का समाधान करने वाले संकाय - (consortia) 'ऊपर से निर्देशन' देने वाली (top-down) संस्थाओं (जैसे राजनैतिक दल,

सार्वजनिक सेवा विभाग तथा सार्वजनिक सुरक्षा संस्थाओं) को संपूरित करती हुई शक्तिशाली अहिंसावादी परिवर्तनकारी शक्तियों को 'नीचे से निर्देशित' (bottom up) संकायों की आवश्यकता है। इसका उदाहरण है 'प्रतिनिधि विहीन राष्ट्रों एवं व्यक्तियों का संगठन (UNPO) । यह विशिष्ट पहचान वाले लोगों का एक संघ है जो स्पष्ट अहिंसक तरीके से संयुक्त राष्ट्र संघ, सरकारों एवं अन्य संस्थाओं को मानव अधिकारों को मान्यता देने के लिए प्रभावित करता है। एमनेस्टी इंटरनेशनल, 'ग्रीनपीस' तथा 'इंटरनेशनल फेलोशिप ऑफ रिकन्सिलिएशन' इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं। इस प्रकार के संकायों के सदस्यों के लिए सभी विषयों पर सहमत होने की आवश्यकता नहीं, केवल हिंसा न करने पर सहयोग आवश्यक है। इस तरह के संकायों को हिंसा की 'कीप' के विभिन्न क्षेत्रों के अंदर तथा आर-पार विकसित करने की आवश्यकता है। इन्हें हिंसा, अर्थ (economics) मानव अधिकार, पर्यावरण तथा सहयोग के मुख्य समस्या-समाधन क्षेत्रों में विकसित किया जाना चाहिए। अंततः अहिंसावादी विश्व का एक शक्तिशाली वैश्विक नागरिक संकाय, जिसमें स्त्री व पुरुष दोनों शामिल होंगे, सर्वकल्याण के लिए निर्मित होगा।

कला में अहिंसावादी रचनाशीलता का केंद्र–कलाओं के भीतर तथा बाहर अहिंसापूर्ण रचनाशीलता को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं की आवश्यकता है। जैसा कि स्विस लेखक रोमा रोलां, टालस्टॉय के शब्दों में कहते हैं, "कला को अनिवार्य रूप से हिंसा को दबाना चाहिए केवल कला ही ऐसा कर सकती है। "(रोनाल्ड–1911 : 203)। शैले की कविताओं में, अहिंसा के विषय में आर्ट यंग कहते हैं- अहिंसा कविता है, जीवन है। सैनिकों को उत्साह दिलाने के लिए सैनिक संगीत के महत्त्व की याद दिलाती हुई मार्टिन लूथर किंग की परंपरा की कहावत है 'यदि आपके पास गीत नहीं तो आपका कोई आंदोलन नहीं' (यंग 1996 : 161-189)

अहिंसावादी संस्था का एक प्रारूप (model) उस प्रकार का हो सकता है, जैसा सातों कलाओं अथवा कलाकारों, कवियों एवं लेखकों के रचनात्मक समुदायों को आर्थिक सहायता देने वाले निजी केंद्र करते है। ऐसे अहिंसक केंद्र मानव घातकता का मुकाबला करने वाली हर प्रकार की प्रेरणा को एक साथ मिलकर परिवर्तनकारी अहिंसक सृजनशीलता का उत्सव मनाने का अवसर प्रदान करते हैं। ऐसी कलाओं में साहित्य, कविता, चित्रकारी, शिल्पकारी, वस्त्र डिजाइन एवं 'मास-मीडिया की वाणिज्यिक कलाएँ शामिल हैं। वे कलाएँ हैं जिनके प्रति अहिंसावादी निर्माणकारी चुनौती को संबंधित किया जा सकता है, पर विजय प्राप्त करना सभी कलाओं के लिए चुनौती है। उदाहरण के लिए,

परंपरागत हत्या रहस्यों का विकल्प, अहिंसावादी जासूसों की रचना है जो अपनी योग्यता से हत्या व आत्महत्या को होने से पहले ही रोक सकें। कलाओं में सहक्रियाशील अहिंसावादी सृजनशीलता मनुष्य को महत्त्वपूर्ण रूपांतरणशील कार्यों के लिए उत्साहित कर सकती हैं एवं उसकी कल्पनाशीलता में वृद्धि करती हैं।

परोपकारी व्यक्तियों को कला में अहिंसक योगदान को वैश्विक स्तर पर मान्यता प्रदान करने के लिए व प्रोत्साहन देने के लिए पुरस्कारों व सम्मान की स्थापना करनी चाहिए जिनका महत्त्व नोबेल पुरस्कारों जैसा ही हो।

अहिंसावादी प्रशिक्षण संस्थाएँ- जैसे-जैसे सर्वव्यापी हिंसा के प्रति हमारी जागरुकता बढ़ती जा रही है और रचनात्मक अहिंसावादी विकल्पों के लिए आवश्यकता तीव्र हो रही है, वैसे-वैसे संघर्ष-समाधान व अहिंसक सामाजिक परिवर्तन के लिए अहिंसावादी नेतृत्व कुशलता में प्रशिक्षण की माँग बढ़ रही है। किंगवादियों, गांधीवादियों, बौद्धों, ईसाइयों एवं निरपेक्ष अहिंसावादी परंपराओं की तरफ से कुशल प्रशिक्षणकर्त्ताओं की बड़ी माँग है। आवश्यकताएँ, प्रत्येक सामाजिक न्याय के विषयों से संबंधित नागरिक आंदोलनों से लेकर ऐसी संस्थानों जैसे-कि स्कूल, कार्य-स्थल, पुलिस तथा जेलों तक फैली हुई है। ऐसे नागरिक समाज की संस्थाओं की आवश्यकता है जो अन्य कुशलताओं की तरह ही, अहिंसावादी नागरिक प्रशिक्षण दे सके तथा व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित प्रशिक्षकों को प्रमाणित कर सके।

अहिंसावादी नायकत्व अध्ययन एवं पुनसंचारण (revitalisation) **केंद्र** - ऐसे संस्थानों की आवश्यकता है जिनमें अहिंसावादी संगठनों एवं आंदोलनों के नेता अपने जोश को पुनजागृत करने, चिंतन लेखन व आपसी अनुभव बांटने के लिए समय-समय पर आ सके। सामान्यत: कारावास-काल तथा चिकित्सालयों में रहने का समय ही वह अंतराल है जो जान की धमकी व दबावपूर्ण प्रतिबद्धता वाले अहिंसक नेताओं के पास उपलब्ध है। जेल व चिकित्सालय जहाँ नेता मजबूरी में जाते हैं, के विकल्प के रूप में एक अहिंसक क्रियाशील संस्था की आवश्यकता है जहाँ वे स्वेच्छा से जा सकें। उत्पीड़न के शिकार नेताओं के लिए उत्पीड़न पुनर्वास केंद्रों के सहयोग की आवश्यकता है। विश्वभर में बिखरे ऐसे अहिंसावादी नेतृत्व केंद्र आध्यात्मिक तथा भौतिक पुनर्जीवन, आत्मकथात्मक चिंतन व अध्ययन, समान रूप से प्रतिबद्ध अन्य देशों के अनुभवी अहिंसावादी सहयोगियों से वार्तालाप व अगले कदम से संबंधित दूरदर्शी चिंतन का अवसर प्रदान कर सकते हैं। अन्य केंद्रों

को स्वतंत्र संस्थाओं के रूप में अथवा अहिंसावादी सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध संस्थाओं से वित्त प्राप्त होना चाहिए।

अहिंसावादी शोध एवं नीति-विश्लेषण संस्थाएँ –जिस प्रकार निजी संस्थानों को अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों से लेकर राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में फैले विषयों पर सरकार एवं सामान्य जनता को सलाह देने के लिए स्थापित किया गया है ठीक उसी प्रकार सामाजिक निर्णय-निर्माण कार्य में सहायता पहुँचाने के लिए सूचना एवं विश्लेषण उपलब्ध करानेवाली अहिंसावादी नीति-संस्थानों की आवश्यकता है। ये संस्थाएँ हिंसा, अर्थव्यवस्था, मानव अधिकारों, पर्यावरण और सहयोग के क्षेत्रों में अहिंसापूर्ण राजनीति विज्ञान की समस्या को हल करने वाली प्रतिबद्धताओं को बढ़ा सकती हैं। ये अहिंसावादी अध्यात्मिक परिषदों, दलों, सार्वजनिक सुरक्षा संस्थाओं, सूचना देने वाले समूहों तथा अन्य नागरिक-सामाजिक संस्थाओं के लिए व्यवहारिक प्रयास कर सकती हैं तथा साथ ही साथ नागरिकों को आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध करा सकती हैं।

संचार का अहिंसावादी माध्यम– संचार का अहिंसावादी माध्यम व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक नीति-निर्णयों के निर्माण में सहायता करने के लिए सूचना, समाचार एवं टिप्पणियों (कमेंट्री) उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक है। यह वैसा माध्यम नहीं है जो हिंसा के लिए मानवीय क्षमताओं की उपेक्षा करता है, बल्कि जो ऐसे परम्परागत माध्यम संदेशों जो यह बताते हैं कि हिंसा दुर्निवार्य है तथा *सामान्यतः सराहनीय एवं मनोरञ्जक* के पार जाता है। हिंसा से *अहिंसा* की ओर संक्रमण के काल में अहिंसावादी माध्यम का संपादकीय निर्णय, अहिंसावादी राजनीतिक विश्लेषण के तर्क को प्रतिबिंबित कर सकता है। ये संदेश है जो हिंसा की वास्तविकताओं का गहराई के साथ परीक्षण करते हैं, उनके विपरीत अहिंसापूर्ण सच्चाइयों की संचेतना लाते हैं, रूपांतरणशील प्रतिक्रियाओं की सूचना देते हैं, एवं समस्त कलाओं, विज्ञान, मानविकी, व्यवसायों एवं प्रति-दिन के जीवन के व्यवसाय में रचनात्मक अहिंसावादी प्रेरणाओं को मुखर करते हैं। यह तरीका उस तरीके से अधिक मूल्य भारित नहीं है जो कि निरन्तर जारी रहने वाली संहारकता की मान्यता को चुनौती देने में असफल सिद्ध हो जाता है और जो स्पष्ट में अथवा अस्पष्ट रूप में हिंसायुक्त निराशावाद में दिमाग को निरन्तर बन्द रखने में योगदान करता है। समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं, रेडियो एवं टी.वी, फिल्मों तथा विश्वव्याप्त कम्प्यूटरीकृत सूचना तंत्रों के क्षेत्र में–माध्यम का विकल्प आवश्यक है। अहिंसावादी राजनीति शास्त्री, आलोचना एवं विश्लेषण के एक अन्य स्रोत हो सकते हैं।

अहिंसावादी स्मारक- सभ्यता के अहिंसावादी स्मारकों को संभालकर रखने एवं उन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए अहिंसावादी व्यक्तियों, समूहों, संगठनों, अज्ञात वीर एवं वीरांगनाओं एवं घटनाओं के स्मारकों को प्रत्येक समाज में, सम्मान के साथ निर्मित किया जाना चाहिए। वे सम्मान के योग्य हैं जिन्होंने हिंसा करने से इंकार कर दिया तथा अहिंसावादी विश्व-सभ्यता की लंबी यात्रा में योगदान दिया। इसका अर्थ पृथ्वी पर कदम-कदम पर बने हुए इतिहास में विजयी एवं पराजित हत्यारों की मूर्तियों एवं स्मारकों को समाप्त करना नहीं है क्योंकि वे ऐतिहासिक संहारकता की सच्चाईयों को उजागर करते हैं। अहिंसक स्मारकों की इसलिए आवश्यकता है ताकि हमें याद रहे कि हमेशा से ही वे अहिंसक विकल्पों जो आज आवश्यक हो गए हैं, के समर्थक मौजूद रहे हैं। हिंसक शक्ति के खिलाफ़ सच बोलने वाले धार्मिक नेता एवं शहीद, युद्ध का विरोध करने वाले फौज में जबरदस्ती भर्ती का विरोध करने वाले, शांति के कवि, तथा उन अज्ञात महिलाओं एवं पुरुषों का समूह जिन्होंने जेल जाकर, कष्ट झेलकर, तथा मृत्यु की सजा काटने जैसे जोखिमों को उठाकर बिना हिंसा किये अन्याय का प्रतिकार किया, सम्मान योग्य हैं।

अहिंसक 'शांति के क्षेत्र' -उपलक्षित नागरिक-सामाजिक-संस्थाएँ शांति की वे क्षेत्र हैं जो ग्रामीण एवं शहरी समुदायों के संगठनों से लेकर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समझौतों तक फैले हुए हैं। धार्मिक पूजा-स्थल, सशस्त्र क्रांतिकारियों एवं प्रति क्रांतिकारियों सैनिकों के द्वारा पीड़ित गांवों के द्वारा घोषित शांति का क्षेत्र, विस्तार योग्य-युद्ध-रहित-क्षेत्र, हथियार-मुक्त करवाने के लिए नागरिकों द्वारा किया गया प्रयास, तथा परमाणु-मुक्त क्षेत्रों की स्थापना के लिए की गई अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ इसके संदेश-वाहक है। ऐसी संस्थाओं का जाल बनाना, उनकी पहचान करना तथा एक-दूसरे के समर्थन एवं विस्तार के लिए इस प्रकार के वैविध्यपूर्ण शांति-मेखलाओं में सहायक अहिंसावादी संस्थानों का परिचय देना ऐसे कार्य हैं जो अहिंसावादी संस्थागत विकास की प्रधान चुनौती हैं।

अहिंसक आर्थिक उद्यम - युद्ध एवं हिंसक संस्कृतियों के उद्यमों को कुछ लोगों के लिए मुनफेदार कहा गया है (भले ही ये बहुतों के लिए अत्यधिक महंगे हों), अहिंसावादी हित-साधना के लिए चलाये जाने वाले उद्योग इनकी तुलना में सभी के लिए मुनाफेदार होंगे। अहिंसावादी परिप्रेक्ष्य एवं अहिंसावादी भौतिक संसाधनों, सांस्कृतिक सामग्रियों, सेवाओं, मनोरंजन एवं आनन्द के विकल्पों की बढ़ती हुई मांगों का विचार करते हुए अहिंसक उद्योगों के लिए अपार अवसर हैं। विकल्पों को पहचानने का एक तरीका है-हिंसा आधारित उद्यमों की चल पूँजी की विवरणिका तैयार करना तथा उनके अहिंसक

अवसरों की पहचान करना हैं। जैसे युद्ध के खिलोने की जगह शांति के खिलौने बनाना, विडियो खेलों में हिंसा के स्थान पर अहिंसक खेल सृजित करना तथा हिंसा के लिए मेहनत करने के बजाए अहिंसा के लिए काम करना। इस तरह का अनुभव हमें निशस्त्रीकरण के दौर में किए गए अहिंसावादी आर्थिक रूपांतरण में मिल जायेगा। इन सरल आर्थिक उलट्राव से ज्यादा जरूरी है अहिंसक समाज की ओर गमन करने वाले लोगों की वैश्विक संदर्भ में जरूरतों को समझना तथा उन जरूरतों के अनुरूप सेवाओं को उपलब्ध कराना को नि:शस्त्रीकरण के उद्योगों, शस्त्रीकरण के उद्योगों के स्थान पर प्रतिस्थापित करना, हिंसक प्रचार माध्यम (मीडिया) की जगह मनोरंजक अहिंसापूर्ण कलाओं की नाटकीय रचनाओं का प्रस्ताव करना।

विश्व अहिंसा के केंद्र : एक हत्यामुक्त विश्व की कल्पना ऐसी संस्थाओं की अपेक्षा रखती है जो समग्र परिप्रेक्ष्य/दृष्टिकोण से अहिंसक समाज की ओर पारगमन की सुविधा प्रदान करें। इस प्रकार की संस्थाओं की जड़े विश्व की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक परंपराओं की अहिंसक समानताओं में दृढ़ता से जमी होनी चाहिए। अहिंसक संस्थाओं को विश्व स्तर पर वैज्ञानिक कुशलता तथा कलात्मक एवं संस्थागत साधनों के ऐसे सृजनशील उत्प्रेरण में सक्षम होना होगा जो मानवता को संहारकता एवं उसके परिणामों से अहिंसक मुक्ति का रास्ता दिखा सकें। समकालीन कंप्यूटर की भाषा में इसका अर्थ होगा कि इस प्रकार के संस्थानों के हिंसामुक्त 'साफ्टवेयर' के ऐसे उत्प्रेरक की रचना जो नागरिक समाज के संस्थानों एवं सरकार की 'हार्डवेयर' सेवाओं के माध्यम से मानव आवश्यकताओं को पूरा कर सके। इस प्रकार के केंद्रों को तभी प्रभावशाली बनाया जा सकता है यदि इन्हें निषेधात्मक व्यक्तिगत हितों तथा सरकार की हिंसा संबंधी मांगों से अधिकाधिक मुक्त रखा जाए। इन्हें दूरदर्शी परोपकारियों तथा जनता का आर्थिक समर्थन लगातार मिलते रहना चाहिए।

विश्व अहिंसा का केंद्र निम्नलिखित क्षेत्रों में यथाशक्ति मानव-रचनात्मकता के निष्कर्षण एवं खोज को अपना लक्ष्य मानता है यथा - आध्यात्मिक एवं दार्शनिक परंपराओं में अहिंसा; जैव-तांत्रिक विज्ञान एवं अहिंसा; शिक्षा और अहिंसा; अहिंसा और कलाएं; खेल और अहिंसा; अहिंसापूर्ण परिवर्तन में सेना एवं पुलिस की भूमिका; अहिंसापूर्ण नेतृत्व कार्य, तथा अहिंसक-मानव-भविष्य।

प्रत्येक देश एवं क्षेत्र के *स्थानीय* स्तर के *निरीक्षण* पर *आधारित अहिंसावादी* सांस्कृतिक संसाधनों की सूची तैयार करना इस संदर्भ तथा इतिहास का मुख्य कार्य है। यह कार्य अहिंसापूर्ण ऐतिहासिक परंपराओं, वर्तमान घोषणाओं एवं भावी परिप्रेक्ष्यों के निरीक्षण कार्य की अपेक्षा करता है। विश्वस्तर पर एकत्रित इस प्रकार

की खोज अहिंसक-मानव-क्षमताओं का हमारा प्रथम ज्ञान मानवता को उपलब्ध कराएगी जिसके द्वारा भावी प्रगति को मापा जा सकेगा।

अहिंसा के विश्व केंद्रों में एक ऐसा कमरा होगा जो वैश्विक परिस्थितियों को दर्शाता हो। इस कमरे में हत्या, हत्या की धमकी तथा उससे संबंधित वंचनाओं को मानव जाति के लिए उपलब्ध हिंसा से विपरीत अहिंसक रूपांतरणशील साधनों के सान्निध्य में रखा जाएगा। निरंतर संहारकता की चुनौतियों का सामना करने वाला इस प्रकार के केंद्र उपरोक्त ज्ञान की रचनात्मक उन्नति से लाभ उठाते हुए आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, कौशलयुक्त, कलात्मक एवं संस्थागत संसाधनों के संयोग का सुझाव दे सकता है जो मानव जीवन का कल्याण करने वाले रूपांतरणशील सार्वजनिक नीति, अनुसंधान, शिक्षा व प्रशिक्षण में सहायता दे।

अहिंसावादी संस्थाओं की आवश्यकता है -अपनी संस्थाओं शुरू करते हुए हत्यामुक्त समाज के निर्माण के प्रति समर्पित राजनीतिशास्त्र उचित संस्थानों के माध्यम से शिक्षा व कार्यों में नवीन कार्य करेगा। जीवन का सम्मान करने वाली आध्यात्मिक स्वीकृति के लिए संस्थाओं की आवश्यकता है। खोज के लिए, सामंजस्य के लिए एवं ज्ञान में हिस्सेदारी के लिए संस्थान आवश्यक है। सार्वजनिक नीति के निर्माण के लिए, अहिंसापूर्ण सामान्य सुरक्षा के लिए, आर्थिक कल्याण के लिए, तथा सभी प्रकार के कलाओं एवं व्यवसायों में जीवन के उत्सव के लिए, संस्थानों की आवश्यकता है।

अहिंसा की दिशा में गमन ऐसे रचनात्मक रूप से संयुक्त वैश्वक अहिंसक केंद्र की अपेक्षा रखते हैं जो सभी की अहिंसा संबंधी जरूरतों को समझने व तथा उन्हें आसानी से पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हों। अहिंसावादी संस्थान अपनी शक्ति को अन्योन्य रूप से एक-दूसरे के समर्थक व्यक्तियों से प्राप्त करते हैं। प्रत्येक राजनीति-वैज्ञानिक एवं व्यक्ति कर अहिंसावादी-विश्व-संक्रमण के कार्य को सुविधापूर्ण बनाने के लिए विश्व-अहिंसा का एक केंद्र बन सकता है।

अध्याय 6

अहिंसक वैश्विक राजनीति विज्ञान

हम नये युग में रह रहे हैं। पुराने तरीके व समाधान अब काफी नहीं। हमारी सोच, हमारे विचार तथा हमारी अवधारणाएँ अवश्य नई होनी चाहियें। हमें भूतकाल की सीमाओं से बाहर निकलना होगा। - जनरल डगलस मैक-आर्थर

किसी के पास कम से कम ऐसी बुद्धि व रणनीति होनी चाहिए जिससे इतिहास की हिंसा व विनाश की ज़ंजीरों को काटा जा सके। -मार्टिन लूथर किंग

सभी ऐतिहासिक अनुभव इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि मनुष्य संभाव्य को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि वह बार-बार असंभव को पाने की कोशिश न करे। - मैक्स वेबर

प्रतिदिन हमारा इस तथ्य से साक्षात्कार हो रहा है कि जो कल तक असंभव था आज संभव है।

-मोहनदास करमचंद गांधी

संहारकता से मुक्ति की ओर

अब समय आ गया है कि हिंसा को एक स्थायी दासता के रूप में स्वीकार करने के बजाए इसे एक ऐसी समस्या के रूप में देखा जाए जिसका समाधान हो सकता है। एकल, सामूहिक तथा मशीनों की मदद से मनुष्यों की

सुनियोजित हत्याएँ अब तक एक आत्मघाती रोग की हद तक पहुँच चुकी हैं। वे हत्याएं जिनसे मुक्ति, बचाव एवं संवृद्धि की अपेक्षा की जाती थी, असुरक्षा, दरिद्रता तथा मानव एवं ग्रहीय जीवन के लिए भय का कारण बन गयी हैं। क्रेग कॉमस्टॉक के शब्दों में 'मानवता सुरक्षा के मनोरोग' से ग्रस्त है जब सुरक्षा का उपकरण विनाश का कारण बन जाता है। (कामस्टॉक 1971)। सुरक्षा हेतु घर में रखी गयी बन्दूकें परिवार के सदस्यों की जान लेती हैं, अंगरक्षक स्वयं अपने राज्याध्यक्षों की हत्या करते हैं, सेना अपने उन्हें लोगों का ही अतिक्रमण करती है तथा उन्हें दरिद्र बनाती है, आण्विक हथियार अपने ही आविष्कारकर्ताओं तथा स्वामियों को भयभीत करते हैं। अपने तथा अपने समाज के भीतर की हिंसा से मुक्ति के लिए एक 'अहिंसावादी मुक्ति की घोषणा' की आवश्यकता है।

आधुनिक काल में हिंसा के द्वारा मानवीय अभिलाषाओं की पूर्ति, असंख्य हत्याओं, भौतिक विनाश तथा मनोवैज्ञानिक आघातों का कारण बन गयी है जिसका प्रभाव पीढ़ियों तक देखा जा सकता है। पिछली दो शताब्दियों में मानवीय आशाएं, फ्रांसीसी क्रांति के उत्तरदान में दिए नारे -"liberte egalite, fraternite" (स्वतंत्रता, समानता एवं भाईचारे) के ध्वज में सुशोभित है।। स्वतंत्रता के लिए हिंसा अमरिकी क्रांति की विरासत है। समानता के लिए हिंसा रूसी तथा चीनी क्रांति का उत्तरदान है। शांति के लिए हिंसा दो दशक तक चलने वाले युद्ध, क्रांति एवं प्रति-क्रांति की विरासत है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि वास्तविक स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुता की प्राप्ति तब तक संभव नहीं जब तक संहारकता की विरासत को पूर्णतः नष्ट नहीं कर दिया जाता। अच्छाई एवं बुराई की बलि चढ़े नर-संहारों के ढेर हमें अपने से शिक्षा लेने के लिए पुकार रहे हैं।

इसका अर्थ है राजनीति विज्ञान के प्रवर्तमान विश्व-शैक्षिक स्वरूप की इस मान्यता को चुनौती देना तथा उनमें परिवर्तन करना जो यह मानती है कि हिंसा दुर्निवार्य है तथा मानव-मात्र के कल्याण के लिए है। इसका अर्थ है प्राचीन ज्ञान (विवेक) एवं समकालीन राजनीतिक विश्वास के ऐसे अत्यंत शक्तिशाली मत को पलट देना तथा उस पर प्रश्न करना। इसकी तुलना औषधि के इतिहास में 'मवाद की प्रशंसा' संबंधी लोकप्रिय सिद्धांत से की जा सकती है जो अब मान्य नहीं। लगभग सत्रहवीं शताब्दी तक अत्यंत विश्वस्त यूनानी चिकित्सक गैलन की यह शिक्षा मानी जाती थी कि घाव के चारों ओर पीव का बनना प्रकृति द्वारा घाव को ठीक रखने का एक तरीका है। इस सिद्धांत को 1867 में लिस्टर द्वारा 'चिकित्सा के प्रयोग में 'एंटीसेप्टिक सिद्धांत' लेख जो 'लांसेट' पेपर में छपाने चुनौती दी। इस लेख ने एंटीसेप्टिक के आविष्कार एवं

प्रयोग को, वाद-विवाद के बावजूद, आगे बढ़ाया। (Acherknecht 1982 :77) गैरीसन 1929 : 116; 589-91)। यह विश्वास कि हिंसा राजनीतिक-विश्वास के लिए प्राकृतिक एवं कार्य की दृष्टि से उचित (स्वस्थ) है, राजनीति विभाग का 'प्रशंसनीय मवाद सिद्धांत' है।

यदि पारिवारिक जीवन से लेकर विश्वयुद्ध तक राजनीतिक शक्ति के बहुआयामी प्रदर्शन के अध्ययन को समर्पित विद्वान अर्थात् राजनीतिशास्त्री ही गंभीरता से संहारकता की मान्यता को चुनौती नहीं देते तो हम कैसे उम्मीद रखें कि विश्व के नेता व नागरिक ऐसा करेंगे? इसके बावजूद इतिहास में हमेशा से ही और वर्तमान युग में बर्द्धमान दर से, ऐसे नेता और नागरिक सामने आए हैं जो बिना राजनीति शास्त्र की मदद के, सिद्धांतयुक्त साधनों द्वारा स्वतंत्रता, समानता व शांति की परिस्थितियों को प्राप्त करने के मुखर प्रयत्न करते रहे हैं। इसका उदाहरण रूस में 1895 में सेना में जबरदस्ती भर्ती का विरोध करने वाले 700 शांतिवादी दुखोबार किसानों के द्वारा 'हथियारों का जलाना' है। (तारासोफ-1995 : 8-10)। संहारकता को स्वीकार करने वाले राजनीति-विज्ञान तथा इसका निषेध करने वाले राजनीति विज्ञान में स्पष्ट अंतर है। बीसवीं शताब्दी में टालस्टाय, गाँधी, खान अब्दुल गफ्फार खाँ, मार्टिन-लूथर किंग और पेट्रा-केली की विरासत को आगे बढ़ाने वाले दलाई लामा, आँग-साँग सू-क्यी और डेसमाण्ड टूटू जैसे नेताओं के अहिंसा के सेवा कार्य के नेतृत्व को संभव बनाने वाले, प्रेरणा व समर्थन देने वाले वीर एवं वीरांगनाएँ -- भविष्य के शक्तिशाली अहिंसावादी राजनीति के पुरोधा संदेशवाहक हैं।

क्या तानाशाही शासन के दुविधा में पड़े हुए समर्थकों की तरह ही राजनीति शास्त्र भी इतने लंबे समय तक हिंसा की मान्यता रखने के बाद अंतिम समय में उन अहिंसक बलिदानों का अनुसरण करेगा? क्या राजनीति-वैज्ञानिक तब अहिंसक लोकतांत्रिक महोत्सवों में हिस्सा लेंगे? अथवा, क्या राजनीति-विज्ञान, ने औषधि-विज्ञान की तरह ही व्यवहार के पश्चात्, संहारकता के चिकित्सकीय रोगनिदान तथा विश्व-जीवन से हिंसा की समाप्ति की खोज में लगे लोगों के प्रति, औषधियों एवं उपचारों के प्रति अपने आपको समर्पित कर दिया है?

अहिंसक क्षमताओं की अभिधारणा

यहाँ प्रस्तुत किया गया प्रमेय यह है कि अहिंसापूर्ण विश्व-समाज संभव है। राजनीति विज्ञान के शिक्षा संबंधी अनुशासन में परिवर्तन तथा उसकी सामाजिक भूमिका, उसको संभव बनाने में योगदान दे सकते हैं। अहिंसापूर्ण

समाज का अनुभव कम-से-कम सात (7) आधारों पर टिका हुआ हैं, वे हैं – (1) अधिकांश मनुष्य हत्या नहीं करते (2) अहिंसा की शक्तिसंपन्न क्षमता मानव-मात्र के आध्यात्मिक विरासत में निवास करती है (3) विज्ञान मानव की अहिंसा की क्षमताओं का प्रदर्शन करता है तथा उसका भविष्य-कथन करता है। (4) संक्रांतिकालीन अहिंसा की सार्वजनिक नीतियाँ जैसे-मृत्यु-दण्ड का उन्मूलन तथा सैनिक सेवा का शुद्धिमति के आधार पर विरोध की समझ को, हिंसा जनित राष्ट्र-राज्यों द्वारा भी स्वीकार कर लिया गया है (5) अहिंसा के सिद्धांतों से संचालित विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ उस संयोग में स्थित हैं जो पहले से ही क्रियाशील अहिंसक समाज के समतुल्य हैं। (6) राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए होने वाले प्रसिद्ध अहिंसापूर्ण संघर्ष क्रांतिकारी संहारकता के वृद्धिमान शक्ति संपन्न विकल्प का वर्णन करते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि अहिंसा की प्रेरणाओं एवं अनुभवों की जड़ों को संपूर्ण विश्व की ऐतिहासिक परंपराओं में खोजा जा सकता है। अंतत: (7) अहिंसक संक्रांति का वादा अहिंसक व्यक्तियों, स्त्रियों व पुरुषों, प्रसिद्ध व अज्ञात के साहसपूर्ण जीवन, जो इसकी प्राप्ति संभव बनाता है, पर आधारित है।

राजनीति विज्ञान के लिए इसका अर्थ

ऐसा माना जाता है कि मनुष्य जैव-वैज्ञानिक दृष्टि से तथा अनुकूलन द्वारा हिंस्र एवं अहिंस्र, दोनों की क्षमता रखता है। परंतु ऐसा देखा गया कि अधिकांश मनुष्य हत्यारे नहीं थे और इसीलिए अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित सामाजिक संस्थाओं का क्षेत्र-विस्तार पहले से ही निर्मित है जो अहिंसावादी समाजों के लिए आरंभिक साधन के रूप में कार्य कर सकता है। इसके अतिरिक्त समकालीन वैज्ञानिक प्रगति तथा भविष्य में होने वाले अपेक्षित वैज्ञानिक विकास हिंसा के कारणों को समाप्त करने एवं अहिंसावादी सामाजिक दशाओं को लाने वाला ज्ञान प्रदान करने का वचन देते है। राजनीति-विज्ञान की सामाजिक भूमिका एवं शैक्षिक अनुशासन की आधारभूत मान्यता के रूप में संहारकता की दुर्निवार्यता की स्वीकृति कम से कम समस्या-ग्रस्त है। दूसरी बातों के अलावा, राजनीति शास्त्र जिसे घातक विषय के रूप में भी जाना जाता, की हत्या व उसके प्रभाव की मान्यता पर प्रश्न उठाना उचित ही है। दूसरे विषय व व्यवसायों की तरह ही राजनीति शास्त्र को भी बीते हुए अहिंसक अनुभवों को पुन: प्राप्त करना होगा, वर्तमान अहिंसक क्षमताओं को पहचानना होगा तथा भविष्य की अहिंसक अंत:शक्ति को बाहर निकलाना होगा तथा इस ज्ञान को अहिंसक सामाजिक रूपांतरण के लिए शोध, शिक्षण व सार्वजनिक सेवा में लगाने में सहयोग देना होगा।

वे जिन्हें कि अहिंसापूर्ण परिवर्तन के लिए संयुक्त किया जाने प्रधान तत्त्व वाले स्पष्ट हैं- आत्मा (Spirit) (S_1), अर्थात् प्रत्येक तथा समस्त आस्थाओं एवं दर्शनों से व्युत्पन्न हिंसा नहीं करने संबंधी गंभीर प्रतिबद्धता विज्ञान S_2 (Science), हिंसा एवं अहिंसा के रूपान्तरण कारणों से संबद्ध सभी प्रकार की कलाओं, विज्ञानों एवं व्यवसायों से प्राप्त होने वाला ज्ञान; कुशलताएं (Skills) S_3, विज्ञान एवं आत्मा को रूपान्तरिक कार्य में अभिव्यक्त करने की व्यक्तिगत एवं सामूहिक विधि; गायन (Song), S_4,संगीत व समस्त कलाओं की ऐसी प्रेरणा जो अहिंसक राजनीति के विज्ञान एवं व्यवहार को उदास व घातक बनाने के बजाए जीवन का उत्सव बनाए। प्रभावोत्पादक सेवा में इन चार तत्वों को संयुक्त, विकसित एवं विस्तारित करने के लिए लोकतांत्रिक नेतृत्व (L) (Leadership), नागरिक सामर्थ्य (C) (Citizen Competence), कार्यान्वयन करने वाली संस्थाएँ (I) (Institutions) और सहायक संसाधन (R) (Resoures), आवश्यक हैं।

तत्त्वों के इस संयोग को संक्षिप्त रूप से इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है –

$S^4 \times LCIR$ = अहिंसापूर्ण वैश्विक-परिवर्तन

संस्थागत अभिव्यक्तियों एवं संसाधनों के सहयोग से विस्तृत नागरिक अधिकार एवं लोकतांत्रिक नेतृत्वकर्त्ता की आवश्यकता–पूरक प्रक्रियाओं में उत्पादक ढंग से संयुक्त आत्मा (प्रभाव), विज्ञान, कुशलता और गान अहिंसापूर्ण विश्व की प्राप्ति में अपना सहयोग दे सकते हैं।

सिद्धान्त और अनुसंधान

मानव संहारकता का आतंक हमें बाध्य करता है कि हम उपरोक्त वर्णित राजनीति विज्ञान के चार हिस्से वाले तर्क को ढूंढे जो सभी प्रकार की हिंसा–मानव हत्या, सामूहिक नरसंहार तथा आणविक विनाश तथा संपूर्ण पृथ्वी पर जीवन के विनाश को रोक पाने वाले ज्ञान को एकत्रित करता है। राजनीति विज्ञान की चेतना में, हिंसा को परिधि से हटाकर विश्लेषण एवं समस्या को हल करने वाले केंद्र में स्थापित करना होगा। इसका अर्थ हैं हिंसा के अहिंसा के हिंसा को अहिंसा में बदलने वाले तथा उसके विपरीत के कारणों तथा पूर्णतया हिंसा-मुक्त समाज की विशेषताओं की समझ के लिए केन्द्रित प्रयास करना। खूनखराबे की 'कीप' के संकुचित क्षेत्र के भीतर एवं बाहर अहिंसा के विकल्पों एवं परिवर्तनशील कार्यों : तंत्रिकातंत्रीय, जैव-वैज्ञानिक, संरचनात्मक,

सांस्कृतिक, सामाजिक और हिंसा के क्षेत्रों की पहचान में सहायता देने के लिए इस प्रकार का ज्ञान आवश्यक है।

शिक्षा और प्रशिक्षण

इस प्रकार के ज्ञान की खोज तथा रूपांतरणशील कार्य राजनीति-वैज्ञानिकों की शिक्षा एवं प्रशिक्षा में, पाठ्यक्रम निर्माण में, शैक्षिक राजनीति विज्ञान के विभागों के संगठन में तथा अन्य विषयों के साथ संबंध में, और राजनीति शास्त्र के अनुसंधान-शिक्षा-कार्य की समाज में भूमिका में पूर्वापेक्षाएं की माँग करते हैं।

कुल मिलाकर राजनीतिशास्त्रीय शिक्षा एवं प्रशिक्षा का उद्देश्य ऐसी सृजनशीलता का पोषण करना है जो अहिंसक समस्या-समाधान के कौशल में मदद दे सकें। अन्य निर्देशक सिद्धांत हैं संस्थानों एवं सृजनशील व्यक्तियों के उत्तरदान का पुनः निरीक्षण करना व्यक्तिगत रुचियों एवं कुशलताओं के विस्तार में सहायता करना; संचित ज्ञान एवं कौशल विकास की खोज करना; स्वयं द्वारा चयनित समस्या को हल करने वाले कार्यक्रमों में संलग्न होना समानांतर रचनात्मक सामुदायिक सेवाओं को उपलब्ध कराना तथा अहिंसावादी राजनीति विज्ञान के कार्यों को समर्थन तथा आधार प्रदान करना।

इस पाठ्यक्रम में अहिंसावादी सृजनात्मकता को प्रेरित करने वाले उत्तरदान तथा संहारकता के भयावह इतिहास के जीवंत परिचय के पश्चात् पाठ्य-पुस्तकें अहिंसावादी राजनीतिक विश्लेषण के तर्क को प्रस्तुत करती हैं तथा प्रभावशाली ढंग से समस्या को हल करने वाले कार्यों के लिए सिद्धांतों एवं प्रक्रियाओं की खोज में संलग्नता को चुनौती देती हैं। प्रतिभागी सदस्य हिंसा, अहिंसा, संक्रमण और अहिंसापूर्ण समाजों की विशेषताओं से संबंधित संकल्पनाओं के कारणों का निरीक्षण करते हैं और इस परिप्रेक्ष्य में स्थानीय एवं वैश्विक राजनीतिक संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं के ऐतिहासिक विकास का परीक्षण करते हैं। समस्या का समाधान करने वाली चुनौतियों जैसे-मानव हत्या, लोकतंत्र में हत्या, नरसंहार और निःशस्त्रीकरण, आर्थिक असमानता; मानव अधिकारों का उल्लंघन; पर्यावरणीय जैव-हत्या, विनाशकारी भेदभाव बनाम सहयोग – को स्वीकार किया जाता है। समस्या को हल करने वाली संलग्नताओं के क्रम में कुशलता को विकसित करने का अवसर -अनुसंधान, शिक्षा, नौकरशाही एवं संवेदनशील संचार के माध्यम से दिया जाता है। समस्या का निराकरण करने वाले तथा कौशल को विकसित करने वाले इन मूलभूत व्यक्तिगत एवं सामूहिक कार्यक्रमों के आधार पर समाधान खोजना एवं प्रस्तुत किया जाता है। एक समानान्तर

विश्वविद्यालय स्तरीय शांति सेना अनुशासित सामुदायिक सेवा के लिए पूरक नेतृत्व प्रशिक्षण प्रदान करती है।

स्नातक के विद्यार्थी, शोधछात्रों, शिक्षकों, नेताओं, संक्रमणशील व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक संस्थानों के संप्रेषकों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहयोग देते हैं। वे सृजनात्मक तरीके से समस्या का निराकरण करने की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। परास्नातक प्रशिक्षण हिंसा पर रोक लगाने एवं अहिंसापूर्ण सामाजिक परिवर्तन कराने वाले कौशल की बढ़ती हुई तत्कालीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, राजनीतिक सेवा में, सरकार में एवं सभ्य समाजों में आगे की तैयारी के लिए सुविधा उपलब्ध कराता है। समस्या का समाधान करने वाली संबद्धता समानान्तर रूप से वही है जो स्नातक-पूर्व स्तर पर है। ऐसे कार्यकारी समूह, अनुसंधान, शिक्षण, कार्यव्यवहार एवं हिंसा की समस्या का समाधान करने वाली सोच, अर्थव्यवस्था, मानव अधिकारों, वातावरण, सहयोग-कार्य एवं अन्य मामलों में कुशलता को विकसित करने वाले समूह बनाते हैं। स्नातकोत्तर की उपाधि धारण करने वाले तथा शोधकर्ता निम्न-स्नातक स्तरीय कार्यक्रमों में, निर्देशक, विश्वसनीय सलाहकर्त्ता (परामर्शदाता) तथा सह-अध्येता के रूप में अपनी क्षमता के अनुसार सेवा करते हैं।

अहिंसावादी राजनीति-विज्ञान, परास्नातकोत्तर (शोधस्तरीय) प्रशिक्षण में उन कार्यकर्त्ताओं को तैयार करने के लिए जो कि स्वयं सर्जक है एवं दूसरों को सर्जक बनाने का कौशल रखते हैं, उच्च श्रेणी की अभिलाषा को दिखाता है। प्रत्येक आवश्यक कौशल में सभी के कुशल होने की आशा नहीं की जा सकती, लेकिन सभी अपेक्षित कार्यों में अपने अनुभव का योगदान दे तथा शिक्षण समुदाय के अंदर व बिना दूसरे शैक्षिक समुदाय की मदद से समस्या समाधान कर सकते हैं।

शोधात्मक प्रशिक्षण के लिए अहिंसक राजनीति-विज्ञान के मौलिक आधारों, समस्या का समाधान करने वाले स्थानीय एवं विश्वस्तरीय आवश्यकताओं की समझ, अहिंसापूर्ण विवेकयुक्त नेतृत्वकारी कौशल की तैयारियां, निरीक्षण की भाषा को शामिल करते हुए मात्रात्मक एवं गुणात्मक विधियों की समझ, हाथ में आए हुए कार्यों के लिए आवश्यक अनुसंधान की विधियों की उत्कृष्टता एवं विकसित कार्यक्रमों में संबद्धताओं के गहन अध्ययन की अपेक्षा है। गहन अध्ययन, ज्ञान की तथा शिक्षा और प्रशिक्षा में सुधार लाने के लिए, विद्यमान ज्ञान के प्रयोग, संस्थागत विकास तथा समस्या को हल करने वाली प्रक्रियाओं को अपने परिधि में घेरे हुए है।

विद्वत्तापूर्ण अहिंसक नेतृत्व के लिए बहुमुखी सामाजिक भूमिकाओं की तैयारी जरूरी है। हिंसा तथा अहिंसा से संबंधित विश्वासों तथा दृष्टिकोणों पर व्यक्तिगत सोच का मौका अति आवश्यक है। छात्रों की रचनात्मकता को सुसाध्य बनाने में तैयारी चाहिए। विद्यालय संबंधी सृजनात्मकता को सुविधाजनक बनाने के लिए विभागीय नेतृत्व आवश्यक है। विभिन्न शास्त्रीय अंत: सहयोग के लिए तैयारी चाहिए। राज्य तथा सभ्य समाज में अहिंसापूर्ण परिवर्तन को सुविधाजनक बनाने के लिए सलाहकारी योगदान की एवं आलोचनात्मक रूप से सृजनशील, संचार माध्यमों की जरूरत है। प्रत्यक्ष रूप से अहिंसक सेवारत नेतृत्व की भी आवश्यकता है। (ग्रीनलीफ-1977)।

राजनीतिक विज्ञान के एक अहिंसावादी विभाग की, अपने सामाजिक संबंधों में, एक अहिंसावादी समाज की ऐच्छिक विशेषताओं को गलतियों के बावजूद बार-बार प्रयास कर अभिव्यक्त करने की जरूरत है। इसका तात्पर्य है जीवन के प्रति गैर-सांप्रदायिक किंतु बहुविश्वासी आध्यात्मिक और मानववादी दृष्टिकोण को स्वीकार करना। सबके कल्याण के हेतु उत्तरदायित्व की भावना को पैदा करना। आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, जिम्मेदार निर्णयकारी भागीदारी की प्रक्रिया में सुधार करना। सभी की विविधताओं एवं प्रतिष्ठा का सम्मान करना। सह-उत्पादक एवं वितरणात्मक नेतृत्वकारी कार्यों में नए प्रयोग करना। दुसाध्य संघर्ष के समय परामर्शदाताओं एवं दूसरे नियमों एवं व्यवसायों का सहयोग प्राप्त करने के लिए खुलापन रखना। वैज्ञानिक समस्याओं के समाधान के लिए नवप्रर्वतक क्षेत्रों को प्रोत्साहित करना और इस बात को मानना कि एक अहिंसावादी विश्व-समाज की जड़ व्यक्तिगत एवं स्थानीय समुदाय में ही है।

उन स्नातकों के साथ दीर्घकालीन आपसी सलाहकारी संबंध स्थापित किया जाना चाहिए जो अनुसंधान, शिक्षा, नेतृत्व संचार एवं सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों में कार्य करने के लिए निकल पड़े हैं। अनुसंधान कार्य की आवश्यकताओं, आवश्यक कुशलताओं की सुधरी तैयारी तथा अहिंसापूर्ण परिवर्तन के कार्य में आने वाली बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के आवश्यक सृजन के कार्य में उनका अनुभव अत्यधिक सहायक हो सकता है। आपसी भिन्नताओं के बावजूद अहिंसक राजनीति शास्त्र की चुनौती को स्वीकार करने वाले लोग लंबे परस्पर सहयोग में साथ-साथ रहते हैं।

समस्या-समाधान

अहिंसावादी राजनीति-विज्ञान, प्रत्यक्षत: समस्या का निराकरण करने वाली संलग्नताओं में आधारभूत तथा व्यवहारिक विज्ञान के संयोग को दिखाता है। जटिल सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में दी गई परिभाषा के अनुसार समस्याएँ बदलती रहेंगी। विश्व स्तर पर पाँच महत्त्वपूर्ण समस्याएँ हैं -हिंसा और नि:शस्त्रीकरण, आर्थिक-महाविनाश, मानव-अधिकारों का उल्लंघन, पर्यावरण की हानि तथा समस्या का निराकरण करने वाले सहयोग की असफलताएँ। ये सभी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा से संबंधित हैं या उसे बढ़ावा देती हैं। एक तत्कालीन नारा कहता है 'न्याय के बिना शांति नहीं मिलती' जो यह दर्शाता है कि हिंसा और युद्ध चलते रहेंगे अथवा वे अन्यायपूर्ण दशाओं को बदलने अथवा उनसे बचने के लिए आवश्यक होंगे। किंतु यदि अहिंसावादी दृष्टि से देखा जाए तो 'अहिंसा के बिना न्याय' नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए हिंसा एवं हिंसा के भय ने अन्याय के निर्माण एवं क्रियान्वयन में सहयोग किया है। महिलाओं के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार में (जैसा कि पेट्राकेली का अनुभव है - शक्ति, संसाधन एवं उत्तरदायित्व के 'लिंग के आधार पर अन्यायपूर्ण विभाजन में दर्ज हैं प्राचीन परंपराओं में दर्ज हैं जो कानून के द्वारा वैध ठहराया जाता है और यदि ज़रूरत पड़े तो पुरुष-हिंसा द्वारा उन्हें लागू किया जाता है।' (केली-1994 : 15)

समस्या–समाधान के कार्य से संबद्ध होना यह नहीं दिखाता कि राजनीतिक विज्ञान त्रिकालदर्शी है अथवा यह समस्त समस्याओं का हल है। परन्तु इसका तात्पर्य यह है कि अहिंसक राजनीतिक विश्लेषण एवं अहिंसक कार्य के सिद्धांतों एवं व्यवहारों से प्राप्त ज्ञान के प्रयोग के द्वारा समाज की निर्णय-निर्माणकारी प्रक्रियाएं, जो कि सबकी आवश्यकताओं से संबंधित हैं–को सुधारा जा सकता है। इस दृष्टि से यह हिंसा-आधारित लोकतांत्रिक परम्परा से परे विकास कार्य में अहिंसायुक्त सहयोग का वचन देता है।

संस्थाएँ

अहिंसावादी राजनीति विज्ञान के ज्ञान की खोज, शिक्षण-प्रशिक्षण और समस्या का निराकरण करने वाले उद्देश्य कार्यान्वयन संबंधी संस्थानों के निर्माण की आवश्यकता को दिखाते हैं। इसमें नये तथा पुन:निर्मित राजनीति शास्त्र के विभाग हैं तथा समूचे विश्वविद्यालय (विश्व संचार व्यवस्था को समेटे हुए जोकि विद्यालयीय संस्थाओं के भीतर अथवा बाहर मेघा शक्ति को जोड़ते हैं) भी शामिल है। गैर-सैनिक शांति सेना प्रशिक्षण इकाई, अहिंसापूर्ण सार्वजनिक नीति-संस्थान, अहिंसापूर्ण सार्वजनिक सुरक्षा बल, अहिंसावादी राजनीतिक दल

तथा सभ्य समाज के प्रत्येक भाग में अहिंसावादी संस्थागत-नव-प्रवर्तन भी इनमें शामिल है। इस प्रकार की संस्थाओं का निर्माण करना तथा उनमें सेवारत होना एवं वर्तमान संस्थाओं को स्थानीय तथा वैश्विक स्तर पर संहारकता को नष्ट करने के लिए रूपांतरित करना - अहिंसक राजनीति के विज्ञान के अध्येता एवं व्यवहारकर्त्ताओं के लिए अपार सृजनशीलता के अवसर हैं।

बाधाएँ एवं प्रेरणाएँ

21 शताब्दी की गोधूलि वेला में राजनीति विज्ञान के सामने एक अहिंसापूर्ण विश्वसमाज को उपलब्ध कराने की चुनौती है। यह केवल अपेक्षित ही नहीं है बल्कि अनिवार्य भी है। राजनीति शास्त्री स्वयं को इस आपत्ति के आधार पर जिम्मेदारी से मुक्त नहीं कर सकते कि अहिंसक विचारधारा पक्षपातपूर्ण- मान्यता (value-bias) पर आधारित है तथा वे 'यथार्थवादी' वैज्ञानिक निरपेक्षता के समर्थक हैं क्योंकि यह वैज्ञानिक निरपेक्षता वास्तव में हत्या की तत्परता में परिवर्तित हो जाती है। इस तरह की निरपेक्षता कभी सच्ची नहीं रही। यदि यह सच्ची होती तो राजनीतिशास्त्री कभी भी इस बात की परवाह नहीं करते कि जिस समाज अथवा दुनिया में वे रह रहे हैं स्वतंत्र है या गुलाम, न्यायपूर्ण है या अन्यायपूर्ण वह अमीर है या गरीब, शांतिपूर्ण है या युद्धरत, विजयी है या परास्त। वे अपने विद्यार्थियों को यह शिक्षा देते हुए आनन्दित होते कि राजनीतिशास्त्रियों का किसी मान्यता की ओर झुकाव नहीं है और इस प्रकार अपने शोध, शिक्षण एवं सार्वजनिक सेवा की परियोजनाओं में एक की तुलना में दूसरे को महत्त्व नहीं देते। उनके लिए हिटलर के महानरसंहार (Holocaust) तथा गाँधी के सत्याग्रह में कोई अंतर नहीं होता।

राजनीतिशास्त्री अहिंसक राजनीतिशास्त्र के सृजन के कार्य से इस आधार पर नहीं बच सकते कि स्वतंत्रता, समानता व सुरक्षा की मान्यताएँ अहिंसा की मान्यता से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। अहिंसा कम से कम उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि आज मानवता जिस स्थिति में पहुँच चुकी है उसमें राजनीतिक जीवन व राजनीति शास्त्र में अहिंसक नीति के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता के अभाव में ये सभी मूल्य संकट में पड़ जायेंगे। भौतिकता एवं नैतिकता दोनों ही समान निष्कर्ष पर पहुंचे हैं। यदि परम्परा यह कहती है कि स्वतंत्रता, समानता एवं सुरक्षा के लिए हमें हिंसा करनी चाहिए तो वर्तमान हमें बताता है कि जब तक हिंसा को रोका नहीं जाता तब तक न केवल स्वतन्त्रता एवं समानता की प्राप्ति ही शंकायुक्त बनी रहेगी बल्कि हमारा व्यक्तिगत, सामाजिक एवं पर्यावरणीय जीवन भी खतरे में पड़ जाएगा। आज हम ऐसे मोड़ पर पहुँच चुके हैं जहाँ समाज एवं प्रकृति

की जीवनदायी शक्तियों को आवश्यक रूप से विज्ञान एवं राजनीतिक प्रयोग के साथ जोड़ दिया जाना चाहिए। यह केवल शुभ-नैतिकता एवं अच्छी व्यवहारिकता, के दृष्टिकोण से ही आवश्यक नहीं हैं बल्कि यह वर्तमानकालीन एक अच्छे राजनीति विज्ञान के लिए भी आवश्यक है।

वस्तुत: हिंसा से अहिंसा के संक्रमण की प्रक्रिया में संहारकता के संचार से पहचान और संभावित लाभ प्राप्त करने वालों के विचार एवं कार्य विरोध की संभावना हो सकती है। इन शक्तियों में शामिल है - राज्यों की हिंसक शक्तियाँ, उनके घातक शत्रु तथा हिंसा की संस्कृति से राजनीतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक लाभ उठाने वाले। इनमें सभी नहीं परंतु कुछ युद्ध एवं विद्रोह के अनुभवी है, कुछ उनकी संतानें है और दूसरे वे है जो बिना निजी अनुभव के उचित ठहराए गए खूनखराबे के महोत्सवों से, पहचान तथा गर्व हासिल करते हैं। श्रद्धाञ्जलि देते वक्त शहीदों के कब्रिस्तानों शत्रु के प्रति हमारी सहानुभूति नहीं होती तथा दोनों ही राजनीति असफलता हम ऐसी हत्याएं दोबारा नहीं होगी का प्रण लेने की बजाए उसी प्रकार का बलिदान करने का प्रण लेते हैं।

किंतु अहिंसावादी राजनीतिक विज्ञान के संक्रमण की स्थिति में सहायता करने वाले प्रेरक स्रोतों में विश्व के कुछ अत्यधिक सम्मानित सैनिक नेताओं के द्वारा दी गई चेतावनियां शामिल हैं। 'वैज्ञानिक यथार्थवाद' के रूप में युद्ध को समाप्त करने के आग्रह पर विचार करें जिसे जनरल डगलस मैक आर्थर ने 1955 में अमरीकी सैनिकों को भाषण में किया था -

> आप तुरंत कह सकते है कि यद्यपि युद्ध को खत्म करना मानव का सदियों पुराना सपना रहा है, उसे खत्म करने की प्रत्येक प्रतिज्ञा को असंभव स्वप्न के रूप में अतिशीघ्र भुला दिया गया। संसार का प्रत्येक सनकी व्यक्ति, प्रत्येक निराशावादी, प्रत्येक साहसी व्यक्ति, प्रत्येक शेखीबाज ने हमेशा ही इसकी संभावना के दावे का विरोध किया है। किंतु यह उससे पहले की बात है जब पिछले दशक में विज्ञान ने विशाल पैमाने पर विनाश संभव बनाया था। तब तक का आधार आध्यात्मिक के साथ नैतिक था, और हम हार गए ... किंतु अब परमाणु एवं अन्य विनाशकारी शक्तियों की वर्तमान कालीन क्रांति ने समस्या को नैतिक एवं आध्यात्मिक के मूल विचार से अचानक दूर कर दिया है एवं इसे वैज्ञानिक यथार्थवाद की कतार में लाकर खड़ा कर दिया है। अब यह मात्र एक नैतिक सवाल नहीं रह गया है जिसका मना केवल ज्ञानी दार्शनिक या धर्मगुरु करें बल्कि यह उन आम लोगों का कठोर निर्णय है जिनका जीवन दाव पर लगा हुआ है। नेता सुस्त हैं ... वे कभी भी अप्रिय सत्य

नहीं बोलते कि जब तक युद्ध को खत्म नहीं कर दिया जाता, सभ्यता में आगे (कोई) महान् प्रगति नहीं हो सकती। कब किसी महान नेता के पास इतनी कल्पनाशीलता होगी कि वह इस सार्वभौमिक इच्छा को, जो तेजी से सार्वभौमिक आवश्यकता बन चुकी है, को वास्तविकता में परिणत करेगा? हम नये युग में रह रहे हैं। पुरानी विधियों तथा उपाय दीर्घकाल तक हमारी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते। हमारे विचार, हमारे दृष्टिकोण तथा हमारी धारणाएं अवश्य ही नयी होनी चाहिए .... हमें भूतकाल की सीमाओं से बाहर निकलना होगा।

फ्रांसीसी क्रांति के नारों के नये अहिंसावादी रूपांतरण को जनरल ड्वाईट डी. आइजनहावर की चेतावनी में सुना जा सकता है जब वे स्वतंत्रता, समानता व भाईचारे पर निरंतर हिंसक सैन्यीकरण के दुष्प्रभावों का वर्णन करते हैं। स्वतंत्रता पर – "सरकारी सभाओं में, सैनिक-औद्योगिक सम्मिश्रण के द्वारा, चाहे वह इंप्सित हो अथवा अनीप्सित, अनुचित प्रभावों की प्राप्ति से बचने के लिए हमें अनिवार्य रूप से निरीक्षक तैनात करने चाहिए। हमें कभी भी इस संयोग शक्ति के द्वारा अपनी स्वतंत्रता एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया को खतरे में नहीं डालना चाहिए। (विदाई-संबोधन 17 जनवरी, 1961)। आर्थिक समानता पर– "प्रत्येक बंदूक जिसका कि निर्माण हुआ है, प्रत्येक युद्ध-पोत जिसका कि जलावतरण हुआ है तथा प्रत्येक रॉकेट जिसको कि छोड़ा गया है, अंतिम अर्थ में, उनसे चोरी है जो कि भूखे हैं तथा जिन्हें भोजन नहीं कराया गया है तथा वे जो युद्ध से प्रभावित हैं तथा जिनके पास वस्त्र नहीं है (समाचार संपादकों द्वारा अमरीकी समाज को दिया गया भाषण, 16 अप्रैल, 1953)। बंधुता पर, "वस्तुतः मेरे विचार से लोग शांति को इतना अधिक चाहते है कि यदि किसी दिन सरकार उसके रास्ते से हट जाए तथा लोगों को प्राप्त करने दे तो अच्छा हो। (बी.बी.सी., टेलीविजन, इन्टरव्यू, अगस्त 21, 1959)

4 दिसंबर 1996 को वाशिंगटन डी.सी. में नेशनल प्रेस क्लब के सामने बोलते हुए, समस्त संयुक्त राष्ट्र परमाणु शक्ति संपन्न सेना से अवकाश प्राप्त पूर्व कमाण्डर जनरल जॉर्ज ली बटलर ने परमाणु हथियारों की पूर्ण समाप्ति का आह्वान किया – कम करने का ही नहीं। उन्होंने यह भी कहा कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका प्रथम निर्माता व प्रयोगकर्त्ता के रूप में इनकी पूर्ण समाप्ति के कार्य में नेतृत्व करे। अन्यथा अमरीका को अन्य देशों द्वारा इन्हें हासिल करने से रोकने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। उन्होंने जो कारण बताए वे इस प्रकार हैं : परमाणु हथियार स्वभावतः खतरनाक, अत्यधिक खर्चीले, सैनिक दृष्टि से अपर्याप्त होते है और नैतिक वृद्धि से अरक्षणीय हैं। इस प्रकार जनरल अध्यात्म

से प्रेरित 'तलवारों के स्थान पर हल (Swords into Plowshares) आंदोलन' के सदस्यों के पुराने निष्कर्ष पर पहुँच गए' जिनके द्वारा परमाणु हथियारों का विरोध करने पर उन्हें जेल में बंद किया जाता रहा था। परमाणु हथियारों के उन्मूलन के तर्क को हिंसा के अन्य हथियारों को रोकने के लिए समान रूप से प्रयोग में लाया जा सकता है।

यदि हिंसा के काम में कुशल जनरल अपनी कार्य संबंधी व्यापक मान्यताओं एवं समाज के साथ उनके संबंध के विषय में ऐसे अति गंभीर प्रश्न कर सकते हैं तो क्या राजनीति वैज्ञानिक अपने विषय से संबंधित हिंसा की सामाजिक भूमिका पर प्रश्न नहीं कर सकते तथा अहिंसक समाज की प्राप्ति का प्रयास नहीं कर सकते?

संभवत: अधिकांश अमरीकी राजनीति वैज्ञानिक तथा उनके अंतर्राष्ट्रीय साथी जो कि समकालीन अमरीकी राजनीति विज्ञान के तत्त्वों स्वीकार करते रहे हैं, *अमरीका के शैक्षिक अनुशासन के रूप में, राजनीति विज्ञान के निर्माण में* अहिंसा की प्रेरणा से अनभिज्ञ हैं। इसका अमरीका राजनीति विज्ञान का एक स्रोत एक युवा संघीय सिपाही द्वारा 1863 के युद्ध क्षेत्र में की गई वह प्रतिज्ञा थी जिसे उसने लिया था जब वह पश्चिमी टेनेसी में परिसंघीय शक्तियों के साथ दिन भर चलने वाले एक खूनी युद्ध के पश्चात, एक रात सन्तरी के काम पर तैनात किया गया था।

> मूसलाधार बारिश हो रही थी। काले स्याह आसमान में बिजली अपनी दुष्ट जिह्वाएं मानों आकाश के आर-पार चमका रही थीं। बादलों की गड़गड़ाहट तोप की गरज प्रतीत होती थी। प्रकृति के इस शोर-शराबे में घायल व मरनासन्न पशुओं व इंसानों की चीखें व कराहें घुलमिल गई थीं। कठोर हृदयी सैनिक के लिए भी यह आतंक की रात थी। मुझ जैसे संवेदनशील नौजवान के लिए यह एक ऐसी दर्दनाक स्थिति थी जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह अब तक मेरे लिए एक वीभत्स दु:स्वप्न के समान है। परंतु इसी डरावने अनुभव के बीच मुझे अपने जीवन का उद्देश्य सूझा। मैंने पाया कि जब मैं दुश्मन की टोह में अंधेरे में देखने की कोशिश कर रहा था और मेरे कान आने वाले की आवाज सुनने की कोशिश में थे, मैं बड़बड़ा रहा था - क्या विवेकी मनुष्य जिसकी रचना ईश्वर की छवि में की गई है, के लिए संभव नहीं कि वह बिना शारीरिक हिंसा के विनाशकारी प्रयोग के विवेक द्वारा अपनी समस्याओं का हल निकाल सके? तब मैंने ईश्वर के दरबार में यह प्रण दर्ज किया कि यदि दयालु ईश्वर मुझे युद्ध की विभीषिका से बचा लेता है तो मैं

अपना जीवन विवेक व समझौते के आधार पर व्यतीत करूँगा न कि खून खराबे व विनाश द्वारा (बर्गेस, 1934 : 28)

अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए बर्गेस स्नातक स्तर की पढ़ाई के लिए जर्मनी चले गए और 1880 में न्यूयार्क के कोलम्बिया महाविद्यालय में राजनीति विज्ञान स्कूल की स्थापना के लिए वापिस आ गए।

प्रो॰ बर्गेस का आगामी अनुभव उन बाधाओं की भविष्यवाणी करता है जिनका सामना करने की आशा अहिंसक राजनीति विज्ञान के योगदानकर्त्ता करते हैं। ये बाधाएं प्रसंग के अनुसार कभी अति सूक्ष्म तो कभी अति विकराल रूप धारण करती रहेंगी तथा इन पर विजय प्राप्त करने के लिए साहस एवं विश्वस्तर पर सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी। जर्मनवासियों को अपने जैसे ही इंसान मानते हुए बर्गेस ने संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा प्रथम विश्व युद्ध में शामिल होने का विरोध किया। 6 अगस्त 1917 का दिन जब अमरीका विश्वयुद्ध में कूदा, बर्गेस के लिए ऐसा था मानो "एक पीड़ादायक प्रहार के साथ ... मेरे चारों तरफ मेरे जीवन की उपलब्धियों का खंडहर था।" देशभक्ति से युक्त जर्मन विरोधी युद्ध के मध्य में उन्होंने दुःख व्यक्त किया "आज के समय में एक शांतिप्रिय एवं विवेकशील व्यक्ति होना विश्व के लिए विश्वासघाती एवं कायर होने समान है" (29)। इस प्रकार प्रो॰ बर्गेस ने अपने संपूर्ण जीवन में एक शांतिवादी होने का संताप झेला जो शांतिवादी सदियों से प्रतिपक्षियों (शत्रुओं) के गुण एवं दोषों को समझते हैं, इसलिए प्रत्येक प्रतिपक्षी द्वारा दण्डित किए जाते हैं और कभी-कभी अपने जीवन से भी हाथ धो बैठते हैं।

अहिंसावादी राजनीति के समान अहिंसावादी राजनीति विज्ञान को भी, जीवन के प्रति परम आध्यात्मिक एवं मानववादी सम्मान से प्रेरित गाँधी के "साधुता, सभ्यता एवं निडरता" के आह्वान से निर्देशित होने की आवश्यकता है। इसके लिए साहस आवश्यक है। विश्व के खून खराबे के मध्य राजनीति विज्ञानियों की जीवन के प्रति सम्मान व्यक्त करने वाले सिद्धांतों से संबद्धता किसी भी प्रकार से 'सॉसिदाद सिविल लॉस एवेजाज़' (Sociedad Civil Las Abejas), जिसका गठन मैक्सिकों के चियापाज़ (Chiapas) क्षेत्र में 1992 में हुआ था, से किसी भी प्रकार कम नहीं होनी चाहिए। शस्त्रधारी ज़ैपटिस्ट विद्रोहियों तथा शासन विरोधी विद्रोहियों के मध्य न्याय के लिए ये लोग अहिंसावादी कोशिश में लगे हैं। ये ज़ैपस्टिस्टा की शिकायतों से सहानुभूति रखते हैं, परंतु शपथ लेते है - 'हमारे रास्ते अलग हैं। हम ईश्वर के वचन में विश्वास रखते हैं। हमें ज्ञात है कि बाइबिल को कैसे पढ़ा जाए। हम अपने

शत्रुओं से प्रेम करते हैं। हम हिंसा नहीं कर सकते। इसके बावजूद हम सब गरीब किसान, भाई और बहनें.... मरने से नहीं डरते, हम मरने के लिए तैयार है, परंतु मार नहीं सकते' (शांति समाचार 1998 : 13, 14)।

हम निचले स्तर से ऊपर की ओर (bottom up) अहिंसा की सिद्धांतयुक्त प्रतिबद्धता की अपेक्षा क्यों करते है जैसे ब्रिटिश अधिराज्य के अधीन भारतीय उपनिवेश वासियों से, गोरों की नस्लपरस्ती के शिकार अफ्रीकी-अमरीकियों से या फिर मेक्सिकों के गरीब किसानों से? हम ऊपर से नीचे की ओर आती हुई (top down) अहिंसावादी प्रतिबद्धता की भी माँग क्यों नहीं करते जैसे स्थानीय राष्ट्रीय तथा वैश्विक विशिष्ट वर्ग की, जिनमें राजनीतिशास्त्री भी शामिल हों?'

अहिंसक क्षमताओं का निरीक्षण हमारे विश्वास को आधार देता है कि मनुष्य अहिंसावादी परिवर्तन करने में समर्थ है। वस्तुत: एक अहिंसावादी समाज के सभी अंगभूत तत्त्वों का वर्णन कहीं-कहीं पर मानव अनुभवों में हुआ है। इन्हें पहचानने, संपूरित करने तथा स्थानीय एवं विश्वस्तरीय आवश्यकताओं एवं दशाओं के अनुसार रूपांतरित करने की जरूरत है। भूत एवं वर्तमानकालीन खून-खराबे की भयानक स्मृति, अहिंसायुक्त प्रेरणाओं एवं समाजीकरण के लिए एक शक्तिशाली स्रोत के रूप में काम करती हैं। हमें मानवता की हत्यापूर्ण गलतियों को किसी भी कीमत पर नहीं दुहराना चाहिए। इसलिए हिंसा को प्रचलित रखने अथवा हिंसा की ओर वापस आने को असंभव बनाने के लिए कार्य करना चाहिए।

मानवशास्त्री क्लेटन एवं केरोल रोबरचैक (Robarchek) (1998) ने बताते हैं कि 1958 के 30 वर्षों की अल्पावधि में इक्वेडोर के वाओरानी (Waorani) लोगों द्वारा मानव हत्या में 90 प्रतिशत की कमी यह दर्शाती है कि मनुष्य शीघ्रता से अहिंसापूर्ण परिवर्तन करने में सक्षम है। पिछली शताब्दी में मानव हत्या के 60 प्रतिशत दर के कारण वाओरानी लोगों को "मानवशास्त्र का सबसे हिंसक समाज" समझा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र के प्रति 100,000 पर 10 अथवा इससे भी कम की तुलना में वहाँ मानव हत्या की दर प्रति 100,000 जनसंख्या पर 1000 थी। परंतु तीन दशकों के दौरान वाओरानी लोगों ने हत्या में प्रति 100,000 पर 60 की गिरावट दर्शायी है। इस परिवर्तन में मुख्य योगदान था दो ईसाई महिला मिशनरियों का जिनके पति व भाई वाओरानी लोगों के साथ असफल संपर्क स्थापित करने की कोशिश में शहीद हो गए। कई वाओरानी महिलाओं का भी इसमें योगदान है। इसमें योगदान है वैकल्पिक अहिंसक मूल्य प्रणाली की स्थापना, नई संज्ञानों का (जैसे, 'अन्य लोग नरभक्षी नहीं होते।' यह जानकारी उन वाओरानी महिलाओं ने दी जो बाहर की दुनिया

देख आई थीं) तथा वाओरानी लोगों की आपसी दुश्मनी से उत्पन्न हुई हत्याओं के अनन्त सिलसिले जिसने परिवारों को भालों से भेद दिया गया था, को खत्म करने की इच्छा का मानव हत्या में कमी पुलिस अथवा अन्य बलों के सहयोग के बिना तथा स्थापित सामाजिक ढांचागत परिवर्तन के बिना प्राप्त हुई। इसके विपरीत, ढांचागत परिवर्तन स्वयं नये अहिंसावादी आध्यात्मिक संलग्नता के संयोग का अनुकरण करने लगे एवं नयी जानकारियों को हासिल करने लगे। यहाँ तक कि गैर-वायोरानी लोगों के समूह में भी बदलाव होने लगा।

रोबरचेक्स के अनुसार मूल्यों व संरचनाओं का यह महत्त्वपूर्ण परिस्थापन महत्त्वपूर्ण सैद्धांतिक मान्यताओं को पुष्ट करता है :

> लोगों ऐसी निष्क्रिय मशीन के रूप में नहीं समझा जाता जिन्हें पर्यावरण, जैविक कारण या सामाजिक-सांस्कृतिक कारक क्रियाशील होने के लिए धकेल रहे हैं। वे सक्रिय निर्णयकर्ता हैं जो व्यक्तिगत व सांस्कृतिक आधार पर परिभाषित लक्ष्यों के लिए एक सांस्कृतिक आधार पर परिभाषित वास्तविकता (जिसे वे निरंतर निर्मित व पुनर्निर्मित कर रहे हैं) में विकल्पों व बाधाओं के जंगल में अपना रास्ता ढूंढते रहे हैं।

एक अहिंसावादी राजनीति विज्ञान की दृष्टि से, वाओरानी लोगों का अनुभव, परिवर्तन के लिए सृजनशील नेतृत्व के कार्य में विद्यमान रूपांतरण की क्षमता का साक्ष्य प्रदान करता है। जो वाओरानी कर सकते हैं वही राजनीति विज्ञान भी एक व्यवसाय के रूप में तथा समाज की सेवा में कर सकता है। न तो वाओरानी लोगों के लिए न ही विश्व के लिए बल्कि हिंसा से मुक्ति के लिए अभी बहुत से काम करने बाकी है। ऊर्जा कार्यक्रमों में लगे बाहरी आक्रमणकारियों के द्वारा तथा उन वाओरानी पड़ोसियों के द्वारा जो अभी भी आध्यात्मिक ज्ञान के प्रभाव से अछूते हैं किये जाने वाले आक्रमणों से हत्याओं की पुनरावृत्ति होती रही है। यद्यपि अहिंसापूर्ण छोटे क्षेत्र वैश्विक परिवर्तन के लिए संभव एवं आवश्यक है परंतु अहिंसा का प्रभाव तथा व्यवहार अवश्य ही विश्वव्यापी होना चाहिए।

भूमण्डलीय आग्रह

अहिंसावादी राजनीति विज्ञान को आवश्यक रूप से विश्व-स्तरीय होना चाहिए। खोज की दृष्टि से, रचनात्मकता की दृष्टि से, विविधता की दृष्टि से, और प्रभाव की दृष्टि से इसे विश्वस्तरीय ही होना चाहिए। आत्म विज्ञान, कुशलता, गायन, संस्थानात्मक अभिव्यक्ति और संसाधन प्रतिबद्धता की दृष्टि से भी इसे विश्वस्तरीय होना चाहिए।

राजनीतिशास्त्र को सृजनशील नेतृत्व के पोषण व जीवन का उत्सव मनाने वाली पहल में, सभी को शक्तिसंपन्न व समर्थित करने के विषय में, मानव आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समस्या-समाधान की करुणायुक्त प्रतिबद्धता में, तथा कहीं भी हत्या न हो, इस निश्चय में, वैश्विक होना चाहिए। सहभागिता (क्योंकि किसी भी अकेले विषय, व्यवसाय या समाज के पास आवश्यकतानुसार ज्ञान, कुशलता व साधन नहीं हैं), स्थानीय कल्याण के लिए प्रतिबद्धता (क्योंकि एक के कल्याण में विश्व का कल्याण समाहित है) तथा अहिंसा के प्रति विविध व बहु-निष्ठाओं (अपने तथा दूसरे समाजों में) के प्रति सम्मान भी वैश्विक होना चाहिए)। जो लोग स्वतंत्रता, समानता, समृद्धि एवं शांति के रास्ते में बाधा पहुँचाने वाली घातकता के युग का अंत करने के लिए अध्ययन, शिक्षण व व्यवहार कर रहे हैं उनका परस्पर समर्थन भी विश्व स्तर पर होना चाहिए। यह वैश्विक दृष्टिकोण वैसा होगा जैसा चाँद से अपने ग्रह पृथ्वी को देख कर प्रतीत होता है जहाँ से हम में से प्रत्येक जीवन की एक क्षणभंगुर चिंगारी नजर आता है परंतु फिर भी अहिंसक विश्व के निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण योगदानकर्ता है।

विश्व जीवन से घातकता को समाप्त करने का लक्ष्य राजनीति शास्त्र से यह अपेक्षा रखता है कि वह हिंसा की स्वीकृति को छोड़कर ऐसे अहिंसक शास्त्र में परिवर्तित हो जाए जो प्रेम, मानव कल्याण एवं सृजनात्मक क्षमता की मुक्त अभिव्यक्ति के प्रति समर्पित हो।

क्या एक हत्यामुक्त संभव है?

क्या एक हत्यामुक्त विश्व राजनीति विज्ञान संभव है?

हाँ .....!

Appendix A

INTERNATIONAL POLITICAL SCIENCE ASSOCIATION NATIONAL ASSOCIATIONS —1999

Name	Year Founded (Predecessor Organization)	Membership
African Association of Political Science	1974 (1973)	1,360
Argentine Association of Political Analysis	1981 (1957)	180
Australasian Political Studies Association	1966 (1952)	425
Austrian Political Science Association	1970 (1951)	537
Flemish Political Science Association	1979 (1951)	450
Association Belge de Science Politique/ Communauté Française de Belgique	1996 (1951)	50
Brazilian Political Science Association	1952	*
Bulgarian Political Science Association	1973 (1968)	72
Canadian Political Science Association	1968 (1913)	1,200
Chilean Political Science Association	*	*
Chinese Association of Political Science	1980	1,025
Croatian Political Science Association	1966	100
Czech Political Science Association	1964	200
Danish Association of Political Science	1960	350
Finnish Political Science Association	1935	550
Association française de science politique	1949	1,030
German Political Science Association	1951	1,300
Hellenic Political Science Association	1957 (1951)	265
Hungarian Political Science Association	1982 (1968)	468
Indian Political Science Association	1935	1,600
Political Studies Association of Ireland	1982	247
Israel Political Science Association	1950	250
Italian Political Science Association		220

Japanese Political Science Association		1,278
Korean Political Science Association	1953	2,000
Korean Association of Social Scientists	1979	1,465
Lithuanian Political Science Association	1991	86
Mexican Political Science Association	*	*
Dutch Political Science Association	1966 (1950)	350
New Zealand Political Studies Association	1974	*
Nigerian Political Science Association	*	*
Norwegian Political Science Association	1956	500
Pakistan Political Science Association	1950	300
Philippine Political Science Association	*	*
Polish Association of Political Science	1950	200
Romanian Association of Political Science	1968	188
Russian Political Science Association	1991 (1960)	300
Slovak Political Science Association	1990	150
Slovenian Political Science Association	1968	220
South African Political Studies Association	1973	186
Spanish Association of Political and Administrative Science	1993 (1958)	253
Swedish Political Science Association	1970	264
Swiss Political Science Association	1950	1,000
Chinese Association of Political Science (Taipei)	1932	350
Political Science Association of Thailand	*	*
Turkish Political Science Association	1964	120
Political Studies Association of the UK	1964	1,200
American Political Science Association	1903	13,300
Association of Political Science of Uzbekistan	*	*
Venezuelan Political Science Association	1974	*
Yugoslav Political Science Association	1954	*

Total: 35,689 +
*Data not provided.

Source: *Participation* (2000) 24/3: 24–32. Bulletin of the International Political Science Association / Bulletin de l'association internationale de science politique.

Appendix B

INTERNATIONAL POLITICAL SCIENCE ASSOCIATION FIELDS OF INQUIRY— 1997

Main Fields

Central Government
Area Studies
Legislatures
International Relations
Political Executives
International Law
Judicial Systems and Behaviour
Public Administration
Political Parties
Public Policy
Elections and Voting Behaviour
Local and Urban Politics
Pressure Groups
Women and Politics
Political Theory and Philosophy
Developmental Politics
Comparative Politics
Political Science Methods

Research Committees

Conceptual and Terminological Analysis
Political Elites

European Unification
Public Bureaucracies in Developing Societies
Comparative Studies on Local Government and Politics
Political Sociology
Women, Politics, and Developing Nations
Legislative Specialists
Comparative Judicial Studies
Global Policy Studies
Science and Politics
Biology and Politics
Democratization in Comparative Perspective
Politics and Ethnicity
Political Geography
Socio-Political Pluralism
The Emerging International Economic Order
Asian and Pacific Studies
Sex Roles and Politics
Political Finance and Political Corruption
Political Socialization and Education
Political Communication
Political Support and Alienation
Armed Forces and Society
Comparative Health Policy
Human Rights
Structure and Organization of Government
Comperative Federation and Federalism
Psycho-Politics
Comparative Public Opinion
Political Philosophy
Public Policy Analysis
Comparative Study of the Discipline of Political Science
Comparative Representation and Electoral System
Technology and Development
Political Power
Rethinking in Political Development
Politics and Business

Study Groups

The Welfare State and Developing Societies
Public Enterprises and Privatization
New World Orders
Geopolitics
System Integration of Divided Nations
Religion and Politics
Military Rule and Democratization in the Third World
International Data Development
Politics of Global Environmental Change
Local-Global Relations
Administrative Culture
Socialism, Capitalism and Democracy

Source: *Participation* (1997) 21 (3): 53.

Appendix C

AMERICAN POLITICAL SCIENCE ASSOCIATION FIELDS OF INQUIRY—1998

General Fields (Members on APSA mailing list)

American Government and Politics (4,265)
Comparative Politics (4,340)
International Politics (3,450)
Methodology (1,062)
Political Philosophy and Theory (2,119)
Public Administration (1,240)
Public Law and Courts (1,032)
Public Policy (2,391)

Subfields

Advanced Industrial Societies
Africa
African American Politics
Asian American Politics
Australia
Balkans
Baltics
Bureaucracy and Organizational Behavior
Canada
Caribbean
Central America
Central Asia

China
Civil Rights and Liberties
Conflict Processes
Congress
Constitutional Law and Theory
Criminal Justice
Defense
Developing Nations
East Asia
Economic Policy
Education Policy
Electoral Behavior
Electoral Systems
Energy Policy
Environmental Policy
Ethnic and Racial Politics
Evaluation Research
Executive Politics
Federalism and Intergovernmental Relations
Feminist Theory
Foreign Policy
France
Gender Politics and Policy
Germany
Great Britain
Health Care
History and Politics
Housing
Immigration Policy
India
International Law and Organizations
International Political Economy
International Security
Japan
Judicial Politics

Labor Policy
Latin America
Latino Politics
Leadership Studies
Legislative Studies
Lesbian and Gay Politics
Life Sciences and Politics
Literature and Politics
Mexico
Middle East
Native American Politics
Normative Political Theory
North America
Political Behavior
Political Communication
Political Development
Political Economy
Political Parties and Organizations
Political Psychology
Political Thought: Historical
Positive Political Theory
Post Communist Europe
Post Soviet Region
Presidency
Public Finance and Budgeting
Public Opinion
Regulatory Policy
Religion and Politics
Research Methods
Russia
Scandinavia
Science and Technology
Social Movements
Social Welfare
South Africa

South America
South Asia
Spain
State Politics
Trade
Ukraine
United States
Urban Politics
Western Europe
Women and Politics

Sections (Members on mailing list)

Federalism and Intergovernmental Relations (386)
Law and Courts (757)
Legislative Studies (589)
Public Policy (791)
Political Organizations and Parties (540)
Public Administration (612)
Conflict Processes (281)
Representation and Electoral Systems (326)
Presidency Research (394)
Political Methodology (585)
Religion and Politics (415)
Urban Politics (394)
Science, Technology and Environmental Politics (327)
Women and Politics (560)
Foundations of Political Theory (531)
Computers and Multimedia (238)
International Security and Arms Control (441)
Comparative Politics (1,372)
Politics and Society in Western Europe (390)
State Politics and Policy (362)
Political Communication (381)
Politics and History (585)

Political Economy (612)
Ecological and Transformational Politics (248)
New Political Science (248)
Political Psychology (299)
Undergraduate Education (329)
Politics and Literature (275)
Domestic Sources of Foreign Policy (310)
Elections, Public Opinion and Voting Behavior (632)
Race, Ethnicity and Politics (442)

Source: American Political Science Association, *Mailing Lists to Reach Political Scientists*, 1998.

Appendix D

RELIGIOUS DENOMINATIONS OF CONSCIENTIOUS OBJECTORS IN U.S. WORLD WAR II CIVILIAN PUBLIC SERVICE CAMPS (NUMBER OF MEMBERS IN CPS)

Advent Christian	3
African Methodist Episcopal	1
Ambassadors of Christ	1
Antinsky Church	1
Apostolic	2
Apostolic Christian Church	3
Apostolic Faith Movement	2
Assemblies of God	32
Assembly of Christians	1
Assembly of Jesus Christ	1
Associated Bible Students	36
Baptist, Northern	178
Baptist, Southern	45
Berean Church	1
Bible Students School	1
Body of Christ	1
Brethren Assembly	1
Broadway Tabernacle	1
Buddhist	1
Calvary Gospel Tabernacle	1
Catholic, Roman	149
Christadelphians	127
Christian Brethren	1

Christian Catholic Apostolic	1
Christian Convention	1
Christian Jew	1
Christian & Missionary Alliance	5
Christian Missionary Society	1
Christian Scientist	14
Christ's Church	1
Christ's Church of the Golden Rule	3
Christ's Followers	1
Christ's Sanctified Holy Church	2
Church (The)	1
Church of the Brethren	1,353
Church of Christ	199
Church of Christ Holiness	1
Church of Christian Fellowship	1
Church of England	1
Church of the First Born	11
Church of the Four Leaf Clover	1
Church of the Full Gospel, Inc.	1
Church of God of Abrahamic Faith	13
Church of God of Apostolic Faith	4
Church of God Assembly	1
Church of God in Christ	12
Church of God, Guthrie, Okla.	5
Church of God, Holiness	6
Church of God, Indiana	43
Church of God & Saints of Christ	12
Church of God, Sardis	1
Church of God, Seventh Day	21
Church of God, Tennessee (two bodies)	7
Church of God (several bodies)	33
Church of the Gospel	1
Church of Jesus Christ	1
Church of Jesus Christ, Sullivan, Indiana	15

Church of Light	1
Church of the Living God	2
Church of the Lord Jesus Christ	1
Church of the Open Door	1
Church of the People	1
Church of Radiant Life	1
Church of Truth (New Thought)	1
Circle Mission (Father Divine)	10
Community Churches	12
Congregational Christian	209
Defenders	1
Disciples Assembly of Christians	1
Disciples of Christ	78
Dunkard Brethren	30
Doukhobor (Peace Progressive Society)	3
Elim Covenant Church	1
Emissaries of Divine Light	1
Episcopal	88
Essenes	5
Ethical Culture, Society of	3
Evangelical	50
Evangelical-Congregational	2
Evangelical Mission Convent (Swedish)	11
Evangelical & Reformed	101
Evangelistic Mission	3
Faith Tabernacle	18
Federated Church	1
Filipino Full Gospel	1
Fire Baptized Holiness	3
First Apostolic	1
First Century Gospel	28
First Divine Association in America, Inc.	16
First Missionary Church	2
Followers of Jesus Christ	4

Four Square Gospel	2
Free Holiness	3
Free Methodist	6
Free Pentecostal Church of God	4
Free Will Baptist	2
Friends, Society of (Quakers)	951
Full Gospel Conference of the World, Inc.	4
Full Gospel Mission	3
Full Salvation Union	1
Galilean Mission	1
German Baptist Brethren	157
German Baptist Convention of North America	4
Glory Tabernacle	2
God's Bible School	1
Gospel Century	1
Gospel Chapel	2
Gospel Hall	1
Gospel Meeting Assembly	1
Gospel Mission	2
Gospel Tabernacle	2
Gospel Temple	1
Grace Chapel	1
Grace Truth Assembly	1
Gracelawn Assembly	1
Greek Apostolic	1
Greek Catholic	1
Greek Orthodox	1
Hepzibah Faith	6
Hindu Universal	1
Holiness Baptist	1
Holiness General Assembly	1
House of David	2
House of Prayer	1
Humanist Society of Friends	2

Immanuel Missionary Association	13
Independent Assembly of God	2
Independent Church	2
Institute of Religious Society & Philosophy	1
Interdenominational	16
International Missionary Society	2
Jehovah's Witnesses	409
Jennings Chapel	9
Jewish	60
Kingdom of God	1
Kingdom Missionaries	1
Latin American Council of Christian Churches	1
Lemurian Fellowship	9
Lord our Righteousness	1
Lutheran (nine synods)	108
Lutheran Brethren	2
Mazdaznam	1
Megiddo Mission	1
Mennonites	4,665
Methodist	673
Missionary Church Association	8
Moody Bible Institute	2
Mormons (Church of Jesus Christ of Latter Day Saints	10
Moravian	2
Moslem	1
Multnomah School of the Bible	2
National Baptist Convention, U.S.A., Inc.	5
National Church of Positive Christianity	5
Nazarene, Church of the	23
New Age Church	3
Norwegian Evangelical Free Church	2
Old German Baptist	7
Open Bible Standard	1
Orthodox Parsee Z.	2

Overcoming Faith Tabernacle	1
Oxford Movement	1
Pentecostal Assemblies of Jesus Christ	1
Pentecostal Assemblies of the World	3
Pentecostal Assembly	2
Pentecostal Church, Inc.	2
Pentecostal Evangelical	1
Pentecostal Holiness	6
People's Christian Church	1
People's Church	3
Pilgrim Holiness	3
Pillar of Fire	1
Pillar and Ground of the Truth	1
Placabel Council of Latin Am. Churches	1
Plymouth Brethren	12
Plymouth Christian	1
Presbyterian, U.S	5
Presbyterian, U.S.A.	192
Primitive Advent	2
Progressive Brethren	1
Quakertown Church	1
Reading Road Temple	1
Reformed Church of America (Dutch)	15
Reformed Mission of the Redeemer	1
Rogerine Quakers (Pentecostal Friends)	3
Rosicrusian	1
Russian Molokan (Christian Spiritual Jumpers)	76
Russian Old Testament Church	1
Saint's Mission	1
Salvation Army	1
Sanctified Church of Christ	1
Scandinavian Evangelical	1
Schwenkfelders (Apostolic Christian Church, Inc.	1
School of the Bible	1

Serbian Orthodox	1
Seventh Day Adventist	17
Seventh Day Adventist, Reformed	1
Seventh Day Baptist	3
Shiloh Tabernacle	1
Spanish Church of Jesus Christ	1
Spiritual Mission	1
Spiritualist	1
Swedenborg	1
Taoist	1
Theosophists	14
Trinity Tabernacle	1
Triumph the Church & Kingdom of God in Christ	1
Triumph Church of the New Age	1
True Followers of Christ	1
Truelight Church of Christ	1
Twentieth Century Bible School	5
Unitarians	44
Union Church (Berea, Ky.)	4
Union Mission	1
United Baptist	1
United Brethren	27
United Christian Church	2
United Holiness Church, Inc.	1
United Holy Christian Church of America	2
United International Young People's Assembly	2
United Lodge of Theosophists	2
United Pentecostal Council of the Assemblies of God in America	1
United Presbyterian	12
Unity	3
Universal Brotherhood	1
Universalist	2
War Resister's League	46
Wesleyan Methodist	8

World Student Federation	2
Young Men's Christian Association (YMCA)	2
Zoroastrian	2
Total affiliated with denominations:	10,838
Non-affiliated	449
Denominations unidentified	709
Total:	**11,996**

Source: Anderson 1994: 280-6. Cf. Selective Service System 1950: 318-20

NOTES

Epigraphs: Alfred North Whitehead in Alan L. Mackay, comp., *A Dictionary of Scientific Quotations* (Bristol, UK: Institute of Physics Publishing, 1991), 262. **Chapter 1**: Bertrand Russell, *Wisdom of the West* (New York: Crescent Books, 1977), 10; Jawaharlal Nehru, *An Autobiography* (New Delhi: Oxford University Press, 1982), 409. **Chapter 2**: Daniels and Gilula, 1970: 27. **Chapter 3**: G. Ramachandran, remarks at the Conference on Youth for Peace, University of Kerala, Trivandrum, India, February 23, 1986. **Chapter 4**: Nobel Prize Winners, 1981: 61. **Chapter 5**: Alexis de Tocqueville, quoted in Wilson, 1951: 244; Petra K. Kelly, *Thinking Green!* (Berkeley, Calif.: Parallax Press, 1994), 38. **Chapter 6:** General Douglas MacArthur in Cousins 1987: 69; Martin Luther King, Jr., "The Future of Integration," pamphlet of speech at a Manchester College convocation, North Manchester, Indiana, February 1, 1968, 9; Max Weber in Weber 1958: 128; Gandhi 1958-1994: Vol. XXVI, 1928, 68.

1. Lest this be regarded as too harsh a portrait of patriotic United States lethality, consider the battle cry introduced into the *Congressional Record* on April 16, 1917 by Senator Robert L. Owen, Democrat of Oklahoma, in support of American entry into World War I.

> Mr. President, I found in a western paper a few days ago an editorial in the Muskogee Phoenix, Muskogee Okla., written by Tams Bixby, Esq., former chairman of the Dawes Commission. It breathes a high, pure note of Christian patriotism, which I think deserves a place in our annals at this time. I wish to read it. It is very short. It is entitled:
> ONWARD, CHRISTIAN SOLDIERS!
> The United States of America, given to the world by the Pil-

grim Fathers, through their love and devotion to the Omnipotent ruler of the destinies of men, has declared war on the anniversary of our Savior's crucifixion.

It is altogether fitting and proper that it should be as it is. Loyal Americans will go forth to war not only as the champions of liberty and freedom and humanity but as soldiers of the cross. As He died upon the cross nearly 2,000 years ago for the salvation of mankind Americans will die upon the field of battle to make this a better world.

Through America's blood the world is to be purged of a barbaric, heathenish dynasty that in its lust has forgotten the teachings of our Savior. It is a noble thing to die and to suffer that men may be brought nearer to God.

America, unafraid, girded with the armor of righteousness, strides forth to battle. There is no hatred in our hearts; we bear no malice toward our enemies; we ask no conquest nor material reward. America, true to the traditions that gave her birth, is to wage a noble, Christian war. We are willing to die if need be to bring to all men once more the message of peace on earth, good will. And in this sacred hour America offers for her enemies the prayer of the cross, "Father, forgive them; they know not what they do."

The call to arms has been sounded. America, champion of righteousness, of civilization, and of Christianity, with a clear heart and willing hand, marches forth.
Amid the clamor and the cries of battle come the strains of the hymn of the united allies of mankind: "Onward, Christian Soldier!"

Congressional Record, 65th Cong., 1st sess., 1917, Vol. 55, Pt. 1, 719.

2. The Seville Statement signers were: David Adams, psychology (U.S.A.); S.A. Barnett, ethology (Australia); N.P. Bechtereva, neurophysiology (U.S.S.R.); Bonnie Frank Carter, psychology (U.S.A.); José M. Rodríguez Delgado, neurophysiology (Spain); José Luis Días, ethology (Mexico); Andrzej Eliasz, individual differences psychology (Poland); Santiago Genovés, biological anthropology (Mexico); Benson E. Ginsburg, behavior genetics (U.S.A.); Jo Groebel, social psychology (Federal Republic of Germany); Samir-Kumar Ghosh, sociology (India); Robert Hinde, animal behaviour (U.K.); Richard E. Leakey, physical anthropology (Kenya); Taha H. Malasi, psychiatry (Kuwait); J. Martín Ramírez, psychobiology (Spain); Federico Mayor Zaragoza, biochemistry (Spain); Diana L. Mendoza, ethology (Spain); Ashis Nandy, political psychology (India); John Paul Scott, animal behavior (U.S.A.); and Riitta Wahlström psychology (Finland).
3. The Fellowship Party, 141 Woolacombe Road, Blackheath, London, SE3 8QP, U.K.
4. Bündnis 90/Die Grünen (Alliance 90/The Greens), Bundeshaus, Bonn 53113, Germany.
5. The United States Pacifist Party, 5729 S. Dorchester Avenue, Chicago, Illinois 60617, U.S.A. Internet: http://www.geocities.com/CapitolHill/Lobby/4826.
6. The Sarvodaya Party, Unnithan Farm, Jagatpura, Malaviya Nagar P.O., Jaipur-302017, Rajasthan, India.
7. Transnational Radical Party, 866 UN Plaza, Suite 408, New York, N.Y. 10017, U.S.A. Internet: http://www.agora.stm.it or www.radicalparty.org.
8. The House of Representatives vote was 373 yeas, 50 nays, and 9 not voting. Representatives voting against war: Edward B. Almon, Democrat of Alabama; Mark R. Bacon, Republican of Michigan; Frederick A. Britten, Republican of Illinois; Edward E. Browne, Republican of Wisconsin; John L. Burnett, Democrat of Alabama; William J. Cary, Republican of Wisconsin; Denver S. Church, Democrat of California; John R. Connelly, Democrat of Kansas; Henry A. Cooper, Republican of Wisconsin; James H. Davidson, Republican of Wisconsin; Charles R. Davis, Republician of Minnesota; Perl D. Decker, Democrat of Missouri; Clarence E. Dill, Democrat of Washington; Charles H. Dillon, Republican of South Dakota; Frederick H. Dominick, Democrat of South Carolina; John J. Esch, Republican of Wisconsin; James A. Frear, Republican of Wisconsin; Charles E. Fuller, Republican of Illinois; Gilbert N. Hauge,

Republican of Iowa; Everis A. Hayes, Republican of California; Walter L. Hensley, Democrat of Missouri; Benjamin C. Hilliard, Democrat of Colorado; Harry E. Hull, Republican of Iowa; William L. Igoe, Democrat of Missouri; Royal C. Johnson, Republican of South Dakota; Edward Keating, Democrat of Colorado; Edward J. King, Republican of Illinois; Moses P. Kinkaid, Republican of Nebraska; Claude Kitchin, Democrat of North Carolina; Harold Knutson, Republican of Minnesota; William L. LaFollette, Republican of Washington; Edward E. Little, Republican of Kansas; Meyer London, Socialist of New York; Ernest Lundeen, Republican of Minnesota; Atkins J. McLemore, Democrat of Texas; William E. Mason, Republican of Illinois; Adolphus P. Nelson, Republican of Wisconsin; Charles H. Randall, Prohibitionist of California; Jeannette Rankin, Republican of Montana; Charles F. Reavis, Republican of Nebraska; Edward E. Roberts, Republican of Nevada; William A. Rodenberg, Republican of Illinois; Dorsey W. Shackleford, Democrat of Missouri; Isaac R. Sherwood, Republican of Ohio; Charles H. Sloan, Republican of Nebraska; William H. Stafford, Republican of Wisconsin; Carl C. Van Dyke, Democrat of Minnesota; Edward Voigt, Republican of Wisconsin; Loren E. Wheeler, Republican of Illinois; and Frank P. Woods, Republican of Iowa. *Congressional Record*, 65th Cong., 1st sess., 1917, Vol. 55, Pt. 1, 413.

9. The Senate vote was 82 yeas, 6 nays, and 8 not voting. Senators voting against war: Asle J. Gronna, Republican of North Dakota; Robert M. LaFollette, Republican of Wisconsin; Harry Lane, Democrat of Oregon; George W. Norris, Republican of Nebraska; William J. Stone, Democrat of Missouri; and James K. Vardaman, Democrat of Mississippi. *Congressional Record*, 65th Cong., 1st sess., 1917, Vol. 55, Pt. 1, 261.

10. Nobel prize signers of the Manifesto on the economic "holocaust" were: Vincente Aleixandre (literature, 1977); Hannes Alfven (physics, 1970); Philip Anderson (physics, 1977); Christian Afinsen (chemistry, 1972); Kenneth Arrow (economics, 1972); Julius Axelrod (medicine, 1970); Samuel Beckett (literature, 1969); Baruj Benacerraf (medicine, 1980); Heinrich Böll (literature, 1972); Norman Ernest Borlaug (peace, 1970); Owen Chamberlin (physics, 1959); Mairead Corrigan (peace, 1976); André Cournand (medicine, 1956); Jean Dausset (medicine, 1980); John Carew Eccles (medicine, 1963); Odysseus Elytis (literature, 1979); Ernst Otto Fischer (chemistry, 1973); Roger Guillemin (medicine, 1977); Odd Hassel (chemistry, 1969); Gerhard Herzberg (chemis-

try, 1971); Robert Hofstadter (physics, 1961); François Jacob (medicine, 1965); Brian Josephson (physics, 1973); Alfred Kastler (physics, 1966); Lawrence R. Klein (economics, 1980); Polykarp Kusch (physics, 1955); Salvador Luria (medicine, 1969); André Lwoff (medicine, 1965); Seán MacBride (peace, 1974); Cweslaw Milosz (literature, 1980); Eugenio Montale (literature, 1975); Nevill Mott (physics, 1977); Gunnar Myrdal (economics, 1974); Daniel Nathans (medicine, 1978); Philip Noel-Baker (peace, 1959); Adolfo Pérez Esquivel (peace, 1980); Rodney Robert Porter (medicine, 1972); Ilya Prigogine (chemistry, 1977); Isidor Isaac Rabi (physics, 1944); Martin Ryle (physics, 1974); Abdus Salam (physics, 1979); Frederik Sanger (chemistry, 1958 and 1980); Albert Szent-Gyorgyi (medicine, 1937); Hugo Theorell (medicine, 1955); Jan Tinbergen (economics, 1969); Nikolas Tinbergen (medicine, 1973); Charles Hard Townes (physics, 1964); Ulf von Euler (medicine, 1970); George Wald (medicine, 1967); James Dewey Watson (medicine, 1962); Patrick White (literature, 1973); Maurice Wilkins (medicine, 1962); Betty Williams (peace, 1976).

BIBLIOGRAPHY

ACKERKNECHT, ERWIN H. 1982. *A Short History of Medicine.* Baltimore: Johns Hopkins University Press.

ACKERMAN, Peter and DUVALL, Jack. 2000. *A Force More Powerful: A Century of Nonviolent Conflict.* New York: St. Martin's Press.

_____ and KRUEGLER, C. 1994. *Strategic Nonviolent Conflict.* Westport, Conn.: Praeger.

ADAMS, DAVID *et al.* 1989. Statement on violence. *Journal of Peace Research,* 26: 120–21.

_____ 1997. War is not in our biology: a decade of the Seville statement on violence. In Grisolía et al. 1997: 251–56.

ALMOND, GABRIEL A. 1996. Political science: the history of the discipline. In Goodin and Klingemann 1996: 50–96.

ALPEROVITZ, GAR. 1995. *The Decision to Use the Atomic Bomb.* New York: Alfred A. Knopf.

AMATO, JOSEPH A. 1979. Danilo Dolci: a nonviolent reformer in Sicily. In Bruyn and Rayman 1979: 135–60.

AMNESTY INTERNATIONAL. 2000. *The Death Penalty,* ACT 50/05/00, April 2000.

ANDERSON, RICHARD C. 1994. *Peace Was In Their Hearts: Conscientious Objectors in World War II.* Watsonville, Calif.: Correlan Publications.

AQUINO, CORAZON C. 1997. Seeds of nonviolence, harvest of peace: The Philippine revolution of 1986. In Grisolía *et al.* 1997: 227–34.

ARENDT, HANNAH. 1970. *On Violence.* New York: Harcourt, Brace & World.

_____ 1982. *Lectures on Kant's Political Philosophy.* Chicago: University of Chicago Press.

ARISTOTLE. 1962. *The Politics,* trans. T.A. Sinclair. Harmondsworth: Penguin.

ASHE, GEOFFREY. 1969. *Gandhi.* New York: Stein and Day.

AUNG SAN SUU KYI. 1998. *The Voice of Hope.* New York: Seven Stories Press.

BAHÁ'U'LLÁH. 1983. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh.* Wilmette, Ill.: Bahá'í Publishing Trust.

BANERJEE, MUKULIKA. 2000. *The Pathan Unarmed,* Karachi & New Delhi: Oxford University Press.

BARBEY, CHRISTOPHE. 2001. *La non-militarisation et les pays sans armée*: une réalité! Flendruz, Switzerland: APRED.

BAXTER, ARCHIBALD. 2000. *We Will Not Cease.* Baker, Ore.: The Éddie Tern Press.

BEBBER, CHARLES C. 1994. Increases in U.S. violent crime during the 1980s following four American military actions. *Journal of Interpersonal Violence* 9(1): 109–16.

BEER, MICHAEL. 1994. Annotated bibliography of nonviolent action training. *International Journal of Nonviolence,* 2: 72–99.

BEISNER, ROBERT L. 1968. *Twelve Against Empire: The Anti-Imperialists, 1898–1900.* New York: McGraw-Hill.

BENDAÑA, ALEJANDRO. 1998. "From Guevara to Gandhi." Managua, Nicaragua: Centro de Estudios Internationales.

BENNETT, LERONE JR. 1993. *Before the Mayflower: A History of Black America.* New York: Penguin Books.

BHAVE, VINOBA. 1963. *Shanti Sena,* 2nd ed., trans Marjorie Sykes. Rajghat, Varanasi, India: Sarva Seva Sang Prakashan.

_____ 1994. *Moved by Love: The Memoirs of Vinoba Bhave,* trans. Marjorie Sykes. Hyderabad: Sat Sahitya Sahayogi Sangh.

BING, ANTHONY G. 1990. *Israeli Pacifist: The Life of Joseph Abileah.* Syracuse, N.Y.: Syracuse University Press.

BISWAS, S.C. ed. 1990 (1969). *Gandhi: Theory and Practice. Social Impact and Contemporary Relevance.* Shimla: Indian Institute of Advanced Study.

BONDURANT, JOAN V. 1969. *Conquest of Violence: The Gandhian Philosophy of Conflict.* Berkeley: University of California Press.

BONTA, BRUCE D. 1993. *Peaceful Peoples: An Annotated Bibliography.* Metuchen, N.J. and London: Scarecrow Press.

_____ 1996. Conflict resolution among peaceful societies: the culture of peacefulness. *Journal of Peace Research,* 33: 403–420.

BOORSTIN, DANIEL J. 1983. *The Discoverers.* New York: Random House.

_____ 1992. *The Creators.* New York: Random House.

_____ 1998. *The Seekers.* New York: Random House.

BOSERUP, ANDERS and MACK, ANDREW. 1974. *War Without Weapons: Non-Violence in National Defence.* New York: Schocken Books.

BOUBALT, GUY; GAUCHARD, BENOÎT; and MULLER, JEAN-MARIE. 1986. *Jacques de Bollardière: Compagnon de toutes les libérations.* Paris: Non-Violence Actualité.

BOULDING, ELISE. 1980. *Women, the Fifth World.* New York: Foreign Policy Association.

_____ 1992. *New Agendas for Peace Research: Conflict and Security Reexamined.* Boulder, Colo.: Lynne Rienner Publishers.

BOURNE, RANDOLPH S. 1964 (1914–1918). *War and the Intellectuals.* New York: Harper & Row.

BROCK, PETER. 1968. *Pacifism in the United States: From the Colonial Era to the First World War.* Princeton: Princeton University Press.

_____ 1970. *Twentieth Century Pacifism.* New York: D. Van Nostrand.

_____ 1972. *Pacifism in Europe to 1914.* Princeton: Princeton University Press.

_____ 1990. *The Quaker Peace Testimony 1660 to 1914.* York, England: Sessions Book Trust.

_____ 1991a. *Studies in Peace History.* York, England: William Sessions Limited.

_____ 1991b. Conscientious objectors in Lenin's Russia: A report, 1924. Pp. 81–93 in *Studies in Peace History.*

_____ 1992. *A Brief History of Pacifism: From Jesus to Tolstoy.* Syracuse, N.Y.: Syracuse University Press.

BROWN, LESTER *et al.* 1997. *State of the World 1997.* New York: W.W. Norton & Company.

_____ GARDNER, GARY; AND HALWEIL, BRIAN. 1999. *Beyond Malthus: Nineteen Dimensions of the Population Challenge.* New York: W.W. Norton.

BRUYN, SEVERYN T. and RAYMAN, PAULA M., eds. 1979. *Nonviolent Action and Social Change.* New York: Irvington Publishers.

BUREAU OF JUSTICE. 2000a. *Capital Punishment 1999.* Washington: U.S. Department of Justice.

_____ 2000b. *Prison and Jail Inmates at Midyear 1999.* Washington, D.C.: U.S. Department of Justice.

BURGESS, JOHN W. 1934. *Reminiscences of an American Scholar.* New York: Columbia University Press.

BURNS, JAMES MACGREGOR. 1978. *Leadership.* New York: Harper & Row.

BURROWES, ROBERT J. 1996. *The Strategy of Nonviolent Defense: A Gandhian Approach.* Albany: State University of New York Press.

BURTON, JOHN. 1979. *Deviance, Terrorism & War: The Process of Solving Unsolved Social and Political Problems.* New York: St. Martin's Press.

_____ 1984. *Global Conflict: The Domestic Sources of International Crisis.* Brighton: Wheatsheaf Books.

_____ 1996. *Conflict Resolution: Its Language and Processes.* Lanham, Md.: Scarecrow Press.

_____ 1997. *Violence Explained: The Sources of Conflict, Violence and Crime and their Prevention.* Manchester: Manchester University Press.

CAMPBELL, DONALD T. and FISKE, DONALD W. 1959. Convergent and discriminant validation by the multitrait-

multimethod matrix. *Psychological Bulletin* 56 (2): 81–105.

CANADA, GEOFFREY. 1995. *Fist Stick Knife Gun: A Personal History of Violence in America.* Boston: Beacon Press.

CARNEGIE COMMISSION ON PREVENTING DEADLY CONFLICT. 1997. *Preventing Deadly Conflict: Final Report.* Washington, D.C.: Carnegie Commission on Preventing Deadly Conflict.

CARROLL, BERENICE A. 1998. Looking where the key was lost: feminist theory and nonviolence theory. In Satha-Anand and True 1998: 19–33.

CASE, CLARENCE M. 1923. *Non-Violent Coercion: A Study in Methods of Social Pressure.* London: Allen and Unwin.

CHAPPLE, CHRISTOPHER K. 1993. *Nonviolence to Animals, Earth, and Self in Asian Traditions. Albany: State University of New York Press.*

CHARNY, ISRAEL W. 1982. *How Can We Commit the Unthinkable? Genocide the Human Cancer.* Boulder, Colo.: Westview Press.

CHAUDHURI, ELIANA R. 1998. *Planning with the Poor: The Nonviolent Experiment of Danilo Dolci in Sicily.* New Delhi: Gandhi Peace Foundation.

CHOWDHURY, H.B., ed. 1997. *Asoka 2300.* Calcutta: Bengal Buddhist Association.

CHRISTIAN, R.F. 1978. *Tolstoy's Letters: Volume II 1880-1910.* New York: Charles Scribner's Sons.

CLAUSEWITZ, CARL VON. 1976 (1832). *On War,* ed. and trans. Michael Howard and Peter Paret. Princeton: Princeton University Press.

COMMAGER, HENRY S. 1991. The history of American violence: an interpretation. Pp. 3-28 in *Violence: The Crisis of American Confidence,* ed. Hugh D. Graham. Baltimore: Johns Hopkins Press.

COMMONER, BARRY. 1990. *Making Peace With the Planet.* New York: Pantheon Books.

COMSTOCK, CRAIG. 1971. Avoiding pathologies of defense. Pp. 290–301 in *Sanctions for Evil,* ed. Nevitt Sanford and Craig Comstock. Boston: Beacon Press.

CONSER, WALTER H., Jr.; McCARTHY, RONALD M.; TOSCANO, DAVID J.; and SHARP, GENE., eds. 1986. *Resistance, Politics and the Struggle for Independence.* Boulder, Colo.: Lynne Rienner Publishers.

COOK, PHILIP J. and LUDWIG, JENS. 1997. Guns in America: national survey on private ownership and use of firearms. *Research in Brief,* no. 1026. Washington: National Institute of Justice.

COONEY, ROBERT and MICHALOWSKI, HELEN, eds. 1987. *Power of the People: Active Nonviolence in the United States.* Philadelphia, Penn.: New Society Publishers. (Chief Seattle's message pp. 6–7 has been shown to be a screenwriter's fiction.)

COPPIETERS, BRUNO AND ZVEREV, ALEXEI. 1995. V.C. Bonch-Bruevich and the Doukhobors: on the conscientious-objection policies of the Bolsheviks. *Canadian Ethnic Studies/Etudes Ethniques au Canada* 27(3): 72–90.

COUSINS, NORMAN. 1987. *The Pathology of Power.* New York: W.W. Norton.

CRAIG, LEON H. 1994. *The War Lover: A Study of Plato's Republic.* Toronto: University of Toronto Press.

CROW, RALPH E.; GRANT, PHILIP; and IBRAHIM, SAAD E., eds. 1990. *Arab Nonviolent Political Struggle in the Middle East.* Boulder, Colo.: Lynne Rienner Publishers.

CROZIER, FRANK P. (Brig. Gen.). 1938. *The Men I Killed.* New York: Doubleday.

DALTON, DENNIS. 1993. *Mahatma Gandhi: Nonviolent Power in Action.* New York: Columbia University Press.

DANGE, S.A.; MUKERJEE, H.; SARDESAI, S.G.; and SEN, M. 1977. *The Mahatma: Marxist Evaluation.* New Delhi: People's Publishing House.

DANIELS, DAVID N. and GILULA, MARSHALL F. 1970. Violence and the struggle for existence. In Daniels, Gilula, and Ochberg 1970: 405–43.

_____ GILULA; MARSHALL F.; and OCHBERG, FRANK M., eds. 1970. *Violence and the Struggle for Existence.* Boston: Little, Brown.

DAVIDSON, OSHA G. 1993. *Under Fire: The NRA and the Battle for Gun Control.* New York: Henry Holt.

THE DEFENSE MONITOR. 1972–. Washington, D.C.: Center for Defense Information.

DELLINGER, DAVE. 1970. *Revolutionary Nonviolence.* Indianapolis, Ind.: Bobbs-Merrill.

DENNEN, J.M.G. van der. 1990. Primitive war and the ethnological inventory project. Pp. 247–69 in *Sociobiology and Conflict,* eds. J. van der Dennen and V. Falger. London: Chapman and Hall.

_____ 1995. *The Origin of War.* 2 vols. Groningen: Origin Press.

DENSON, JOHN V., ed. 1997. *The Costs of War: America's Pyrrhic Victories.* New Brunswick, N.J.: Transaction Books.

DHAWAN, GOPINATH. 1957. *The Political Philosophy of Mahatma Gandhi.* Ahmedabad: Navajivan Publishing House.

DISSERTATION ABSTRACTS INTERNATIONAL, 1963–99.

DOGAN, MATTEI and PAHRE, ROBERT. 1990. *Creative Marginality: Innovation at the Intersection of the Social Sciences.* Boulder, Colo.: Westview.

DRAGO, ANTONINO. 1996. When the history of science suggests nonviolence. *The International Journal of Nonviolence* 3: 15–19.

EASWARAN, EKNATH, 1999. *Nonviolent Soldier of Islam.* Tomales, Calif.: Nilgiri Press.

EDGERTON, WILLIAM, ed. 1993. *Memoirs of Peasant Tolstoyans in Soviet Russia.* Bloomington: Indiana University Press.

EIBL-EIBESFELDT, IRENÄUS. 1979. *The Biology of Peace and War: Men, Animals, and Aggression.* New York: Viking Press.

EISENDRATH, MAURICE. 1994. Thou shalt not kill—period. In Polner and Goodman 1994: 139–45.

EISENHOWER, DWIGHT D. 1953. Speech to the American Society of Newspaper Editors, April 16, 1953. Full-page excerpt in *The Wall Street Journal,* May 30, 1985, p. 29.

_____ 1959. BBC TV interview, August 31, 1959. Quoted in Peter Dennis and Adrian Preston, eds., *Soldiers as Statesmen.* New York: Barnes & Noble, 1976, p. 132.

_____ 1961. Farewell broadcast, January 17, 1961. *The Spoken Word,* SW-9403.

EVANS, GWYNFOR. 1973. "Nonviolent Nationalism." New Malden, Surrey: Fellowship of Reconciliation. The Alex Wood Memorial Lecture, 1973.

EVERETT, MELISSA. 1989. *Breaking Ranks.* Philadelphia, Penn.: New Society Publishers.

FABBRO, DAVID. 1978. Peaceful societies: an introduction. *Journal of Peace Research* 15: 67-84.

FEDERAL BUREAU OF INVESTIGATION, U.S. DEPARTMENT OF JUSTICE. 2000. *Crime in the United States 1999.* Washington, D.C.: Federal Bureau of Investigation.

FINER, SAMUEL E. 1997. *The History of Government From the Earliest Times.* New York: Oxford University Press. *Vol. i, Ancient Monarchies and Empires. Vol. ii, The Intermediate Ages. Vol. iii, Empires, Monarchies, and the Modern State.*

FISHER, ROGER and URY, WILLIAM. 1981. *Getting to Yes.* Boston, Mass.: Houghton Mifflin Company.

FOGELMAN, EVA. 1994. *Conscience & Courage: Rescuers of Jews During the Holocaust.* New York: Doubleday.

FOSTER, CATHERINE. 1989. *Women for All Seasons: The Story of the Women's International League for Peace and Freedom.* Athens: University of Georgia Press.

FRANK, JEROME D. 1960. Breaking the thought barrier: psychological challenges of the nuclear age. *Psychiatry* 23: 245–66.

_____ 1993. *Psychotherapy and the Human Predicament,* ed. P.E. Dietz. Northvale, N.J.: Jason Aronson.

FRIEDRICH, CARL J. 1969 (1948). *Inevitable Peace.* New York: Greenwood Press.

FROMM, ERICH. 1973. *The Anatomy of Human Destructiveness.* New York: Holt, Rinehart and Winston.

FRY, A. RUTH. 1986 (1952). *Victories Without Violence.* Santa Fe, N. Mex.: Ocean Tree Books.

FRY, DOUGLAS P. 1994. Maintaining social tranquility: internal and external loci of aggression control. In Sponsel and Gregor 1994: 135–54.

_____ and BJÖRKVIST, KAJ, eds. 1997. *Cultural Variation in Conflict Resolution: Alternatives to Violence.* Mahwah, N.J.: Lawrence Erlbaum Associates, Publishers.

FULLER, JOHN G. 1985. *The Day We Bombed Utah.* New York: Signet Books.

FUNG, YU-LAN. 1952. *History of Chinese Philosophy,* trans. Derke. Bodde. Vol. i. Princeton: Princeton University Press.

FUSSELL, PAUL. 1997. The culture of war. In Denson 1997: 351–8.

GALTUNG, JOHAN. 1969. Violence, peace and peace research. *Journal of Peace Research,* 6: 167–91.

_____ 1984. *There are Alternatives!* Nottingham: Spokesman.

_____ 1990. *The True Worlds: A Transnational Perspective.* New York: The Free Press.

_____ 1992. *The Way is the Goal: Gandhi Today.* Ahmedabad: Gujarat Vidyapith, Peace Research Centre.

_____ 1996. *Peace by Peaceful Means.* London: SAGE Publications.

_____ 1998. *Conflict Transformation by Peaceful Means: TheTranscend Method.* Geneva/Torino: Crisis Environments Training Initiative and Disaster Management Training Programme, United Nations.

GANDHI, MOHANDAS K. 1957(1927–1929). *An Autobiography: The Story of My Experiments with Truth.* Boston, Mass.: Beacon Press.

_____ 1958–1994. *The Collected Works of Mahatma Gandhi.* Vols. 1-100. New Delhi: Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.

_____ 1969 (1936–1940). *Towards Non-Violent Politics.* Thanjavur, Tamilnad, India: Sarvodaya Prachuralaya.

_____ 1970. *The Science of Satyagraha,* ed. A.T. Hingorani. Bombay: Bharatiya Vidya Bhavan.

_____ 1971. *The Teaching of the Gita,* ed. A.T. Hingorani. Bombay: Bharatiya Vidya Bhavan.

GARA, LARRY and GARA, LENNA MAE. 1999. *A Few Small Candles: War Resisters of World War II Tell Their Stories.* Kent, Ohio: Kent State University Press.

GARRISON, FIELDING H. 1929. *An Introduction to the History of Medicine.* Philadelphia, Penn.: W.B. Saunders.

GIOGLIO, GERALD R. 1989. *Days of Decision: An Oral History of Conscientious Objectors in the Military in the Vietnam War.* Trenton, N.J.: Broken Rifle Press.

GIORGI, PIERO. 1999. *The Origins of Violence By Cultural Evolution.* Brisbane, Australia: Minerva E&S.

GIOVANNITTI, LEN and FREED, FRED. 1965. *The Decision to Drop the Bomb.* New York: Coward-McCann.

GOLDMAN, RALPH M. 1990. *From Warfare to Party Politics: The Critical Transition to Civilian Control.* Syracuse: Syracuse University Press.

GOODIN, ROBERT E. and KLINGEMANN, HANS-DIETER, eds. 1996. *A New Handbook of Political Science.* Oxford: Oxford University Press.

GREENLEAF, ROBERT K. 1977. *Servant Leadership: An Inquiry into the Nature of Legitimate Power and Greatness.* New York: Paulist Press.

GREGG, RICHARD B. 1966 (1935). *The Power of Nonviolence.* New York: Schocken Books.

GRISOLÍA, JAMES S. et al., eds. 1997. *Violence: From Biology to Society.* Amsterdam: Elsevier.

GROSSMAN, DAVE (Lt. Col.). 1995. *On Killing: The Psychological Cost of Learning to Kill in War and Society.* Boston, Mass.: Little Brown.

_____ and DeGAETANO, GLORIA. 1999. *Stop Teaching Our Kids to Kill.* New York: Crown Publishers.

GUETZKOW, HAROLD. 1955. *Multiple Loyalties: Theoretical Approach to a Problem in International Organization.* Princeton, N.J.: Center for Research on World Political Institutions, Princeton University.

GUSEINOV, A.A., ed. 1993. *Nyenasiliye: Filosofiya, Etika, Politika* (Nonviolence: Philosophy, Ethics, Politics). Moscow: Nauka.

HALBERSTAM, DAVID. 1998. *The Children.* New York: Random House.

HALLIE, PHILIP. 1979. *Lest Innocent Blood Be Shed.* New York: Harper & Row.

HARRIES-JENKINS, GWYN. 1993. Britain: from individual conscience to social movement. In Moskos and Chambers 1993: 67–79.

HAWKLEY, LOUISE. and JUHNKE, JAMES C. 1993. *Nonviolent America: History through the Eyes of Peace.* North Newton, Kans.: Bethel College.

HERMAN, A.L. 1999. *Community, Violence, and Peace.* Albany: State University of New York Press.

HESS, G.D. 1995. An introduction to Lewis Fry Richardson and his mathematical theory of war and peace. *Conflict Management and Peace Science* 14 (1): 77–113.

HOBBES. 1968 (1651). *Leviathan,* ed. C.B. Macpherson. Harmondsworth: Penguin.

HOFSTADTER, RICHARD. 1971. Reflections on violence in the United States. Pp. 3–43 in *American Violence: A Documentary History,* ed. Richard Hofstadter and Michael Wallace. New York: Vintage.

HOLMES, ROBERT L., ed. 1990. *Nonviolence in Theory and Practice.* Belmont, Calif.: Wadsworth.

HORIGAN, DAMIEN P. 1996. On compassion and capital punishment: a Buddhist perspective on the death penalty. *The American Journal of Jurisprudence,* 41: 271–88.

HOREMAN, BART and STOLWIJK, MARC. 1998. *Refusing to Bear Arms: A World Survey of Conscription and Consci-*

entious Objection to Military Service. London: War Resisters International.

HUSAIN, TARIQ. 1997. "The Leadership Challenges of Human Development." Paper presented at the United Nations University/International Leadership Academy, Amman, Jordan, June 1, 1997.

ISHIDA, TAKESHI. 1974(1968). *Heiwa no seijigaku* (Political Science of Peace), 7th ed. Tokyo: Iwanami Shoten.

IYER, RAGHAVAN N. 1973. *The Political and Moral Thought of Mahatma Gandhi.* New York: Oxford University Press.

JAIN, SAGARMAL, ed.; VARNI, JINENDRA, comp. 1993. *Saman Suttam.* Rajghat, Varanasi: Sarva Seva Sang Prakashan.

JOSEPHSON, HANNAH G. 1974. *Jeannette Rankin: First Lady in Congress.* Indianapolis: Bobbs-Merrill.

JOSEPHSON, HAROLD, ed. 1985. *Biographical Dictionary of Modern Peace Leaders.* Westport, Conn.: Greenwood Press.

KANO, TAKAYOSHI. 1990. The bonobos' peaceable kingdom. *Natural History,* 11: 62–70.

KANT, IMMANUEL. 1939(1795). *Perpetual Peace.* New York: Columbia University Press.

KAPUR, SUDARSHAN. 1992. *Raising Up a Prophet: The African-American Encounter with Gandhi.* Boston, Mass: Beacon Press.

KEELEY, LAWRENCE H. 1996. *War Before Civilizations: The Myth of the Peaceful Savage.* Oxford: Oxford University Press.

KELLY, PETRA K. 1984. *Fighting for Hope.*London: Chatto and Windus.

_____ 1989. Gandhi and the Green Party. *Gandhi Marg,* 11: 192–202.

_____ 1990. "For feminization of power!" Speech to the Congress of the National Organization for Women, San Francisco, June 30, 1990.

_____ 1992. *Nonviolence Speaks to Power.* Honolulu: Center for Nonviolence Planning Project, Matsunaga Institute for Peace, University of Hawai'i. Available at www.globalnonviolence.org.

_____ 1994. *Thinking Green! Essays on Environmentalism, Feminism, and Nonviolence.* Berkeley, Calif.: Parallax Press.

KEYES, GENE. 1982. Force without firepower. *CoEvolution Quarterly,* 34: 4–25.

KEYFITZ, NATHAN. 1966. How many people have lived on earth. *Demography* 3 (2): 581–2.

KHAN, ABDUL K. 1997. "The Khudai Khidmatgar (Servants of God)/Red Shirt Movement in the North-West Frontier Province of British India, 1927–47." Ph.D. diss., History, University of Hawai`i.

KING, MARTIN LUTHER, JR. 1998. *The Autobiography of Martin Luther King,* Jr., ed. Clayborne Carson. New York: Warner Books.

KISHTAINY, KHALID. 1990. Violent and nonviolent struggle in Arab history. In Crow, Grant, and Ibrahim 1990: 41–57.

KOHN, STEPHEN M. 1987. *Jailed for Peace: The History of American Draft Law Violators, 1658-1985.* New York: Praeger.

KONRAD, A. RICHARD. 1974. Violence and the philosopher. *Journal of Value Inquiry,* 8: 37–45.

KOOL, V.K., ed. 1990. *Perspectives on Nonviolence: Recent Research in Psychology.* New York: Springer-Verlag.

_____, ed. 1993. *Nonviolence: Social and Psychological Issues.* Lanham, Md.: University Press of America.

KROPOTKIN, PETER. 1972 (1914). *Mutual Aid: A Factor of Evolution.* New York: New York University Press.

KUHLMANN, JÜRGEN and LIPPERT, EKKEHARD. 1993. The Federal Republic of Germany: conscientious objection as social welfare. In Moskos and Chambers 1993: 98–105.

LAFAYETTE JR., BERNARD and JEHNSEN, DAVID C. 1995. *The Briefing Booklet: An Introduction to The Kingian Nonviolence Reconciliation Program.* Galena, Ohio: Institute for Human Rights and Responsibilities.

_____ 1996. *The Leader's Manual, A Structured Guide and Introduction to Kingian Nonviolence: The Philosophy and Methodology.* Galena, Ohio: Institute for Human Rights and Responsibilities.

LEWER, NICK and SCHOFIELD, STEVEN, eds. 1997. *Non-Lethal Weapons: A Fatal Attraction!* London: Zed Books.

LEWIS, JOHN. 1973(1940). *The Case Against Pacifism.* Introd. Carl Marzani. New York: Garland.

LIGT, BARTHÉLEMY de. 1972(1938). *The Conquest of Violence: an Essay on War and Revolution,* introds. George Lakey and Aldous Huxley. New York: Garland.

LOCKE, HUBERT G. 1969. *The Detroit Riot of 1967.* Detroit, Mich.: Wayne State University Press.

LOCKE JOHN. 1970 (1689). *Two Treatises of Government,* ed. P. Laskett. Cambridge: Cambridge University Press.

LOPEZ-REYES, RAMON. 1998. The fight/flight response and nonviolence. In Satha-Anand and True 1998: 34–82.

LYND, STAUGHTON and LYND, ALICE, eds. 1995. *Nonviolence in America: A Documentary History.* Maryknoll, N.Y.: Orbis Books.

LYTTLE, BRADFORD. 1982. The apocalypse equation.*Harvard Magazine* (March-April): 19–20.

MCALLISTER, PAM. 1982. *Reweaving the Web of Life: Feminism and Nonviolence.* Philadelphia, Pa.: New Society Publishers.

_____ 1988. *You Can't Kill the Spirit.* Philadelphia, Pa.: New Society Publishers. Barbara Deming Memorial Series: Stories of Women and Nonviolent Action.

MCCARTHY, COLMAN. 1994. *All of One Peace.* New Brunswick, N.J.: Rutgers University Press.

MCCARTHY, RONALD M. 1997. Methods of nonviolent action. In Vogele and Powers 1997: 319–28. New York: Garland Publishing.

_____ and SHARP, G. 1997. *Nonviolent Action: A Research Guide.* New York and London: Garland Publishing.

MCGUINESS, KATE. 1993. Gene Sharp's theory of power: a feminist critique of consent. *Journal of Peace Research* 30: 101–15.

MCSORLEY, RICHARD. 1985. *New Testament Basis of Peacemaking.* Scottdale, Penn.: Herald Press.

MACGREGOR, G.H.C. 1960. *The Relevance of an Impossible Ideal.* London: Fellowship of Reconciliation.

MACHIAVELLI, NICCOLO. 1961 (1513). *The Prince,* trans. G. Bau. Harmondsworth: Penguin.

MAGUIRE, MAIREAD CORRIGAN. 1999. *The Vision of Peace,* ed. John Dear. Maryknoll, N.Y.: Orbis Books.

MAHAPRAJNA, YUVACHARYA. 1987. *Preksha Dhyana: Theory and Practice.* Ladnun, Rajasthan: Jain Vishva Bharati.

_____ 1994. *Democracy: Social Revolution Through Individual Transformation.* Ladnun, Rajasthan: Jain Vishva Bharati.

MAHONY, LIAM and EGUREN, LUIS E. 1997. *Unarmed Bodyguards.* West Hartford, Conn.: Kumarian Press.

MANN, CORAMAE RICHEY. 1996. *When Women Kill.* Albany: State University of New York Press.

MARTIN, BRIAN. 1989. Gene Sharp's theory of power. *Journal of Peace Research,* 26: 213–22.

_____ et al. 1991. *Nonviolent Struggle and Social Defence.* Ed. S. Anderson and J. Larmore. London: War Resisters International and the Myrtle Solomon Memorial Fund.

_____ 1992. Science for non-violent struggle. *Science and Public Policy,* 19: 55-8.

_____ 2001. *Technology for nonviolent struggle.* London: War Resisters International.

MARX, KARL and ENGELS, FRIEDRICH. 1976(1848). *The Communist Manifesto,* introd. A.J.P. Taylor. Harmondsworth: Penguin.

MAYOR, FEDERICO. 1995. *The New Page.* Paris: UNESCO Publishing.

MERCY, JAMES A. and SALTZMAN, LINDA E. 1989. Fatal violence among spouses in the United States 1976–85. *American Journal of Public Health* 79 (5): 595–9.

MOGIL, CHRISTOPHER; and SLEPIAN, ANN; with WOODROW, PETER. 1993. *We Gave a Fortune Away.* Gabriola Island, B.C.: New Society Publishers.

MORGAN, ROBIN, ed. 1984. *Sisterhood is Global.* Garden City, N.Y.: Anchor Press/Doubleday.

MORRISEY, WILL. 1996. *A Political Approach to Pacifism.* 2 vols. Lewiston, N.Y.: Edwin Mellen Press.

MORTON, BRUCE E. 2000. "The Dual Quadbrain Model of Behavioral Laterality." Department of Biochemistry and Biophysics, School of Medicine, University of Hawai'i.

MOSER-PUANGSUWAN, YESHUA and WEBER, THOMAS. 2000. *Nonviolent Intervention Across Borders: A Recurrent Vision.*Honolulu: Spark M.Matsunaga Institute for Peace, University of Hawai'i.

MOSKOS, CHARLES and CHAMBERS, JOHN W. II, eds. 1993. *The New Conscientious Objectors: From Sacred to Secular Resistance.* Oxford: Oxford University Press.

NAGLER, MICHAEL N. 1982. *America Without Violence.* Covelo, Calif.: Island Press.

_____ 2001. *Is There No Other Way? The Search for a Nonviolent Future.* Berkeley, Calif.: Berkeley Hills Books.

NAHAL, CHAMAN. 1997. A sister remembered. *The Hindustan Times,* New Delhi, November 10.

NAKAMURA, HAJIME. 1967. Basic features of legal, economic, and political thought in Japan. Pp. 143–63 in *The Japanese Mind,* ed. Charles A. Moore. Honolulu: East-West Center and University of Hawaii Press.

NARAYAN, JAYAPRAKASH. 1975. From socialism to sarvodaya. Pp. 145–77 in *Jayaprakash Narayan*, Ajit Bhattacharya. Delhi: Vikas.

_____ 1978. *Towards Total Revolution*. 4 vols., ed. Brahmanand. Bombay: Popular Prakashan.

NATHAN, OTTO and NORDEN, HEINZ, eds. 1968. *Einstein on Peace*. New York: Schocken Books.

NAUTIYAL, ANNPURNA. 1996. Chipko movement and the women of Garhwal Himalaya. *Gandhian Perspectives* 9 (2): 9–17.

NOBEL PRIZE RECIPIENTS. 1981. Manifesto of Nobel prize winners. *IFDA Dossier*, 25: 61–63.

NORMAN, LIANE E. 1989. *Hammer of Justice: Molly Rush and the Plowshares Eight*. Pittsburgh, Pa.: Pittsburgh Peace Institute.

ORGANIZATION OF AMERICAN HISTORIANS. 1994. Peacemaking in American history. *Magazine of History*, 8(3): 1–96.

PAIGE, GLENN D. 1968. *The Korean Decision: June 24-30, 1950*. New York: Free Press.

_____ 1971. Some implications for political science of the comparative politics of Korea. Pp. 139–68 in *Frontiers of Development Administration*, ed. Fred W. Riggs. Durham, N.C.: Duke University Press.

_____ 1977. *The Scientific Study of Political Leadership*. New York: Free Press.

_____ 1977. On values and science: *The Korean Decision* reconsidered. *American Political Science Review* 71(4): 1603–9.

_____ 1986. Beyond the limits of violence: toward nonviolent global citizenship. Pp. 281-305 in *Textbook on World Citizenship*, ed. Young Seek Choue. Seoul: Kyung Hee University Press.

_____ and GILLIATT, SARAH, eds. 1991. *Buddhism and Nonviolent Global Problem-Solving: Ulan Bator Explorations*. Honolulu: Center for Global Nonviolence Planning Project,

Matsunaga Institute for Peace, University of Hawai'i. Available at www.globalnonviolence.org.

_____; SATHA-ANAND, CHAIWAT; AND GILLIATT, SARAH, eds. 1993a. *Islam and Nonviolence.* Honolulu: Center for Global Nonviolence Planning Project, Matsunaga Institute for Peace, University of Hawai'i. Available at www.globalnonviolence.org.

_____ 1993b. *To Nonviolent Political Science: From Seasons of Violence.* Honolulu: Center for Global Nonviolence Planning Project, Matsunaga Institute for Peace, University of Hawai'i. Available at www.globalnonviolence.org.

_____ and ROBINSON, JAMES A. 1998. In memoriam: Richard Carlton Snyder. *PS: Political Science & Politics,* 31: 241–2.

_____ 1999. Gandhi as leader: a Plutarchan perspective. *Biography: An Interdisciplinary Quarterly* 22 (1): 57–74.

_____ 1999. A question for the systems sciences: is a nonkilling society possible? Pp. 409–16 in Yong Pil Rhee, ed. *Toward New Paradigm of Systems Sciences.* Seoul: Seoul National University Press.

PALMER, STUART H. 1960. *A Study of Murder.* New York: Thomas Y. Crowell.

PAREKH, BHIKHU. 1989a. *Colonialism, Tradition and Reform: An Analysis of Gandhi's Political Discourse.* Newbury Park: Sage.

_____ 1989b. *Gandhi's Political Philosophy: A Critical Examination.* London: Macmillan.

PARKIN, SARA. 1994. *The Life and Death of Petra Kelly.* London: Pandora, HarperCollins Publishers.

PBS. 1993. "Fame in the 20th Century." Part V.

PEACE NEWS. 1998. Las Abejas: the Bees continue to fly. July: 12–14.

PELTON, LEROY H. 1974. *The Psychology of Nonviolence.* New York: Pergamon Press.

PERRIN, NOEL. 1979. *Giving up the Gun.* Boston: David R. Godine Publisher.

PLATO. 1974. *The Republic,* trans. D. Lee. Harmondsworth: Penguin.

PLIMAK, E.G. and KARYAKIN, YU.F. 1979. "Lenin o mirnoi i nyemirnoi formakh revolyutsionnogo perekhoda v sotsializmu" (Lenin on peaceful and nonpeaceful forms of revolutionary transition to socialism). Paper presented to the XIth World Congress of the International Political Science Association, Moscow University, 12–18 August.

PLUTARCH. 1967–75. *Plutarch's Lives.* 11 vols. Trans. B. Perrin. Cambridge, Mass.: Harvard University Press.

POLNER, MURRAY and GOODMAN, NAOMI, eds. 1994. *The Challenge of Shalom.* Philadelphia, Penn.: New Society Publishers.

_____ and O'GRADY, J. 1997. *Disarmed and Dangerous: The Radical Lives and Times of Daniel and Philip Berrigan.* New York: Basic Books.

POWERS, ROGER S. and VOGELE, WILLIAM B., eds. 1997. *Protest, Power and Change: An Encyclopedia of Nonviolent Action from ACT-UP to Women's Suffrage.* New York & London: Garland Publishing.

RADHAKRISHNAN, N. 1992. *Gandhi, Youth & Nonviolence: Experiments in Conflict Resolution.* Mithrapuram, Paranthal Post, Kerala, India: Centre for Development & Peace.

_____. 1997a. *Gandhian Nonviolence: A Trainer's Manual.* New Delhi: Gandhi Smriti and Darshan Samiti.

_____ 1997b. *The Message of Gandhi through Universities.* New Delhi: Gandhi Smriti and Darshan Samiti.

RAMACHANDRAN, G. 1984. *Adventuring With Life: An Autobiography.* Trivandrum, India: S.B. Press.

_____ and MAHADEVAN, T.K., eds. 1970. *Quest for Gandhi.* New Delhi: Gandhi Peace Foundation.

RAMSEY, L. THOMAS. 1999. "How many people have ever lived, Keyfitz's calculation updated." http://www.math.hawaii.edu/~ramsey/People.html.

RANDLE, MICHAEL. 1993. *Civil Resistance.* London: Fontana Press.

RESTAK, RICHARD M. 1979. *The Brain: The Last Frontier.* Garden City, N.Y.: Doubleday.

ROBARCHEK, CLAYTON and ROBARCHEK, CAROLE. 1998. *Waorani: The Contexts of Violence and War.* Fort Worth, Tex.: Harcourt Brace College Publishers.

ROBERTS, ADAM. 1967. *The Strategy of Civilian Defense: Non-Violent Resistance to Aggression.* London: Faber & Faber.

_____ 1975. Civilian resistance to military coups. *Journal of Peace Research,* 12(1): 19–36.

ROLLAND, ROMAIN. 1911. *Tolstoy,* trans. Bernard Miall. New York: E.P. Dutton.

ROODKOWSKY, MARY. 1979. Feminism, peace, and power. In Bruyn and Rayman 1979: 244–66.

ROSENBERG, MARK L. and MERCY, JAMES A. 1986. Homicide: epidemiologic analysis at the national level. *Bulletin of the New York Academy of Medicine,* 62: 376–99.

ROUSSEAU, JEAN-JACQUES. 1966 (1762). *Du contrat social,* introd. Pierre Burgelin. Paris: Garnier-Flammarion.

_____ 1994 (1762). *The Social Contract,* trans. C. Betts. Oxford: Oxford University Press.

ROUSSELL, VINCENT. *Jacques de Bollardière: De l'armée à la non-violence.* Paris: Desclée de Brouwer.

ROYAL SWEDISH ACADEMY OF SCIENCES. 1983. *Ambio* 12. Special issue on environmental research and management priorities for the 1980s.

ROYCE, JOSEPH. 1980. Play in violent and non-violent cultures. *Anthropos,* 75: 799–822.

RUMMEL, RUDOLPH J. 1994. *Death by Governments.* New Brunswick, N.J.: Transaction Publishers.

SAGAN, ELI. 1979. *The Lust to Annihilate: A Psychoanalytic Study of Violence in Greek Culture.* New York: Psychohistory Press.

SALLA, MICHAEL E. 1992. "Third Party Intervention in Interstate Conflict: The International Implications of Groups Com-

mitted to Principled Nonviolence in the Thought of M.K. Gandhi, Martin Luther King, Helder Camara & Danilo Dolci." Ph.D. diss., Government, University of Queensland.

SANTIAGO, ANGELA S. 1995. *Chronology of a Revolution 1986.* Manila: Foundation for Worldwide People Power.

SATHA-ANAND, CHAIWAT. 1981. "The Nonviolent Prince." Ph.D. diss., Political Science, University of Hawai'i.

_____ (Qader Muheideen). 1990. The nonviolent crescent: eight theses on Muslim nonviolent action. In Crow, Grant, and Ibrahim 1990: 25–40.

_____ and TRUE, MICHAEL, eds. 1998. *The Frontiers of Nonviolence.* Bangkok and Honolulu: Peace Information Center and Center for Global Nonviolence. In cooperation with the Nonviolence Commission, International Peace Research Association (IPRA).

_____ 1999. Teaching nonviolence to the states. Pp. 186-95 in *Asian Peace: Regional Security and Governance in the Asia-Pacific,* ed. Majid Tehranian. London: I.B. Taurus Publishers.

SCHLISSEL, LOUISE. 1968. *Conscience in America: A Documentary History of Conscientious Objection in America 1757–1967.* New York: E.P. Dutton.

SCHMID, ALEX P. 1985. *Social Defence and Soviet Military Power: An Inquiry Into the Relevance of an Alternative Defence Concept.* Leiden: Center for the Study of Social Conflict, State University of Leiden.

SCHWARTZ, STEPHEN I., ed. 1998. *Atomic Audit: The Costs and Consequences of U.S. Nuclear Weapons Since 1940.* Washington, D.C.: Brookings Institution Press.

SCHWARZSCHILD, STEVEN et al., n.d. *Roots of Jewish Nonviolence.* Nyack, N.Y.: Jewish Peace Fellowship.

SEBEK, VIKTOR. 1983. Bridging the gap between environmental science and policy-making: why public policy often fails to reflect current scientific knowledge. *Ambio,* 12: 118–20.

SELECTIVE SERVICE SYSTEM. 1950. *Conscientious Objection.* Special monograph. No. 11, Vol. i.

SEMELIN, JACQUES. 1994. *Unarmed Against Hitler: Civilian Resistance in Europe, 1939–1943.* Westport, Conn.: Praeger.

SETHI, V.K. 1984. *Kabir: The Weaver of God's Name.* Punjab, India: Radha Soami Satsang Beas.

SHARP, GENE. 1960. *Gandhi Wields the Weapon of Moral Power.* Ahmedabad: Navajivan Publishing House.

_____ 1973. *The Politics of Nonviolent Action.* Boston, Mass.: Porter Sargent.

_____ 1979. *Gandhi As a Political Strategist.* Boston, Mass.: Porter Sargent.

_____ 1980. *Social Power and Individual Freedom.* Boston, Mass.: Porter Sargent.

_____ 1989. "The Historical Significance of the Growth of Nonviolent Struggle in the Late Twentieth Century." Paper presented at the Institute of World History of the Academy of Sciences of the USSR, Moscow, November 21–23.

_____ 1990. *Civilian-Based Defense: A Post-Military Weapons System.* Princeton, N.J.: Princeton University Press.

_____ 1993. *From Dictatorship to Democracy.* Cambridge, Mass.: The Albert Einstein Institution.

_____ 1994. "Nonviolent Struggle: A Means toward Justice, Freedom and Peace." A presentation during the mass on Public Education Day, January 18, 1994, sponsored by the Justice and Peace Commission of the Union of Superiors General of the Catholic Church, Rome.

SHRIDHARANI, KRISHNALAL. 1962(1939). *War without Violence.* Bombay: Bharatiya Vidya Bhavan.

SHUB, DAVID. 1976. *Lenin.* Harmondsworth: Penguin Books.

SIBLEY, MULFORD Q., ed. 1963. *The Quiet Battle: Writings on the Theory and Practice of Non-violent Resistance.* Boston, Mass.: Beacon Press.

SIMON, DAVID. 1991. *Homicide: A Year on the Killing Streets.* Boston, Mass.: Houghton Mifflin.

SIVARD, RUTH LEGER. 1996. *World Military and Social Expenditures 1996.* Washington, D.C.: World Priorities. 16th edition.

SNYDER, RICHARD C.; BRUCK, HENRY W.; and SAPIN, BURTON, eds. 1962. *Foreign Policy Decision-Making: An Approach to the Study of International Politics.* New York: The Free Press of Glencoe, Macmillan.

_____ and WILSON, H.H. 1949. *Roots of Political Behavior.* New York: American Book Company.

SOLOMON, GEORGE F. 1970. Psychodynamic aspects of aggression, hostility, and violence. In Daniels, Gilula, and Ochberg 1970: 53–78.

SOROKIN, PITIRIM A. 1948. *The Reconstruction of Humanity.* Boston: Beacon Press.

_____ 1954. *The Ways and Power of Love.* Boston: Beacon Press.

SOROS, GEORGE. 1997. The capitalist threat. *The Atlantic Monthly,* February: 45–58.

SPONSEL, LESLIE E. 1994a. The mutual relevance of anthropology and peace studies. In Sponsel and Gregor 1997: 11–19.

_____ and GREGOR, THOMAS, eds. 1994b. *The Anthropology of Peace and Nonviolence.* Boulder, Colo.: Lynne Rienner.

_____ 1996. Peace and nonviolence. Pp. 908–12 in *The Encyclopedia of Cultural Anthropology,* eds. David Levinson and Melvin Ember. New York: Henry Holt.

STANFIELD, JOHN H., II. 1993. The dilemma of conscientious objection for African Americans. In Moskos and Chambers 1993: 47–56.

STANNARD, DAVID E. 1992. *American Holocaust: Columbus and the Conquest of the New World.* Oxford: Oxford University Press.

STEGER, MANFRED B. 2000. *Gandhi's Dilemma.* New York: St. Martin's Press.

_____ and LIND, NANCY S, eds. 1999. *Violence and Its Alternatives.* New York: St. Martin's Press.

STEIN, MICHAEL B. 1997. Recent approaches to the concept of creativity and innovation in political and social science:

a summary assessment. Paper presented to the XVIIth World Congress of the International Political Science Association, Seoul, Korea.

STEINSON, BARBARA J. 1980. "The mother half of humanity": American women in the peace and preparedness movements of World War I. Pp. 259–284 in *Women, War, and Revolution,* eds. Carol R. Berkin and Clara M. Lovett. New York and London: Holmes & Meier.

STEPHENSON, CAROLYN M. 1997. Greenpeace. In Vogele and Powers 1997: 220–2.

STEVENS, JOHN. 1987. *Abundant Peace: The Biography of Morihei Ueshiba Founder of Aikido.* Boston: Shambala.

STONE, I.F. 1989. *The Trial of Socrates*. New York: Anchor Books.

SUMMY, RALPH. 1988. Towards a nonviolent political science. Pp. 161-172 in *Professions in the Nuclear Age,* eds. S. Sewell, A. Kelly and L. Daws. Brisbane: Boolarong Publications.

_____ 1991. Vision of a nonviolent society: what should be society's aims. *Balance,* 3(4): 3–8.

_____ 1994. Nonviolence and the case of the extremely ruthless opponent. *Pacifica Review,* 6(1): 1–29.

_____ and SAUNDERS, MALCOLM. 1995. Why peace history? *Peace & Change* 20: 7–38.

_____ 1997. Australia, a history of nonviolent action. In Powers and Vogele 1997: 25–32.

_____ 1998. Nonviolent speech. *Peace Review* 10 (4): 573–8.

SUTHERLAND, BILL and MEYER, MATT. 2000. *Guns and Gandhi in Africa.* Trenton, N.J. and Asmara, Eritrea: Africa World Press.

TARASOFF, KOOZMA J. 1995. Doukhobor survival through the centuries. *Canadian Ethnic Studies/Etudes Ethniques au Canada* 27(3): 4–23. Special Issue: From Russia with Love: The Doukhobors.

TAYYEBULLA, M. 1959. *Islam and Non-Violence.* Allahabad: Kitabistan.

TENDULKAR, D.G. 1967. *Abdul Ghaffar Khan: Faith is a Battle.* Bombay: Popular Prakashan.

THOMPSON, HENRY O. 1988. *World Religions in War and Peace.* Jefferson, N.C. and London: McFarland & Company.

TOBIAS, MICHAEL. 1991. *Life Force: The World of Jainism.* Berkeley, Calif.: Asian Humanities Press.

TOLSTOY, LEO. 1974(1893 and 1894-1909). *The Kingdom of God and Peace Essays,* trans. Aylmer Maude. London: Oxford University Press.

TROCMÉ, ANDRÉ. 1974. *Jesus and the Nonviolent Revolution.* Scottdale, Penn.: Herald Press.

TRUE, MICHAEL. 1995. *An Energy Field More Intense Than War: The Nonviolent Tradition and American Literature.* Syracuse, N.Y.: Syracuse University Press.

TSAI, LOH SENG. 1963. Peace and cooperation among natural enemies: educating a rat-killing cat to cooperate with a hooded rat. *Acta Psychologia Taiwanica,* 3: 1–5.

TWAIN, MARK. 1970(1923). *The War Prayer.* New York: Harper & Row.

UNITED NATIONS. 1978. Final Document of Assembly Session on Disarmament 23 May–1 July 1978. S-10/2. New York: Office of Public Information.

_____ 1993. *Agenda 21: The United Nations Programme of Action from Rio.* New York: United Nations.

_____ 1996. Report of the Fourth World Conference on Women, Beijing, 4 –15 September 1995. New York: United Nations.

UNNITHAN, N. PRABHA; HUFF-CORZINE, LIN; CORZINE, JAY; and WHITT, HUGH P. 1994. *The Currents of Lethal Violence: An Integrated Model of Suicide and Homicide.* Albany: State University of New York Press.

UNNITHAN, T.K.N. and SINGH, YOGENDRA. 1969. *Sociol-*

ogy of Non-Violence and Peace. New Delhi: Research Council for Cultural Studies, India International Centre.

_____ 1973. *Traditions of Nonviolence.* New Delhi: Arnold-Heinemann India.

UNREPRESENTED NATIONS AND PEOPLES ORGANIZATION (UNPO). 1998a. *Nonviolence and Conflict: Conditions for Effective Peaceful Change.* The Hague: Office of the Secretary General, UNPO. http://www.unpo.org.

_____ 1998b. *Yearbook 1997,* ed. J. Atticus Ryan. The Hague: Kluwer Law International.

VILLAVINCENCIO-PAUROM, RUBY. 1995. Nature/gunless society: utopia within reach. Pp. 146–51 in Emelina S. Almario and Asuncion D. Maramba, eds. *Alay sa Kalinaw: Filipino Leaders for Peace.* Makati City: Aurora Aragon Quezon Peace Foundation and UNESCO National Commission of the Philippines.

WAAL, FRANS de. 1989. *Peacemaking Among Primates.* Cambridge, Mass.: Harvard University Press.

_____ 1996. *Good Natured: The Origins of Right and Wrong in Humans and Other Animals.* Cambridge, Mass.: Harvard University Press.

_____ 1997. *Bonobo: The Forgotten Ape.* Berkeley: University of California Press.

WALKER, CHARLES C. 1979. Nonviolence in Africa. In Bruyn and Rayman 1979: 186–212.

WAR RESISTERS LEAGUE. 1989. *Handbook for Nonviolent Action.* New York: War Resisters League.

WASHINGTON, JAMES M., ed. 1986. *A Testament of Hope: the Essential Writings and Speeches of Martin Luther King,* Jr. New York: HarperCollins Publishers.

WASSERMAN, HARVEY. 1982. *Killing Our Own: The Disaster of America's Experience With Atomic Radiation.* New York: Delacorte Press.

WATSON, PETER. 1978. *War on the Mind: The Military Uses and Abuses of Psychology.* New York: Basic Books.

WEBER, MAX. 1958(1919). Politics as a vocation. Pp. 77–128 in *From Max Weber: Essays in Sociology,* ed. H.H. Gerth and C. Wright Mills. New York: Oxford University Press.

WEBER, THOMAS. 1989. *Hugging the Trees: The Story of the Chipko Movement.* New Delhi: Penguin.

_____ 1996. *Gandhi's Peace Army: The Shanti Sena and Unarmed Peacekeeping.* Syracuse, N.Y.: Syracuse University Press.

_____ 1997. *On the Salt March: The Historiography of Gandhi's March to Dandi.* New Delhi: HarperCollins Publishers India.

WEEKS, JOHN R. 1996. *Population.* 6th edition. Belmont, Calif.: Wadsworth Publishing.

WEINBERG, ARTHUR and WEINBERG, LILA. 1963. *Instead of Violence: Writings of the Great Advocates of Peace and Nonviolence throughout History.* Boston, Mass.: Beacon Press.

WHIPPLE, CHARLES K. 1839. *Evils of the Revolutionary War.* Boston, Mass.: New England Non-Resistance Society.

_____ 1860a. *Non-Resistance Applied to the Internal Defense of a Community.* Boston, Mass.: R.F. Wallcut.

_____ 1860b. *The Non-Resistance Principle: With Particular Attention to the Help of Slaves by Abolitionists.* Boston, Mass.: R.F. Wallcut.

WHITMAN, WALT. 1855. "Song of myself," *Leaves of Grass,* 42: 33-42. Norwalk, Conn.: The Easton Press.

WILCOCK, EVELYN. 1994. *Pacifism and the Jews.* Landsdown, Gloucestershire: Hawthorn Press.

WILSON, H. HUBERT. 1951. *Congress: Corruption and Compromise.* New York: Rinehart.

WITTNER, LAWRENCE S. 1993. *One World or None: A History of the World Nuclear Disarmament Movement Through 1953.* Stanford, Calif.: Stanford University Press.

_____ 1997. *Resisting the Bomb: A History of the World Nuclear Disarmament Movement, 1954-1970.* Stanford, Calif.: Stanford University Press.

WORLD BANK. 1997. *World Development Report 1997: The State in a Changing World.* Oxford: Oxford University Press.

_____ 1999. Press briefing, "Poverty Update." Washington, D.C., June 2.

WORLD WILDLIFE FUND. 1986. *The Assisi Declarations: Messages on Man and Nature From Buddhism, Christianity, Hinduism, Jainism & Judaism.* Gland, Switzerland: WWF International.

WRANGHAM, RICHARD and PETERSON, DALE. 1996. *Demonic Males: Apes and Origins of Human Violence.* New York: Houghton Mifflin.

YODER, JOHN H. 1983. *What Would You Do? A Serious Answer to a Standard Question.* Scottdale, Penn.: Herald Press.

YOUNG, ANDREW. 1996. *An Easy Burden: The Civil Rights Movement and the Transformation of America.* New York: HarperCollins Publishers.

YOUNG, ART. 1975. *Shelley and Nonviolence.* The Hague: Mouton.

YOUTH DIVISION OF SOKA GAKKAI. 1978. *Cries for Peace: Experiences of Japanese Victims of World War II.* Tokyo: The Japan Times.

ZAHN, GORDON. 1964. In *Solitary Witness: The Life and Death of Franz Jägerstätter.* New York: Holt, Rinehart and Winston.

ZAVERI, ZETHA LAL S. and KUMAR, MAHENDRA. 1992. *Neuroscience & Karma: The Jain Doctrine of Psycho-Physical Force.* Ladnun, Rajasthan: Jain Vishva Bharati.

ZHANG, YI-PING. 1981. Dui feibaoli zhuyi ying jiben kending (We should positively affirm nonviolence). *Shijie lishi* (World History), 16(3): 78–80.

ZIMRING, FRANKLIN E. and HAWKINS, GORDON E. 1986. *Capital Punishment and the American Agenda.* Cambridge: Cambridge University Press.

ZINN, HOWARD. 1980. *A People's History of the United States.* New York: Harper & Row.

ZUNES, STEPHEN; KURTZ, LESTER R.; and ASHER, SARAH BETH, eds. 1999. *Nonviolent Social Movements: A Geographical Perspective.* Oxford: Blackwell Publishers.